राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रबन्ध सम्पादक

जितेन्द्रकुमार जैन, एम. ए.
निदेशक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १२१

मुंहता नैणसी री लिखी

मारवाड़ रा परगनां री विगत

तृतीय भाग

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर (राजस्थान)
१९७४

मुद्रक
अजन्ता प्रिण्टर्स, जनगण प्रेस, शुभदा प्रिण्टर्स एवं श्रीसुमेर प्रिण्टिङ्ग प्रेस, जोधपुर

वि. सं. २०३१ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९६

प्रकाशकीय

"मारवाड़ रा परगनां री विगत" ग्रंथ-सम्पादन की योजना इस भाग के साथ पूर्ण हो जाती है। विद्वान् सम्पादक डॉ० नारायण-सिंह भाटी ने इस ग्रंथ का सूक्ष्म विवेचन प्रथम भाग में किया है। ग्रंथ में मारवाड़ के चप्पे-चप्पे का वर्णन मिलता है।

फारसी से इतर भाषाओं में लिखे गये ग्रंथों में ऐसे सर्वाङ्गीण ग्रंथ कम ही मिलेंगे। इस भाग की एक यह विशेषता भी है कि इसमें मारवाड़ के गाँवों के जागीरदारों से सम्बन्धित ऐसी समस्त उपयोगी सामग्री जोड़ दी गई है जो ग्रंथ का भाग न होकर भी उस रहे-सहे अभाव को पूर्ति के साथ-साथ शोधार्थियों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है, शायद जिसको संकलित करने के लिए यत्र-तत्र भ्रमण करना पड़ता।

"विगत" की चर्चा तो होती ही रहती थी, परन्तु इसको पूर्णतया प्रकाश में लाने की आवश्यकता थी जिसको प्रतिष्ठान ने पूरा किया। मुझे पूर्ण विश्वास है—इसका सम्मान विद्वज्जगत् में होगा तथा इस ग्रंथ से अनेक शोध-प्रबन्ध लिखे जाने में सहायता मिलेगी।

इस ग्रंथ को तैयार करने में विद्वान् सम्पादक ने जिस धैर्य और सूझ-बूझ का परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है।

जितेन्द्रकुमार जैन
निदेशक

सम्पादकीय

"मारवाड़ रा परगनां री विगत" के प्रथम और द्वितीय भागों में विगत के मूल पाठ के अतिरिक्त परिशिष्टों में विगत को पूर्णता देने हेतु तत्सम्बन्धी अन्य स्फुट जानकारी समाहित की गई थी। इस तृतीय भाग में राजस्थानी भाषा से अनभिज्ञ पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए हिन्दी में शोध-सूत्र प्रस्तुत किया गया है, तथा विशिष्ट शब्दों के अर्थ विविध नामानुक्रमणिकाएं, महत्वपूर्ण पुरुषों की जन्म-कुण्डलियां भी दी गई हैं।

इस विशाल ग्रंथ में ऐसे अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तियों का उल्लेख आया है जिनका उल्लेख ओझा, रेऊ, गहलोत तथा टाड आदि इतिहासकारों ने नहीं किया है, पर विगत और ख्यातों से पता चलता है कि यहां के इतिहास-निर्माण में उन व्यक्तियों ने महती भूमिका निभाई है। उपर्युक्त इतिहासकारों का दृष्टिकोण प्रायः राजवंश के व्यक्तियों तक ही सीमित रहा है, जिससे यह इतिहास एकांगी है। विगत में इस प्रकार के अनेक वीरों का भी उल्लेख है जिनका प्रभाव उस समय के जनमानस में लम्बे समय तक रहा, उन से सम्बन्धित काव्य, गीत, कहावतें आज भी जनता में प्रचलित हैं। अनेक ख्यातों और हस्तलिखित ऐतिहासिक ग्रंथों का अध्ययन कर मैंने ऐसे पुरुषों तथा विशिष्ट स्थानों आदि पर इस भाग में ६४ पृष्ठों में टिप्पणियां दी हैं, आशा है ये इतिहासकारों के लिये उपयोगी होंगी और जब भी समाज सापेक्ष तथ्यों का आधार लेकर इतिहास लिखे जायेंगे तो इस प्रकार की सामग्री से तथ्यान्वेषकों का मार्ग-दर्शन हो सकेगा।

तीसरे भाग को तैयार करने के दौरान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की उदयपुर शाखा में मुझे एक महत्वपूर्ण ग्रंथ-ग्रंथांक २७१७ (६०८) की प्रति देखने को मिली, जिसमें मारवाड़ के राठोड़ जागीरदारों की पीढ़ियां तथा गांवों के पट्टों की विगत व्यवस्थित रूप में दी हुई थी। मैंने उस ग्रंथ को जोधपुर मंगवाकर उसकी प्रतिलिपि करवाई और अध्ययन करने पर पता लगा कि सामग्री इतिहास की दृष्टि से बड़ी महत्वपूर्ण है। नैणसी ने अपनी विगत में गांवों के भौगोलिक तथ्य तथा फसल व बसने वाली प्रमुख जातियों आदि का उल्लेख तो किया है, पर जागीरदारों का उल्लेख नहीं किया, यह कमी मुझे प्रारम्भ से ही अखर रही थी। इस सामग्री के समायोजन से न केवल गांवों के ऐतिहासिक महत्व को उजागर करने में सहायता मिलेगी अपितु प्राचीन राजस्थानी में जो अपार स्फुट साहित्य बिखरा

पड़ा है उसकी ऐतिहासिकता को समझने में भी इससे सहायता मिलेगी। इस प्रकार की सामग्री के अभाव में, बहुत सा स्फुट साहित्य जो यहाँ के वीरों, दातारों और साहित्य की कद्र करने वालों की प्रशंसा में लिखा गया है उसका कई बार अर्थ लगाना कठिन हो जाता है और इतिहास में एक ही नाम के कई व्यक्ति होने के कारण कई भ्रान्तियाँ पैदा हो जाती हैं। उदाहरण के लिए डिंगल गीतों को लिया जा सकता है। गीतों में प्रायः नायक का नाम, जाति, पिता या पूर्वजों का नाम आदि देने की परिपाटी है, परन्तु जब तक उस व्यक्ति के गाँव और खाँप आदि से सम्बन्ध नहीं जोड़ा जाता तब तक जिस घटना-प्रसंग को लेकर जिस नायक पर काव्य-रचना की गई है, उस तक पहुंचना बड़ा कठिन होता है। पीढ़ियों की सूची से यह कार्य काफी सरल हो जाता है, और इस प्रकार इतिहास की अनेक आंतरिक उलझनों को सुलझाया जा सकता है। शोध-कर्त्ताओं की सुविधा के लिए मैंने पाद-टिप्पणी में यह भी संकेत दे दिया है कि कौनसा जागीरदार किस गाँव की पीढ़ियों में से फंटकर उस गाँव का जागीर-दार बना। कुछ व्यक्तियों के बारे में प्राप्त ऐतिहासिक जानकारी भी फुटनोट में रखी गई है, आशा है वह शोधकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

विगत के प्रत्येक परगने के अन्त में नैणसी ने सांसण के गाँवों का विवरण दिया है जिनमें चारणों, भाटों, ब्राह्मणों आदि को दिये गये गाँवों का वृत्तान्त है। इनमें खास तौर से चारणों को दिये गये गाँवों का वर्णन राजस्थानी-साहित्य के शोधकर्त्ताओं के लिए बड़ा उपयोगी है। शोधकर्त्ताओं की सुविधा के लिये इस भाग के अन्त में उन गाँवों की सामग्री के आधार पर विस्तृत सारणियां भी दे दी गई हैं।

विगत के महत्व और सम्पादन-पद्धति आदि पर प्रथम भाग की भूमिका में विस्तृत प्रकाश डाल दिया गया है। अतः यहाँ केवल इतना कहना पर्याप्त होगा कि न केवल इतिहास परन्तु भूगोल, समाज-शास्त्र, नृतत्व-शास्त्र, राज्य-प्रशासन आदि अनेक दृष्टियों में विगत का महत्व है और इस तीसरे भाग के प्रकाशन से इसके अध्ययन में शोधार्थियों को विशेष सुविधा होगी, ऐसी आशा है।

इस ग्रंथ का सम्पादन-कार्य श्रद्धेय पुरातत्वाचार्य मुनि जिनविजयी के आदेश से आज से कोई १० वर्ष पूर्व मैंने प्रारम्भ किया था। इसके दो भाग तो यथासमय प्रकाशित हो गये थे, पर तीसरे भाग के प्रकाशन में अनेक

अप्रत्याशित व्यवधान आ खड़े हुए। प्रतिष्ठान में लम्बे समय तक स्थायी निदेशक के अभाव में प्रशासनिक कठिनाइयों के कारण अवरोध आता रहा और साथ ही प्रेसों की असुविधा के कारण भी बडी परेशानी उठानी पड़ी। इस भाग ने चार प्रेसों की यात्रा की, तब कहीं जाकर इसकी छपाई का कार्य पूर्ण हो पाया है। पर इन सब कठिनाइयों के वावजूद मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस ग्रंथ के महत्व को इस दौरान में इतिहासकारों ने समझ लिया और देश और विदेश के अनेक शोधार्थी इस ग्रंथ की सामग्री का आधार लेकर अपना शोध-कार्य कर रहे है, इस प्रकार राजस्थान के इतिहास की नवीन शोध-दृष्टि को फलीभूत करने मे इस ग्रंथ द्वारा जो योगदान मिल रहा है उसमें मुझे विशेष सतोष है।

इस भाग में दी गई ऐतिहासिक व्यक्तियों की जन्म-कुण्डलियों[1] को प्रसिद्ध इतिहासविद् डॉ० रघुवीरसिंहजी (सीतामऊ) ने देख-परख कर ईस्वी सन् व तारीख भी प्रत्येक कुण्डली के साथ लगा देने की कृपा की है जिसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

मेरे अनुज हुकमसिंह भाटी एम० ए० ने ग्रंथ के अन्त में दी गई सारिणियों को तैयार करने में पूरी सहायता की जिसके लिए उसे आशीर्वाद देता हूँ। इस भाग का लगभग आधा भाग सुमेर प्रिण्टिङ्ग प्रेस के संचालक श्री सरदारमलजी थानवी ने सुव्यवस्था पूर्वक छापा है, जिसके लिये मैं इनका आभारी हूँ।

अन्त में मैं प्रतिष्ठान के वर्तमान निदेशक श्री जैन व उनके प्रकाशन विभाग के अधिकारियों का भी आभार व्यक्त करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि जिन्होने अनेक कठिनाइयों के बावजूद इस भाग के प्रकाशन में रुचि लेकर कार्य को सम्पन्न करने में वांछित योग दिया।

चौपासनी, जोधपुर
रक्षाबंधन ३-८-७४

नारायणसिंह भाटी

---

१. ये कुडलियें मुझे वारहठ देवकरणजी इन्दोकली के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं।

—: विषयानुक्रम :—



विगत की विस्तृत सूची

[मारवाड़ के ७ परगनों (तीनों भागों) की विस्तृत सूची]

वात परगने सोझत री

वात परगने जैतारण री

द्वितीय भाग

वात परगने फलोधी री

बात परगने मेड़ते री

वात परगने सीवाणे री

वात परगने पोहकरण री

भाग १ व २ के परिशिष्टों की विस्तृत सूची

भाग १

परिशिष्ट १ (क) कमठां री विगत

नीवांणां री विगत (ख)

गढ जोधपुर नीवांण छै जिकां की यादवास्त (ग)

भाग-२

परिशिष्ट-१

(क) बात परगने सांचोर री

(ख) परगने जालोर रो हाल

(ग) परगने भीनमाळ रौ हाल

(घ) परगने नागोर रौ हाल

(ड़) परगने मारोठ रौ हाल

परिशिष्ट २

[कुछ परगनो सम्बन्धी अतिरिक्त ज्ञातव्य]

(ख) परगना मेड़ता

(ग) परगने सीवाणे रो हाल

परिशिष्ट ३

[महाराजा जसवंतसिंह रै समै रा रीत किरियावर]

परिशिष्ट-४

[डावी नै जीवणी मिसला री विगत]

मिसल डावी

[मिसलांरो खापां फटी जिणरी विगत]

परिशिष्ट ५

[जोधपुर रा चाकरा री विगत]

मारवाड़ रा परगनां री विगत

शोध-सूत्र : प्रथम भाग

परगना जोधपुर

जोधपुर की प्राचीन राजधानी मण्डोर थी। यह स्थान अति प्राचीन है। पद्मपुराण में इसका उल्लेख मिलता है। यहाँ का भोगिशैल पर्वत सुमेरु का पुत्र माना जाता है। यहाँ मण्डलेश्वर महादेव आदि पवित्र स्थानों का बड़ा माहात्म्य है। मण्डोर की स्थापना मन्दोदर दैत्य की की हुई मानी जाती है। यही उसकी लड़की मन्दोदरी का विवाह लंकापति रावण से हुआ था।

(पृ० १/अनु० १-२)

मण्डोर काफी समय तक पँवारों की राजधानी रहा। धरणीवाराह ने अपने भाइयों को नौ किलों का मालिक बनाया था, उनमें से यह किला सांवत को प्रदान किया। (१/२)

पंवारों के पश्चात् यहाँ पड़िहारों का राज्य कायम हुआ। इनमें नागराजन का पुत्र नाहड़राव बड़ा प्रसिद्ध शासक हुआ। उसने यहाँ अनेक निर्माण-कार्य करवाये। नाहड़राव ने अपनी पुत्री की सगाई सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज से की थी, पर बाद में पृथ्वीराज में अनेक खामियाँ बताकर उसके साथ लड़की व्याहने से इन्कार कर दिया, जिसके फलस्वरूप पृथ्वीराज ने चढ़ाई कर दी। नाहड़राव हार गया। पृथ्वीराज की कंचनमाला से शादी हुई। पाटण के भीमदे के साथ युद्ध कर धवलेहर में नाहड़राव मारा गया। (२-३/३-५)

चहुवान पृथ्वीराज ने मण्डोर महणसी अल्ह को दिया। जब पृथ्वीराज साहबुद्दीन गौरी द्वारा पकड़ा गया तब मण्डोर भी उसके हाथ से निकल गया। सवत् ११७३ के लगभग यहाँ मुगलों का राज्य हुआ। (४/५)

सेतराम का पुत्र राठौड़ सीहा कन्नौज से द्वारिका जा रहा था। उस समय अनिहलवाड़ा पत्तन में मूलराज सोलंकी राज्य कर रहा था। वह लाखा फूलाणी से अपने बाप का बेर लेने को बहुत उत्सुक था। उसने इसके लिए पाटण की देवी भद्रकाली की बड़ी उपासना की। देवी ने आदेश दिया कि लाखा की मृत्यु सीहा के हाथ से ही सम्भव है। सीहा कन्नौज से द्वारिका को चला है, अतः उससे मिलकर यह काम करो। मूलराज ने ऐसा ही किया। उसने सीहा की बड़ी आवभगत की तथा अपनी पुत्री का विवाह उससे कर देने की इच्छा प्रकट की। सीहा ने द्वारिका से लौटते समय यह कार्य करने का वायदा किया। लौटते समय दीपावली के दिन उन्होने लाखा पर हमला किया। लाखा खुले मैदान मे युद्ध कर काम आया। मेहद झाले ने इस अवसर पर अच्छा काम दिया, अतः उसे सीहा ने हलवद जागीर में दी। (५-८/६-१३)

मूलराज ने अपनी बहन राजां का विवाह सीहा से किया। सीहा कन्नौज लौटा। उसके पहले की रानी से चार पुत्र थे। इस रानी से तीन पुत्र हुए— आसथान, सोनग और अज। सीहा का स्वर्गवास होने पर दोनों रानियों में बनी नहीं, तब वह अपने पुत्रों सहित पाटण को रवाना हुई। (८-६/१२-१३)

रास्ते में ये लोग पाली में ठहरे जहाँ राणा के गुरु पालीवाल ब्राह्मण रहते थे। वहाँ मेर आदि जातियों के लुटेरों का बड़ा भय था। पाली वालों ने इन्हें खानदानी व वीर समझकर अपनी रक्षार्थ वही रहने का आग्रह किया। इनकी मांगे भी उन्होंने स्वीकार की। वहाँ इन्होंने अपना अच्छा प्रभुत्व कायम कर लिया। जनता की सुरक्षा का इन्होंने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। (६-११/१४-१७)

फिर ये तीनों भाई वहाँ से अन्य स्थान को जाने के लिए तैयार हुए। तब जनता ने बड़े भाई आसथान को अनुनय-विनय कर वहीं रख लिया। ५०-६० गाव उसकी जागीर के लिए निश्चित कर दिये गये। (११-१२/१८-१६)

उस समय प्रतापसिंह गोहिल का अधिकार खेड़ पर था। उसने अपनी लड़की की शादी आसथान से करदी। वह आसथान की खूब आवभगत किया करता था। डाभी जेहली प्रतापसिंह का प्रधान था। उससे मिल कर कुछ दिनों पश्चात् खेड़ से आसथान ने गोहिलों का सफाया कर दिया। अपना पूर्ण अधिकार कायम करने के लिए उसने डाभियों को भी धोखे से मरवा दिया। इस प्रकार

निम्नलिखित गांव उसके अधिकार में आ गये—

गांव १४० खेड़ के

गांव १४० कोढरगे के

गांव १४० (देवराज गोगादे चाहड़दे आदि के)

———————

४२० कुल गांव तबसे राठौड़ों के अधिकार में आये।
(१२-१४/२०-२१)

आसथान के पश्चात् उसका पुत्र धुहड़ गद्दी पर बैठा। वह नागाणा नामक गांव मे गायों की वाहर करते हुए मारा गया। उसके पश्चात् रायपाल गद्दी पर बैठा। वह बड़ा दातार जूंझार हुआ तथा 'महिरेलण' कहलाया। उसने अपना अधिकार ५६० गांवों तक बढ़ाया। (१५/२२)

रायपाल के बाद कान्हड़राव, और उसके बाद जल्हण गद्दी पर बैठा। वह मुगलों से लड़ाई कर मारा गया। उसके बाद राव छाड़ा गद्दी पर बैठने का अधिकारी हुआ। सोनगरों से उसने कई युद्ध कर वीरगति प्राप्त की। तत्पश्चात् राव टीडा अधिकारी हुआ। उसने अनेक युद्ध लड़े। सोनगरों से अपने बाप का बैर लिया। अलाउद्दीन बादशाह से सिवाने में युद्ध कर उसने वीरगति प्राप्त की।
(१५/२४)

गद्दो पर कान्हड़दे छाडावत बैठा। सलखा को टीका नहीं दिया गया। सलखा के ४ बड़े वीर पुत्र हुए। उनमें माला बड़ा दूरदर्शी था। उसने जालोर के खांन की सहायता से कान्हड़दे को मरवा कर बाड़मेर पर अधिकार कायम किया। उसके भाई जैतमाल को सिवाना दिलवाया। वीरम सलखावत बड़ा वीर और अनेक युद्धों में विजयश्री का वरण करनेवाला हुआ। इसे बाड़मेर के केवल ५-७ गांव मिले। (१५-१६/२४-२७)

उन दिनों सोहण में अकाल पड़ा तब देपाल लूण जोया अपने मवेशी सहित उस ओर आये थे। माला जगमाल ने उन्हें लूटने का विचार किया। जोयों ने वीरम की शरण ली। इस पर वे वीरम से बहुत रुष्ट हुए। फिर जोयों के आग्रह पर वीरम ने उन्हें बीकानेर की सीमा तक सुरक्षित पहुँचा दिया। माला अन्दर ही अन्दर कुढ़ता रहा। (१६-१८/२७-२८)

इन परिस्थितियों के बीच ही गुजरात से एक घोड़ों की कतार आ रही थी

उसे वीरम ने अपने अधिकार में कर लिया। इसका पता लगने पर गुजरात के वादशाह ने महावलीखांन को १२००० सैनिक देकर महेवा पर विदा किया। जालोर आने पर उसने माला को कहलवाया कि या तो वीरम को निकाल दो वरना हम उसे पकड़ कर मारेंगे। इस पर वीरम अपने साथियो सहित जांगळू के सॉखला ऊदा सूजावत के पास चला गया। महावलीखांन ने पीछा किया। सॉखला ने वीरम को सवारी देकर आगे निकाल दिया। तव खांन वहाँ तक जाकर वापस लौट गया। (१८-१९/२९)

वीरम सोहण में देपाल के पास पहुँच गया। देपाल ने उसे भाई की तरह आमदनी का हकदार बना कर रखा। कुछ समय में उसके पास अच्छे राजपूत सैनिक शामिल हो गये, तव उसने जोयों से वहाँ की धरती छीन लेने का विचार किया। (१९-२०/२९-३१)

जोयों ने वीरम का वड़ा लिहाज किया, परन्तु वीरम माना नही। वह अपनी शक्ति वढ़ाता गया और एक दिन उनके पूज्य वृक्ष (फरास) को कटवा दिया। इस पर दला जोया ने आकर वीरम की गायें घेर लीं। युद्ध हुआ, जिसके परिणामस्वरूप वीरम मारा गया और जोयों की जीत हुई। वीरम की पत्नी मांगलियाणी को चार आदमी देवराजों के थल तक पहुँचा आये जहाँ कलाऊ ग्राम में अपना परिचय छिपाकर वह मजदूरी करने लगी। उसका पुत्र चूंडा वछड़े चराता था। (२१/३१)

एक दिन जव टोघड़े चराते-चराते चूंडा सो गया, तो एक काले सर्प ने आकर अपना फन उसके सिर पर कर दिया। आल्हा चारण उधर से आ रहा था। उसने जव यह देखा तो शकुन के आधार पर जाना कि यह कभी न कभी छत्रधारी राजा वनेगा। आल्हा ने वच्चे को जगाकर उसका परिचय पूछा। वह परिचय नहीं दे सका और अपनी माँ के पास ले गया। माँ ने वड़ी कठिनाई से अपना परिचय दिया, तव आल्हा ने वड़ा अफसोस किया और उनके रहने आदि की व्यवस्था की। (२१/३२)

चूंडा को ठीक कपड़े पहनाकर व शस्त्र वंधवाकर वह महेवे के स्वामी रावळ माला के पास ले गया, परन्तु माला को वीरम का दुर्व्यवहार याद था। इसलिए उसकी कोई आवभगत नही की और साधारण [illegible] की तरह उसे [illegible] [illegible]ा।

रावळ माला का प्रधान भोपा था। उसे चूँडा ने प्रसन्न किया, तब उसने रावळ से कह-सुन कर बड़ी मुश्किल से मण्डोर के पास सालोड़ी थाने पर उसे भेजा। (२१/३३)

चूंडा ने सालोड़ी आकर अपनी व्यवस्था जमाई और चामुण्डादेवी की खूब सेवा की। दिनों-दिन उसका प्रभुत्व बढ़ने लगा। लोग अच्छी सख्या में उसके यहाँ आने-जाने लगे। एक दिन देवी ने प्रसन्न होकर उसे बताया कि अमुक दिन सोने से भरी एक कतार आयेगी उसे तू हस्तगत कर लेना, फिर तुझे मैं गढपति बनाऊँगी। चूँडा ने ऐसा ही किया। सोना हाथ लगते ही उसने अपनी सैनिक-शक्ति बढ़ा ली। (२३/३५)

उन दिनों मण्डोर में बादशाही थाना था। उसका अधिकारी मुगल ऐबक था। चारों ओर विशेष आबादी नहीं थी। ईंदा, सीधल, साँखला, कोटेचा, आसायच आदि राजपूतों की चौरासियाँ थी। मुगल ऐबक ने इन सबको बेगार मे घास की गाड़ियाँ लाने का आदेश दिया। इनमें ईंदा टोहा बुजुर्ग आदमी था, उसने ऐबक से प्रार्थना की कि यह बेगार उचित नही है। परन्तु जब सुनवाई होती नही दिखाई दी तब वे घास की गाड़ियों के बहाने गाड़ियाँ सैनिकों से भर कर मण्डोर पहुँचे और जब ऐबक निरीक्षण के लिए आया, तो उस पर हमला कर उसे मार डाला। फिर तो साधारण से संघर्ष के बाद ही मण्डोर का गढ़ कब्जे में कर लिया। (२४-२५/३६-३७)

तत्पश्चात् ईंदों ने देखा कि इधर नागोर में मुगलों का थाना नजदीक पड़ता है और उधर राणा का प्रभाव भी है ऐसी स्थिति में गढ को कब्जे में रखना कठिन है, अतः चूँडा जैसे सुयोग्य व्यक्ति के अधिकार में गढ़ दे देना चाहिए, जिससे हम सब की सुरक्षा का प्रबन्ध भी हो जायेगा। चूँडा की स्वीकृति मिलने पर गढ उसे सौंप दिया गया तथा ईंदा गांवदेव ऊगड़ावत की पुत्री का विवाह उसके साथ कर उससे वायदा करवाया कि वह तथा उसके वंशज ईंदो के अधिकार की भूमि में दखल नही देंगे। चूँडा ने धीरे-धीरे अपनी व्यवस्था कायम की तथा सैनिक-शक्ति भी बढ़ाई। (२५-२६/३८-३९)

राव चूँडा का राज्य मण्डोर पर खूब जमा। उसने नागोर तथा डीडवाना पर भी अपना अधिकार जमा लिया। वृद्धावस्था में मोहिलाणी से शादी की। फिर भाटियों से चूँडा का बैर बँधा। फलस्वरूप राव केलण मुल्तान से सलेम

खान को उस पर चढा लाया। संवत् १४२८ में नागोर में चूँडा १२ योद्धाओं सहित काम आया और अपने कुँवरों को वहाँ से सुरक्षित निकाल दिया। मरते समय चूँडा ने रिणमल से ववन मागा कि मण्डोर का टीका मेहिलाणी के पुत्र कान्हा को दिया जाय। रिणमल ने ऐसा ही किया और सलेमखांन को मार कर बाप का वैर लिया। (२५-२६/४०-४१)

रिणमल मेवाड में जाकर अपने भानजे राणा कुम्भा व मोकल के पास रहने लगा। कान्हा वड़ा निर्वल शासक हुआ। राव रिणधीर चूँडावत ने उससे राज्य छीन लिया। सता को शासक बनाया और रिणधीर सारा काम-काज देखने लगा। सता का लडका नरवद बुद्धिहीन व्यक्ति था। वह रिणधीर को मारने के प्रयत्न लगातार करने लगा। तव रिणधीर धणले में रिणमल के पास गया और उसे समझा-बुझा कर राणा मोकल की सहायता से मण्डोर पर चढ़ाई की। सता भाग गया, नरवद ने मुकावला किया पर घायल होकर गिरा। रिणमल ने सीसोदियों की फौज को वहीं से विदा कर दिया। वे नरबद को उठाकर चित्तौड़ लौट गये। नरवद राणा का चाकर हुआ। (२६-२७/४२-४४)

इसी समय के आस-पास मेवाड़ के राणा मोकल के पासवानिये भाइयों चाचा और मेरा ने पही के पहाड़ों पर अपने सुरक्षित मकान वनवाये थे, उन रिणमल की सहायता से मोकल ने गिरवा दिया था, इससे वे द्वेष रखने लगे। रिणमल ने राणा को उनसे सतर्क रहने को कहा था, पर ऐसा अवसर आया कि इधर राणा मोकल के दामाद गागुरण के अचलदास खीची पर मांडव का वादशाह चढ आया, उसकी सहायतार्थ जाने के लिए राणा ने भी रिणमल को मण्डोर से अपनी फौज ले आने को कहा। उधर रिणमल गया और पीछे मौका देख कर चाचा और मेरा ने मोकल को मार डाला। कुम्भा ने रिणमल को सूचना देकर फौरन सहायतार्थ आने को कहा। रिणमल विना कुछ खाये-पिये ४००० घुड़सवार लेकर मेवाड़ आया। चाचा और मेरा पही के पहाड़ों में छिप गये, परन्तु अन्त में मारे गये। (२७-२६/४५-४८)

अव चित्तौड़ का शासक राणा कुम्भा है, पर आज्ञा रिणमल की ही चलती है। चूँडा सीसोदिया जैसे वुजुर्ग मांडवे जा वैठ रहे, वाकी के चुपचाप सहन करते गये। अन्त में राठोड़ों का वर्चस्व समाप्त करने के उद्देश्य से महपा पँवार ने चूँडा लखावत को वुलवाया और रात में सोते हुए रिणमल की हत्या करवा

दी। जोधा तलहटी में घोड़ों के पास सोया था, जहाँ उसे छोकरी ने आवाज देकर सूचित किया तब वह अपने सवारों सहित वहाँ से भाग निकला। रिणमल पर आक्रमण होते समय भाटी सता, लूणकरण हमीर का, रिणधीर सूरावत तथा बीजा विक्रमादित्य काम आये। (२९-३०/४९-५०)

जब जोधा वहाँ से निकला तो भीव चूँडावत को वही छोडना पड़ा, क्योंकि वह शराब के अत्यधिक नशे मे था। चित्तौड़ से ८-१० कोस पर राणा की फौज ने जोधा पर आक्रमण किया, जिसमें जोधा के २०० सवार मारे गये। कोस ३० पर फिर युद्ध हुआ, जिसमें कितने ही लोग काम आये। यों करते-करते सोमेश्वर के घाटे पर जब जोधा पहुँचा तो उसके पास केवल २००-२५० आदमी रह गये थे। उन्होने बड़ी वीरता से राणा की फौज का मुकाबला किया और केवल ७ सवारों से जोधा को घाटे के पार उतारा। इस युद्ध में बरजाग भीवोत घायल होकर गिरा। उसे उठाकर राणा की फौज लौट गई। जोधा मण्डोर पहुँचा। वहाँ से अपना साज-सामान लेकर नापा सांखला के पास जांगलू चला गया। नापा सांखला की लड़की नोरगदे जोधा को ब्याही हुई थी। (३१/५१)

अब जहाँ कोड़मदेसर तालाब है वहाँ रिणमल के बारह दिनों की रश्म अदा की। राणा ने मण्डोर पर अधिकार करने के लिए राव राघवदे सिंहमलोत आदि को भेजा। सहेसमल चूँडावत को अपना चाकर रखकर सोजत का पट्टा दिया। आका सीसोदिया, हीगोला आहाड़ा, नरबद सतावत, सता चूँडावत आदि जोधा को मार डालने के लिए प्रयत्नशील हुए। अलग-अलग थानों पर भी समुचित व्यवस्था की गई। जोधा विपत्ति के मारे इधर-उधर भागता रहा। १२ वर्ष तक हिम्मत रख कर उसने कष्ट सहे। दो बार नरबद ने जोधा पर चढाई की और उसका सामान लूट लिया। (३२-३३/५२-५५)

इसी दौरान राव जोधा ने अपने भाई-बन्धों को शामिल किया और संगठित रूप में प्रयास करके धरती पर अधिकार करने का विचार किया। उस वर्ष अकाल पड़ा था, अनाज की बडी कमी थी। जब वे सोढी मूलवणी के यहाँ पहुँचे, तो मजीष्ठ डाल कर उसने उन्हें लपसी खिलाई। वहाँ से वे फलोदी कस्बे मे हरभू के पास पहुँचे, जो बडा करामाती व्यक्ति था। उसने उनके आने से पहले ही भोजन की व्यवस्था करवा दी और उनके आते ही सर्वप्रथम भोजन की मनुहार की तथा

बहुत अच्छा भोजन करवाया। सभी लोग दंग रह गये। फिर जोधा ने हरभू से पूछा– आप मे वड़ा चमत्कार है, आप भविष्य की वात जानते है, आप बताएँ कि हमारे दिन कब अनुकूल होंगे। हरभू ने कहा—आज से ही अनुकूल है, तुम अपना राज्य लेने का प्रयत्न करो। वही से जोधा अविलम्ब सेत्रावे गया और वहाँ से रावत लूणा की स्त्री के सहयोग से उसके १४० घोड़े लेकर मण्डोर पर चढ़ाई की। आका सीसोदिया और हीगोला आहाड़ मारे गये। मण्डोर पर अधिकार कर चौकड़ी तथा कौसाणे के थानों पर अधिकार किया। फिर सोजत, धणला आदि भी ले लिये। वहीं सोजत में अपने साथियों को बुलाकर विजयोत्सव मनाया। दो वर्ष तक सोजत में रहने के वाद मण्डोर मे अपना स्थाई थाना रखा।
(३३-३५/५६-५७)

फिर राणा कुम्भा उस पर चढ आया। जोधा के पास घोड़े बहुत थोड़े थे। वह १०,००० राठौड़ों को लेकर गाड़ियों में वैठ उसका सामना करने गया। राणा कुम्भा इस प्रकार मर मिटने के लिए उद्यत राठौड़ों को देख भाग खड़ा हुआ। जोधा ने गोडवाड़ का इलाका लूटा और जाकर पीछोला तालाव पर अपने घोडो को पानी पिलाया। चित्तौड को लूटा। समझौता करवाने वालों के वीच-वचाव से बवूलों वाली धरती जोधा के रही और आंवल वाली धरती कुम्भा के। जोधा ने रिणमल के वैर में सोजत व जैतारण दबा कर रख लिये।
(३५-३६/५८)

राव रिणमल को मारने के वाद कुम्भा ने उसकी लाश उठाने नही दी। तव चाँदण खिड़िया ने बडी जोखिम उठाकर रिणमल का दाह-संस्कार किया और फूल गगाजी में प्रवेश किये। जोधा तथा उसके वशजों ने अनेक ग्राम इस उपकार के वदले में चाँदण तथा उसके वेटे पोतों को दिये। (३७/५९)

राव जोधा

राव जोधा पड़िहारों का भानजा था। पड़िहार जेसल राणा की पुत्री हंसाबाई का पुत्र था। सवत् १४७२ वैसाख सुद ४ वुधवार को इसका जन्म हुआ। सवत् १५१२ के करीव धरती पुनः प्राप्त की और सवत् १५१५ में चिडिया टूक पर किले की नीव दी। जोधा के पास ये परगने थे—जोधपुर, मेडता, सोजत, जैतारण, जाँगलू। यह भी कहा जाता है कि पूंगल के स्वामी राणगदे की पुत्री कोड़मदे चूंडा के वैर में रिणमल को व्याही थी, उसका पुत्र जोधा था। (३८/६०-६१)

राव जोधा २६ वर्ष राज्य भोगकर संवत् १५४१ में स्वर्गवासी हुए। अपने भाइयों को इस प्रकार धरती बांटकर बसाया—

१. अखैराज रिणमलोत को सोजत की बगड़ी।
२. डूंगरसी रिणमलोत को भाद्राजून।
३. राठौड़ वाला भाखर के को खेरला।
४. राठौड़ रूप रिणमलोत को चाडी।
५. राठौड़ मंडला रिणमलोत को बीकानेर का सांदूड़ा।
६. राठौड़ करना रिणमलोत को लूणावास।
७. राठौड़ पाता रिणमलोत को करणू।
८. राठौड़ वैरा रिणमलोत को सोजत का दुधवड़।
९. राठौड़ जगमाल रिणमलोत के पुत्र खेतसी को नेतड़ां। (३८-३९/६२)

राव जोधा ने अपने पुत्रों को धरती इस प्रकार बांटकर दी—

१. सातल को जोधपुर।
२. नीवा कंवरपदे में मर गया।
३. भारमल व जोगा को कोढणा ऊहड़ों वाला।
४. सिवराज को पहले सिवाना दिया था फिर दूनाड़ा।
५. करमसी तथा रायपाल को नाहढ़सरा दिया। सलेहखांन ने इन्हें आसोप व खींवसर दिये। (३९-४०/६३)

राव सातल

राव सातल जोधावत संवत् १५४१ में गद्दी पर बैठा। ४ वर्ष राज्य करके १५४५ में देवलोक सिधारा। इसने मलूखां से कुसांणे में युद्ध किया था। वरसिंघ ने सांभर लूटी तब मलूखां चढ़ आया था। इस युद्ध में बरजांग भींवोत ने बड़ा काम दिया। सूजा घायल होकर गिरा। सातल की विजय हुई। सातल के कोई पुत्र न था, नरा सूजावत गोद था। नरा ने पोकरण पर खींवा लूंका को हटाकर अधिकार कर लिया था। फिर गोइंद नरावत पोकरण का अधिकारी हुआ।

(४०-४१/६४-६५)

राव गांगा

कुंवर बाघा सूजावत मांगलियों का भानजा था, परन्तु कंवरपदे में ही कालकलवित हुआ। राव गांगा बाघावत चहुवानों का भानजा था। इसे ईडर

से लाकर सरदारों ने संवत् १५७२ में गद्दी पर बैठाया। संवत् १५८८ में इसका स्वर्गवास हुआ। इसने स्वयं सेवकी में नागोर की फौज से युद्ध किया था। अनेक योद्धा इसमें मारे गये। ईडर को जब गुजरात के बादशाह ने दबा लिया, तो इसने राणा सांगा और वीरमदे मेड़तिया की सहायता से उसे मुक्त करवाया। (४१-४२/६६-६६)

राव मालदे

राव मालदे गांगावत देवड़ों का भानजा था। संवत् १५८८ जेठ सुदि ४ बुधवार को गद्दी पर बैठा। संवत् १६१६ काती सुदि १२ को इसकी मृत्यु हुई। यह राव बड़ा प्रतापी व भाग्यशाली हुआ। इसने जोधपुर का गढ़ संवरवाया तथा खूब धरती जीती। इसने मेड़ता, नागोर, सांभर, वांवळ, मालपुरा, साचोर, सिवाना, डीडवाना, जालोर, फ़लोदी, पोकरण, खाटू, जाजपुर, बधनोर, गोडवाड़, कोटड़ा, राधणपुर, वाहतखड़, बीकानेर, रायपुर, बाड़मेर, सलेमाबाद, भाद्राजून आदि स्थानों पर अपना अधिकार किया। अनेक किलों को गिरवाया और कई नये किले बनवाये तथा उनकी मरम्मत करवाई। (४२-४५/७०-७१)

इसने जैता पंचायणोत को टाकों की लड़की ब्याही तथा राव को हरसोळाव १२ गांव सहित देकर समझौता किया। १६१७ में देवीदास से समझौता कर जोधपुर में बसाया। संवत् १५६३ में सीरवी गोयंद को पकड़ा। १५६३ में जैसलमेर ऊमादे भटियाणी से शादी की और उसका रूठना १५६५ में हुआ। ऊमादे मेवाड़ के केलवे में रही तथा १६१६ में जब राव के स्वर्गवास का समाचार सुना तो सती हुई। मालदे का विवाह झाला जैत की लड़की सरूपदे से हुआ था। उसकी छोटी बहन भी बड़ी सुन्दर थी, उससे भी विवाह करने का प्रस्ताव मालदे ने किया। झाला माना नहीं, उसने चुपके से उसकी शादी राणा उदयसिंह से कर दी। इससे मालदे और उदयसिंह में वैर-भाव बढ़ा। राव ने गोढवाड़ में अपने थाने बैठाये तथा कुम्भलमेर पर भी चढ़ाई की, परन्तु सफलता न मिली। (४७-४८/७३-७६)

बालीसा सूजा सांवतोत एक बार राणा उदयसिंह से रूठकर जोधपुर आ बसा। मालदे ने उसका बड़ा स्वागत किया। राणा से मालदे का विरोध था ही, उसने राणा पर जब फौज विदा की तो सूजा को उसके साथ जाने को कहा। सूजा ने मना कर दिया, परन्तु अधिक दबाने पर आगे के प्रबन्ध की

जिम्मेदारी के वहाने वह रवाना हुआ और राणा से जा मिला। राणा ने आदर सहित उसे नाडूल की जागीर १२ गांवों से दी। अव तो मालदे सूजा से बड़ा रुष्ट हुआ। उसने अपने प्रसिद्ध सरदार वीजा, नगा, धना आदि को बुलाकर सूजा से वैर लेने को कहा। ये ५०० सवारों से नाडूल गये और कुछ सिपाहियों को गांव की गायें घेर लाने को भेजा। सूजा को खवर मिलते ही वह समझ गया कि यह कोई चाल है। उसने अपने सभी लोगों को शामिल कर पीछा किया। वींजा, धना काम आये। नगा को लोगों ने वहाँ से निकाला। उसने भी बड़ा पराक्रम दिखाया था। (४८-५१/७७-८०)

संवत् १६१३ में जव राणा उदयसिह और हाजीखां के बीच युद्ध हुआ तव राठौड़ देवीदास ने सूजा को बीजा, धना का बैर याद दिलाते हुए ललकार कर उसे मारा। (५२/८१)

राव मालदे के कुल ८ लड़कियाँ हुई थीं। उनका विवाह इस प्रकार किया—सजना जैसलमेर के रावळ हरराज को, कनकावती (नोरंगदे) गुजरात के वादशाह महमद को, पोहपावती हलवद के राणा आसकरण को, हंसाबाई लूनकरण सेखावत को, रतनावती बाई हाजीखां को, वाल्हाबाई अमरकोट के सोढा वरसिंघ को, राजकुंवर वूंदी के हाडा सुरतांण को, एक लड़की बाघव के वाघेले सरदार को। (५२-५३/८२-८३)

मालदे का प्रताप सुनकर बाहरठ आसा दीतावत आया था। उसने कुंवर चंद्रसेन की प्रशसा में गुण चौरासी रूपक लिखा। उन्ही दिनों राव ने नागोर पर अधिकार किया था। खांन के दिये दो गांव नागोर परगने के आसा के पास थे। मालदे ने कहा कि खांन के दिये हुए सांसण नही माने जायेंगे, इनके बदले या तो दूसरे गांव ले लो या उनको हमारी तरफ से दान-स्वरूप स्वीकार करो। तव आसा ने धरणा दिया और अपने गले पर कटारी से घाव किये। ऊमादें भटियाणी ने अपने पास रख कर इनका इलाज करवाया और स्वस्थ होने पर सीख दी। ऊमादे सती हुई तव आसा ने कवित्त कहे। (५३-५४/८३-८४)

मालदे ने पचोली अभा को २ गांव नदवाण, नहेड़वा दिये थे। रावळ मेघराज को महेवा के अतिरिक्त जोधपुर के तीन गांव झत्रर, वावळली, आगोळाई दिये गये थे। भाटी राव जेसा पूगलिया चढ़ आया, उस युद्ध में ५ बड़े सरदार राव के काम आये। राठौड़ अचला पंचायणोत ने नागोर की प्रोल के लोहे के

दरवाजे लाकर जोधपुर के किले में चढ़ाये। फिर अचला नागोर में ही काम आया। नागोर में भाटी दुरजण जोधावत तथा राव जोगा सदावत भी काम आये थे। (५४-५५/८६-८७)

राव मालदे के इतनी रानियाँ थीं—सरूपदे झाली, ऊमादे भटियाणी, अरघां झाली, हीरां झाली, रंभावती हाडो, लाछळदे कछवाही, जमन टांकणी, लाछ आहाड़ी, जामवाली, सोनगरी, धारबाई भटियाणी, भांण, चहुवाण, जादम, सोढी, जसड़। (५५-५६/८८)

संवत् १६०० में वीरमदे तथा राव कल्याणमल वीकानेरिया सहसराम के मारफत शेरशाह के पास फरियादी होकर गये। राव को खवर लगी तो वह भी ससैन्य मुकाबला करने चला। गिरटरी और समेल दो पहाड़ियों के वीच युद्ध हुआ, जिसमें जैता कूंपा आदि १९ सरदार काम आये। जोधपुर शेरशाह की फौज आई तब अचळा सिवराजोत, तिलोकसी वरजांगोत ऊदावत, भाटी मालो जोधावत (समेल में घायल हो चुक था) राव पतौ दुरजणसालोत, चरड़ो अरकमल चूंडा रौ, भा. सांकर सूरावत (गढ़ पर छतरीहै) आदि काम आये। वादशाह सूरशाह ने किले पर मस्जिद वनवाई। (५६-५८/८८-८९)

संवत् १६१० में वैसाख वदि २ को मालदे ने मेड़ता पर चढ़ाई की। जैमल मेड़तिया ने वाहर आकर जवरदस्त युद्ध किया। राव को लौटना पड़ा। राठौड़ पृथ्वीराज जैतावत आदि १४ सरदार काम आये। राठौड़ जैमल के अखैराज भादावत आदि ६ सरदार काम आये। (५९-६०/९०-९१)

हरमाड़ा के युद्ध में राव ने १५०० सैनिकों की सहायता हाजीखां को दी थी। उधर राणा उदयसिह के साथ कल्याणमल वीकानेरिया ईडर, वाँसवाड़ा, देवलिया, डूगरपुर आदि के शासक तथा मेड़तिया जैमल थे। हाजीखां जीत गया। जैमल के आदमी मेड़ता खाली कर वघनोर चले गये। मालदे ने जैमल की कोटड़ी गिरवायी तथा आधा मेड़ता जगमाल वीरमदेओत को दिया। जयमल फिर वादशाह से सहायता प्राप्त करने गया। सफरदीन मुगल फौज लेकर आया। मालकोट में रहकर देवीदास ने मुकावला करने का दृढ़ निश्चय किया। मालदे ने उसे गढ़ खाली कर देने को कहा और चंद्रसेन आदि को भेज कर वुलवाया। पर उसने गढ़ खाली नही किया और युद्ध किया। वुर्ज उड़ जाने पर किले से

निकला तब सफरदीन ने पीछा किया। गांव सातलवास के पास युद्ध हुआ। राव देवीदास ४० योद्धाओं सहित काम आया। (६०-६३/९२)

बादशाह सूर का थानायत हाजी अली फतेखांन पीपलण के पहाड़ों में मालदे पर ५००० पठानों से चढ़ आया। मालदे के २००० योद्धा थे। मालदे ने युद्ध जीता। आदमी ४०० काम आये। अनेक सरदार भी काम आये तथा घायल हुए। (६३/९३)

संवत् १६०४ में डूंगरसी से मालदे ने फलौदी ली। १६०७ में पोकरण सातलमेर राव जैतमाल से ली। बाड़मेर कोटड़ा लिया। तब रावत भीवा जैसेलमेर से हरराज को मदद के लिये लाया। बाड़मेर के थाने से रतनसिंघ खीवावत आदि को सामान छोड़कर भागना पड़ा। (६३-६४/९४)

तब कंवर रायमल तथा पृथ्वीराज जैतावत आदि को मण्डोर से फौज देकर मालदे ने जैसलमेर पर विदा किया। उन्होंने जैसलमेर के बगीचों का नुकसान किया और शहर में लूट-पाट की। रावळ ने गढ का आश्रय लिया। राव का चाकर भाटी मूळा नीबावत वहाँ काम आया। (६४/९५)

संवत् १६१६ में आसोज वदि ७ को रावजी की ओर से देवीदास जैतावत, राठौड़ पता, बाला नेतावत ने जालोर का गढ़ लिया। मालक वूढण निकल भागा। चंद्रसेन गढ़ पर चढ़ा। राव जेसा पूगलिया जब फलोदी पर आया तब राव की सेना के भाटी किसना नीबावत आदि ६ योद्धा काम आये। (६४/९५)

(६५/९७-१०१) पूर्वोक्त वृत्तांत ही यहाँ संक्षेप में दिया गया है।

राव चंद्रसेन

राव चंद्रसेन मालदेवोत झालों का भानजा था। सवत् १५९८ सांवण सुद ८ को जन्म हुआ। संवत् १६१९ मे गद्दी पर बैठा और संवत् १६३७ को स्वर्गवास हुआ। मालदे का जब स्वर्गवास हुआ तब चद्रसेन सिवाने में था। वहाँ से जोधपुर आया। उसकी माता झाली उदयसिह को फलोदी दिलवाकर फिर सती हुई।

(६५-६६/१०२-१०३)

गद्दी पर बैठते समय इतनी धरती चंद्रसेन के पास थी—जोधपुर, सोजत पोकरण, सिवाना, जालोर। जोधपुर संवत् १६२२ में उससे छूटा और फिर सभी परगने हाथ से निकलते गये। (६६-६७/१०४-१०५)

संवत् १६२० जेठ सुदि १२ को हसनकुलीखां को राव राम चढ़ाई के लिये लाया। तब उसे सोजत देने का वायदा चद्रसेन ने किया। संवत् १६२१ चैत सुदि १२ को फिर मुगल चढ़ आये। चंद्रसेन ने जोधपुर का किला सजाया। ६ महीने तक किसनदास गांगावत, करनोत आदि ने गढ़ में मुकावला किया। मुगल-सेना अधिक होने से चद्रसेन बातचीत करके संवत् १६२२ मगसर सुदि १० को गढ़ खाली करके भाद्राजून चला गया। सो० मानसिंघ, राव पतो नगावत, रा० तिलोकसी कूंपावत साथ में गये। (६७-६८/१०६-७)

एक वार वीकानेर के राजा रायसिंघ को वादशाह ने संवत् १६३१ से डेढ-दो वर्ष के लिये जोधपुर दिया। कुंवर दलपत यहाँ कांच के महल से गिर पड़ा था, परन्तु बच गया। (६८/१०८)

संवत् १६२४ माह सुदि १० को गढ जोजावर के पास इसमाइलकुली को राव लखमण भदावत ने लूटा। खूब माल-असवाव हाथ लगा। कई मुगल मारे गये। हाथी ४ हाल थगे। (६८/१०६)

संवत् १६२५ में चंद्रसेन ने सुरज हाड़ा की पुत्री के साथ रणथम्भोर में शादी की। संवत् १६२७ में वादशाह अकवर अजमेर के ख्वाजा की मनौती के लिये आया। राव चद्रसेन ५०० सवारों से वादशाह से मिलने को भाद्राजून से रवाना होकर नागोर आया। इसी समय उदयसिंह भी आया। कुंवर उगरसेन व रायसिंघ वादशाह के पास रहे। (६९/११०-१११)

संवत् १६२६ में जब राणा उदयसिंह को जैसलमेर वालों ने अपनी लड़की नही दी, तो भाद्राजून में चंद्रसेन ने अपनी लड़की करमेती की उससे शादी की। (६९/११२)

संवत् १६२७ मे चंद्रसेन भाद्राजून छोड़कर सिवाना में पीपलण के पहाड़ों मे आ वसा। उस समय कलाखान ने चढ़ाई की तब रा० देस पातलोत ने राव के हुक्म से युद्ध किया। लूनी नदी तक सीमा निश्चित हुई। (६९/११३)

संवत् १६२९ में चंद्रसेन अपने आदमियों सहित काणूजे आकर रहा। रतनसी खीवावत के लड़के उन दिनों मुगलों से संधी करके आसरलाई रह रहे थे। इन्हे चंद्रसेन ने अपने पास वसने के लिये कहा। उन्होंने स्वीकार नही किया। राव ने उन पर चढ़ाई की। ऊदावत वड़े नाराज हुए। उधर जोधपुर के वनियो

से रावजी ने कुछ सहायता मांगी थी वह उन्होंने नही दी और लूंकड़, संखलेचा, भंडसाली मुगलों को राव पर चढा लाये। इस समय रावत पचायण ने खूब सेवा की। (६६-७०/११४)

संवत् १६३१ के लगभग राव मेवाड़ के मुडाड़े ग्राम में जा रहा। उदयसिह की कन्या चांदा सीसोदणी से राव की शादी हुई थी, उसके पट्टे में यह गांव था। फिर सिरोही के कोरटा ग्राम में डेढ़ वर्ष तक रहा। १६३२ में पोकरण का कोट राव के आदमियों ने भाटियों को सौंपा। संवत् १६३२ में पता के सिवाने गढ में गोली लगी। राव के आदमी मुगलों को गढ सौंप कर उसके पास मुडाड़ा आ गये। (७०-/११५)

संवत् १६२६ में सोजत के मालिक राव राम की मृत्यु हुई। उसका लड़का करन बड़े-बूढ़ों की सलाह की परवाह नही करता था। तब राम के छोटे लड़के कला का पक्ष आसकरण तथा महेश कूपावत ने लिया तथा वे बादशाही चाकर पृथ्वीराज कूंपावत के पास कला को टीका दिलवाने की सिफारिश लेकर गये। पृथ्वीराज ने उन्हें आश्वस्त किया और बादशाह अकबर को कहकर सोजत कला को दिलवाई और ६० गांवों से सुराइता करन को दिलवाया। पृथ्वीराज की वसी के लिये उसे खैरवा देने का वायदा उन्होंने किया था, पर वे आते समय पृथ्वीराज से मिले ही नही। तब अवसर देखकर पृथ्वीराज ने खैरवा जोधपुर परगने के अधीन करवा दिया। (७१/११६)

एक बार कला बादशाह के दरबार में गया। वहाँ एक हुरम से उसका प्रेम हो गया। जब बादशाह को मालूम हुआ तो उसे मारने का हुक्म बादशाह ने दिया। वह सोजत से भाग कर डीघोड़ आया। शेख इभराइम ने उसे फुसला कर नाडुल बुलाया और वही धोखे से मार डाला। इस प्रकार सोजत का स्थान रिक्त देख सादूल महेसोत तथा आसकरण आदि ने डूगरपुर से चंद्रसेन को बुलवाया। (७२-७३/११७)

राव चंद्रसेन ने सिवराड़ में जब मुगलों से युद्ध किया था तो संवत् १६३५ में ऊहड, जैमल नैतसियोत अदि १२ प्रसिद्ध योद्धा काम आये। (७२/११८)

मोटा राजा के अधिकार में जैतारण के ६५ गाव थे। जब उसकी मृत्यु हुई तो बादशाह ने उसके लड़को में उनका बँटवारा इस प्रकार कर दिया—

२=।। सगतसिंघ उदैसिंघोत को, १८।। राव दलपत उदैसिंघोत को, ११ राव भोपत उदैसिघोत को, ३ राव माधोसिंघ उदैसिघोत को, ३ राव मोहणदास उदैसिंघोत को। (७३-७५/११६)

राव कल्याणदास रायमलोत पर, कुंवर भोपतसिंघ के साथ मोटा राजा ने जब फौज भेजी तो उसने सवत् १६४६ मंगसर वदी ७ को गढ़ के घेरा दिया। मंगसर वदि ७ को गढ ले लिया। इस युद्ध में ७ उदयसिंह के सरदार और ११ कल्याणदास के सरदार काम आये। उदयसिंह स्वयं भी वहाँ आया। संवत् १६४० में अकबर ने उदयसिंह को जोधपुर दिया था। (७५-७६/१२०-१२१)

मोटा राजा उदयसिंह

उदयसिह मालदेवोत तथा चंद्रसेन सगे भाई थे। संवत् १५८४ माघ सुदि १३ का जन्म, तथा १६४० में जोधपुर की गद्दी पर वैठा। संवत् १६५१ आसाढ़ वदि १ को लाहोर में इसकी मृत्यु हुई। प्ररम्भ में इसका मनसब ८०० सवारों का था। जोधपुर से दो तफे अलग थे—१ आसोप भांण कूंपावत को था, २ वीलाड़ा बाघ पृथ्वीराजोत को। १६४६ में नवाब खांनखांना मुदफर पर चढ़ाई को जा रहा था, तव इसे सोजत दिलवाई। (७६-७७/१२२-१२३)

सिवाना कल्याणदास से लिया था। कोटा १६५० में गोपालदास मांड-णोत फौजदार से लिया। समावली वादशाह ने दी थी, वह ग्वालियर से नजदीक है। सातलमेर—पोकरण भी वादशाह की ओर से जागीर में लिखी गई थी, परन्तु वहाँ अमल-दस्तूर नहीं हुआ। (७७/१२४)

कुंवर सूरजसिंघ भाटी गोयददास पर बड़ा कृपालु था। तुंवरों की वासणी उसके पट्टे में थी। आसोप का एक काम देकर उदयसिंह ने उसकी परीक्षा ली। आखिर वह काम करके आया। (७७-७८/१२५)

रायसिंघ ने चन्द्रसेनोत का वैर लेने को सिरोही पर चढ़ाई की। पता तेगा सुरावत को धोखे से मारा। संवत् १६४४ में वरसल पृथ्वीराजोत के कहने से देवड़े आये, उन्हें भी समाप्त किया। तव वरसल गुजरात में नवाव खांनखांना के पास चला गया। (७८/१२६)

राव राम व कला के समय में चारणों तथा ब्राह्मणों ने वहुत से गांव दान में ले लिये थे। संवत् १६४३ में जोधपुर परगने के १५ गांव तथा परगने

सोजत के ३५ गांव उदयसिंघ ने जब्त किये। दुरसा आढा अखा बारहठ के पास आया, अखा ने उसको सहयोग दिया। मोटाराजा उस समय गुजरात को जाते समय सोजत ठहरा, वहाँ चारणों ने काजेसर महादेव पर तागा (आत्महत्या करने के लिये प्रयास) किया। बारहठ अखा ने आत्महत्या की तथा दुरसा अढा ने भी घाव खाये पर बच गया। (७८-७९/१२७ तथा १३१)

संवत् १६४४ में मोटाराजा सिरोही गया तब जामवेग साथ था। देवड़ों को छल से मारा। फिर जामबेग को बीजा को मारने के लिये भेजा, वहां जामबेग का भाई घायल हुआ। (७९-८०/१२८)

फलोदी परगने के लोहावट ग्राम में एक लड़ाई चंद्रसेन और उदयसिंघ के बीच हुई। उदयसिंघ का चाकर गोपालदास पृथ्वीराजोत इसमें घायल हुआ। मोटाराजा के हाथ की बरछी चन्द्रसेन के लगी थी और रावळ मेघराज के हाथ की बरछी मोटाराजा के लगी। राव जसवंत डूंगरोत, राव जैतमल जसवंतोत, तिलोकसी कूपावत, रावळ मेघराज, राठौड़ पृथ्वीराज कूंपावत, सो. मानसिंघ, राव पतौ नगावत आदि चन्द्रसेन की ओर थे। यहाँ युद्ध में कोई १२ योद्धा काम आये। (८०-८१/१२९-१३०)

मोटाराजा ने परगना जोधपुर, सिवाना और सोजत पाये थे। जैतारण के गांव ६६५ मोटाराजा को थे और गांव ७२ गोपालदास को। मालदे की मृत्यु होने पर झाली स्वरूपदे ने मोटाराजा को फलोदी दिलवाई थी। फलोदी में दोनों भाई मोटाराजा और चंद्रसेन के लड़ाई, कहते है गंवाणी के हासल के प्रश्न को लेकर हुई थी (युद्ध का वृत्तांत पहले आ चुका है)। (८३/१३२-१३३)

केलण भाटियों और मोटाराजा के बीच एक लडाई घोड़ों की कतार को लेकर हुई। उन दिनों मोटाराजा के फलोदी थी और बीकूपुर का मालिक राव डूंगरसी था। डूंगरसी ने अपने भाई भा० भानीदास को बीकानेर के पास ठहरी हुई घोड़ों की कतार को अपनी सीमा में से निकलने के लिये इधर ले आने को भेजा जिससे उसे आमदनी हो, उधर मोटाराजा ने भी अपने सरदारों को १०० सवारों के साथ उन्हें बुलाने को भेजा। भानीदास ने पहले ही पहुँचकर उन्हें अपने साथ रवाने कर लिया था। इस पर माडणसर नामक स्थान पर भा० भानीदास को उदयसिंह के आदमियों ने घेरकर मार डाला। इस पर

बैर-भाव बढ़ा। भाटियों ने उदयसिंह को मालदे का पुत्र समझकर काफी लिहाज किया। आखिर भा० किसनसिंघ के प्रयत्न से समझौते को वोरनाडो के पास दोनों पक्ष आये। परन्तु उदयसिंघ के मन में भाटियों के कम आदमी देख-कर कपट आया, डूंगरसिंह का घोड़ा लेने की जिद्द की तथा नरा की जाल के पास परगने की सीमा निश्चित करने को कहा। भाटियों ने अवसर देखकर स्वीकार कर लिया और लिखावट के लिये भी तैयार हो गये। जैसे तैसे लिखावट कर दी। राजा दिनोदिन जोर पकड़ता गया। भाटियों ने अपने प्रधान को भेज कर उसे बहुत समझाया कि वह उनके गांव लेने की जिद्द न करे। परन्तु भाटियों को दवा हुआ देखकर उसने उन पर चढाई कर दी। डूंगरसी सामना करने को कटिबद्ध हुआ। जोधपुर थाने के थानेदार नासीरदी ने ६०-८० तोपची मोटाराजा की सहायतार्थ भेजे। मोटाराजा ने ५००-७०० आदमियो से चढाई की पर युद्ध मे भाटी जीते। मोटाराजा के २१ आदमी काम आये और भाटियों के ४ प्रसिद्ध योद्धा काम आये जिनमें भाटी काना किसनावत भी था। मोटाराजा भागकर फलोदी आया, भाटी कुण्डल में ही ठहरे और धरती लूटी। (८४-८८/१३४-१३७)

संवत् १६३१ में मोटाराजा से हटाकर अकबर ने फलोदी भाटी भाखरसी हरराजोत को दी। फलोदी जाते समय उदयसिंघ वीकूंकोहर डूंगरसी के पास ठहरा तब डूंगरसी ने अपनी लड़की उसके पुत्र अखैराज को व्याही।
(८८/१३८)

मोटाराजा ने जोधपुर पर ११ वर्ष राज्य किया परन्तु जीतेजी भाटियों के इस बैर का नाम न लिया। मोने-हरराजिये ने, संवत् १६४१ में मोटाराजा के १६ आदमी मारे थे तब सूरजमल खींवावत भी घायल हुआ था। समावली की लड़ाई में मोटाराजा की पुत्री धनावाई ने, जो नागोर के चिरमखान को व्याही थी, इसकी सहायता की थी। वहाँ गहलोत अचला धरमावत पूरविया जामणी आदि काम आये थे। १६४० में राजपीपले की लड़ाई में भाटी गोयंददास मानावत का सगा भाई सादूल सोर से जलने के कारण मारा गया।
(८६/१३६-१४३)

रायसिंघ चद्रसेनोत संवत् १६४० में कातो सुदि ११ को सिरोही में मारा गया था। तत्पश्चात् नवाव ने उदैसिंघ को सोजत दी। उसने परिवार को जोधपुर ही रखने की व्यवस्था की। (८६/१४४)

मोटाराजा जब गुजरात को रवाना होने लगा तब आसकरन देवीदासोत को काम सौपने के लिये कई अधिकारी भेजकर बुलाया पर वह आया नहीं, तब कुवर सूरजसिंघ खुद बुलाकर लाया और अपने पट्टे के लिये उसने खाली पन्ने पर दस्तखत करवाकर मंगवाये तथा उसे पट्टे में निम्न गांव दिये गये—३४ गांव परगने जोधपुर के, ३१ गांव परगने सोजत के। इस प्रकार कुल ६५ गांव ११४६००) की रेख के दिये। (९०/१४५)

राजा सूरजसिंघ

यह कछवाहों का भानजा था। संवत् १६२७ बैसाख वदि ६ मंगलवार को जन्म हुआ। संवत् १६५१ आषाढ वदि १३ बुधवार को बादशाह से मिला और संवत् १६७६ भादवा सुदि ९ को मेहकर मे स्वर्ग सिधारा। १६५२ में जोधपुर आकर गद्दी पर बैठा। ८ दिन जोधपुर रहकर गुजरात की ओर चला, रास्ते में सुरताण से दण्ड वसूल किया। (९०/१४६)

बादशाह एक बार जब काश्मीर में था तब अन्य कोई उमराव पहुँचा नही। तब भाटी गोयंददास के साथ कुंवर सूरजसिह एक प्रहर रात गये वहां पहुँचा। बादशाह से मुजरा किया। वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसे खासी डयोढी की चौकी पर रहने का अवसर दिया। इस प्रकार बादशाह उससे खुश था, अतः उदयसिंह के मरते ही उसें टीका दिया। मोटाराजा की मृत्यु हुई उस समय उसने ४ उमरावों को निकाल दिया था तब राजा सूरजसिंघ से कहकर भाटी गोयंददास ने उन्हें रखवाया, ये सरदार थे—राव रामदास ऊदावत, जसवंत मानसिंघोत सोनीगरो, राठौड़ नराणदास पातावत। (९२/१४७)

सवत् १६७४ भादवा सुदि ९ जालोर का गढ़ बादशाह की ओर से राजा सूरजसिंघ को मिला। कई बिहारी काम आये तथा उदैसिंघ के तीन योद्धा-साहणी रायसिंघ, मांगळियौ सरणावत, नायक खान मेहमद मारे गये। सांचोर सवत् १६७४ में लिया। (९४/१४८)

परगना फलोदी संवत् १६२७ मे राजा को मिला। सूरजसिंघ की मृत्यु पर सलकसिंघ सूरजसिंघोत को दी गई। पोकरण सातलमेर बादशाह की ओर से ५७५०००) मे जागीर में लिखा जाता था, पर वहां इनका अमल नही हुआ। (९४/१४९)

एक बार राजा ने जोशी देवदत्त, राव चांदो वीरमोत, तेरवाड़ा-मेरवाड़ा के बारे में अर्ज करने को बादशाह के दरबार में भेजा। वहाँ उनका अमल नही हुआ था, इसलिए फैसला करवाना था, परन्तु बात बनी नही। यह परगना ६३,०००) में इनके नाम लिखा हुआ था। लूणा दासावत उसके थाने पर था, वह वही काम आया। संवत् १६७४ में मु० राम के हवाले सांचोर के शामिल हुआ। गुजरात के बड़नगर में मु० जैमल जेसावत था। खेरालू गुजरात का पहले भा० जैमल मानावत को था फिर संवत् १६७२ मे मु० रामा को सौपा। गाव ११० का मुकाता रु० ४०,०००)। रतलाम भाटी ईसरदास हरदासोत को रु० १,००,०००)। पीसागण सांवळदास किलांणदासोत के पटे २०,०००)। रजणी गुजरात की भैरवदास हाकिम। दक्षिण में बौरगा तथा राजौरो की जागीर थी।

(६४-६५/१५०)

राजा सूरजसिंघ पूरा पंचहजारी नहीं हुआ। संवत् १६७५ काती सुदि १५ को जब वह वीमार हुआ तो ५०० सवारों के ईजाफे का हुक्म फरमान में आया था, पर जागीर नही पाई। (६५/१५१)

१६७६ भादवा सुदि ६ को जब सूरजसिंघ का स्वर्गवास महकर के थाने पर हुआ तब उसकी रानी अहाड़ी और कुंवर सबळसिंघ वहाँ थे। श्री गजसिंह को मनसब में बादशाह ने जोधपुर, जेतारण, सोजत, सिवाना दिये थे। सवळसिंघ को दाम २,७०,००० में फलोदी दी गई। राजा गजसिंघ जब बुरहानपुर आया तो उसने रानी अहाड़ी को समझाया कि मोटाराजा की मृत्यु पर सूरजसिंघजी ने किसनसिंघ को जो वट दिया था उतना बंट मैं सवळसिंघ को दे रहा हूँ तुम लोग व्यर्थ में दिल्ली क्यों जाते हो, पर वह सवळसिंघ को लेकर दिल्ली गई। राजा भीव से वादशाह ने इस वावत राय ली तो उसने और कुछ हक नही वताया, तव वादशाह ने रु० २०,००० दिलवाये। (६५-१५२/१५३)

सोजत संवत् १६५६ में सकतसिंघ उदैसिंघोत को हुई। एक साल रही। फिर राणे अमरसिंघ ने मालपुरा लूटकर गांव सेखावास डेरा किया तव उतरी। जैतमालोत को सोजत हुई तव वह छापले आया। भा० मान ने राजाजी के विना आदेश ही अमल दे दिया (अधिकार करवा दिया) तव राजाजी ने भण्डारी माना के साथ फौज भेजी। रा० भाण ने ६०० सवारों से रात को हमला किया था।

फिर राठौड़ सघतसिंघ आया। संवत् १६६४ में सोजत करमसेण उग्रसेनोत को हुई। संवत् १६६५ में फिर सूरजसिंघ को हुई तब भा० गोयददास मानावत छापले आया। करमसेन को सोजत मोहबत खान ने इसलिये दिलवाई थी कि राणा पर चढ़ाई करने को जब उसे भेजा, तो राणा के बहुत से लोगों को मारवाड़ मे शरण मिल गई थी। जब सूबा अब्दुलाखान को हुआ तब भाटी गोयददास ने उससे मिलकर ११ थानों पर अधिकार किया व सोजत ली।

(९५-९६/१५४-१५६)

संवत् १६५८ में जेठ वदि ७ को दक्षिण में अंबरचंपू और राजाजी के युद्ध हुआ तब राजाजी की विजय हुई। इसमें उनके मुख्य सरदार भा० वैरसी रायमलोत, राव भाण संसारचदोत आदि काम आये। इस विजय के उपलक्ष में बादशाह ने आधा मेड़ता दिया। सवत् १६६३ राव भोपत उदैसिंघोत को पवार सादूळ मालदेवोत ने मारा। सवत् १६६८ में पंवारों का बैर समाप्त हुआ। (९६/१५६)

जब महाराजा सूरसिह दक्षिण की चढ़ाई पर था तब भा० गोयंददास ने बादशाह से अर्ज करके उसे दरबार में बुलवाया। बादशाह ने राजाजी को अपने देश जाने की स्वीकृति दी। उन दिनों गोयंददास मेहकर थाने पर रहता था। सूरजसिंह ने बादशाह से निवेदन किया कि मैं अपने राज्यकार्य की पूरी जानकारी नहीं रखता। भाटी गोयंददास के बिना मैं अपने राज्य को जाकर क्या करू, क्योकि वही मेरे सब प्रशासन का आधार स्तम्भ है। इस पर बादशाह ने गोयंददास को भी दरबार में बुलाया और आधा मेड़ता तथा जैतारण के परगने जागीर में और दिये। सवत् १६६१ आषाढ़ बदि ८ को ये जोधपुर आये। (९७-१५७)

संवत् १६६२ बादशाह जहांगीर ने राजाजी को गुजरात का सूबा दिया। ये रवाना होकर माडवा के पास पहुँचे, वहाँ अपनी फौज को दो भागों में विभक्त कर मांडवा पर चढ़ाई की। एक अणी (टुकड़ी) का सेनानायक गोयंददास था और एक का सूरजमल जैतमालोत। वहाँ इन्होंने गांव लूटे और दुश्मन भाग खड़े हुए। अनजान जगह होने पर भी इन्होने पीछा किया, फिर झाड़ा केतू पर मुकाबला हुआ। राजाजी के सूरजमल जैतमालोत चांपावत सहित २३ योद्धा काम आये। (९७-९८/१५८)

जोसी चंडू दामोदर के टीपणे में भी इन प्रमुख घटनाओं की संक्षिप्त विगत है। (६६/१५६)

संवत् १६६६ में भाटी सुरताण मानावत को राठौड़ सुंदरदास, सूरसिंघ रामदासोत, नरसिंघदास कल्याणदासोत, राठौड़ गोपालदास भगवानदासोत ने मिलकर मार डाला। उसने मरते-मरते सुंदरदास और सूरसिंघ को मार डाला। गोपालदास घायल होकर निकला, जिसे भा० गोयंददास और कुंवर गजसिंघ ने मारा। (६६/१६०)

संवत् १६७१ जेठ सुदि ६ को अजमेर में किसनसिंघ उदैसिंघोत राठौड़ करन सूरजसिंघ के डेरे पर आये और भाटी गोयंददास को मारा। राठौड़ किसनसिंघ और करन भी वहीं मारे गये। राजाजी के १८ लोग मारे गये, कई घायल हुए, २६ आदमियों सहित किसनसिंघ मारा गया। (६६-१०१/१६१)

यह घटना होने के पश्चात् एक बार बादशाह ने राजाजी को देश जाने की छुट्टी दी। दो महीने रहने के बाद उन्हें बुला भेजा। अजमेर पहुँचने पर बादशाह ने उन्हें आश्वस्त कर दक्षिण की चढाई पर भेजा। उनके डेरे पीसांगण हुए। कुवर गजसिंघ तथा राजसिंघ खीवावत को वापस देश भेजा। काम का जिम्मा लूणा को दिया। (१०१/१६२)

भण्डारी माना रायसिंघ चंद्रसेनोत के पास सोजत में था। १६४० में जब जोधपुर आया, तो इसे देश का काम सौंपा गया था। १६५१ के लगभग वलूदे होता हुआ बीकानेर गया, फिर चांवड जाकर राणा से मिला। १६५२ में जब सूरसिंघ गद्दी पर बैठा, तो उसने भण्डारी लूणा को भेजकर उसे सादर बुलाया और देश का काम सौंपा। (१०१-१०२/१६३-१६४)

संवत् १६७२ में नागोर परगने के तीन गांव दबा लिये गये थे। फिर नागोर आसपखान को हुआ तब भण्डारी लूणा नागोर जाकर गजसिंघपुरा सालाना ३,१००) के मुकाते पर ले आया तथा आसोप के तफे के शामिल कर लिया। (१०२/१६५)

संवत् १६७४ को भादवा सुदि ६ कंवर गजसिंघ ने जालोर का गढ़ जीता। राव दयालदास गोपालदासोत, भा० गोपालदास आसावत को वहाँ का फौजदार किया। सिरोही के राव राजसिंघ सुरताणोत ने इनसे बात की कि देवड़ा

पृथ्वीराज देवल के पहाड़ों में घुसा बैठा है, इसे निकालने में सहायता दे तो राजाजी को कोरटा १४ गावों से दे देंगे। इन्होंने पृथ्वीराज को निकाल दिया। वार्षिक आय १३,०००) आई। अगले वर्ष आय नहीं दी। १६७५ में १४ गांव कोरटा सहित दिये। (१०२-१०३/१६६)

भाटी गोयददास के मारे जाने के पश्चात् सूरजसिंह ने रावळ तेजसी दूदावत से ३ गांव, हाथी १ तथा रु० ५००० लिये थे। भाटी गोयंददास मानावत राजाजी के बदले दक्षिण में रहा और राजाजी दिल्ली रहे। उस समय गोलकुंडा का बादशाह अपनी बेटी का डोला शाहजादा दानशाह के लिये भेजना चाहता था, पर बीजापुर दौलताबाद के बादशाह ने रोक रखा था तब गोयंददास जाकर डोला ले आया। १६५८ के लगभग वह मुजरे का अधिकारी हुआ। (१०३/१६७-१६८)

जोशी देवदत्त पोकरणा बड़ा आदमी था। सूरसिंघ ने उसे देश की दिवानगी १६७२-७३ में दी थी। वह रु० ६-७ हजार की तनख्वाह पाता था। दो वर्ष तक गजसिंह के समय में भी रहा। (१०३/१६९)

संवत् १६६९ में कुवर गजसिंघ जोधपुर था, गोयंददास नाडुल के थाने पर था। राणा अमरसिंघ अमराई के पहाड़ों में था। राणा ने २००० सवार भेजकर अहमदाबाद से आगरे जाती हुई कतार को लूटने का प्रयास किया, परन्तु कतार को खबर हो जाने से वह निकल गई। फौज दूनाड़े के पास आकर लौटने लगी तब भाटी गोयंददास ४०० सवारों से आउवा के पास उन पर चढ़ आया। राणा के २००० आदमी भाग गये। (१०३-१०५/१७०)

राजा गजसिंघ

राजा गजसिंघ कछवाहों का भानजा था। संवत् १६५२ काती सुदि ८ गुरुवार का जन्म। सवत् १६७६ आसोज सुदि ९ गुरुवार को मेहकर में गद्दी का अधिकारी हुआ। संवत् १६९४ जेठ सुदि ३ को आगरे में स्वर्गवास हुआ। प्रारम्भ में मनसब ३ हजारी जात २००० सवार का पाया।

१. गढ़ जोधपुर तफा १९ से रु० १,९९,१२५) में।
२. सोजत का परगना रु० १,२५,०००) में।
३. जैतारण का परगना रु० ९८,५०८) में।

४. सिवाने का परगना रु० ३७,५००) में।
५. सातलमेर पोकरण लिखी गई पर अमल न हुआ रु० १५,०००) में।
६. तेरवाड़ा मेरवाड़ा गुजरात का रु० ६३,२८९) में।

तत्पश्चात् समय-समय पर ये परगने और हुए—

१. जालोर संवत् १६७७ में।
२. सांचोर संवत् १६७९ में।
३. फलोदी १६७९ में।
४. मेड़ता सवत् १६८० में।
५. जलगाव बैराड़ का १६८१ में।

सूरजसिंघ की मृत्यु पर इतने परगने तागीर हुए थे— फलोदी, जालोर, सांचोर व मेड़ता। (१०५-१०६/१७१)

दक्षिण के सूबे के लोग ३०,००० फौज से एक वार चढ़ आए तव सब लोग कोट मे घुस गये। गर्जसिंह ने बाहर आकर जवरदस्त युद्ध किया। दुश्मन भाग गये। उस समय उसकी मदद को कोई नही आये यद्यपि नवाव खानखाना आदि सभी वही थे। प्रहर २ तक युद्ध चला। बाद मे सभी उमरावों ने आकर उसे दलथंभन की उपाधि दी। १६७७ में शाहजादा खुरम दक्षिण में आया, इसने उसकी आवभगत की तब प्रसन्न होकर इसे जालोर का परगना दिया। गोपालदास आसावत व मु० जैमल को जालोर का हाकिम वनाया गया। जब शाहजादे ने इन्हें देश जाने की छुट्टी दी तो इसने जालोर के उचित प्रबंध के लिये सांचोर भी मागी तब सांचोर उसे १६७९ में प्राप्त हो गई। संवत् १६७९ में वैसाख में वह जहांगीर से चाटसू के पास मिला। (१०६-१०७/१७२)

संवत् १६७९ में शाहजादा खुरम वादशाह से विमुख होकर उस पर चढ़ आया। महावत खान ने वादशाह का पक्ष खूब मजबूत किया। महावत खान के साथ गर्जसिंघ जब चढ़ाई पर जाने लगा, तो उसने सिफारिश करके फलोदी इसे दिलवाई। (१०७-१०८/१७३)

संवत् १६८० में अजमेर सूबे के सभी परगने परवेज को जागीर में थे और गर्जसिंघ उसकी अधीनता में था। इस समय मेड़ता सैयदों को जागीर में दिया

जाने को था परन्तु राजसिंघ के मारफत कहासुनी होने पर मेड़ता शाहजादे की तरफ से गजसिंघ को जागीर में दे दिया गया। शाही मनसब में नहीं लिखा गया। कान्ह खीवावत तथा भंडारी लूणा ने आकर मेड़ते में राज्य-दस्तूर किया। (१०८/१७४)

संवत् १६८१ में टूस नदी पर शाहजादे परवेज और खुरम के बीच युद्ध हुआ। गजसिंघ हरोल में था उसने भोम सीसोदिये को मारा और विजय पाई। हजार सवार इस समय इजाफा होने पर यह पंचहजारी हुआ। दक्षिण में जलगांव जागीर में पाया। भा० सिंघ रूपसीवोत वहां फौजदार नियुक्त हुआ। (१०८/१७५)

संवत् १६८२ में खुरासानियों के सिखाने से बिरहानपुर महाबतखान से तागीर कर लिया गया और उसे दरबार में बुलाया तथा परवेज आदि सब सरदारों को आदेश भेजा कि कोई इसके साथ न आवे। सभी लोग बड़े पसोपेश में पड़ गये। गजसिंघ अपनी हवेली में ही रहा। फिदाईखान जो इस कार्य को अमल में ला रहा था जब गजसिंघ से मिला तो उसने कहा कि मैं यहीं रह रहा हूँ पर महाबतखान हमारा नुकसान करवायेगा। तब फिदाईखान ने उसे आश्स्वत कर रा० राजसिंघ को अपने साथ लिया और बादशाह के सामने गजसिंघ की वफादारी की बडी तारीफ की। दीवान खोजा अवलहुसेन ने बताया कि महाबतखान ने हिमायत करके गजसिंघ को मेड़ता दिलवाया था, शाही मनसब में वह नही है इसलिये जव्त कर लिया जाय, परन्तु फिदाईखान ने कहा-सुनी करके २,५०,०००) में मेड़ता राजा को दिलवा दिया। राजसिंघ यह काम करवा कर जोधपुर लौटा। (१०६/१७६)

संवत् १६८३ में परवेज मर गया। महाबतखां और बादशाह में वैमनस्य बढ़ा। महाबतखान बागी हुआ। उस पर फौज चढ़ी तब उसमें कुंवर अमरसिंघ और राजसिंघ भी साथ थे। पर बाद में जोधपुर आ गये, तब नागौर की छ पटी सूरघसिंघ बीकानेर वाले को हुई। (११०/१७७)

संवत् १६८४ कार्तिक वदि १३ को जहांगीर का स्वर्गवास हुआ। जूनेर से महाबतखा और शाहजहान अजमेर आये तब महाबतखान ने गजसिंघ से नागौर उसे दिलवाने को अर्ज की। नागौर उसे देदी गई। शाहजहां जूनेर से उदयपुर आया, राणा करन मिला और जगतसिंघ को साथ भेजा। शाहजहां

दो दिन अजमेर रहा फिर रणथम्भोर के पास से होता हुआ आगरे आया। तखत पर बैठा। (११०-१११/१७६-१८०)

जहांगीर की मृत्यु होने पर गजसिंघ तथा अन्य हिन्दू नवाव आदि विदा लेकर अपने-अपने घर चले आये। रा० सकतसिंघ की लड़की लीलावती वाई शाहजहां के साथ थी। उसे उसने राजा गजसिंघ को आश्वस्त करने को भेजा। लीलावती जोधपुर आई और राजा को आश्वस्त किया तथा वादशाह की ओर से दी हुई वस्तुएँ उसे प्रदान कीं। ८ दिन बाद गजसिंघ ने आगरे के लिए अपने सरदारों सहित कूच किया। दरबार में पहुँचने पर वादशाह ने उसका वड़ा सम्मान किया। (१११/१८१)

शाहजादा खुरम दक्षिण को जारहा था तव चांदा की घाटी के पास माल से भरे शाही ऊँट लूट लिये गये थे। शाहजादे ने मुहमद मुराद को इसकी तलाश के लिए बदनोर भेजा। उसने लगभग ४००० आदमियों को शामिल किया तथा पूछ-ताछ प्रारम्भ की, परन्तु पता नही लगा। फिर अबू को जाहजादे ने इस काम के लिए भेजा। उसने पंवार सादूळ तथा राठौड़ नरसिंघदास का विश्वास अर्जित कर कुछ सुनारों आदि को पकड़ा तथा मेड़ता में आकर डेरा किया। भा› माना से बातचीत करके रु० २०,०००) मानपुरा के वित्त आदि की वसूली के निश्चय किये थे, परन्तु अनेक प्रयत्न करने पर भी अबू के रुपये हाथ नहीं लगे। फिर उसने नीवोल के वोहरों को पकड़ा। रा० किशनसिंह खीवावत को जव यह खवर मिली तो वह तुरन्त जैतारण से चढ़ा। मुगदड़े के पास अबू से युद्ध हुआ, संवत् १६७८ जेठ सुदि ६ को। रा० किशनसिंह सहित ७ सरदार और ८ चाकर काम आये, कुछ घायल हुए। अबू के १५-२० आदमी काम आये। वह ८ दिन मेड़ते में रहा फिर अजमेर होता हुआ अपने घर मेरठ की ओर चला गया। अबू के लड़के को भी जाने दिया।

(११२-११५/१८२-१८३)

जव वादशाह गद्दी पर वैठा और गजसिंह वहाँ उपस्थित हुआ उस समय आगरे के आस-पास के पवार भोमिये वड़ा नुकसान करते थे। उन्हे दवाने के लिए मुगल सरदार की फौज ने चढ़ाई की तव रा० भगवानदास वाघोत को काफी सवार देकर उसके साथ भेजा। १६८४ आषाढ़ सुदि ८ को गढ़ घेर लिया गया। आग लगा दी गई। जलती हुई आग में एकाएक हमला करने से

अनेक लोग भगवानदास बाघोत सहित काम आये। हाडे साथ थे उनके भी ६०—८० आदमी काम आये। गढ़ यों ही रहा तब पा० बलू ने चढ़ाई करके पंवारों को मारा। (११५-११६/१८४-१८६)

संवत् १६९३ काती सुदि १५ जालोर के परगने में रा० किशनसिंह जसवंतोत काम आया था। उसे भा० जगनाथ लूणावत के साथ देवल वणवीर धारावत को परास्त करने भेजा था। वणवीर के पास अच्छी फौज थी, उसने पहाड़ों की ओट ली। एक दिन संध्या समय जब राठौड़ों की फौज पहाड़ से उतर रही थी तब झगड़ा हुआ उसमें किसनसिंघ और ३ अन्य आदमी मारे गये, कई घायल हुए। कई दिन युद्ध चलता रहा। घेरा मजबूत हो गया तब सिरोही वालों ने आदमी भेजकर वणबीर को सुलह करने की राय दी। वह १५ आदमियों से राठौड़ जसवत के डेरे मिलने आया, वहाँ वणवीर को मार डाला और गढ़ पर कब्जा किया। (११६-११८/१८७-१९०)

संवत् १६९० में बलोच मुगलखान, समायलखान के लोगों ने फलोदी के दो गांव कोटड़ा के पास लूटे। मु० रूपसिंह बाहर चढ़ा, आसा के तालाब के पास झगड़ा हुआ, भा० सकतसिंह खेतसिंघोत आदि काम आये।

(११८-११९/१९१)

संवत् १६९३ आसोज वदि ९ बलोच हैदरअली फतैअली फलोदी पर चढ़ आये। कुडल को लूटकर खूब मवेसी ले गये। सोना रुपया आदि भी ले गये। इन्होने घटियाला आदि ग्राम भी लूटे, वहाँ अनेक लोग काम आये।

(११९/१९२-१९३)

संवत् १६९४ काती वदि १२ मुदफरखान मदा का लड़का फलोदी पर चढ़ आया, वहाँ भा० जसवंत सूजमलोत आदि मारे गये। उस समय मु० जगनाथ फलोदी का हाकिम था। संवत् १६९४ में नैणसी को फलोदी का हाकिम राजा ने बनाया और वह स्वय शाही दरबार को चला। नैणसी फलोदी को गया और वाप के राव की सहायता से बलोचों का खूब पीछा किया। वीकूंपुर के राव ने भी सहायता की। आखिर मुगलखान को मार डाला, बलोच ३०० मारे गये। युद्ध-भूमि में खोज की गई तो मुगलखान की लाश मिली। वह ३०-४० वर्ष का सुन्दर जवान था। (११९-१२३/१९४-१९८)

महाराजा जसवतसिंह

महाराजाधिराज जसवतसिंह सीसोदियो का भानजा था। संवत् १६८३ माह वदि ४ का जन्म। संवत् १६६४ आषाढ़ वदि शुक्र को बादशाह शाहजहां ने आगरे में टीका दिया। प्रारम्भ में मनसब चार हजारी चार हजार सवारों का दिया। जागीर के परगने—जोधपुर, सिवाना, मेड़ता, सोजत, फलोदी, सातलमेर मिले। जालोर और सांचोर तागीर हुए। जैतारण को प्राप्त करने का प्रयत्न भीव कल्याणमलोत ने इस समय किया था, परन्तु राजसिंघ खीवावत ने प्रयत्न करके राजा जसवंतसिंघ को ही दिलवा दी। (१२४/१६६-२००)

संवत् १७०२ में हजार सवारों की वृद्धि हुई तब मनसब पंच-हजारी जात, पॉच हजार सवार उनमें एक हजार दो अस्पह हुआ। देश के परगनों के अतिरिक्त रेवाड़ी और मिला। १७०३ में ५०० सवारों की वृद्धि हुई और गजसिंहपुरा की जागीर भी प्राप्त हुई। (१२४-१२५/२०१)

संवत् १६६६ को जव बादशाह काश्मीर को जा रहा था तो जसवंतसिंह को देश जाने की इजाजत दी और हजार सवारों की मनसव में और वृद्धि हुई। जैतारण रुपये २,५०,०००) में राजाजी को दी। संवत् १६६७ पोष वदि ५ राजसिंघ खींवावत का देहान्त हुआ। (१२५/२०२)

संवत् १६६७ चैत्र में महेसदास सूरजमलोत को प्रधान बनाया। यह लाहोर में २७०० सवारों से वादशाह को सम्मान देने उपस्थित हुआ, तव १००० सवारों की मनसब में और वृद्धि कर दी गई, जिसके पेटे नकद रकम राजाजी को मिलती रही। (१२५-१२६/२०३)

संवत् १७०१ में वादशाह ने राजाजी को रेवाड़ी का परगना दिया रु० २,६२,६२५) में। यह संवत् १७१५ में तागीर होकर राजा जैंसिंघ को दिया गया था। सि० पृथ्वीमल वहाँ हाकिम था। (१२६/२०४)

संवत् १७०५ में हजार सवारों का इजाफा हुआ जिसमें सूवे आगरे का परगना हीडवाणा मिला। संवत् १७१४ में यह परगना तागीर हुआ।

संवत् १७०७ में अकाल पड़ा तब कर के रूप में केवल पाताल-भोग लिया गया। संवत् १७०६ में हजार सवारों का इजाफा हुआ, तव पंचहजारी जात पांच हजार सवार दो अस्पह हुए। (१२६/२०५)

संवत् १७०९ में राजाजी को जागीर में और वृद्धि हुई। सूबा अजमेर सरकार रणथम्भोर का परगना मलारणा उन्हें दिया गया। मुहता नैणसी को फरमाना देकर वहाँ भेजा गया। संवत् १७१२ में जब जालोर दी तब मलारणा तागीर कर दिया गया। (१२६/२०६)

संवत् १७११ में हजार सवारों का इजाफा हुआ। तब मनसब ६ हजार जात ६ हजार सवारों का हुआ। राणा राजसिंघ से उसी समय ४ परगने तागीर किये, तव बदनोर राजाजी को दी। राव नाहरखान राजसिंघोत वहाँ राज्याधिकार का दस्तूर करने को गया। संवत् १७१४ मे राणा के परगने पुनः लौटाये गये तब वदनोर तागीर हुई। संवत् १७११ भोरूंदा तथा संवत् १७१२ में रोहतक जागीर मे शामिल हुए। रोहतक में हरीदास राघवदासोत को हाकिम बनाकर भेजा गया था। यह जगह अशान्तिपूर्ण थी। अतः संवत् १७१४ में जब हजार सवारों का इजाफा हुआ, तो यह जगह छोड़कर मालवा का परगना देपालपुर लिया। संवत् १७१३ मे मलारणा के एवजाने में जालोर पाई। जालोर रतन महेशदासोत के पट्टे मे थी, परन्तु उसे इससे अच्छा आर्थिक लाभ नही हो रहा था। इसलिए जब उसने बादशाह से अर्ज की तो बादशाह ने राजाजी के मना करने पर भी मलारणा हटाकर जालोर लिखदी। मुं० सुन्दर को रेवाड़ी से हटाकर जालोर हाकिम वनाया। उसने सींधलों को यहाँ कब्जे में किया। नागौर परगने के १० गांवों की पट्टियें भी राजाजी के अधिकार में आई। संवत् १७१५ में यह इनसे तागीर कर बीकानेर वालों को औरंगजेब ने दी। संवत् १७१५ में जब इनका मनसब शाहजहां ने सप्त-हजारी किया और उज्जैन को विदा हुए तब उज्जैन, देपालपुर तथा नागौर की दो पट्टी जागीर में और जोड़ी गयी।

(१२७-१३२/२०७-२०९)

संवत् १७१४ भादवा सुदि १० को जहानावाद मे शाहजहां बीमार हुआ। मृगशिर वदि ५ आगरे पहुँचे। संवत् १७१५ पोष वदि ७ को राजाजी को बादशाह ने उज्जैन विदा किया तब हजार सवार इजाफे करके इनका मनसब सात हजारी जात सात हजार सवारों का किया। ५ हजार सवार दुअस्पह और २ हजार सवार इक अस्पह। इनके दाम ११,००,००,००० हुए।

(१३३-१३४ / २११)

संवत् १७१५ को भादवा सुदि २ बादशाह लाहोर गया, राजाजी को

जहानाबाद विदा किया। एक महीने बाद सुल्तान महमूद आगरा से जहानाबाद आया। कुछ दिन बाद जब बादशाह जहानाबाद के कोट में दाखिल हुआ तो राजाजी ने उसका मुजरा किया। फिर किसी ने गुप्त सूचना राजाजी को दी कि उनके साथ धोखा होने वाला है तब वे बीमारी का बहाना कर अपने डेरे पर ही रहे। (१३४-१३५ / २१२-२१३)

फिर यह खबर आई कि सूजा चढ़ाई कर रहा है। तब बादशाह पूर्व की ओर चला। पोष वदि ७ को राजाजी भी पूर्व को चले। माह वदि ४ शाहजादा सूजा से लड़ाई हुई। राजाजी फौंज को दाहिनी ओर रखे गये। हाडा भोर्वसिंघ राजाजी को दाहिनी ओर कुछ दूरी पर था। सुल्तान मुहमद ७००० फौज से हरोल में था। माघ वदि ५ को एक प्रहर रात बाकी थी तब जसवंतसिंहजी वहाँ से जबरदस्ती करके निकले और लूटपाट की। अदेही जायल मौजाबाद होते हुए भोरूंदा पहुँचे। वहाँ राठौड़ रुघनाथ सुंदरदासोत ने उनकी मेहमानी की। लांपोळाई में ताहरखान व नैणसी पांवों लगे। नैणसी को मेड़ता रवाने किया और स्वयं जोधपुर आये।

(१३५-१३६ / २१३-२१५)

फागुन वदि ६ को रावड़ियाक के लिए रवाना हुए। जब बीलाड़े पहुँचे तो दाराशिकोह का पुत्र सपरशकोह राजाजी से आकर मिला। राजाजी उसके साथ नही गये और उसे विदा दी। चैत्र वदि १२ को आगोळिया आसा औरंगजेब से दिलासा का फरमान ले आया। राजा जैसिंघ का भी कागज लाया। राजाजी ने आगे कूच किया। दाराशाह का संदेश आया कि वह राजाजी से आकर मेड़ते में मिलेगा, पर मियां फरासत को भेजकर राजाजी ने उसे मना करवा दिया। इसी समय बादशाह का फरमान आया कि तुम्हें गुजरात का सूबा दिया जाता है, दाराशिकोह की सहायता न करे। राजाजी जोधपुर लौटकर २।। घड़ी ठहरे और फिर गुजरात को रवाना हुए। (१३६ / २१६)

राजा जैसिंघ की मेहमानी के लिए राव महेशदास तथा मुंहता नैणसी को भेजा। बहादरखान को रु. १०,००० मेहमानी के जैसिंघ ने दिलवाये। जैसिंघ तथा बहादरखान से राजाजी सेरो में मि । इसी समय जोधपुर से सूचना आई कि २०००० भाटियों ने पोकरण घेर ली है। (१३७/२१८)

संवत् १७१५ वैशाख वदि ३ को राजाजी विवाह करने को सिरोही गये

और राव राजसिंघ तथा मु० नैणसी आदि को पोकरण को सहायतार्थ भेजा। नैणसी जोधपुर लौटकर आया, ४ दिन ठहरकर युद्ध-सामग्री की तैयारी की तथा जागीरदारों को ससैन्य रास्ते में मिलने को लिखा। अनेक सरदार अपने सैनिक `कर उपस्थित होते रहे। ४००० आदमी पोकरण पहुँच गये। आसणीकोट आदि जैसलमेर के गांव भी लूटे। इस प्रकार लम्बा संघर्ष चला। इतने में राजा करन बीकानेर वाला जैसलमेर शादी करने को जा रहा था, उसका डेरा कौरडे ग्राम में हुआ। उसने नैणसी आदि को बुलवाया तब ये राव राजसिंह सूरजमलोत सहित वहाँ उपस्थित हुए तथा १०००) मेहमानी के नजर किये। फिर करन ने बातचीत करके इन्हें विदा कर दिया। जैसलमेर से लौटते समय भाटियों के प्रमुख व्यक्तियों को बुलाकर रामदेवरे में दोनों पक्षों में समझौता करवा दिया और उन्हें भोजन साथ करवाया। (१३८-१४४/२१६-२२६)

संवत् १७१५ में शाही दरबार के वकील मनोहरदास ने मनसब का विस्तृत हिसाब पेश किया। (१४४-१४७/२२७-२२८)

संवत् १७१७ भादवा सुदि ४ को एक करोड़ दामों का इजाफा हुआ उसका विस्तृत हिसाब। (१४७-१४८/२२६)

संवत् १७१८ को मृगशिर वदि ८ गुजरात का सूबा तागीर हुआ। राजाजी १७१८ को पोष वदि ३ गुजरात से रवाना होकर भड़ोंच, सूरत होते हुए औरंगाबाद में राजा जैसिंघ की हवेली मे ठहरे। संवत् १७१६ में छावणी नयी हवेली जाकर अमील उमराव पर हमला किया। उसका लड़का अवलफतै काम आया। नवाब से सूबा तागीर होकर राजाजी को दिया गया। १७२० आषाढ सुदि १५ को सूबे का दीवान किया गया। कार्तिक वदि ११ को पूना से कुडाणा रवाने हुए। गढ़ के दो बार सुरंग लगाई, परन्तु सफलता नही मिली। (१४६-१५०/२३०-२३२)

राजाजी ने जब गुजरात का सूबा तागीर हुआ और दौलताबाद का हुक्म हुआ तब सावणू फसल की आमदनी राजाजी को ही मिली; तब पं० गंगादास आदि आमदनी वसूल करने को रखे गये। उस समय जागीर की आमदनी का विस्तृत हिसाब शाही दरबार मे हुआ।

(१५०-१५६/२३४-२३५)

संवत् १७१६, जब राजाजी गुजरात के सूबे में थे तब कुवर को दिल्ली दरबार में भेजने का विचार किया। राव भीव गोपाळदासोत, मु० सुंदरदास आदि को इस कार्य के लिए जोधपुर को विदा किया। कुवरजी पोष में जोधपुर से रवाना हुए। सोरभ में जाकर कुवरजी बादशाह के पांवों लगे। सवत् १७१७ में कुवरजी को बादशाह ने हाथी, सिरपाव, किलंगी आदि देकर जहानाबाद से विदा किया। मृगशिर सुदि १० को गढ़ जोधपुर पहुँचे।

संवत् १७१९ में वकील मनोहरदास ने शाही दरबार में राजाजी के नाम से निकलने वाली रकम का विस्तृत हिसाब भेजा। (१५६-१५८/२३६)

संवत् १७२१ मे फिर मुतालवे का विस्तृत हिसाब वकील मनोहरदास ने शाही बहियों के आधार पर पेश किया। उसमें सभी प्रकार की आमदनी बताई गई। (१५८-१६२/२३७)

राजाओं ने जोधपुर पर राज्य किया उसका हिसाब—

	वर्ष	मास	दिन
राव जोधा	३०	—	—
सातल	३	—	—
सूजा	२४	—	—
राव गांगा	१६	५	१३
राव मालदे	३०	५	८
राव चद्रसेन	१८	१	०
	(बीच में मुगल अधिकार)		
राजा उदयसिंघ	११	११	०
राजा सूरजसिंघ	२५	२	११
राजा गजसिंघ	१८	७	२३

राजा जसवंतसिंह १६९४ आषाढ़ वदि ७ को गद्दी पर बैठा। अलग-अलग राजाओं के समय परगनों की शाही रकम का हिसाब। (१६२-१६४/२३८-२३९)

परगना जोधपुर के १४ तफों के गावों की संख्या १७१९, मु० नैणसी तथा पं० नरसिंघदास ने कानूनगो महेशदास को तफावार लिखवाई।
(१६४/२४०)

कुछ तफे देशी फहरिश्तों में है परन्तु शाही दरबार में नही लिखे जाते। तफे संवत् १७१८ में हवेली में लिखवा दिये गये। परगने जोधपुर के खालसे की आमदनी का हिसाव संवत् १६९२ से १७२० तक का प्रतिवर्ष के अनुसार। फिर संवत् १७११ से १७२० तक का सालीना विस्तृत हिसाब। तत्पश्चात् तफा वार हिसाब। (१६०-१७०/२४१)

संवत् १७१४ भाद्रपद सुदि ७ बादशाह शाहजहां बीमार हुआ तब साम्राज्य का सारा कार्यभार दाराशिकोह पर था। राजा जैसिंघ को हजार सवारों का इजाफा देकर पूर्व की ओर शाहजादा सूजा पर भेजा। पोष वदि ७ को जसवंतसिंह को उज्जैन की तरफ औरंगजेब और मुराद के विरुद्ध भेजा। जसवंतसिंह के सवार २३,२४७ तथा मनसबदार २६६ बादशाही थे। मनसबदार व सवारों का विस्तृत व्यौरा। (१७०-१७६/२४२-२४४)

सवत् १७१४ वैशाख वदि ७ खवर आई कि मुरादबक्स बढ़ा चला आ रहा है, तब महाराजा जसवंतसिंह ने उज्जैन से चलकर क्षिप्रा नदी के उस पार डेरे डाले। ३ दिन रुककर वहाँ से १० कोस खाचरोद तक गये। वैशाख वदि ८ को चोरनाराइण गांव गंभीर नदी पर डेरा किया। उज्जैन से १।। कोस पर धरमतपुरा स्थान पर वैशाख वदि ९ को डेढ़ घड़ी दिन चढ़ने पर औरंगजेब से युद्ध हुआ। बादशाही फौज हारी। महाराजा के जितने आदमी काम आये उनकी सूची—९ चांपावत, ६ कूंपावत, ६ ऊदावत, ४ जैतावत, ५ करमसोत, ६ मेड़तिया, ५ जोधा, ४ भदावत, २ ऊहड़, ४ पातावत, १ रूपावत, १ पुरबिया, १ महेचा, १ भूंभणिया, ४ भीवोत, १ बालावत, २१ भाटी, ३ सोनगरा, ६ चहुवान, ६ इंदा, २ भायल, १ मुहता, १० सुजानसिंह केसरीसिंघोत के चाकर, १८ खवास पासवान [३ साहणी, ४ चौहाण आबदार, ४ पंवार चीतीवान, १ वेस, २ सोलंकी हीड़ागर] ४ दफतरो, ४ ब्राह्मण, १० दूसरे हीड़ागर।

अन्य उमरावों के आदमी काम आये—

राठौड़ करन सुजानसिघोत के राजपूत ६, उदैभाण भगवानदासोत के ९, राव जगराज कुंभकरनोत का १, बछराज दलपतोत के २, राठौड़ राजसिघ भगवानदासोत का १, पृथ्वीराज दलपतोत के ७। (१७६-१८६/२४५)

संवत् १७२१ में जोधपुर शहर में जो दूकानें हैं, वे पं० हरकिसन को आदेश देकर लिखवाई गई—

२१ दूकाने नागौरी दरवाजे पर।

२६५ नागौरी दरवाजे के अन्दर आडे चौहटे तक।

[१३६ दरवाजे के अन्दर आते समय दाहिनी ओर।

१२६ दरवाजे के अन्दर आते समय वायी ओर।]

२३ जालोरी दरवाजे के बाहर दूकानें है।

४०५ जालोरी दरवाजे के अन्दर पदमसर तालब तक।

१८ मढी में।

४ रातानाडा के दरवाजे के बाहर।

३६ दरवाजे के अन्दर गागादास की प्रोल तक।

६ महावीरजी के मन्दिर के पीछे।

३ सिलावटों की गली में।

४ मूलनायकजी के मन्दिर के नीचे।

१५ गधियों की गली में दरवाजे तक।

१५ दरजियों की दूकाने है।

——————

८१५ कुल दूकानें।

संवत् १७२१ में श्री कुवरजी के हुक्म से पं० हरकिसन ने शहर की धरती नापी—

डोरी	पांवड़ा	
६५	१३००	वाग कागा नागौरी दरवाजे से कुंज तक।
८५	१७००	वहूजी सरूपदे का तालाव नागौरी दरवाजे से।
१००	२०००	साहणियों वाली तलाई, शेखावतजी के तालाव तक।
५७	११४०	राईको हाडीजी का बाग नागौरी दरवाजे से।
७४	१४८०	रातानाडो सोजती दरवाजा से।
८०	१६००	मसूरिया पहाड़ जालोरी दरवाजे से।
४२	८४०	सूरसागर फूलेळाव दरवाजे से।
१००	२०००	बालसमंद केवड़ा सहित। (१६८-१८९/२४६)

संवत् १७२१ में परगने जोधपुर के ११६७ गांवों का मेल—

आसामी	गांव	तफा	वसता	वीरान	सांसण
तफा १९	१०३९	१९	७३५।	१७७।।।	१२७
महेवो	१२८	१	६७	४३	१८
योग	११६७	२०	८०२।	२२०।।।	१४४

जातियों की प्रमुखता के अनुसार तफावार गांवों की विगत । (१८९-२०३/२४७-२४८)

परगने जोधपुर के गांवो का तफावार मेल—वसे हुए, वीरान तथा सासण । (२०३-२०४/२४९)

परगने जोधपुर के गांवो का विवरण—तफा हवेलो कुल २७७ । वसे हुए २०७, वीरान ३६।।, सांसण ३३ । (२०४-२४२/२४९-२५३)

तफा पीपाड़—कुल ७९ । आबाद ६९, वीरान २, सांसण ८ । (२४४-२५६/२५४-२५५)

तफा बीलाड़ा—कुल १५ । आबाद ९।, वीरान २, सांसण ३।।। । (२५६-२५९/२५६-२५७)

तफा बाहला कुल ८ । आबाद ७, वीरान ०, सांसण १ । (२५९-२६०/२५८)

तालका खेरवा—कुल ११ । आबाद ७, वीरान २, सांसण २ । (२६०/२५९)

तालका पाली—कुल ४४ । आबाद २८, वीरान ६, सांसण १० । (२६२-२६८/२६०-२६२)

तफा रोहठ—कुल २० । आबाद १९, सांसण १ । (२६९-२७२/२६३)

तफा गूदोच—कुल १० । आबाद ५, वीरान ५ । (२७२-२७३/२६४)

तफा भाद्राजण—कुल ९५ । आबाद ५६, वीरान ३०, सांसण ९ ।
(२७३-२८७/२६५-२६९)

तफा दूनाड़ा—कुल ४४ । आबाद ३३, वीरान ६, सांसण ५ ।
(२८७-२९३/२६९-२७२)

तफा कोढण—कुल ८४ । आबाद ५२, वीरान १४, साँसण १८ ।
(२९३-३०५/२७३-२७७)

तफा बहेळवा—कुल ६२ । आबाद ३५, वीरान १५, सांसण १२ ।
(३०५-३१२/२७८-२८१)

तफा सेतरावा—कुल २८ । आबाद २१, वीरान ७ ।
(३१२-३१५/२८२-२८३)

तफा केतू—कुल २३ । आबाद १५, वीरान ७, सांसण १ ।
(३१५-३१८/२८४-२८६)

तफा देछू—कुल १० । आबाद ७, वीरान २, सांसण १ ।
(३१८-३१९/२८७-२८८)

तफा ओसियां—कुळ ११२ । आबाद ७९, वीरान २०, सांसण १३ ।
(३१९-३३६/२८९-२९०)

तफा खींवसर—कुल ३५ । आबाद १९, वीरान १४, सांसण २ ।
(३३६-३४१/२९१-२९२)

तफा लवेरा—कुल ६६ । आबाद ५१, वीरान ९, सांसण ६ ।
(३४१-३५०/२९३-२९४)

तफा आसोप—कुल १६ । आबाद १६ । (३५०-३५३/२९५)

तफा मेहवा—कुल १२८ । आबाद ६७, वीरान ४३, सांसण १८ ।
(३५३-३७२/२९६-३०३)

परगने जोधपुर के गांवों की सीमा, जो अन्य परगनों के गांवों से लगती है, की तालिका । (३७२-३८२/३०४-३१३)

परगना सोजत

शास्त्रों में इसका नाम शुद्धदंती मिलता है। प्राचीन काल में त्रंबावती नगरी कही जाती थी। यहाँ त्रबसेन राजा राज्य करता था, यह जाति से पंवार होना चाहिए। इस राजा के सोझत नामक एक लड़की थी जिसमें दैविक शक्ति थी। एक बार राजा ने अपने प्रधान वानरा हुल को आज्ञा दी कि राजकुमारी रात पड़ने पर कहाँ जाती है इसका वह पता करे। प्रधान ने पता लगाया तो वह योगनियों के साथ खेलने जाती थी। सोझत को जब इस चौकसी का पता चला तो उसने राजा को श्राप दिया, जिससे उसका राज्य नष्ट हो गया और वानरा हुल शासक बना। कई पीढ़ियों तक हुलों का राज्य रहा। कई दिनों तक सोजत सोनगरों के रही फिर राणा की तरफ से सींधलों को हुई। (३८३-३८४/१-३)

चूंडा ने मरते समय रिडमल से वचन मांगा था कि मारवाड़ का टीका कान्हा को दिया जाय अतः रिड़मल ने ऐसा ही किया और स्वयं राणा मोकल के पास चला गया। मोकल ने उसे बसने के लिए सोजत का गांव धिणला कई गांवों सहित दिया। कान्हा के बाद सत्ता को राज्य करने का अवसर मिला और फिर जब सत्ता के लड़के नरबद की मूर्खता से उसका प्रधान रिणधीर अप्रसन्न हुआ तो मोकल की सहायता से रिणमल ने मंडोर पर अधिकार कर लिया तब भी सोजत इसे राणा की ओर से दी हुई थी। जब रिड़मल चित्तौड़ में धोखे से मारा गया, तो जोधा को भी मंडोर में टिकने नहीं दिया। सोजत रा० राघवदास सहसमलोत को राणा की तरफ से देदी गई।

(३८३-३८८/३-९)

जोधा ने जब मंडोर पर पुनः अधिकार किया, तो सोजत पर भी कब्जा कर लिया। जोधा के बाद शासकों का अधिकार इस प्रकार रहा—

१. राव सूजा, सैयदों को बादशाह ने दी।
२. राव वीरमदे वाघावत को भाई-बंटे में हुई।
३. राव गांगा ने वीरमदे से १५८८ में लेली।
४. राव मालदे के पास सोजत रही।
५. टीके बैठते समय चंद्रसेन के पास भी थी।
६. राव राम को संवत् १६२१ में अकबर ने चंद्रसेन से दिलवाई।

७ राव कला रांमोत को एक वार हुई।

८. संवत् १६३४ सुरतांण जयमलोत मेड़तिया को अकवर ने दी।

९. राजा सूरजसिंह को पुनः १६६५ में दी।

१०. राजा गजसिंह को टीके के साथ सवत् १६७६ में हुई, तवसे जीवन-पर्यन्त रही।

११. राजा जसवंतसिंह के यथावत जीवन भर रही—१६९४ तक।

अस्थाई तौर पर इन लोगों के पास भी रही—

१. राव चंद्रसेन डूंगरपुर से लौटकर आया तब एक बार सोजत ली।

२. रायसिंघ चंद्रसेनोत को अकवर ने सवत् १६४० में दी।

३. मोटाराजा को नवाव खानखाना ने १६४१ मे दी थी।

४. राजा सूरजसिंघ को १६५१ में।

५. मकतसिंह उदैसिंघोत को अकवर ने १६५६ में दी, १ वर्ष रही।

६. राव करमसेन उग्रसेनोत को सवत् १६६४ में जहांगीर ने दी थी।

(३८८-३९०/९)

सोजत का कोट छोटी-सी पहाड़ी पर बना हुआ है। थोड़े-से ही घर उसमें है। राजा गजसिंह ने एक घर यहाँ वनवाया था। वीरमदे आघावत का यहाँ देवस्थान है। पूजा होती है। घरो के आगे दरवार लगाने का चौतरा है। एक ही प्रोल है। परकोटे की प्रोल है उस पर दीवानखाना है। परकोटे में एक मन्दिर चत्रभुजजी का है। गौतमगिरी सन्यासी का तकिया है। घर २,२०० के करीब वस्ती है। (२९०-२९१/१०)

संवत् १७१६ में कस्बे की बस्ती का अनुमान इस प्रकार है -

७३८ महाजनो के घर, ८ पंचोली, ३०५ करसा, १४२ राजपूत, ७२ मुसलमान, ३६४ ब्राह्मण। ६५२ अन्य निम्न कौंम के घर। कुल २,२५४ घर।

(३९१/११)

शहर में ८ के लगभग देवस्थान है, १० के करीव तालाब हैं। इस समय सोजत की सीमा मे ५ गांव नये वसे हैं। शहर में एक रहट है, चारों तरफ भी रहट हैं। सूकड़ी और गीलड़ी नदियां शहर के आगे आकर शामिल होती हैं। नदी के दूसरी तरफ २५-३० वड़े रहट है। वाग, वाड़ी आदि हैं। वड़ा जोड़ भी है। घांची, माली, सीरवी राजपूत आदि खेत वोते है। (३९२-९४/१२-१६)

कस्बे के खेतों की विगत। (३९२-९५/१७)

सोजत की सीमा इतने गावो से लगती है। (३९५/१८)

कस्बे सोजत के हासल व लगान आदि की विगत। (३९४-४००/१९-२०)

बादशाह की तरफ से राजाओं को सोजत दी गई उसकी तनख्वाह के दाम। (४००/२१)

परगने सोजत के खालसे के हासल की पैदावार—संवत् १६९२ से १७१७ तक की। जागीरदार तथा सांसण आदि की आमदनी की कुल विगत संवत् १७११-२१ तक की। (४००-४०२/२२)

परगने के गांवों के हासल की विगत किस्म के अनुसार—

४९ गांव अवल आमदनी, ४५ दोयम आमदनी, ३४ सहेल ऊनाली, २४ सेवज तथा ढीबड़े आदि होते हैं। (४०२-४०५/२३-२६)

३२ गांव सूने है, वे मांजरे की सूची में लिखे जाते है। २७ गांव मेरों के अधिकार में हैं। ३३ सांसण के गाव है। (४०५-४०८/२७-३१)

कुल गांव १५२ ऐसे है जिनका हासल आता है। इनकी आमदनी आदि की सूचियाँ वर्गीकरण के अनुसार। (४०८-४१६/३२-३७)

सांसण तथा सूने गांवों की संक्षिप्त विगत। (४१६-४२४/३८-४३)

परगने सोजत के गांवों का विवरण—

सोजत से दूरी, आबादी, जमीन की किस्म, जलाशय आदि। पांच वर्ष की आमदनी १७१५ से १७१९। (४२५-४७७/४४-४५)

सांसण के गांवों की विस्तृत विगत, ब्राह्मण, चारण, जोगी आदि को। (४७७-४९२/४६-४९)

परगना जैतारण

यह परगना जोधपुर से २७ कोस की दूरी पर पूर्व के दाहिनी ओर को है। संवत् १५२५ में यहाँ नया शहर बसा। पहले आगेवा के स्थान पर था। यहाँ पहले जैतू गूजर रहती थी, इसीलिए जैतारण नाम पड़ा। जोधा ने यह स्थान बसाया। पहले यह सीधलो के अधिकार में राणा की ओर से थी।

नरसिंघ की पत्नी सुपियारी को नरवर ले आया था। उसका वैर लेने की घटना इस परगने से सम्बन्ध रखती है। जब सूजा गद्दी पर बैठा, तो उसने सभी सींधलों को निकाल दिया। ऊदा सूजावत को जैतारण में बसाया जिससे ऊदावतों का अधिकार यहाँ खूब जमा। राव मालदे ने रतनसी खींवावत को जैतारण दी थी। संवत् १६१४ में बादशाह की फौज से लड़कर वह काम आया। रतनसी के लड़के कल्याणसिंह आदि ने मुगलों से मिलकर इस पर अधिकार रखा, इस पर चद्रसेन ने उन पर चढ़ाई की थी।

मोटाराजा को अकबर ने इसका आधा हिस्सा ६५ गांवों से दिया था। संवत् १६५१ में उसकी मृत्यु होने पर उसके लड़कों में गांव बाँट दिये। आधी जैतारण ऊदावतों को थी। संवत् १६६१ में पूरी जैतारण सूरसिंघ को अकवर ने दी। सूरसिंघ के बाद १९ साल तक गजसिंह के ही पास रही। गजसिंह की मृत्यु पर एक बार जैतारण तागीर हुई। जसवंतसिंह को संवत् १६९६ में मिली। (४९३-४९६/१)

कस्बे की वस्ती संवत् १७१९ में लिखी गई तब सभी जातियों के घर १८३९ थे। सांसण के गांवों की विगत शासकों के अनुसार। (४९८-५००/१)

जैतारण के खालसा के गांवों की आमदनी संवत् १६९२ से १७१७। परगने के खालसा, जागीर, सांसण आदि सभी प्रकार के गांवों की आमदनी संवत् १६११ से १७२०। गांवों का वर्गीकरण मय आमदनी के। सूने गांव तथा सांसण के गांवों की भी सूची। (५००-५०९/२-११)

परगने जैतारण के गांवों का विस्तृत वृत्तान्त जोधपुर से दूरी, आबादी, जमीन की किस्म, पैदावार, जलाशय तथा ५ वर्ष की आय संवत् १७१५ से संवत् १७१९ तक की। (५०९-५४२/१२-२२)

सांसण के गावों का विस्तृत विवरण, ब्राह्मणों, चारणों व जोगियों को दिये हुए। (५४३-५५४/२३-२४)

परगने जैतारण के गांवों की सीमा जिन अन्य परगनों के गावों से लगती है, उनकी तालिका। (५५५-५५७/२४)

शोध-सूत्र : द्वितीय भाग

परगना फलोदी

इसका आदि नाम विजैनगरी है। यहां पंवार राजा राज्य करता था। उस काल में बने कल्याणरायजी के मंदिर के स्तम्भ पर इस आशय का एक लेख सवत् ११४५ का है। पंवारो से जब बाहड़मेर छूटा तब यह धरतीं भी छूट गई। यह शहर उजड़ गया, केवल एक मंदिर ही बचा। तत्पश्चात् जब मडोर पर राठौड़ों का राज्य हुआ तो चूंडा, रिड़मल और जोधा के समय तक यह कस्बा आबाद नही हुआ। जब सूजा जोधपुर की गद्दी दर बैठा, तो उसने अपने पुत्र नरा को बसने के लिए इस ओर भेजा। यहां पहले फलू पालीवाल ब्राह्मण की बेटी फळोधी आकर रही थी और यह स्थान फळूधी का वास कहलाता था। सीधू फला जैसलमेर के गाव आसणीकोट रहता था। रावळ से उसकी अनबन हो गई तब वह अपने १४० गाडे लेकर यहां आकर रहा। नरा ने प्रयत्न करके इसे आबाद किया। (पृ० १/अ० १-२)

उन दिनों पोकरण जगमाल मालावत के पोत रावत खीवा बरजांगोत के अधिकार में थी। नरा ने उसे अपने अधिकार में करने का विचार किया। उसने अपने जासूस लगा रखे थे उन्होंने एक दिन खबर दी कि खींवा उधारस गांव गया हुआ है। अवसर देख कर नरा २०० सवारों से पोकरण पर चढ़ा और गढ पर अधिकार कर लिया। खींवा बाहड़मेर चला गया। नरा राव सातल् के गोद था इसलिये उसने सातल के नाम से वहां सातलमेर गढ वनाया। (२/२)

फिर खीवा लूंका पोकरण पर चढ आया और वहां की गायों को घेर कर ले गया। नरा नें उसका पीछा कर नांदणहाई नामक स्थान पर उसे पकड़ा परन्तु युद्ध में नरा मारा गया। सूजा को खबर मिलते ही वह ससैन्य आया और खीवा के गांव लूटता हुआ पोकरण पहुँचा। नरा के पुत्र गोयंद को गद्दी

पर बैठाया। यह गोयंद वड़ा युद्धनिपुण वीर हुआ। इसने हमीर को फलोदी दी। वह राव कहलाया। हमीर ने संवत् १५५५ में कोट के लोहे के दरवाजे करवाये तथा अनेक जलाशय आदि बनवाये। एक बार पोकरण और फलोदी की सीमा के सम्वन्ध में गोयंद से इसकी खटपट हुई तब इसकी दादी लक्ष्मीवाई ने आकर घोड़ाकधी के पास सीमा निश्चित कर दी। (२-३/३)

हमीर के पश्चात् उसका पुत्र रांम गद्दी पर वैठा। रांम ने यहां रांम तालाब खुदवाया। ये जोधपुर के शासक को अपना स्वामी मानते रहे है परन्तु मालदे और शेरशाह मे संवत् १६०० में जव युद्ध हुआ तो रांम ने सहयोग नहीं दिया, जिससे मालदे नाराज हो गया। रांम के प्रधान जगहथ के द्वारा विप दिये जाने के कारण रांम की मृत्यु हुई। (३/४)

रांम के स्थान पर उसका भाई डूंगरसी गद्दी पर वैठा। उधर पोकरण में गोयंद की मृत्यु सवत् १५८२ में हुई तव उसके स्थान पर जैतमाल गोयंद का लड़का गद्दी पर वैठा। मालदे ने ये दोनो परगने लेने के विचार से षड़यंत्र रचा और डूंगरसी को होली खेलने के वहाने से गांव चवां में वुलाया और आंखों में गुलाल डाल कर बंदो वना लिया। फलोदी पर घेरा डाला गया। जगहथ देपावत ने किले की रक्षा का बीड़ा उठाया। पोकरण का स्वामी जैतमाल जैसलमेर के रावल मालदे का दामाद था। उसने जैसलमेर वालों से सहायता के लिये निवेदन किया तो रावल ने कुवर हरराज के साथ पोकरण को फौज भेजी। उन्होंने जाकर फलोदी पर भी दखल किया तव राव मालदे को फौज से युद्ध हुआ जिसमें भाटियों का वड़ा नुकसान हुआ। पृथ्वीराज के हाथ से रावत भीव मारा गया। डूंगरसी ने रावजी से कहा कि मुझे मुक्त करे तो मैं आपको फलोदी का गढ सौप दूंगा। राव ने ऐसा ही किया तव डूंगरसी के कहने से जगहथ देपावत ने गढ मालदे को सौपा। १५ वर्ष तक वहां मालदे का अधिकार रहा। (३-५/५)

संवत् १६१९ में जव मालदे की मृत्यु हुई तो झाली सरूपदे ने उदयसिंह को फलोदी दिलवाई। उदयसिंह फलोदी मे रहने लगा। गांधाणी के हासल के प्रश्न को लेकर लोहावट के पास उदयसिंह और चंद्रसेन में यहां जवरदस्त युद्ध हुआ था। संवत् १६२७ में घोड़ों की कतार के प्रश्न को लेकर राव

थिरराज डांगा इनके पास आया। डांगा को आश्वस्त कर, उसके साथियों सहित डांगावास नामक स्थान पर देशमुख चौधरी बनाकर बसाया।
(३८ ३९/४-५)

फलोधी पारसनाथजी का मन्दिर संवत् ११९१ में साह श्रीमल ने बनवाया। संवत १५५५ में देवराज के पुत्र राणा हेमराज ने उसका जीर्णोद्धार करवाया। राव बरसिंघ तथा दूदा ने कोसाणा, मादलिया तथा चौकड़ी के अनेक सांखलों का सफाया किया। (३९/६-७)

नागौर के जिन-जिन गांवो से आकर जाट मेड़ता के गांवों में बसे उनकी सूची। (३९-४१/८)

डांगा जाट प्रारम्भ में चहुवान राजपूत थे। इनका पूर्वज जगसी, छाजू का पुत्र, जाट हुआ। डांगा जाटों की पीढी। (४१/९)

श्री फलोदी माता का मन्दिर मूलतः राजा मानधाता का बनवाया हुआ है। संवत १०८३ का लेख स्तभ पर है। एक स्तंभ पर १०७६ का भी लेख है। सवत १५५५ मे बरसिंघ और दूदा के आदेश से देवराज के पुत्र हेमराज ने उसका जीर्णोद्धार करवाया। (४१/१०)

कुछ दिनो वाद बरसिघ और दूदा में अनबन हो गई। राव दूदा बीकानेर चला गया। पीछे अकाल पड़ा। बरसिघ के चाकर भूखो मरने लगे तब उसने सांभर पर हमला किया और खूब धन लूट लाया। उन दिनो अजमेर माडव के बादशाह के अधीन था। वहाँ मलूखाँ सूबेदार था। वह इस घटना से बड़ा कुपित हुआ परन्तु चुपचाप बैठा रहा। (४२/११)

. कुछ समय बाद बरसिंघ और सातल के बीच भी अनबन हो गई बरसिंघ ने सातल से जोधपुर की सीमा में से कुछ भूमि मांगी। समझौते के लिये दोनों ही अजमेर मलूखाँ के पास पहुँचे। इस समस्या का कोई हल नही निकला। इतने में बरसिंघ से मलूखाँ नाराज था ही वह कुछ बहाना बनाकर उस पर चढ आया। बरसिंघ सातल के पास जोधपुर गया। पीछे मलूखाँ ने मेडता और जोधपुर की धरती में काफी नुकसान किया। ये लोग जोधपुर से तैयारी करके ससैन्य बीसलपुर आकर ठहरे। उस समय युद्ध-संचालन का सारा कार्य-भार वरजाग भीवोत पर था। परन्तु वह युद्ध से उदासीनता प्रकट करने लगा।

तव प्रधानो ने परामर्श दिया कि यह कभी का भावी की जागीर मांगता है सो इसे भावी का पट्टा देकर भी जसे तैसे राजी करो। तव भावी का पट्टा उसे लिख दिया गया। वह बड़ा अनुभवी योद्धा था। उसने गुप्त वेश में जाकर पहले विरोधियों की फौज की स्थिति का अध्ययन किया और फिर रात में फौज की तीन टुकड़ियाँ वनाकर अचानक हमला किया। इस युद्ध में राव सूजा वुरी तरह घायल हुआ। मुगल वहुत-से मारे गये। सातल की विजय हुई। वरसिंघ आकर मेड़ता में बसा। (४२-४४/१२-१५)

मलूखाँ ने मांडव के वादशाह से सहायतार्थ सेना माँगी। सेना आजाने पर वरसिंघ से मलूखाँ ने फिर बात-चीत प्रारम्भ की। सरदारों ने बरसिंघ को सम्पर्क न करने के लिये वहुत समझाया पर वह नही माना। अन्त में मुगलों से वचन लेकर बरसिंघ अजमेर जाकर मिला। पहले उसका बड़ा स्वागत किया गया और फिर विश्वास में लाकर कैद कर लिया। जब दूदा को बीकानेर में यह घटना मालूम हुई तो उसने वीका से सीख मांगी। वीका भी सहायतार्थ रवाने हुआ। दूदा ने मेड़ता में फौज शामिल की। दोनों ने जव अजमेर पर चढ़ाई की तो मलूखाँ ने बातचीत करके फौरन बरसिंघ को छोड़ दिया। ये तीनों मेड़ते आये। (४४-४६/१६-१७)

६ महीने बाद वरसिघ मर गया क्योंकि मलूखाँ ने उसे मयादी जहर दे दिया था। उसके लड़के सीहा को टीका दिया गया। सीहा अयोग्य था जिससे अवसर देखकर सातल और सूजा ने इस ओर दखल देना प्रारंभ किया। अपने अधिकारी तक कुछ स्थानों पर भेज दिये। ऐसी स्थिति देखकर सीहा की मां ने पंचो से राय ली और उसी के अनुसार राव दूदा को आधे मेड़ते का हकदार स्वीकार करके बीकानेर से वुलाया। उसने आकर सारी व्यवस्था जमा ली। (४६-४७/१८-१९)

दो वर्ष तक तो सीहा और दूदा ने मेडता की आमदनी आधी-आधी वांट-कर ली। परन्तु सीहा किसी काम के योग्य नही था। अतः दूदा ने उसे राहण की जागीर देदी और मेड़ते की गद्दी पर स्वयं वैठा। संवत् १५५४ में दूदा का स्वर्गवास हो गया। टीका उसके पुत्र वीरम को मिला। सीहा के तीन लड़के थे र, वे वड़े तेजस्वी निकले। मेड़ते का अधिकार प्राप्त करने को वे राव मालदे से जा मिले। मालदे यह चाहता ही था। अतः सीहा के पुत्रों और

वीरम के बीच तनाव बढ़ा और कुसाणा के पास युद्ध हुआ, उसमें अनेक आदमी मारे गये। वीरमदे का प्रमुख योद्धा रा० खंगार जोधावत घायल हुआ। वे तीनों भाई घायल हुए। वीरमदे विजयी हुआ। (४७-४८/२१)

संवत् १५८८ में गांगा की मृत्यु होने पर मालदे गद्दी पर बैठा। मेड़ते पर वीरमदे का अधिकार उसे सदा खलता था। मालदे उसे प्राप्त करने के खूब मन्सूबे वाधता था पर जैत कूंपा आदि की इसमें सहमति नही थी। जब मालदे ने सीधलों पर चढ़ाई की तो वीरमदे भी उसकी सहायतार्थ अपने योद्धाओं सहित उसके शामिल था। उसने अवसर देखकर नागौर के दौलतखांन को कहलवाया कि यह ही उचित अवसर है तुम मेड़ते पर चढ़ाई करदो, तुम्हारा जो हाथी वीरम ने रख लिया है उसको भी प्राप्त करलो। उधर उसने पंवार पचायण को भी कहलवाया कि मेड़ते पर चढ़ाई करके अखा का बैर लेने का यह उपयुक्त समय है। इसी प्रकार गागा सीहावत को भी चुपके से चढ़ाई करने का संदेश भेजा। वीरम को संदेह होने पर इस षड़यंत्र का कुछ अभास भी उसे हो गया। उसने फौरन मेड़ते सूचना भेजी। वहां अखैराज भादावत था, उसने सुरक्षा की व्यवस्था जैसे तैसे की। दौलतखान ने जब आकर घेरा डाला तो केवल १५-२० आदमियों से वह उन पर पिल पड़ा, वे भाग खड़े हुए। पंवार पंचायण लोहियावास नामक स्थान पर रायसल के सामने न टिक सका। गांगा सीहावत ५०० सवारों से चढ़ाई के लिये आ रहा था परन्तु जब बांझांकूड़ी की नदी के पास आया तो क्या देखता है कि अनेक लोग उसका साथ छोड़ चुके हैं, तब वह निराश होकर वही से लौट गया। (४८-५०/२२-२४)

वीरम को इन घटनाओ की सूचना मिलते ही वह अपने आदमियों को समझा-बुझाकर वहाँ से मेड़ते के लिये रवाना हुआ और दूसरे दिन उसकी सेना के लोग भी मालदे से विदा लेकर मेड़ते आये। मालदे जैता कूपा के सामने लज्जित हुआ। (५०-५१/२४)

इन्ही दिनो में माडव का बादशाह मर गया तव सूबेदार अजमेर का गढ़ खाली कर चला गया। वीरम को जब पता लगा तो उसने गढ़ पर अधिकार कर लिया। मालदे ने जव यह सुना तो वह ईर्षा से जल-भुन गया। उसने वीरम को कहलाया कि अजमेर तुम्हारे अधिकार में खट नही सकेगा और राठौड़ों

के घर में टीकायत मै हूं सो गढ मुझे सौपो। वीरम ने इसकी परवाह नही की। मालदे ने मेड़ते पर चढ़ाई की। वीरमदे ने मेड़ता पहले ही खाली कर दिया और अजमेर आ रहा। संवत १५९५ में मालदे ने मेड़ते में अपना अमल किया और अजमेर की ओर के वड़े-वड़े गांव अपने उमरावों को बॉट दिये। रा० सहसा तेजसियोत को अनेक गांव पट्टे में दिये। वीरम इस वात से वड़ा अप्रसन्न हुआ और सहसा को मारने को कटिवद्ध हुआ, यद्यपि सरदारों ने उसे समझाने का वहुत प्रयास किया। (५१-५२/२५)

वीरमदे ने अपने जासूस भेजे। उन्होंने सूचना दी कि सहसा रीयां में रहता है। एक घडी रात निकलने पर वीरम रीयां पर चुपके से चढ़ा। सहसा के जासूसों ने उसे भी खवर दी। उसने कूपा भी के पास सदेश भिजवाया कि हमारी सहायता करो तो यह समय है। सहसा ५०० आदमियों के साथ केसरिया करके गांव के बाहर आकर बैठा और वीरम का इन्तजार करने लगा। अव भी रात कुछ शेष थी। उधर से कूपा भी अपने साथियों सहित आ रहा था। ठेट सहसा के पास पहुँचने के पहले ही गांव के समीप कूंपा के साथियों और वीरम में मुठभेड़ हो गई। वड़ा जवरदस्त युद्ध हुआ। वीरमदे और राठौड़ भदा ने वड़ा पराक्रम दिखया। भदा कूंपा ने फिर भी लिहाज किया। जालोर के एक विहारी सरदार ने वीरमदे को वड़ी कठिनाई से युद्ध-भूमि में से निकाला। वीरमदे अपने घायलो को लेकर लौट गया। मालदे का मेड़ते पर अधिकार इस घटना से जम गया। (५२-५४/२६)

एक वर्ष के वाद मालदे ने वीरमदे से अजमेर भी छीन लिया। वह वहां से कुछ समय के लिये कछवाहों के यहाँ नरायणे जा रहा। मालदे ने डीडवाना और सांभर पर भी अपना अधिकार कर लिगा। वीरमदे चाटसू गया। राव की फौज ने उसका पीछा किया तव वह लालसोट गया। वहाँ भी उसे टिकने नही दिया तव वावलो जाकर डेरे किये। (५४/२७)

फिर वीरमदे ने अपने प्रधान राठौड़ अखैराज तथा मु० खीवा को रणथंभोर के सूवेदार के पास भेजा। वह कोई नवाब था जो प्राय: भीतर ही रहता था इसलिये उससे मुलाकात होना वड़ा कठिन काम था। तव उन्होने युक्ति से काम किया और नवाव के लड़के की सगाई करने के वहाने से वहाँ के

अधिकारियों को राजी किया। खीवा ने यह सब कार्यवाही की। नवाब बड़ा प्रसन्न हुआ। वीरमदे को मिलने का अवसर दिया गया। वह ४०० सवारों सहित आकर मिला। विरमदे ने सारी परिस्थिति उसके सामने स्पष्ट की। तब उसने बादशाह को सारी स्थिति लिख कर अवगत कराया। बादशाह ने वीरम को दिल्ली भेजने को लिखा। वीरम ने वहां पहुंच कर दोवान आदि अधिकारियों को अपनी चतुराई से प्रसन्न किया। बादशाह भो खुश हुआ। वह मालदे से अप्रसन्न था ही। उधर बोकानेर से भींव जैतसियोत मु० नगा भी अपनी फरियाद मालदे के विरुद्ध लेकर आये थे। बादशाह ने चढाई की तैयारी कर आगरे में डेरा किया। (५४-५६/२८-३०)

यह सूचना मालदे को भी मिली तब उसने भी युद्ध की तैयारी की। वह ८०,००० सवारों से चढ़कर मेड़ते पहुँचा। बादशाह मौजाबाद के पास आया। मालदे अजमेर पहुँचा। वीरमदे और मालदे के बीच सदेशवाहक फिरने लगे, पर बात बनी नहीं। जैता कूपा के पास भी आदमी आये, जिससे मालदे को संदेह हो गया। मालदे ने अपना डेरा पीछे हटाया। फिर एक डेरा और पीछे हटाने को कहा, तब जैता कूंपा ने ऐसा करना अनुचित समझ, राव की आज्ञा नहीं मानी। मालदे के दिल में संशय पैदा हो गया। वह थोडी रात गये जैता कूंपा से बिना सलाह किये वहाँ से रवाना हो गया। जैता कूंपा, खीवा, जैतसी, सो० अखैराज रिणधीरोत आदि सरदार २०,००० आदमियों सहित वहीं रुके, बाकी के लोग राव के साथ चले गये। सुबह समेल की नदी के उस ओर युद्ध हुआ। राव के ५००० से ऊपर आदमी काम आये। (५६-५७/३१)

रा० वीरमदे बादशाह को लेकर जोधपुर आया। यहां रा० अचलो सिवराजोत, रा० तिलोकसी सिवराजोत, भा० संकर सूरावत आदि गढ़ के रक्षार्थ काम आये। कुछ दिन बादशाह यहाँ रहा, फिर यहाँ का प्रबन्ध सैयद हासिम कासिम को सौपकर प्रस्थान किया। मेड़ता वीरमदे को मिला। बीकानेर कल्याणमल को प्राप्त हो गया। (५७-५८/३२-३४)

राठौड़ वीरमदे का जन्म संवत् १५३४ में हुआ और मृत्यु १६०० के पोष माह में हुई। उसके पीछे उसके पुत्र जैमल को मेड़तियों ने टीका दिया और बादशाह की ओर से मेड़ता उसे जागीर में मिला। १० वर्ष तक उसने शान्ति से राज्य किया। (५८/३५-३६)

संवत् १६०३ में शेरशाह की मृत्यु होने पर मालदे ३ वर्ष का समय पीपलण के पहाड़ों में काटकर जोधपुर के खाली गढ़ में आ रहा, क्योंकि बादशाह के अधिकारी यहाँ से चले गये थे। फिर संवत् १६१० में मालदे ने जैमल पर चढ़ाई की। जयमल इस युद्ध में विजयी हुआ। मालदे के प्रथीराज जैतावत, धनो भारमलोत आदि वीर काम आये। जैमल के रा० अखैराज भदावत आदि काम आये। (५८-५६/३७-३६)

संवत् १६१३ में हाजीखाँ और राणा उदैसिंघ के बीच जो युद्ध हुआ उसमें मालदे ने हाजीखाँ की सहायतार्थ १५०० आदमी देकर राठौड़ देवीदास जैतावत को भेजा था। राणा उदैसिंघ की तरफ जैमल सहित अनेक हिन्दू राजा थे। यह युद्ध अजमेर से कोस १२ हरमाड़े नामक स्थान पर हुआ। यहाँ रा० देवीदास जैतावत के हाथ से वालीसा सूजा मारा गया। हाजीखाँ की विजय हुई। विपरीत परिस्थितियाँ देख कर जैमल मेड़ता खाली कर राणा के देश चला गया। मालदे ने मेड़ते पर अधिकार कर लिया और मकान ध्वस्त करवाये। (५६-६०/४०-४१)

राव ने आधा मेड़ता संवत् १६१६ में जगमाल वीरमदेओत को ७१ गाँवों से दिया। फलोदी महामाया के मंदिर में कँवर चंद्रसेन और जगमाल के बीच मुख्य सरदारों की उपस्थिति में कुछ शर्तों को दोनों ओर से निभाने की शपथ ली गई। शहर के अनेक मकान ध्वस्त किये गये और उसका नाम बदल कर नयानगर रखा गया। (६१-६३/४२-४४)

संवत् १६१८ में जैमल बादशाह के पास गया। बादशाह ने मेड़ते पर जैमल का अधिकार करवा देने के लिये ७००० घोड़ों से सरफदी को भेजा। राव की ओर से देवीदास जैतावत मेड़ते के मालकोट में थानेदार की हैसियत से रहता था। मालदे को चढ़ाई की सूचना मिलने पर चंद्रसेन और पृथ्वीराज कूंपावत आदि को २००० सवारों सहित यह आदेश देकर भेजा कि युद्ध करने का ठीक अवसर देखें तो युद्ध करें, वरना देवीदास को लेकर लौट आवें। इन लोगों ने जाकर मालकोट के पास डेरे किये। रा० सांवलदास ने एक हमला किया, जिसमें १०० मुगल मारे गये। (६३-६४/४५)

मालकोट के मुगलों का घेरा लग जाने पर निरंतर हमले पर हमले होने लगे। मालदे का यह संदेश बार-बार आने लगा कि मुगलों की फौज अधिक है अतः

देवीदास किला खाली करके निकल जाय, व्यर्थ में क्यों वीरता का प्रदर्शन करता है। किले की एक बुर्ज सुरंग से उड़ गई तब देवीदास मुगलों से बातचीत कर किले से निकलने लगा। कुछ ही दूर निकला होगा कि जैमल ने सरफदीन को कहा कि देवीदास प्राणों की भिक्षा माँगकर किले से निकले ऐसा सरदार नहीं है। वह निकला इसीलिये है कि मालदे को लेकर रातों-रात अपने ऊपर आएगा। अतः इसे मार डालना ही उचित है। बात ही बात में उन्होंने देवीदास का पीछा किया। सातलवस के पास युद्ध हुआ, उसमें देवीदास सहित ३३ योद्धा मारे गये। (६४-६६/४६-४७)

इस युद्ध के बाद मालदे ने कोई चढ़ाई मेड़ता पर नहीं की। जैमल को मेड़ता बादशाह की ओर से मिला। मालदेव की मृत्यु के उपरान्त चंद्रसेन गद्दी पर बैठा परन्तु आन्तरिक विग्रह के कारण उसने मेड़ता का नाम नही लिया। जयमल की ओर से बादशाह के वहाँ वीठलदास जैमलोत चाकरी करता था। सरफदीन उस पर बड़ी कृपा रखता था। सरफदीन पर किसी कारणवश बादशाह नाराज हो गया, अतः वह वहाँ से भागा तब वीठलदास को भी साथ लेकर मेड़ते की तरफ आया। सरफदीन डागोलाई ग्राम में रुका और वीठलदास ने आकर सारी हकीकत जैमल से कही तो जैमल बड़ा पसोपेश में पड़ा। सरफदीन की इच्छानुसार उसके आदमियों को नागौर से बुलवाने के लिये सादूल जैमलोत को नियुक्त किया। बादशाह के एक मनसबदार से उसकी मुठभेड़ हो गई उसमें वह ४० आदमियों सहित मारा गया। जयमल बड़ा निराश हुआ और अन्य कोई चारा न देखकर संवत् १६१९ में मेड़ता छोड़कर मेवाड़ गया। राणा ने उसे बदनोर की जागीर दी। जब संवत् १६२४ में बादशाह अकबर ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की तो अपने ४०० आदमियों सहित जैमल वीरतापूर्वक लड़कर काम आया। (६६-६८/५१)

सरफदीन को क्यों भगना पड़ा, इसका किस्सा इस प्रकार है—बादशाह की मां हज के लिये मक्का गई थी, तब सरफदीन साथ भेजा गया था। मक्का में यह कायदा है कि सुहागिन स्त्री अपने पति के साथ उसका दामन (छेहड़ा) बांध कर ही पीरों के दर्शन कर सकती है। बेगम ने सफरदीन को छेहड़ा बांधने के लिये कहा। उसने बहुत आनाकानी की, परन्तु बेगम मानी नहीं, तब छेहड़ा बांध कर दर्शन किये। इस बात को लेकर कुछ चुगलखोरों ने बादशाह को

उल्टा सीधा सिखाया जिससे बादशाह नाराज हो गया और उसे मरवाने का हुक्म दिया तब वह भागकर जैमल के पास आया। (६८/५२)

जैमल स्वय सरफदीन को पहुँचाने सीरोही तक गया और अपने आदमियों को सपरिवार मेवाड़ की ओर रवाना किया। फिर जैमल बदनोर आया। राणा ने आकर उसे आश्वस्त किया और बदनोर, करहेड़ा तथा कोठारिया ग्राम जागीर मे दिया। (६९/५३)

चित्तौड़ का साका होने के ४-५ वर्ष बाद जैमल के लड़के रा० सुरताण केसवदास बादशाह के दरबार में पहुँचे। बादशाह ने मेड़ता तो उन्हे उस समय नहीं दिया परन्तु रणथभोर के पास मलारणा का परगना दिया। (६९/५४)

एक बात यह भी सुनी कि संवत १६३७ के लगभग बादशाह की ओर से सुरताण को सोजत जागीर में दी हुई थो। १६३७ में जब वह दरबार में गया तो उसे मेड़ता भी दे दिया गया। गांवो के बंटवारे को लेकर रा० नरहरदास ईसरोत से अनबन हो गई तब नरहरदास ने केसवदास जैमलोत का पक्ष लिया। वह उसे दरबार में ले गया और बादशाह को खुश कर आधा मेड़ता अपने नाम करवाया। (६९-७०/५५)

फिर ऐसी घटना हुई कि बादशाह की धाय एक बार मेड़ते आई। सीरोही का राव सुरतांण वहां तक पहुँचाने आया। धाय ने राठौड़ सुरताण व केशवदास से कहा कि मुझे आमेर तक पहुँचाने का प्रवन्ध करो। उन्होंने उसकी परवाह नही की और अपमानजनक शब्द कहे। उसने आमेर जाकर बादशाह से मेड़तियों के दुर्व्यवहार की शिकायत की जिस पर उसने मेड़ता इनसे तागीर कर लिया। रहने के लिये सुरताण को सरवाड़ और केसवदास को नागेलाव दिया। (७०/५६)

संवत १६४० में जब नवाब खानखाना गुजरात का सूबेदार था तब सुरताण जैमलोत उसके अधीनस्थ था। वहाँ जगा जाड़ेचा अहमदाबाद में बहुत लूट-पाट करता था। उसे मारने के सभी प्रयास विफल होते थे। अत में सुरतांण के राजपूतों ने उसे मारा। नवाब खानखाना इस कार्य में बड़ा प्रसन्न हुआ और बादशाह को सिफारिश कर मेड़ता उसे दिलवाया। संवत १६४२ की फागुन सुदि ३ को ये मेड़ता आ रहे। संवत १६४६ में सुरताण की मृत्यु हो गई। मेड़ता बलभद्र को मिला। (७१-७२/५७-५९)

संवत १६५३ में बलभद्र सुरताणोत की मृत्यु हो जाने पर उसके हिस्से का मेड़ता राठौड़ गोपालदास सुरताणोत को मिला। केसवदास का हिस्सा केसवदास के पास रहा। संवत १६५६ में दक्षिण में बीड़शहर है, वहाँ शाही सेना की ओर से चाँदबीबी के विरुद्ध लड़ते हुए गोपालदास, केसवदास और द्वारकादास जैमलोत तीनों ही काम आये। गोपालदास का हिस्सा उसके पुत्र जगन्नाथ को और केसवदास का हिस्सा कान्हदास को मिला। (७२/६०)

बाद में जब जगनाथ गोपालदासोत और कछवाहा राजा रामदास के बीच वैमनस्य हुआ तब संवत १६५८ में जगनाथ का हिस्सा राजा सूरजसिंह को दे दिया गया। उन दिनो कान्हदास केसवदासोत के आदमी शहर की कोटड़ी में रहा करते थे, तथा राजाजी का कामदार मालकोट में रहता था। संवत १६६१ में कान्हदास का स्वर्गवास हुआ तब मेड़तिया सरदार मुगल दरबार में गये परन्तु बादशाह ने इन्दरभाण को उत्तराधिकार देना स्वीकार नहीं किया और कान्हदास का भी हिस्सा सूरजसिंह को दे दिया। वह जीवन पर्यन्त उनके अधिकार में रहा। (७३/६१-६२)

संवत १६७६ में जब सूरजसिंह का स्वर्गवास हुआ तो मेड़ता जागीर होकर शाहजादे खुर्रम को हुआ। अबू अमीन होकर आया। संवत १६७९ में शाहजादे ने परगने के गांव अपने उमराव चाकरों को बांट दिये सो दो वर्ष तक इसी तरह रहे। २०४ गावो से कस्बा भीम अमरावत सीसोदिया को था।
(७३/६३-६४)

संवत १६७६ में राजाजी के जागीरदारों ने माल घासमारी वसूली की थी। इस सम्बन्ध में रा० गजसिंह खीवावत अबू के पास आकर २० दिन मेड़ते रहा तथा रुपये ५०,०००) दिये। (७४/६५)

संवत १६७९ में शाहजादा खुर्रम जहांगीर के विरुद्ध हो गया तब महाराजा गजसिंह बादशाह से चाटसू के पास आकर मिले। राजाजी के मनसब मे हजार जात की वृद्धि की गई। अजमेर सूबे के खालसे के सभी परगने परवेज की जागीर में हुए, उनमें मेड़ता भी शामिल था। मेड़ता परवेज ने सैयद को जागीर में दिया। फिर राजसिंह खीवावत ने प्रयत्न करके शाहजादे की ओर से ही मेड़ता राजाजी को दिलवाया। संवत १६८० भादवा वदि ८ को उनकी ओर से कान्ह खीवावत तथा भंडारी लूणा ने मेड़ते में अमल दस्तूर किया। रु० २,००,०००) में मेड़ता राजाजी को दिया गया था। (७४-७५/६६-६७)

संवत १६८२ में दक्षिण में महाबतखान परवेज की सहायतार्थ नियुक्त था। खुरासानियों के बहकावे में आकर बादशाह ने उसे दरबार में आने के लिये फिदाईखान के मारफत फरमान भेजा। उस समय फिदाईखान के साथ राजसिंह खींवावत दरबार में उपस्थित हुआ और मेड़ता शाही मनसब में पचास हजार रुपये खोजा के कहने से बढ़ाकर ढाई लाख रुपये में राजाजी को प्रदान किया गया। (७६/६८)

संवत १६८९ में जब आसफखान के साथ राजा गजसिंह दक्षिण में नियुक्त थे तब उक्त खान से राजाजी की अनबन हो गई। उसने दरबार में आने पर राजाजी के विरुद्ध बादशाह को शिकायत की तब पचास हजार रुपये की मेड़ते की रेख में वृद्धि करदी गई। (७६-७७/६९)

संवत १६९४ में जब राजा गजसिंह का देहान्त हुआ तो जसवंतसिंह गद्दी पर बैठा। उस समय उन्हें मेड़ता पचास हजार रुपये और बढ़ाकर साढे तीन लाख रुपये में प्रदान किया गया। (७७/७०)

परगने मेड़ते की पैमाइश संवत १६३० में किरोड़ी मूले ने की थी। उसके अनुसार जमीन की स्थिति इस प्रकार है—

कुल धरती बीघा—२६,१२.९५६
पहाड़, जंगल, नदी आदि—२,१५,४३०
बाकी उपयोगी भूमि—२३,९६,४२५
(७७/७१)

पटी वार प्रत्येक तफा की धरती की विगत उपरोक्त हिसाब से। (७८/७२)

परगने मेड़ते की सालाना कुल आमदनी की सूची संवत १७०१ से लेकर संवत १७२० तक। (७८-७९/७३)

मेड़ते परगने की तफावार आमदनी की सूची संवत १७०१ से १७२१ तक। (७९-८२/७४)

परगने मेड़ते की खालसा की आमदनी की विगत संवत १६९२ से संवत १७१७ तक। (८२-८३/७५)

परगने की आबादी संवत १७२० में नैणसी द्वारा कूती गई—२५१२ महाजन घर, ३६९ ब्राह्मण, ५३ कायस्थ, १ खत्री टोडरमल (तोडरमल), १९०

राजपूत, २९२ सिपाही (मुसलमान), ८ गेरूतबाब ईसर के लड़के, २१२४ अन्य निम्न जातियों के घर, ११ फकीर घरबारी लोग। (८३-८६/७६-७७)

परगने में कानूगोओं के हिस्से में बंटी हुई पट्टियों की विगत—

१।। पट्टी पंचोली रूपचंद सूरजमल भींवाणी के।

१।। पट्टी पंचोली हरवंस मांणक भंडारी के।

४ पट्टी छतरसिंह जादवदास जोगीदास अणंदोसा के पुत्रों के।

१ पट्टी कानूगा करमचंद गगाराम के।

१ पट्टी कानूगा गूजरमल के लड़के पोतों के।

इस प्रकार कुल ९ पट्टी। (८६-८८/७८)

परगने मेड़ते में लिया जाने वाला जमीन का लगान व अन्य करों की विस्तृत विगत महाराजा गजसिंह के समय से लेकर जसवंतसिंह के समय की (सं० १७१९)। (८८-९८/७९-८५)

परगने मेड़ते के गांवों की सीमा पास के परगनों के जिन-जिन गांवों से लगती है उसकी तालिका। (९८-१०६/८६-८८)

परगने में ब्राह्मणों, चारणों, देवस्थानों, भाटों तथा पीरजादा को दिये गये ग्रामों की विगत— राव बरसिंह जोधावत से लेकर जसवंतसिंहजी तक।

गांव	रु०	आसामी
१५।।	७७००)	ब्राह्मणों को
२	१३००)	देवस्थान
१	५००)	पीरजादा को
२७	१५०००)	चारणों को
१	२००)	भाट को
४६।।	२४७००)	(१०७-११५/८९-९०)

श्री फलोदी माताजी के मंदिर की हकीकत—यह मंदिर प्राचीन काल में राजा मानधाता का बनवाया हुआ माना जाता है। मालवदेश में जब शेरखान बादशाह का राज्य था तब उसके हुक्म से हिन्दू मंदिर गिराये गये तब इसका भी कुछ भाग खंडित किया गया। इसका जीर्णोद्धार राव जोधा के समय में हेमराज सुराणा ने करवाया। इसके पूर्वज बड़े प्रसिद्ध दानी थे। सं० १५५५ में इसकी प्रतिष्ठा का दस्तूर किया गया। (११५-११६/९१)

परगने के प्रत्येक गांव की विस्तृत विगत, तफा वार—

तफा	गांव	आबाद	सूने	दान दिये हुए
हवेली	१२	१०	०	२
				(११६-१२०/६२)
आणंदपुर	३९	३३	३	३
				(१२०-१२६/६३-६४)
मोकाला	४५	३४॥	२	८॥
				(१३०-१४१/६५-६६)
कलरा	४४	३२	८	४
				(१४१-१५३/६७-६६)
राहण	५६	३८	७	११
				(१५३-१६६/१००-१०३)
मोडरो	४१	३७	०	४
				(१६६-१७६/१०४-'०३)
अलतवा	३८	३०	४	४
				(१७६-१८६/१०४-१०७)
देघाणा	५१	४०	६	५
				(१८६-१६६/१०७-१०६)
रेयां	५८	४४	१०	४
				(१६६-२१३/१०६-११०)

परगना सिवाणा

यह जोधपुर से दक्षिण में है। जोधपुर से ३० कोस तथा जालोर से १५ कोस पड़ता है। धरणीवाराह ने अपने भाई भोज को जालोर दिया था। उसके लड़के पंवार वीरनारायण ने पहाड़ी पर सिवाने का गढ़ बनवाया, संवत् १०७७ में। इसके बीच में भांडेलाव नामक बड़ा तालाव है। किले में विशेष इमारतें बनी हुई नहीं है। (२१५/१)

पंवारों से यह गढ़ चहुवानों के अधिकार में गया। कान्हड़दे ने यह स्थान अपने भतीज सातलसाम को दिया था। बादशाह अलाउद्दीन इस पर

चढ़कर आया तो उसने छोटा-सी पहाड़ो पर यह किला देखा और इसका जीतना सहज जानकर इसका नाम सीवाणा रखा। पहले नाम कुभटा था। गढ के रक्षार्थ सातलसोम के साथ राव तोडा यहां काम आया था। (२१५-२१६/२)

फिर माला सलखावत ने मुगलों से छीनकर यह गढ़ रा० जंतमाल सलखावत को दिया सो ९ पीढी तक जैतमालों के सिवाना रहा। (२१६/३)

तत्पश्चात राव जोधा ने देवीदास से छल करके गढ़ पर अधिकार किया। अपने पुत्र सिवराज जोधावत को इसका प्रबंध सौपा। देवीदास भटकता हुआ सांचोर आकर रहा और घुघरोट के भायलों को सहायता लेकर किले पर पुनः अधिकार कर लिया। सिवराज दूनाड़े चला गया। (२१७-२१८/४-५)

कुछ दिनों बाद राणा देवीदास की मृत्यु हो गई तब गद्दी पर राणा जोगा बैठा। जोगा के बाद करमसी अधिकारी हुआ और उसके बाद डूंगरसी गद्दी पर बैठा। इस पर जोधपुर का शासक राव मालदे चढ़ आया। डूंगरसी ने गढ़ में रहकर कई महीने मुकाबला किया परन्तु अन्त में संवत् १५९५ आषाढ़ वदि ८ को गढ़ पर मालदे का अधिकार हो गया। मालदे के बाद कुछ समय के लिये रायमल मालदेओत को मिला। फिर चन्द्रसेन ने गढ़ अपने अधिकार में ले लिया। (२१८-२१९/६-७)

कुछ समय बाद बीकानेर के राजा रायसिंह व शाहबाजखाँ ने गढ़ को आ घेरा। राव भी वहीं था। मुकाबला हुआ। फिर संवत् १६३२ में गढ़ उन्हें सौप दिया। कई दिनों तक मुगलों का अधिकार रहा फिर वे खाद्यान्न की कमी के कारण उसे खाली कर गये। संवत् १६३५ में डूंगरपुर से आकर चन्द्रसेन फिर यहां रहने लगा। सं० १६३७ में उसकी मृत्यु हुई। रायमल भी जल्दी ही मरा। (२१९/८)

कल्याणदास तथा प्रतापसिंह मुगल दरबार में उपस्थित हुए तब इन दोनों भाइयो को सिवाना दिया गया। मोटा राजा ने शाहजादे को अपनी लड़की ब्याही तब वहां कल्याणदास से झगड़ा हो गया जिसके फलस्वरूप बादशाह नाराज हो गया और उसने चढाई का हुक्म दिया। कला ने वीरता से मुकाबला किया और अनेक योद्धाओं सहित काम आया। गढ़ पर सं० १६४६ में कब्जा हो गया। (२१९-२११/८-१०)

सीवाने परगने व उसके गावों की रेख की सूची। (२२१-२२३/११-१२)

कस्बे सीवाने की आबादी संवत् १७२१ के वर्ष में—राजपूतों के घर ६५, महाजनों के ८१, ब्राह्मणों के २५, मुसलमानों के ४० तथा अन्य निम्न जातियों के ४२, कुल वस्ती घर २८३। (२२३-२२४/१३)

गांवो की सूचियें बसने वाली जातियों की प्रमुखता के अनुसार। सूने गांव तथा सांसण के गांवों की विगत। (२२४-२३२/१४-१८)

परगने के गांवों की विस्तृत विगत उपरोक्त वर्गीकरण के अनुसार। (२३२-२६६/१९-२१)

परगने के सांसण (दान में दिये हुए) के गांवों को विस्तृत विगत। (२६६-२७७/२३-२४)

परगने के गांवों से पास के परगने की सीमाएँ लगती हैं उनकी तालिका। (२७८-२८०/२५)

परगने के खालसा के लगान को आमदनी की विगत संवत् १६९२ से १७१७ तक। (२८०/२६)

खालसा जागीर सांसण आदि कुल मिलाकर परगने की आमदनी। (२८१/२७)

सूकड़ी नदी के बहाव का हाल, जिन-जिन गांवों में होकर बहती है उनके नाम। (२८१/२८)

परगने के गावों का वर्गीकरण—जहां सिचाई होती है, जहां पानी भरने से गेहूं आदि होते हैं, जहां केवल सावणू एक ही फसल होती है, गांव जो सूने हैं। (२८२-२८५/२९)

सांसण के गावों की सूची, दान देने वाले शासकों के क्रम से। (२८६-२८८/३०)

परगना पोकरण

प्रारम्भ में यह शहर पुष्करणा ब्राह्मणो के पूर्वज पुष्कर ऋषि के द्वारा बसाया गया था। पुष्कर ऋषि जब यहां आकर बसा तो पानी की बड़ी कमी

थी, उसनें वरुण की आराधना की जिससे शहर के आस-पास पानी की अधिकता हुई। (२८९-२९०/१-२)

प्राचीन काल में यहां पर रवा पंवार राज्य करता था, श्री लक्ष्मी-नारायणजी का मंदिर उसी का करवाया हुआ है। उसके लड़का नहीं था। उसकी मृत्यु के पश्चात् नानग छावड़ा गद्दी पर बैठा जो बड़ा प्रसिद्ध वीर हुआ। उसका लड़का महि धवल हुआ। उसके समय में भैरवा राक्षस का बडा उत्पात था, उसके श्राप से पंवारों का राज्य समाप्त हुआ। (२९०-२९१/३-४)

इसके पश्चात् कई वर्षों तक यह धरती सूनी रही। महेवा में जब राव माला राज्य कर रहा था तब रामदेव पीर के पिता अजैसी ने उससे स्वीकृति लेकर पोकरण को बसाया। भैरवा राक्षस को पराजित कर रामदे ने वहा से उसे सिंध की ओर चले जाने का आदेश दिया। राठौड़ जगमाल मालावत के पुत्र हमीर के साथ रामदे की पुत्री का विवाह हुआ तब पोकरण उसे देकर रामदे रामदेवरे आ रहा। हमीर के बाद उनका राज्य तीन पीढ़ी तक यहां रहा। (२९१-२९२/५)

वरजांग का पुत्र राव खींवा निर्बल शासक था। उस समय तक पोकरण के किले की पोल के दरवाजे तक नहीं थे। नरा सूजावत उन दिनों फलोदी रहता था, उसने अवसर देखकर पोकरण पर अधिकार कर लिया। खींवा ने आकर उसके बहुत से जानवर घेर लिये। नरा ने पीछा किया और मुठभेड़ होने पर मारा गया। इस पर सूजा स्वयं फौज लेकर आया और दूर-दूर तक माला के गांव लूटे तथा पोकरण का टीका नरा के पुत्र गोयन्द को दिया। नरा ने पोकरण के पास पहाड़ी पर सातलमेर बसाया था। गोयन्द १५६० में गद्दी पर बैठा। कुछ वर्षों बाद पोकरणों ने रामदेवरे के पास से अनेक गाये घेर ली तब गोयन्द ने उनका पीछा किया। कोढ़णे के पास १४० पोकरणों को मारा और लूंका को पकड़ लिया। फिर लूंका से मेल करके पुराना बैर भुलाकर पोकरण के दो हिस्से कर दिये। सातलमेर अपने पास रखा और पोकरण लूका को दी। सातलमेर में उस समय ५०० घरों की बस्ती थी। (२९२-२९३/६-७)

गोयन्द की मृत्यु (सं० १५८२) के पश्चात उसका पुत्र जैतमाल गद्दी पर बैठा। यह योग्य शासक नहीं था। जैसलमेर के रावल मालदे की पुत्री से उसका विवाह हुआ था। इसके प्रधान ने कुछ बनियों को बहुत

सताया, उन्होंने जोधपुर के मालदे से फरियाद की जिसके फलस्वरूप मालदे फौज लेकर चढ आया। केवल ५ दिन जैतमाल मुकाबले में टिक सका और गढ मालदे को सौंप कर जैसलमेर चला गया। (२६३-२६४/८)

मालदे ने सवत् १६०७ में सातलमेर को ध्वस्त करवाया और पोकरण में पुराने गढ के स्थान पर नया गढ करवाया। पोकरण मालदे के अधिकार में जीवन पर्यन्त रही। उसके बाद चन्द्रसेन जब जोधपुर छोड़ कर पीपलरण के पहाड़ों में चला गया तब पोकरण के किले मे चहुवान रामा झांझणोत आदि सरदार रहते थे। उन दिनों राठौड़ मानसिंह कछवाहों की सहायता से गढ पर चढ आया। चन्द्रसेन भी सूचना मिलते ही पहुँचा और मानसिंह को भगा दिया। (२६५/११)

बादशाह नें भाटी भाखरसी हरराजोत को पोकरण प्रदान की। उस समय चन्द्रसेन मेवाड़ में था। भाखरसी ने आकर गढ़ के घेरा दिया। २ महीने तक बहुत प्रयत्न करने पर भी भाखरसी को सफलता न मिली और वह चला गया तब हरराज ने भीव को २००० योद्धाओ सहित भेजा। गढ़ के लोगो ने मुकाबला किया। इसी बीच लोगो ने बातचीत करवा कर एक लाख रुपियों में पोकरण इन्हें अडाणी (रहन) दिलवादी। तत्पश्चात चन्द्रसेन अन्य सघर्षों में व्यस्त रहने के कारण पोकरण की खबर न ले सका। (२९६-२९७/१२)

संवत् १६३८ में मोटा राजा को जब बादशाह अकबर ने जोधपुर दिया तब सातलमेर भी मनसब में लिखा गया। परन्तु वहाँ उसका अमल (राज्याधिकार) न हुआ। (२६७/१३)

सूरजसिंह जब गद्दी पर बैठा तो मनसब मे सातलमेर एक लाख दाम में लिखी गई। राजा ने कुवर गजसिह को सेना देकर पोकरण पर अधिकार करने को भेजा पर बादशाह ने मना कर दिया, अतः अधिकार न हो सका। (२६७-२६८/१४)

महाराजा जसवंतसिह को ६ लाख दाम में मनसब में पोकरण दी गई। जैसलमेर का मनोहरदास पोकरण का स्वामी था। उसका देहान्त हो गया तब बादशाह की स्वीकृति लेकर फौज की तीन टुकड़ियाँ तीन अधिकारियों - गोपालदास, वीठलदास और नाहरखान के सेनापतित्व में गढ प्राप्त करने को

भेजी। मु. नैणसी भी साथ था। भाटियों के ३५० योद्धा उस समय किले में थे। कई दिनों तक युद्ध होता रहा, अनेक भाटी काम आये। अन्त में काती वदि ५ को महाराजा का किले पर अधिकार हो गया। मुहणोत नणसी को वहां के थाने पर सुरक्षा के लिये अनेक योद्धा देकर रखा। (२९८-३०८/१५-१७)

पोकरण १५०००) की आमदनी का परगना है। इसमें रुपये ५०००) की आमदनी संवत् १७१६ में राहगीर व्यौपारियों से वसूल किये गये कर से हुई था। (३०८/१८)

पोकरण समतल व ठोस भूमि पर बसा हुआ है। मालदे ने जो गढ़ करवाया वह १५ गज ऊँचा है। इसे जगह-जगह रावळ भीव व कल्याणमल ने भी ऊँचा करवाया था। कोट में कुल २१ बुर्जें हैं। पहले एक ही पोल थी। महाराजा ने परकोटे की एक पोल और करवाई जिसे जसपोल कहा जाता है। कोट २०० गज चौड़ा और २०० गज ही लम्बा है। इसमें एक कुआ था, एक बावली है। १०० घर भाटियों के अन्दर बसते थे। मन्दिर एक जैन, एक देवी का तथा एक चावंडा की मूर्ति है। कोट के चारों ओर ४ गज गहरी और पांच गज चौड़ी खाई है। (३०८-३०९/१९)

पोकरण शहर की आबादी का अनुमान इस प्रकार है—३१० महाजनों के घर, ५० करसों के घर, ५० ब्राह्मणों के, ३० भोजग डोहकिया, तथा दूसरे अन्य जातियों के। इस प्रकार कुल घर ५५७ हैं। (३१०-३११/२०)

शहर में मन्दिर व जलाशय आदि इस प्रकार हैं—चत्रभुजजी का मन्दिर, सूरजजी का मन्दिर, देवीजी का मन्दिर (शहर से आधा कोस दक्षिण में), महादेवजी का मन्दिर, बालनाथजी का स्थान। जलाशय—डूंगरसर (शहर से १ कोस उत्तर में), नरासर (शहर से १½ कोस ईशान में), मेहरलाई (पूर्व में आधा कोस दूर), रूखी री तलाई, सुदाताधी तलाई, संघरलाई, मोखासर (इस पर नरा की छतरी बनी हुई है), रामदेसर, घरणीसर (पोकरण से डेढ कोस), लीगासर (पूर्व में ३ कोस दूर)। बावलियें—कुंभार वाय, मोहण वाय, नीबली, सरग वाय, मेहा वाय, बीस वाय, मदागण, भाखर वाय, कोहरियो, खांडी वाय, वछेसर, बाली बावड़ी, थड़ी वाव, सता वाय, देहाऊग वाय, खांखो री वाय, मोखासर आदि। ५ बावड़ियें दान दी हुई हैं। (३११-३१५/२१-२४)

नदी एक, पोकरण से दक्षिण की ओर (जो कुम्भारों का बाहळा कहाता है) कोट के नीचे से बहती है। इससे अनेक खेत भरते हैं। एक बड़ा जोड (चरागाह) है। इसमें खूब घास होती है। पीर रामदे का स्थान गढ में है क्योंकि पहले यहां रामदे की कोटड़ी थी। तीर्थ एक तृवाय कुंड है।
(३१५-१६/२५

पोकरण की जमीन का व्यौरा—सावणू खेती से सभी अनाज अच्छे पैदा होते हैं। ५ गांवों में सेंवज से २००० मन के करीब गेहूँ होते हैं। ५०० मन गेहूँ बावलियों पर होते हैं। (३१६/२६)

५ गांवों में नमक पैदा होता है—पोकरण, दांतसुई, लोहमे, धुहड़सर, आवणेसे। (३१६/२७)

परगने के गांवों की सूचियें जातियों की वस्ती के अनुसार।
(३१६-३१९/२८)

पोकरण से अन्य शहरों की दूरी—जोधपुर ४० कोस, जैसलमेर ३५ कोस, फलोदी १६ कोस, नागौर ६० कोस, बीकानेर ५५ कोस, महेवो ३५ कोस आदि। (३२०/२९)

परगने के गांवों से अन्य परगनों के गांवों की सीमा लगती है उसकी तालिका। (३२०-३२२/३०)

परगने की आमदनी, जमीन के लगान व मेले तथा सांसण के गांवों की, संवत् १७११ से संवत् १७१९ तक। (३२२/३१)

महाराजा जसवन्तसिंह का अधिकार होने के पश्चात् पोकरण परगने की आय संवत् १७०७ से संवत् १७१५ तक। तथा १७०७ से १७१५ तक नियुक्त हुए हाकिमों के नाम। (३२२-३२३/३२-३३)

श्री रामदेवजी के दो मेले वर्ष भर में लगते हैं—१. भादों में, २. माघ में। इनसे होने वाली आमदनी की सूची संवत् १७०७ से संवत् १७२०। पोकरणा राजपूतों की जसवन्तसिंह के समय में स्थिति पर टिप्पणी।
(३२३-३२४/३५-३६)

परगने की आमदनी के साधन तथा विभिन्न करों की विगत।
(३२५-३२७/३७-३८)

परगने के गांवों की विस्तृत विगत। (३२७-३४८/३६-४१)

सांसरण दिये हुए गांवों की विगत, ब्राह्मणों व चारणों को।

(३४८-३५५/४२-४३)

पोकरण का परगना शाही दफ्तर में सातलमेर लिखा जाता है। १७२१ में मु० नैणसी व पं० नरसिंघदास ने ४० गांवों की रेख शुद्ध करके लिखी। (३५६-३५७-/४४)

टिप्पणियें : प्रथम भाग

[महत्वपूर्ण व्यक्तियों तथा स्थानों आदि पर टिप्पणियें]

परगना जोधपुर

मंडोवर (प्र० १/अनु० १)—यह जोधपुर से ५ मील उत्तर की ओर है। इसका अस्तित्व ईसा की ४ शताब्दी से माना जाता है। शिलालेखों में इसका नाम माण्डव्यपुर लिखा मिलता है। यहाँ का दुर्ग अब ध्वस्त हो गया है परन्तु प्राचीन कला के कुछ सुन्दर नमूने अब भी देखे जा सकते हैं। राव रिडमल और कुछ समय तक जोधा की राजधानी यहाँ रही। जोधपुर राजधानी हो जाने के पश्चात् भी महाराजा तखतसिंह तक के शासकों का दाह-संस्कार इसी स्थान पर हुआ है। उन पर बड़े भव्य स्मारक बने हुए हैं। वर्तमान में यहाँ बड़ा आकर्षक उद्यान बना हुआ है।[1]

नव कोटि (१/२)—यहाँ उल्लिखित नव कोटों के आधार पर ही मारवाड़ को 'नव कोटी' मारवाड़ कहा जाता था और इसका क्षेत्र बड़ा विस्तृत माना गया है।[2]

नाहड़राव—इस शासक के सम्बन्ध में प्राचीन ख्यातों में अनेक वृत्तान्त मिलते है। इसने मंडोवर का दुर्ग सुदृढ़ करवाया तथा पुष्कर का तालाब खुदवाया। मारवाड़ का नारलाई ग्राम तथा आसोप के पास नाहड़सर तालाब भी इसी के बनाये हुए कहे जाते हैं। यह बड़ा प्रतापी शासक था।

लाखो फूलाणी (५/६)— यह यादवों की जाड़ेचा शाखा का शासक था, कच्छ भुज में इसका राज्य था। अपनी दानशोलता के कारण कर्ण के

---

१. विस्तृत जानकारी के लिये देखें 'जोधपुर राज्य का इतिहास' (प्रथम खण्ड) डॉ० ओझा, पृ० २४।

२. द्रष्टव्य-'नव कोठां री विगत"-मारवाड़ रा परगनां री विगत भाग २, पृ० ५००।

समान आज भी याद किया जाता है। मारवाड़ की ख्यातों में भी यह वृत्तान्त मिलता है कि लाखा की मृत्यु सीहा के हाथ से हुई। रासमाला के प्रणेता फारवस ने भी यहो संभावना प्रकट की है।[1] परन्तु ओझाजी के अनुसार दोनों शासकों के समय में कोई २०० वर्षों का अन्तर है, इसलिये सीहा के हाथ से लाखा की मृत्यु होना कपोल कल्पना ही है।

राव सीहा (६/१४)—जोधपुर की रीत किरियावर की वही[2] में लिखा है कि महेश्वर महादेव ने सीहा को मारवाड़ में उसके वशजों का राज्य होने का वरदान दिया था। अतः वाद में आसथान ने यहाँ नीलकठ महादेव का मन्दिर वनवाया जिसे सीहेश्वर महादेव भी कहते है।

रायपाल (१५/२२-२३)—रायपाल वड़ा दातार शासक हुआ। उसने रोहड़िया चारणों को अपना प्रोल पात्र वनाया। इस प्रसंग का एक प्राचीन गीत भी मिलता है—"वारै सौ समत वासठै .... दीधा नेग तदी कमधां पत रायपाल रीझे महाराव"। नैणसी ने यहाँ यह मत व्यक्त किया है कि मगा वुध को रायपाल ने रोहड़िया चारण वनाया तव से यह शाखा चली। परन्तु यह बात विचारणीय है क्योंकि रायपाल से पहले ऊनड़ जाम हो गया जिसने रोहड़िया शाखा के सांवलसुद कवि को कोड़ समाई देकर सम्मानित किया था। सांवल वारहठों की १२ शाखाओं में से १ शाखा का प्रवर्त्तक भी माना जाता है।[3]

पूजनीक (वृक्ष) (२०/३१)—यहाँ पूजनीक शब्द से तात्पर्य जोधो के पूजनीक वृक्ष फरास से है। मारवाड़ की ख्यात में लिखा है कि वीरम ने उक्त वृक्ष को कटवाकर उस पर ढोल मंडवाया और उसे बजाया तव जोयों ने इस अपमान को सहन नही किया जिसके फलस्वरूप युद्ध हुआ जिसमें वीरम मारा गया। इसका वर्णन वादर ढाढ़ी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ वीरमायण[4]

---

१ रासमाला (प्रथम भाग) अनु० गोपालनारायण बहुरा, पृ० १२५।

२. राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी का संग्रह।

३. मुहणोत नैणसी री ख्यात (भाग २) रा० प्रा० वि० प्र०, पृ० २३६ तथा मुरारीदान की ख्यात रा० प्रा० वि० प्र०, पृ० २६।

४. वीरमायण—संपादिका रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर।

में बड़े रोचक ढंग से किया है। वीरम का बैर गोगादे ने दला को मार कर लिया।

आल्हा चारण (२१/३२)—इस कवि का यह दोहा चारण समाज में आज भी प्रचलित है—

चूंडा ना आवै चीत, काचर काळाऊ तणा।
भड़ थहियौ भैभीत, मंडोवर रै माळिये॥

सालोड़ी ग्राम (२२/३४-३५)—यह ग्राम जोधपुर से उत्तर पश्चिम में २० मील की दूरी पर है, उसके पास मालूंगा तथा बालरवा ग्रामों के बीच बाडी के पहाड़ों में होकर नदी बहती है। वहाँ चामुण्डा का प्राचीन मन्दिर और चूंडा-बावड़ी अब भी विद्यमान हैं।

गांगदेव री बेटी लीला (२५/३९)—गांगदेव की लड़की की शादी चूंडा से करके ईंदों ने उसे मंडोवर सौंपी, इसकी साक्षी का दोहा इस प्रकार है—

चूंडो चवरी चाड़, दियौ मंडोवर दायजै।
ईंदां रो उपकार, कमधज कदे न विसरै॥

चूंडो काम आयो (२६/४१)—नागौर में चूण्डा के काम आने के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों में मतभेद है परन्तु नागौर परगने के हाल में चूंडा का नागौर के टुकछा ग्राम में काम आना लिखा है।[1]

नरबद सतावत (२६/४३)—नरबद राणा के प्रसिद्ध सामन्तों मे हुआ। नरबद और सुप्यारदे की बात प्रसिद्ध है जिसका उल्लेख नैणसी ने इस ग्रन्थ में अन्यत्र किया है।

अचलदास खीची (२८/४७)—यह गढ गागरून का प्रसिद्ध शासक हुआ। इसके विषय में लिखी हुई शिवदास गाडण की वचनिका[2] तथा लालां मेवाड़ी और अचलदास खीची री वात प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियां है।

---

१. मारवाड़ रा परगनां री विगत (भाग २), पृ. ४२१।

२. संपादक : दीनानाथ खत्री, शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर।

भीम चूंडावत (३१/५१)—यह चूंडा का पुत्र था। इसके पट्टे में सालावास, नन्दवाणा, गुड़ा मोगड़ा, भावी, लांबा और झुडली ये सात गाँव थे। उसके तीन पुत्र थे—वैरसल, वरजाग और वीजा।[1] उसकी प्रशंसा में एक प्राचीन सोरठा इस प्रकार है—

हुओ कियां ही हार, जैत हुओ क्यां ही जुडण।
वेदल वापूकार, भींवा तैं भेला किया॥

वरजांग भींवोत (३१/५१) यह भीव चूंडावत का पुत्र था और अपने समय का वड़ा रजपूत हुआ। इसने राव रिड़मल जोधा और सत्ता के समय में वड़ी-वडी लड़ाइयाँ लड़ी। इसीलिये इसकी प्रशसा मे इसे 'एक पाखर लाख पाखर' कहा जाता है। जोधा जब चित्तौड़ से निकला तो वरजांग उसके साथ था। झीलवाड़े के घाटे के पास जो घमासान युद्ध हुआ उसमे घायल होकर गिर गया। शीशोदिये इसे उठाकर चित्तौड़ ले गये क्योंकि वह उनका भानजा था। राणा ने उसे किले में नजरबंद रखा। वरजाँग के घावों पर पट्टी बांधने के लिये उसके सेवक रोज १२ गज रेजी (मोटा कपड़ा) लाया करते थे। जब घाव ठीक होने को हुए तो रेजी के वचे हुए टुकड़ो का रस्सा बनाकर सेवको ने बरजाग को किले की दीवार पर से सीधा नीचे उतार लिया और गुप्त रूप से एक बैलगाडी लेकर वहां से निकल भागे। रास्ते में गागुरन के तालाब पर डेरे किये और सयोग से अचलदास खीची की पुत्री के साथ उसका विवाह भी हुआ।

फिर यह जोधा से आ मिला। जोधा ने जब मडोर पर अधिकार कर लिया तो इसे रोयट का पट्टा दिया। राणा की फौज वहा उस पर चढ आई थी परन्तु उसने बड़ी वीरता से उसका मुकाबला किया और घायल होने पर भी फौज को भगा दिया। कहते है कि इस युद्ध में उसके गर्दन की एक हड्डी तलवार के झटके से टूट गई थी उसकी जगह कैर की लकड़ी डाल कर उसे दुरस्त कर दिया था। उस कैर का पूजन बाद में भी उसके वंशज करते थे।

१. द्रष्टव्य—मुरारीदान की ख्यात, ग्रंथांक १५६७२, रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर।

एक वार जब इसकी घोड़ियें महेवा के शासक वीदा के पुत्रों ने पकड़ली तो इस बात पर दोनों पक्षों में वड़ी लड़ाई हुई। अनेक योद्धा मारे गये।

राव सातल के समय में कोसाणे के पास मलूखां से जो युद्ध हुआ उसका सफल संचालन बरजांग ने ही किया था और सातल की उसमे विजय हुई थी। इस अवसर पर भावी का पट्टा उसे दिया गया था।

राव वोका ने जो जोधपुर पर सूजा के समय में चढ़ाई की थी उसमें भी बरजांग का हाथ वताया जाता है।

वरजांग के परिवार की विगत[1]—

१. सुरजण वरजांगोत, राणा की फौज से लड़कर काम आया।
२. कला सुरजणोत बड़ी लड़ाई में काम आया। सालावास, नंदवाणा तथा डूंगरपुर इसके पट्टे में थे।
३. अखैराज कलावत, फलोधी काम आया। सालावास तथा नंदवाणा पट्टे में थे।
४. मेघराज कलावत, सालावास पट्टे में था।
५. राघोदास मेघराजोत।
६. सुन्दरदास राघोदासोत।
७. वलू मेघराजोत तथा मना मेघराजोत।
८. लूणा अखैराजोत, तणावड़ा दोनों पट्टे में थे।
९. केसोदास लूणावत।
१०. जसा लूणावत, राधणपुर काम आया।
११. नरसिंघदास लूणावत, लक्ष्मीदास लूणावत।
१२. लधा लक्ष्मीदासोत।
१३. सांकर कलावत।
१४. सांवल सांकरोत।
१५. कूंभा सांवलोत।
१६. देवा कलावत।

---

१. मुरारीदान की ख्यात, ग्रंथांक १५६७२, रा० प्रा० वि० प्र०, जोधपुर।

१७. महेसदास देवा का।

१८ भाखरसी महेस का।

१९. जेवा, वाघा, वीरमदे महेस के।

२०. सुरताण देवा का।

२१. माना सुरताण का दौलताबाद काम आया।

२२. रामसिंह मानावत—बीकानेर की लड़ाई मे काम आया।

२३. बीजा सुरजनोत—सेवकी को लड़ाई में काम आया।

२४. हमीर बीदावत।

२५. दला सुरजनोत, जबा सुरजनोत सिरियारी मे राव राम के लिये काम आया।

२६. राका जबावत मांडत्रे काम आया, सावराड़ पट्टे में था।

२७. माधा रासावत।

२८. बलू माधा का।

२९. आसा रासावत।

३०. तोगा आसावत।

नापा साँखला (३१/५१)—यह राणा कुंभा का भी कृपापात्र था। जोधा को मंडोवर पुनः प्राप्त करवाने में इसने बड़ी सहायता दी थी।[1]

हरभू (३३/५६)—मारवाड़ के प्रसिद्ध ५ पीरों में इसका नाम लिया जाता है। यह साँखला राजपूत था और सकुन शास्त्र का अद्वितीय जानकार होने के नाते बहुत प्रसिद्ध था। भाटी जैसा इसका भानजा था।

लूणा (३४/५७)—यह देवराज चूंडावत का पुत्र और सेत्रावे का मालिक था।

राव जोधा ने राणा री धरती उजाड़ी (३६/५८)– इसकी साक्षी का प्राचीन कवित्त इस प्रकार है :

जेथ हुआ धरपाल, तेथ उडै राखोड़ा।
बैठा जित सारंग, तेथ बंधाता घोड़ा।
मांडीती मंडूसी, बचा तित घूघू जाया।
धरंत नित चौपग्गा, बेढ तिण बाघ बिवाया।
अजमेर अनै आबू बिचै, माणस दीसै चाडिया।
कमधज्ज राव कुंभे तणा, जोधे देश उजाड़िया॥

---

१. देखें, डॉ० टेसीटरी का राजस्थानी ग्रंथ सर्वेक्षण, सं. डॉ. नारायणसिंह भाटी, पृ० ३०।

चानण खिड़िया (३७/५९)—यह खिड़िया शाखा का चारण था। इसने रिड़मल का दाह-संस्कार करवा कर रिड़मल के पुत्रो पर उपकार किया था। इसकी साक्षी का एक दोहा उपलब्ध होता है—

> **चोवीसूं रिड़माल रा, धर खाटण वड़धूत।**
> **परतक पात पचीसवां, है तूं चद्र सपूत॥**

तिंवरी के पुरोहित दामा को भेज कर राव जोधा ने इसे अपने पास बुलाया और मारवाड़ में जागीर दी। जोधा के वंशजों ने भी इसके बेटे पोतों को खूब गाँव दिये, जिसका उल्लेख इस ग्रन्थ में आगे किया गया है। विशिष्ट अवसरों पर इसके वंशज चानण खिड़िया की मोहर नेग के रूप में राठौड़ों से लेते रहे हैं।

चिड़ियाटूंक रै भाखर ऊपर गढ़ मंडायो (३८/६०)—संवत् १५१५ में जब जोधा ने जोधपुर का किला इस पहाड़ी पर बनवाया तब वहाँ चिडियानाथ नामक तपस्वी तपस्या कर रहा था। उसे जब वहाँ से हटने को कहा गया तो वह नाराज होकर वहाँ से उठ गया और उठते समय अपनी धूनी के अगारे झोली में डालकर वहाँ से चलता बना। लोगों ने उसे पहुँचा हुआ महात्मा जान कर वहीं रहने की विनती की परन्तु वह न माना और सालावास तक जाकर रुका। जनता ने वहीं पर उनकी धूनी लगवाई और राज्य की ओर से कुछ भूमि अर्पित की गई। चिड़ियानाथजी के झरणे के पास उनके चरणो की पूजा पालासणी के पीर अभी तक करते रहे है। चारण समाज में यह धारणा है कि गढ़ की स्थापना के अवसर पर करणीजी ने स्वयं पधार कर जोधा को आशीर्वाद दिया था। इसकी साक्षी का एक प्राचीन गीत भी मिलता है—

> **विमल देह धरयां, सगत जंगळ धर विराजे,**
> **थान देसांण थी हथां थाया।**
> **उठै कवि भेजियो, राव करवा अरज,**
> **जोधपुर पधारे जोगमाया॥**

कुछ ख्यातों में यह भी उल्लेख मिलता है कि गढ की नीव आदि का मुहूर्त हडभूजी ने बतलाने को कहा था और जोधा को कहा था कि वह अपने किसी पुत्र को सकुन पूछने के लिये प्रातःकाल उसके पास भेज दे।

परन्तु किसी कारणवश जैसा को ही मुहूर्त पूछने के लिये भेज दिया। हड़भू ने उसे मुहूर्त बतला दिया और बाद में राव जोधा से कहा कि जैसा के मारफत यह मुहूर्त तुम्हारे पास पहुँचा है अतः तुम्हारे शासन में जैसा भाटियों का महत्वपूर्ण स्थान रहेगा।

अखैराज रिणमलोत (३८/६२)—इसने चरड़ा को मार कर बगड़ी पर अधिकार किया। इसके दो पुत्र मेहराज और पंचायण हुए। प्रसिद्ध वीर कूपा मेहराज का पुत्र था और जैता पंचायण का। बारठ देवकरण (इन्दोकली) के अनुसार अखैराज रिणमल का पाटवी पुत्र था परन्तु जोधा योग्य होने के कारण अखैराज ने जोधपुर की गद्दी का दावा नही किया, और बगडी लेकर हो सतोप कर लिया। तब से जोधपुर को गद्दी पर बैठने वाले शासक का राजतिलक करने का अधिकार बगडी वालों को मिला।

सातल-जोधाउत (३६/६३)—इसने जोधपुर की गद्दी पर लगभग चार वर्ष राज्य किया। मुरारीदान की ख्यात के अनुसार उसके सात राणिये थीं। उसकी मृत्यु होने पर सातों ही सती हुई। उसकी राणी फूला भटियाणी ने फूलेळाव तालाव बनवाया। उसकी एक राणी हरखाबाई का राज्यघराने में अब भी पूजन होता है।

सूजा जोधावत (३६/६३)—सातल की मृत्यु के पश्चात् सूजा गद्दी पर बैठा क्योंकि सातल के कोई पुत्र न था। सूजा का परिवार—

१. नरा सूजावत—यह सातल के गोद था। इसने सातलमेर का पोकरण में कोट करवाया इसके वंशज नरावत कहलाये।

२. सेखा सूजावत।
अखैराज सेखावत—सेखाजी के साथ सेवकी के युद्ध में काम आया।

३ देईदास सूजावत—यह चौहानों का भानजा था। यह भी सेवकी के युद्ध में उपस्थित था। किन्तु सरदारों ने सेखाजी के काम आने पर उसे वहां से निकाला। मुरारोदान की ख्यात के अनुसार राणा विक्रमादित्य की सेवा में यह चित्तौड़ में लड़ता हुआ काम आया।

४. कान्ह् देईदासोत यह बागड़ में काम आया। अचलदास कान्होत—इसको मोटा राजा ने बागड़ से बुलाकर रोहट का पट्टा दिया।

५. बलभद्र अचलदासोत—संवत् १६६७ में रोहट की जागीर इससे जब्त हुई।

६. केशवदास अचलदासोत—इसे सं० १६६५ में पीपाड़ का गाँव जाल्हका चार गाँवो सहित पट्टे में मिला। संवत् १६७७ में सिवाने का गाँव मोतीसरा तीन गाँवों से मिला।

७. वेणीदास अचलदासोत—बलभद्र के पास रहता था।

८. मानसिंह देईदासोत—जब अकबर बादशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया तब यह राणाजी की ओर से लड़कर काम आया।

९. जैता मानसिंहोत—इसको परगने सोजत का गाँव नीबली ४ गाँवों से पट्टे था। फिर पीपाड़ का गाँव लोहारी तीन गाँवों से पट्टे में रहा।

१०. हरदास देईदासोत—यह खीचीवाड़े में रहता था। इसका पुत्र रामसिंह मुगलों से लड़ कर काम आया था। रामसिंह का पुत्र चाँदा खीचीवाड़े के गाँव रीछवा में रहता था।

११. पृथ्वीराज हरराजोत—यह मानसिंह कछवाहा के विरुद्ध बादशाह की फौज से लड़कर काम आया।

१२. साँगा सूजावत—यह ऊदाजी का सहोदर भाई था। इसका पुत्र तिलोकसी बड़ा वीर हुआ और पठानों के विरुद्ध लड़ कर काम आया। इसका पोता सांवलदास मांडवा के युद्ध में १६६२ में काम आया।

नींबा जोधावत (३९/६३)—यह सोजत में रहता था तथा जैसा सिंधल की भानजी से व्याहा था। जैसा सिंधल ने जब जनता की गायें ले जाने का प्रयत्न किया तब नींबा वाहर चढा। गाँव डोभडी के पास उसने सूजा को मारा। मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि वह शिकार करते समय घोड़े से गिर कर मरा। सोजत के वाघेळाव तालाब में उसकी छतरी स्मारक स्वरूप बनी हुई है। इसके कोई पुत्र नहीं था।

जोधो गया गयो (३९/६३)—ख्यातों में लिखा है कि इस अवसर पर उसने वहाँ के शासकों से गायों की चराई माफ करवाई और चारणों तथा ब्राह्मणों को बहुत-सा दान दिया।

भारमल जोधावत (३९/६३)—इसे वोरणे की जागीर दी गई थी। जोधाजी की मृत्यु होने पर गगाजी में उनकी अस्थियों का प्रवेश करने का संस्कार इसके हाथ से हुआ था। इसका पुत्र जयसिंघदे अयोग्य था। इसलिये उसका अधिकार वहां से छूट गया और राव गागा ने ऊहड़ो को वहाँ का पट्टा कर दिया। इसके वशजो में बलू तेजसिंहोत, पृथ्वीराज बलूओत हरीदास बलूओत आदि प्रसिद्ध वीर हुए।

सिवराज जोधावत (३९/६३)—इसको दुनाड़ा गांव दिया गया था। इसके वंशजों में हमीर डूंगरसिहोत, भाखरसी डूंगरसिहोत आदि प्रसिद्ध योद्धा हुए। अचला शिवराजोत मालदे के समय में शेरशाह का मुकाबला करता हुआ जोधपुर गढ़ पर काम आया, उसकी छतरी वहाँ बनी हुई है।

जोगा जोधावत (३९/६३)—यह भारमल का सगा भाई था। इसके बारे मे ख्यातों मे ऐसा उल्लेख मिलता है कि जोधा के बाद कुछ लोगों का विचार जोगा को गद्दी पर बिठाने का था परन्तु गद्दी के मुहूर्त तक वह तैयार नही हुआ और बनठन कर आने में देर करने लगा। तब लोगों ने उसको अयोग्य समझ कर सातल को टीका दे दिया। यह खारिये ग्राम में रहता था। इसका पुत्र खंगार बडा दानी हुआ। वह नित्य प्रति चारणों को दान में घोड़ा देता था। जब घोड़े उसके पास न रहे तब वह वैल देने लगा। उसकी इस मजबूरी को किसी चारण ने वडे मार्मिक ढग से व्यक्त किया है—

घोडा दे थाको घण दानी।
खारिये खोपा दिये खगार॥

कुंवर बाघो सूजावत (४१/६६)—मुरारीदान की ख्यात में इसे लक्ष्मी का पुत्र बताया गया है। यह कुंवरपदे में ही मर गया था। मृत्यु के समय इसने यह इच्छा प्रकट की थी कि मेरे पुत्र को राजगद्दी मिलनी चाहिये। इसी ख्यात के अनुसार बाघा के ७ पुत्र थे—गाँगा, सीधण, भीव, वीरमदे, जैतसी, प्रतापसी और खेतसी। इनमें से गाँगा को राजगद्दी दी गई। इसके सात ही पुत्रियें थीं। इनमें से तीन राणा सागा को ब्याही गई थी। बाँकीदास की ख्यात से भी इसकी पुष्टि होती है[1]।

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान की हस्तलिखित प्रति, पत्रांक १४।

इसकी एक पुत्री कछवाहा सूजा को ब्याही गई थी। जिसका पुत्र रायसल कछवाहा हुआ।

मालदे जोधपुर गढ़ संवरायो (४२/७१)—देखें इसी भाग का परिशिष्ट ५६०-६२।

राव मालदे धरती लीवी (४२/७१)—इस सम्बन्ध में प्राचीन पाँच कवित्त उल्लेखनीय है—

महि सोजत ली माल माल लियो मेडतो।
माल लियो अजमेर सीम सांभर सहेतो।
बांको गढ बदनोर माल लीधौ दल मेलें।
राइमाल रायपुर लियौ, भाद्राजण मेलें।
नागोर निहेवे चढिन लै, खाटू लीधौ जडुखणी।
तव आण हुवो गांगा तणौ, भोग मालदे सेंधणी ॥१॥

लोड़ लियो लांडसू, दुरंग लीधौ डीडवाणौ।
नगर फतेपुर नाम, आप वसि कियो अपाणौ।
कमधज लई कोसली, रुक वळ लियौ रेवासौ।
चांप लई चाटसू, मूक्यौ वीरमांण मेवासौ।
जड़लग पांण जोधपुर लीयौ, गह छोडे कुंभो गयो।
मालदे लियौ मदारपुर, लियौ टूंक तोडौ लियौ ॥२॥

चित्रकोट चांपियौ, पाली बणवीर लियौपुर।
अनड़ दुरंग अणखलें ढौं लीधा करि सिधर।
लोहां वळ लोहगढ़, जेखल नाडुल जोजावर।
रहल उदेसी रांण, नगर ले कीधा निजर।
घुसली राई कुंभमेर घर हाथो माल जे वस हुवै।
एक हुवो छत्र बाघा हरौ, भोग माल सहि भोगवै ॥३॥

जुड़ लीवो जाळोर, पांण सांचोर पजाए।
भीनमाल भंजियौ, विरद मोटा बुलाए।
बीकानेर विधूंस लीध, पोहकरण फळोधी।
करी माल कोपियौ, सीम समुद्रां सही सुधि।

आंण फेर लगे उमर नयर, पारकर सर पधरे।
मालदे देस मालों तणा, बस कीधा बाघा हरे ॥४॥

कमंध लियौ कोटडो, काढ पह कोटड़ केरा।
गा दुरंग गाहटें, मालदे बाहड़मेरा।
छहटण होछरलाई, खुंद खांवड खुरताले।
साज सींध सामई, हाथ दिखाळ बंगाले।
आंण फिर लगै उमर नयर, पारकर कर पधरै।
माल देस मालां तणा, बस कीधा बाघाहरै ॥५॥

ऊमादे भटियाणी (४७/७४)—यह जैसलमेर के रावळ लूणकरण की पुत्री थी और राव मालदे को ब्याही गई थी। इसी राणी की एक रूपवती दासी भारमली पर मालदे मोहित हो गया था। उमादे को यह बात बरदास्त नही हुई और उसने ससुराल जाने से इनकार कर दिया। आसा बारट ने इनका मेल करवाने का प्रयत्न किया पर वह असफल रहा। कछवाई राणी लाछळदे का पुत्र राव राम इसके पास रहता था। मालदे की मृत्यु होने पर यह केलवे ग्राम में सती हुई और राव राम से कहा कि मेरे सती होने का सस्कार पूर्ण करके यहां से विदा होना, तुझे जोधपुर का अधिकार मिलेगा। परन्तु राव राम बीच में ही भागकर जोधपुर चला आया, जिससे गद्दी का अधिकारी नही बना। बारट आसा ने इसके सतीत्व की प्रशंसा में बड़े सुन्दर कवित्त कहे है। यह राणी इतिहास में रूठी राणी के नाम से प्रसिद्ध है।

बारट आसो (५३/८३)—यह प्रसिद्ध कवि ईसरदास का चाचा था। इसकी स्फुट डिंगल रचनाएं उपलब्ध होती है, जिनमें बाघा भारमली के दोहे बहुत प्रसिद्ध है। कहते है कि बाद में बाघा से उसकी बडी मित्रता हो गई थी। इसलिये मालदे का आश्रय उसे छोड़ देना पड़ा था। राव मालदे की प्रशंसा में उसके लिखे कवित्त अवलोकनीय है।

कवण किसन पति सबळ काळ पति कवण अंग जित।
प्रिथी पति कुण वांणपत, सुरपति कवण सतेजसी।
कवण नाथ पति जति कवण, केसव पति दाता।
सीतापति कुण सति कवण, लखमण अति भ्राता।

सवल को अवर सुझे नहीं जांचि गंजे पेसयल जण।
हिन्दुआं मांहि औ हिंदवौ, मालपति मोटौ कवण ॥१॥

माल काळ मछराळ माल जमजाळ त्रिभे मन।
माल जांण महिरांण सेन जळि माल सपूरण।
सबळ माल अरिसाल माल भंजण मेवासा।
गज थाटां गाहणौ गिलण गढ कोटां ग्रासा।
सुरतांण रांण संकोडिया, सझि लीधा देसहि सहि।
मालदे सीस छत्र मंडियौ, माल हुवौ मंडलीक महि ॥२॥

रावल मेघराज (५४/८६)—यह महेवा के स्वामी मलोनाथ के वंशज हापा का पुत्र था। इसे संवत् १६४० में मोटा राजा उदयसिंह ने महेवा का अधिकार प्रदान किया। यह गुजरात की चढ़ाई में मोटा राजा के साथ गया था। इसके उपलक्ष में जोधपुर के उल्लिखित गाँव मोटा राजा ने और दिये थे। मुरारीदानजी की ख्यात में दुन्दाड़े का भलड़ों का वाड़ा नामक ग्राम भी इस अवसर पर देने का उल्लेख है। यह वीरमदे कलावत को महेवा सौंप कर मथुराजी चला गया था। वहीं संवत १६४७ में उसका स्वर्गवास हुआ।

राव मालदे की राणियें (५५/८८)—मुरारीदान की ख्यात में मालदे की २४ राणियों के अतिरिक्त आठ पडदायत आठ वेश्याएँ तेरह गायिकायें भी थीं। मालदे का स्वर्गवास होने पर इनमें से अनेक उसके साथ सती हुई।

शेरशाह पातशाह से युद्ध (५६/८८)—इसका विस्तृत वृत्तांत भाग दो में मेड़ता के इतिहास में देखो।

अखो सोनगरो (५६/८८)—अखैराज सोनीगरा अपने समय का जबरदस्त वीर हुआ। यह पाली का स्वामी था। इसने अनेक युद्धों में भाग लिया था। इसका लड़का मानसिंघ सोनीगरा भी राणा की ओर से लड़ता हुआ हल्दीघाटी के युद्ध में काम आया था। अखैराज के सम्बन्ध में यह किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि इसकी दोनों पत्नियों में से उसके पीछे कोई सती नहीं हुई थी। कोई छः महीने बाद उनके गाँव में एक कवि पहुँचा, और वातों ही बातों में उसने एक दोहा सुना दिया—

जैतो तो कूंपे रं जीमै, पाळै है गोत पखो।
सायधण बिन दोरौ, सोनीगरौ हाथे रोटी करै अखो॥

अखा की स्त्रियो के कानों मे इस दोहे की भनक पड़ गई और उसी समय उन्हे सत चढ़ आया। विधिवत ढग से तैयार होकर वे सती हुई। जोधपुर राजघराने की ओर से विशेष घरेलू अवसरों पर इनकी छतरियों पर पूजन सामग्री भेजी जाती थी[1]।

तिलोकसी वरजांगोत आदि (५८/८८)—यह शेरशाह के हमले के समय जोधपुर का किलेदार था। रक्षा का कोई उपाय न जानकर इसने दुर्ग के द्वार खोल दिये और अपने कुछ साथियो सहित वीरगति को प्राप्त हुआ।

उल्लिखित इन प्रसिद्ध वीरो के अतिरिक्त मुरारीदान की ख्यात में **भाटी जयमल रूपसीहोत** के काम आने का विशेष उल्लेख किया गया है। इसने जोधपुर के किले की रक्षार्थ प्राण देने का दृढ निश्चय कर रखा था। इसीलिये गढ पर पहले से ही छतरी बनवा रखी थी। इसके वीरतापूर्ण उत्सर्ग पर किसी कवि ने मार्मिक गीत कहा है—

जसवास जठ जुग चार न जावै, दूदं जिम जेसाण दुभ्राल।
जाइव नग हेम सुं जडाणो, जोधनयर माथै जयमाल॥१॥
नरबदहरौ बिया निकळतां, कोट राख गळहार किर।
जग में भले कहाणो जयमल, सहित कनक जोधाण सिर॥२॥
रूपसीह रौ छांड राठोडां, मछर दाख जयमाल मुवौ
भुरजां कमधां रै राव भाटी, हिरण कठीर जड़ाव हुवौ॥३॥

ऊगो वरसिंग रौ (६३/६३)—ऊगा व हापा महेवा से मालदे की सहायता के लिये आये थे। हापा के पास ८०० सैनिक थे। ये दोनों सगे भाई थे। ऊगा अपने समय का बड़ा प्रसिद्ध वीर था। मुरारीदान की ख्यात में उसका विरुद 'कोरत पाल' लिखा है। हापा इस युद्ध में बुरी तरह घायल हुआ था। यहाँ दी गई सूची के अतिरिक्त उक्त ख्यात में भाटी तेजसी वरणवीरोत का नाम भी है। इस युद्ध मे बहुत-सा खजाना भी राव मालदे के हाथ लगा।

---

१. देखें, मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग दो, परिशिष्ट, पृष्ठ ४५१।

राव चन्द्रसेण गढ छोडियो (६६/१०३)—ख्यातों में लिखा है कि चन्द्रसेण जब गढ से उतरने लगा तब साही सेनापति हुसनकुली को माँ ने उसे देखकर बड़ा स्नेह व्यक्त किया और उसे पुत्रवत जान कर हुसनकुली से कहा कि राव को सामान आदि लेजाने के लिये इसका यथोचित प्रवन्ध करो।

विशेष—ख्यातों के वृत्तान्त से पता लगता है कि राव चन्द्रसेण जीवन भर इधर-उधर भटकता रहा और युद्ध करता रहा। परन्तु उसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। यदि चन्द्रसेण के सहयोगी कुछ विशेष वीर निरन्तर सहयोग देते तो उसे अपने उद्देश्य मे शायद कुछ सफलता भी मिलती। इस दृष्टि से निम्नलिखित गीत पठनीय है—

ग्रह न सके ग्रहे उग्रहे ग्रहिया, दाखै चन्द दुडंद दुवै।
सेखड़ा साम सनाह सरीखौ हेक कनै जो मींच हुवै ॥१॥
अघड़ गिले किम सुजण आपणा, कहै हिरणपत सोम कथा।
एकाध पह जिसो उदावत, हेक हुवे जो खडग हथ ॥२॥
राहु गिले किम कहै सोम रवि, मुड़ं असुर ग्रह तेम मुड़ं।
सुभट रियां रिणमाल सरीखो, जवण हार जो इसो जुड़ं ॥३॥
ससिहर कहै संपेखो सूरज, अघड़ करै इम ग्रहण अनेक।
सूर कलह गुर सिखर सारिखो, आयां विहुँ न मिळियो एक ॥४॥

कलांणदास रायमलोत (७५/१२०)—यह उन प्रसिद्ध शासकों में से हुआ है जिसके नाम के पीछे उसकी राजधानी भी गौरवान्वित हुई है। इसीलिये सिवाणा कला रायमलोत वाला कहा जाता है। सिवाने के वृत्तान्त में इस युद्ध का कुछ विस्तृत वृत्तान्त दिया गया है। प्रसिद्ध कवि राठौड़ पृथ्वीराज ने इसके वीरतापूर्ण युद्ध, अकबर के सामने न झुकने की प्रवृत्ति और प्राणोत्सर्ग से प्रेरित होकर बड़ी सुन्दर काव्य-रचना की है।[1]

भाटी गोयन्ददास मानावत (७७/१२५)—यह जैसा के वंशजों में मारवाड़ का प्रसिद्ध सामन्त हुआ। इसका पूर्वज नीम्बा जैता कूपा के साथ समेल के युद्ध में काम आया था। बाँकीदास की ख्यात मे लिखा है कि गोयन्ददास सूरसिंघ के कंवरपदे से ही प्रधान था। लवेरा ग्राम इसकी जागीर

१. अधिक जानकारी के लिये देखें मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग (२) का परिशिष्ट, पृष्ठ ४४०-४४३।

में था। फिर सूरसिंघ ने आसोप भी इसके पट्टे में दे दिया था। इसके ५ पुत्र थे जिन्होंने समय-समय पर राज्य की बड़ी सेवाएँ की और उन्हें स्वतन्त्र जागीर मिली। यह लम्बे समय तक सूरसिंघ का प्रधान रहा, और अनेक युद्धो में भाग लिया, जिसका उल्लेख इस ग्रन्थ में आगे किया गया है। गोयन्ददास की सबसे बड़ी देन जोधपुर राज्य के प्रबन्ध सम्बन्धी नियम बनाकर उन्हे क्रियान्वित करना हैं। इसने शाही ढंग के प्रशासन के आधार पर ३६ कारखाने (विभाग) कायम किये और परगनों मे हाकिम, कारकून पोतदार, वगैरह अधिकारो रखने की व्यवस्था की व उनकी कार्य-प्रणाली निश्चित की। सरदारों व मुत्सद्दियों के परिवार के किले में आने जाने के भी नियम बनाये। इसने चार डावी और चार जोवणी मिसले भी बाँधी। जिवणी मिसल के सिरे पर आउवा के चाँगवतों को रखा और डावी मिसल के सिरे पर मेडतियों को। उनका कुरब आदि भी इसने निश्चित किया। दीवान और व्यास डावी मिसल मे रखे गये और बक्सी तथा पुरोहित जीवणी मिसल में। इन नियमों में समय के अनुसार हेर-फेर भी होते रहे हैं। गोयन्ददास के वर्चस्व पर एक प्राचीन दोहा इस प्रकार है—

गोयन्ददास गरजियो सूर हदे वारै।
ऊथापै सो ऊथपै मेवासा मारै॥

यह अजमेर में किशनसिंह के हाथ से मारा गया था जिसका वृत्तांत आगे दिया गया है।

बारठ अखो भांणरो (७८/१२७)—यह डिंगल का प्रसिद्ध कवि था। इसका पालन-पोषण राज घराने की ओर से ही हुआ था और वह प्रायः राज-दरबार में ही रहता था। इसीलिये इस अवसर पर चारणों को समझाने के लिये उदेसिंह ने इसे भेजा था। परन्तु इसने परस्थिति को देखकर धरणे में शामिल होना ही उचित समझा। उसके इस आचरण से राजा उदयसिंह और अधिक नाराज हुआ।

चन्द्रसेण लोहावट वेढ जीती (८३/१३३)—मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि विजय प्राप्त कर लेने पर चन्द्रसेण ने उदयसिंह का पीछा करना चाहा था परन्तु उसके सहयोगी सरदारों के कहने सुनने से उसने यह विचार त्याग दिया।

घोड़ों री दांण पगां उपाव हुग्रो (८४/१३४)—नैणसी ने अपने वृत्तान्त मे इस विवाद को प्रकट करते हुए यह नहीं वताया है कि वास्तव में घोड़ो की कतार पर दाण लेने का अधिकार फलोदी वालो का था या वीकुपुर वालों का। एक अन्य प्राचीन पोथी में ऐसा सकेत मिलता है कि वास्तव में दाण का अधिकार फलोदी वालों का ही था।

आसकरण देवीदासोत (६०/१४५)—यह अपने समय का बहुत वड़ा प्रशासक व वीर हुआ। संवत १६४२ मे अकबर जब लाहौर से कावुल गया तो सूरसिंह के साथ यह भी शामिल था।

सबलसिंह सूरजसिंघोत (६५/१४६)— राजा सूरसिंघ के दो ही पुत्र गजसिंघ और सबलसिंघ सूरसिंघ की मृत्यु के समय जीवित थे। इसको फलोदी वा पट्टा दिया गया था। बाद मे इसको मोडासा का भी पट्टा दिया गया। यह अच्छा शासक हुआ और वादशाह की ओर से इसको राजा का खिताब मिला हुआ था। इसके सात राणिय थी। इसकी मृत्यु अहमदाबाद में हुई, जहां यह बादशाह की ओर से नियुक्त था।

सगतसिंघ उदयसिंघोत (६५/१५४)—सगतसिंह को राजाजी ने हून गांव का पट्टा दिया था। इसके अतिरिक्त प्रमुख चाकरों में धाय भाई गहलोत मोटा, मुहणोत, व्यास, गोयन्द, भडारी, कला भींवोत, ६ खवास. बीस दासियें, घोड़े पचास, घोडिये दस, रोकड़ रुपये एक हजार एक १००१) दिये थे। फिर जब इसे शाही दरबार में प्रस्तुत किया गया तो इसे पंच सदी मनसबदारो मे रखा गया और नैणवाय तथा खेजड़ली यह दो गाँव भी दिये। इसने आगरा में हाथियों की लडाई मे बड़ा वीरतापूर्ण चमत्कार वताया था, जिससे वादशाह ने खुश होकर इसका सम्मान बढाया और फूलिया तथा केकड़ी का पट्टा दिया और सोजत की जागीर भी दी। इस अवसर पर उसे रावई का खिताब दिया गया। एक वर्ष वाद जब सोजत पुनः सूरसिंघजी को देदी गई तो सोजत में रावजी के प्रबन्धक राठौड माण जैतमालोत ने सोजत का अधिकार सौपा ही नही और जबरदस्ती करता रहा। फिर बाद में सोजत की एवज में जैतारण मिला। इसने पंवार भूपत को हराया था जिसकी साक्षी का यह दोहा है—

गढ गिरवर गंजेह, पड़ै हवाई पाँच सौ।
ग्यौ भूपत भाजेह, सगता आगळ सांग रौ॥

सगतसिंह के सात पुत्र थे—करण, हरीसिंह, प्रतापसिंह, मानसिंह, कानजी, देईदास और गिरधरदास। इन में करण डेढ हजारी शाही मनसबदार हुआ। गांव खरवा इसके पट्टे में था। अन्य भाई और उनके वंशज छोटे बड़े मनसबदार हुए।

अमर चम्पू ने राजाजी वेढ दी (९६/१५६)—बादशाह ने जब सूरसिंह को अमर चम्पू पर चढाई हेतु विदा किया तब उसने हरावल में रहकर रायसल दरबारी के पुत्र गिरधरदास और खानखाना के पुत्र ईरिज आदि साथियों सहित जबरदस्त युद्ध किया और विजय प्राप्त की। अमरचम्पू का लाल निशान सूरसिंघ ने छीन लिया। इस पर बादशाह बडा प्रसन्न हुआ और सूरसिंघ को पुरस्कृत किया। मारवाड़ के झंडे में लाल रंग को तब से स्थान दिया गया।

जोशी चंडू, दामोदर (९८/१५९)—मूंदियाड़ की ख्यात मे लिखा है कि जब मालदे पूंगल के भाटियों के यहाँ विवाह करने गया तब भाटियों ने अपना पुराना वैर लेने के लिये राव को मार डालने का षडयंत्र रचा। मालदे की नव-विवाहिता भटियाणी राणी को इसका पता लग गया। तब उसने अपने राजगुरु पुष्करणा पुरोहित राघव से विनती की कि वह किसी तरह मालदे को इस खतरे की सूचना देकर उपकृत करे। राघव ने ऐसा ही किया और एक बड़ा अनिष्ट होते-होते बच गया। राणी ने राघव की भावी सुरक्षा को ध्यान में रखकर उसे अपने माता-पिता से दहेज में माँग लिया और अपने साथ जोधपुर ले आई। राघव के दो पुत्र चंडू और दामोदर थे। ये दोनों ही ज्योतिष-विद्या के प्रकाण्ड पण्डित हुए। ये और इनके वंशज जोधपुर राज्य के जोशी वेदिया रहे और राजकीय पंचांग (चण्डू पंचांग) का निर्माण इन्हीं के द्वारा होता रहा है।[1]

राणी सौभागदे (९९/१७९)—यह शेखावत दुरजनसाल की पुत्री थी। इसका

---

१. मूंदियाड़ की ख्यात, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, पृष्ठ सं० ७२-७३।

विवाह १६४४ में हुआ था। इसके पुत्र गजसिंह का जन्म १६५२ में लाहौर में हुआ। संवत् १६६६ में बुरहानपुर में इसकी मृत्यु हुई। इसे महाराजा सूरसिंघ ने संवत् १६५२ की माहसुद ५ को राणीपदा दिया। दस्तूर की विगत—

पटो १ भावी, गागांणी १, देवातडो १, वासणी १, वामसणो १, वीलावस १, बोडुंदो १, थवूकड़ो १, चोखां १, औ पटो पावतां गाँव ६ रो।

२०२६) रुपीया मांणसां रै कणोता रा पावता, इतरी मोहरां पावै तिण री विगत—

१)) लूण उतारण री	१)) गैणा रा कोठार वाळा री
१)) रतनजी पोसाल वाला	१)) पोळियो पावै
६)) पीरोयतजी पावै	१)) माळी पावै
१)) वेदीयो पावै	१)) फरासां नु
१)) गांछा नुं	॥)) सांणी नुं
१)) वारीया नुं	१)) कंदोई नुं
॥)) हाथी रा मावत नुं।	॥)) कहार सुखपाळ रा नुं।

बड़ा उमरावां री बहुवां ने भारी वागा ने मोर १)) अतलस १ परकाळो २ नाळेर दीजै।

उणांसु छोटा उमरावां री वहुवां ने वागो ५) रोकड़ नै मीसरु १ परकाळो १ नाळेर १।

उणांसुं छोटा उमरावां री बहुवां नै वागो २) रोकड़, मीसरु १।

सासुवां नणदां नै पगै लागणी देवै तिण री विगत १)) मोर परकाळो लाल अतलस रो जणी दीठ राणीजी देवै।

सासवां, वायां, खवासां, पातरियां, पहैरावणी करै तरै वागा सासुवां नुं नणद नुं वेटियां नुं तथा कडूंवै सुखमैल हुवै तठै मेलै।

धाय वडारण नु सांपट वागा देवै।

मोटा कामदारां नु दुसाला थीरमा मीसरु दिरीजै नै बीजा सगळा मुसद्दी

खवास पासवान नै साड़ी दीजै, पोल नुं सांपट औछाडीजै, पोळीया नुं साड़ो, पाग दीरीजै, ढोल दमाम दरआई सु औछाड़ीजै, इतरी मोर परत ७)) लेखै माया री दीवी।

६००) श्रीजी दिराया रांणीजी नुं ।
७) पारचा जवांन सांवा ।
७) जोसो पोकरणा सीरीमाळी समसतां नुं ।
७) वेदैग राय नै तिलक रा ।
७) पटवां नुं ७) सुथार नुं ।[1]

सुरतांण मानावत(६६/१६०-६१)—यह भाटी गोयंददास का भाई था। महाराजा सूरसिंह की दक्षिण की चढाई में यह भी साथ था। वहाँ से इसने मारवाड़ मे आकर मुहता केसा को मार डाला। इस कसूर के बदले गोयंददास ने उसे देश से निकाल दिया। सुरतांण राणा सगर के पास जाकर उसका चाकर हुआ। गोपाळदास राठौड़ आदि ने बाद में इस पर चढ़ाई करके इसे मार डाला। इसके बदले में गोयददास और कुंवर गर्जसिंह ने गोपाळदास को भी मार डाला। गोपाळदास किसनसिंह उदयसिंहोत का भतीज होता था। इसलिये वह अपने भतीजे का बैर लेने का मौका देखता रहता था। अजमेर में जब उसे यह अवसर मिला तो उसने गोयंददास को मार डाला, और स्वयं भी अनेक आदमियों सहित मारा गया। मारवाड़ की ख्यात मे इस विषय में लिखा है कि उस समय बादशाह भी अजमेर में था इसलिये किसनसिंह आदि ने जाकर अर्ज की कि गोयंददास ने गोपाळदास को मार डालने का अपराध किया है। इस पर बादशाह ने कहा कि तुम इसे मार डालो। किन्तु ओझाजी ने जहाँगीरनामा में से इस संदर्भ का उल्लेख करतें हुए मारवाड़ की ख्यात के कथन को ठीक नही माना है।[2]

राजसिंह खीमावत (१००/१६१)—राजसिंह खीमावत आसोप का स्वामी था। इसका जन्म संवत् १६४३ में हुआ। महाराजा सूरसिंह ने इसके बड़े भाई

---

१. रीत किरियावर री वही जोधपुर री, पृष्ठ सं० ६६।
२ जोधपुर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ ३८१।

कानसिंह से जागीर जब्त कर इसे अधिकार दिया। इसने महाराजा के प्रधान भाटी गोयंददास की देखरेख में रियासत की जानकारी प्राप्त की। महाराजा ने इसकी सेवाओं से खुश होकर मेड़ते का गाँव ईडवा इसे जागीर में दे दिया। महाराजकुमार गजसिंह ने जब जालोर पर चढाई की तब यह भी साथ था। इसको आसोप का अधिकार सवंत् १६७६ में मिला था। खुर्रम के साथ होने वाले युद्ध में यह भी गजसिंह के साथ हरावल में था। इस युद्ध में अच्छी वीरता दिखाने के कारण रड़ोद इसे जागीर में मिला। इस प्रकार अनेक युद्धों में भाग लेकर उसने राज्य मे महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था। महाराजा जसवन्तसिंह जब गद्दी पर बैठे तब उनकी आयु लगभग १२ वर्ष की थी। अतः बादशाह की आज्ञानुसार राजसिंघ कूंपावत प्रधान के तौर पर मारवाड़ का कार्य देखने लगा और उसे शाही मनसब मिला। यह बड़ा स्वामीभक्त सेवक था। ख्यातों में लिखा है कि एक बार महाराजा जसवन्तसिंह जब रात को शहर में गश्त लगा रहे थे तो तापी बावडी में प्रवेश करने के कारण एक प्रेत उनके शरीर में प्रवेश कर गया और वे मूर्छित हो गये। जब अनेक मत्र तत्रादि का उपचार करने पर भी वे स्वस्थ न हुए तब वह प्रेत स्वयं बोला कि महाराजा के समान अधिकार वाला व्यक्ति ही अपनी जान देने को तैयार हो तो मैं इस शरीर से निकल सकता हूँ। तदनुसार एक जल का पात्र लाया गया और महाराजा के सर पर वार कर राजसिंह को दिया गया, क्योंकि वही महाराजा के समान अधिकार प्राप्त व्यक्ति था। कहते हैं कि पात्र का जल पीकर हवेली पर आते ही उनका प्राणान्त हो गया, और महाराजा जसवन्तसिंह स्वस्थ हो गये। राजसिंह का प्राणोत्सर्ग एक दोहे में इस प्रकार व्यजित हुआ है :—

भल जसवन्त बचावियो, भड़ निज तन कर भग।
दुनियां सारी दाखवे, राजड़ तोने रंग ॥१॥

आसोप की हवेली में राजसिंह के महल में अब भी पूजा होती है। इसने आसोप में अनेक भवन-निर्माण आदि कार्य करवाये। इसके आठ ठकुरानियों से ६ पुत्र और २ लड़कियां पैदा हुई थी[1]।

१. कूंपावतों का इतिहास, पृष्ठ २२०।

कुंवर गजसिंह जालोर फतै की (१०२/१६६)—कुंवर गजसिंह के कुंवरपदे में किये गये सैनिक अभियानों मे यह सब से महत्वपूर्ण है। गजसिंह की इस विजय के विषय में एक प्राचीन दोहा उल्लेखनीय है—

बारे वरसां अल्लाउदी, खप खूटो पतसाह।
चढिया घोड़ां सोहनगढ़, थें लीधो गजसाह ॥१॥

भाटी गोपाळदास आसाअत (१०५/१७०)—यह पहले बादशाही चाकर था परन्तु १६७१ में मारवाड़ के शासक की ओर से गॉव दूधोड़ कई गावों सहित इसे मिला। यह १६७७ मे जालोर का हाकिम नियुक्त किया गया था[1], खेजड़ला ग्राम इसको बादशाह के आदेश के अनुसार सूरसिंह ने दिया, क्योंकि इसने खीमकरण मांडणोत तथा चॉपावत महेशदास आदि के साथ बादशाही खजाना लूटनेवाली मेवाड़ की सेना को भाटी गोयंददास की अध्यक्षता में पराजित किया था।

सीसोदिया भीम अमरावत (१०६/१७१)—यह राणा अमरसिंह का पुत्र था। खुर्रम ने सवत् १६७६ में इसे जालोर का परगना दिया था। और बाद मे इसे मेड़ता भी दिया गया था। खुरम जब बादशाह के विरूद्ध बागी हुआ तब टूस नदी पर यह खुर्रम की ओर से सवत् १६८१ में राजा गजसिंह के हाथ से मारा गया। यद्यपि यहां गजसिंह का हरावल में नियुक्त होना लिखा गया है परन्तु ख्यातो में यह प्रकट किया गया है कि इस युद्ध मे गजसिंह को हरावल में न रखकर जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह को हरावल में रखा गया था। इस कारण से गजसिंह रुष्ट होकर अपने पॉच हजार सैनिकों सहित एक तरफ खड़ा रहा। पर जब परवेज हारने लगा और भीम सीसोदिया ने अपनी विजय के गुमान में इसे ललकारा तब यह अपनी सेना सहित खुर्रम की फौज पर पिल पड़ा। भीम सीसोदिया ने इस युद्ध मे अद्भुत पराक्रम बताया पर वह गजसिंह के हाथ से मारा गया। 'गज गुण रूपक' नामक ग्रन्थ में इन दोनों की वीरता का अच्छा वर्णन किया गया है। भीम की प्रशसा में प्राचीन

१ बांकीदास ने इसके पुत्र दयालदास को भी जालोर का हाकिम नियुक्त करना लिखा है, बांकीदास री ख्यात पृ० १७७।

डिंगल गीत भी उपलब्ध होते हैं।[१] गजसिंह के चाँदावत राठौड़ रामदास, राठौड़ किसनसिंह खीमावत, राठौड़ नारायणदास कलावत, राठौड़ माधोदास रतनसिंहोत आदि प्रमुख योद्धा काम आये।

मनभावती बाई (१०८/१७४)—यह कछवाही राणी सोभागदे की पुत्री और गजसिंह की सगी बहिन थी। इसका जन्म सवत १६५५ में हुआ था।

कछवाही राणी सूरजदे (१११/१८२)—यह आमेर के राजा भावसिंह की पुत्री थी। इसका विवाह मिर्जा राजा जयसिंह ने किया था। यह आगरे में महाराजा गजसिंह के साथ सती हुई थी। इसके एक पुत्री हुई थी जो अल्प अवस्था में मर गई थी।

राठौड़ किसनसिंह खीमावत (११३/१८२)—यह आसोप के ठाकुर खीमकरण का तीसरा पुत्र था। नाहड़सर व वड़लू इसकी जागीर में थे।

राणी प्रतापदे (१२३/१९९)—इसका पीहर का नाम रुकमावती बाई था। इसके नाना केसवदास ने महाराजा से इसका विवाह किया। संवत् १६९० जेठ सुदी १३ को लाहोर मे इसका देहान्त हुआ। महाराजा ने संवत् १६७९ में इसको राणीपदा दिया था।

महेसदास सूरजमलोत (१२५/२०३)—महाराजा के प्रधान राजसिंह खीमावत की मृत्यु के पश्चात् संवत १६९७ में महेशदास को प्रधान बनाया गया।

रतन महेसदासोत (१२९/२०८)—यह बादशाह शाहजहाँ के प्रसिद्ध मनसबदारों में था। मालवा में रतलाम का राज्य इसी ने स्थापित किया था। बादशाह शाहजहाँ के पुत्रों के बीच गद्दी के लिए जो युद्ध हुआ, उसमें बादशाह की फौज में जसवन्तसिंह के अधीनस्थ शामिल होने वाले मनसबदारों में यह भी था। जसवन्तसिंह के युद्ध-भूमि त्यागने पर यह बड़ी वीरता के साथ लड़ता हुआ काम आया था। इस पर 'राठौड़ श्री रतनसिंह री वचनिका' और 'रतनरासो' नामक डिंगल के प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे गये हैं।

---

१ एक गीत की दो पंक्तियें यहां उल्लेखनीय हैं—
खादी भीम अठारै खोयण,
सो भीमो खादो गजसिंघ।

मिया फरासत (१२६/२०८)—यह महाराजा जसवन्तसिंह का बडा विश्वासपात्र अधिकारी था। कई परगनों की हाकमी करने के अतिरिक्त यह मारवाड़ का दीवान और मुसाहिब भी रह चुका था। जोधपुर की रीत किरिया-वर की बही से पता लगता है कि विशिष्ट घरेलू अवसरो पर जो दस्तूर बड़े से बड़े उमरावों का होता था वह इसे भी दिया जाता था।[1] यह महाराजकुमार का अभिभावक रहा।

पातसाही बहोर लूटो (१३५/२१३)—इतिहास-ग्रन्थों में लिखा है कि यह बड़ी विचित्र घटना थी। इस अवसर पर औरंगजेब की फौज का मनोबल एकदम गिर गया था। परन्तु औरगजेब ने धैर्य नही खोया और वह खुदा को याद करता रहा। बाँकीदास की ख्यात में लिखा है कि इस अवसर पर २१ वाहन भरकर जसवन्तसिंह हुरम को लूट का सामान अपने साथ मारवाड़ ले गया था।[2]

राठौड़ नाहरखां (१३६/२१५)—यह आसोप का मालिक और राजसिंह का पुत्र था। नाहरखा इसका नाम कैसे पडा इसका बड़ा दिलचस्प किस्सा ख्यातों में वर्णित है। बादशाह से किसी ने इसको शारीरिक शक्ति की बडी प्रशसा की तब उसने महाराजा से कहा कि आपके शेर की मेरे शेर से कुश्ती होनी चाहिए। भरे दरबार में इसने शेर से कुश्ती की और उसे चीर कर रख दिया। बादशाह ने प्रसन्न होकर नाहरखां की उपाधि से इसे सम्मानित किया। वैसे इसका मूल नाम मुकन्ददास था और संवत् १६६८ में इसका जन्म हुआ था। यह महाराजा जसवन्तसिंह के प्रमुख सरदारों में से था। महाराजा ने जब कन्धार पर चढ़ाई की तब यह भी साथ था। राडधड़ा में महेचों के उपद्रव को दबाने के लिये मुहणोत जयमल के साथ यह भी चढ़कर गया था। सबलसिंह को जब जैसलमेर का अधिकार प्राप्त हुआ तब उसे जैसलमेर पर कब्जा दिलाने के लिये जो सेना गई, उसमें यह भी प्रमुख सेनाधिकारी था। उज्जैन के प्रसिद्ध युद्ध में यह वीरता से लड़ता हुआ घायल हुआ। इसने महाराजा की खूब सेवा की। इसकी मृत्यु विक्रमी संवत् १७१५ में हुई। आसोप में इसके स्मारक स्वरूप विशाल छत्री बनी हुई है।

---

१. मारवाड रा परगना री विगत (भाग २) परिशिष्ट ३, पृष्ठ ४५१।
२. बांकीदास री ख्यात, पृष्ठ ३२।

श्रीजो परणोजण नुं सिरोही पधारिया (१३८/२१६)—सिरोही में राव अखेराज की पुत्री अतिसुखदे देवड़ी से महाराजा की शादी हुई थी। जसवन्तसिंह की व्यस्तता के कारण से इस राणी को जोधपुर न ला सके। सिरोही के गाँव कालन्द्री में जब बालक अजीतसिंह मुकन्ददास खीची की देख-रेख में जग्गू पुरोहित के घर पाला-पोसा जा रहा था तब अप्रत्यक्ष रूप में इस राणी का संरक्षण उन्हे प्राप्त था, मूंदियाड़ को ख्यात में लिखा है कि जब अजीतसिंह ने जोधपुर पर अधिकार किया तब उन्होंने इस राणी को जोधपुर बुलाया। यहाँ सूरसागर में उसने सोने चाँदी का तुला-दान किया व ब्रह्म भोज दिया तथा दान-पुण्य किया। सूरसागर के बाग में स्थित कीर्तिस्तम्भ में यह वर्णन अंकित किया गया है।[1]

देवी सांगवियां (१४०/२२३)—यह भाटियों को कुलदेवी मानो जाती है। किशोरसिंहजी बारठ के अनुसार काठियावाड़ के बल्लभीपुर (बला) नगर मे सांउवा शाखा के चारण मम्मट के घर इनका जन्म हुआ था। यह अपनी पाँच छोटी बहिनों सहित अपने पिता के साथ सिंध में आकर रहने लगी। वहाँ के शासक उमर सूमरा ने उनके साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट को, जिम पर आवड़ ने अपने आपको महा शक्ति का स्वरूप घोषित कर उस राजा को कहलवाया कि अब तेरा अन्त निश्चय है। इसके पश्चात ये लोग जैसलमेर राज्य के अन्तर्गत तेमड़ा पर्वत की गुफा में आकर रहे। और उसने अपनी सांग (शस्त्र विशेष) के चमत्कार से उमर सूमरा का विध्वंश किया तथा सम्मा यादवों के राज्य की वहाँ स्थापना करवाई। सांग धारण करने के कारण ही इनका नाम सांगियां पड़ा।

कहते है कि सतलज नदी की एक शाखा उस समय सिंध में होकर वहती थी, जिससे वह प्रान्त वहुत-हरा भरा था। उमर सूमरा पर क्रुद्ध होने के कारण इस देवी के चमत्कार से उस नदो के पानी का रुख वदल गया और वह मुल्तान की ओर वहने लगा। तभी से यह कहावत प्रचलित हुई कि 'वह पानी मुलतान गया'। जैसलमेर इलाके

---

१. मूंदियाड़ की ख्यात, पृ० १३६।

के तणोट स्थान के संस्थापक राव तणु ने इस देवी की बड़ी भक्ति की और एक मन्दिर बनवाया। राव तणु के पुत्र विजयराज की भक्ति से प्रसन्न होकर देवी ने अपने हाथ की सोने की चूड़ (चूड़ी) विजयराज को दी और उसे वरदान दिया कि अपने दाहिने हाथ में यह चूड़ पहन कर लड़ेगा वहाँ तेरी विजय होगी। इसीलिये विजयराज चूड़ाला कहलाया और उसने भटिंड़ा पर विजय प्राप्त की।[1]

कुंवरजी गौड़ों रे परणीया (१५०/२३३)—कुँवर पृथ्वीसिंह का विवाह गौड़ों के यहाँ संवत् १७२२ को हुआ। संवत् १७२३ में दिल्ली में रहते हुए इस कुँवर की मृत्यु हो गई थी। इसके पीछे गौड़जी सती हुई। बांकीदास की ख्यात में लिखा है कि सती होते समय गौड़जी ने कहा कि महाराजा से अर्ज करना कि हमारे पीछे यादगार मे यहाँ स्मारक बनवा दें, जैसा कि उन्होंने महाराजा गजसिंहजी के ऊपर आगरे में बनवाया है। कुँवरजी के स्मारक की सेवा के लिये वहाँ व्यास सोभा रखा गया था।[2]

श्रीजी रामपुरे परणीया (१५०/२३३)—यहां संवत् १७२१ वैशाख सुदी ४ को जसवन्तसिंह ने रामपुरा के राव अमरसिंह की पुत्री जैसुखदे (चंद्रावती) से विवाह किया था। इस राणी के गर्भ से संवत् १७२३ में कुँवर जगतसिंह का जन्म हुआ था। संवत् १७३२ में जब बालक जगतसिंह अत्यधिक बीमार हुआ तब राजा-प्रजा में गम्भीर उदासी छा गई क्योंकि कुछ समय पहले कुँवर पृथ्वीसिंह की मृत्यु हुई ही थी। मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि इस अवसर पर राजा और प्रजा की तरफ से जगतसिंह के स्वास्थ्य-लाभ के लिये खूब दान-पुण्य किया गया। दान-पुण्य की विगत उक्त ख्यात में इस प्रकार दी गई है—

५०१) पाँचसौ एक रुपया कोठार पुण्य के लिये भेजे गये।

३००१) तीन हजार एक का चाँदी का तुला दान किया गया।

१ कपड़े का तुला दान किया गया।

१ घृत का ,, ,, ,, ,,

१ लोहे का ,, ,, ,, ,,

---

१. द्रष्टव्य—चारण : भा० १-अंक ३-४ संपादक किशोरसिंह बार्हस्पत्य।

२. बांकीदास री ख्यात, पृष्ठ ३५।

१ तिलों का तुला दान किया गया।
१ गुड़ का ,, ,, ,, ,,
१ लूण (नमक) का ,, ,,
१ कोहलों का ,, ,,
१ सप्तधान्य का। इस तरह कुल ८ तुला दान किये गये।
१००) दादीजी ने पुण्य दिये।
२०१) महाराणीजी ने पुण्यार्थ दिये।
५०१) भीतर से पुण्य किये।
२००१) उमरावों ने पुण्य किये।
१०१) पंचोलियों ने पुण्यार्थ किये।
२०१) प्रधानों ने पुण्यार्थ किये।
२०१) राजपूतों ने पुण्य किये।
१००) पंचोली केसरीसिंह ने पुण्य किये।
१००) राठौड़ आसकरण ने पुण्य किये।
१००) मियें फरासत व खोजों ने पुण्य किये।
१०१) राठौड़ संगरामसिंह ने पुण्य किये।
१००१) बनिये छीपे सावूगर वगेरों ने पुण्य किये।
१०१) ईंदा रुघनाथदास ने पुण्यार्थ किये।
८३११) इतना पुण्य तो यहाँ हुआ। और महाराज साहिब ने हजार मन अनाज गरीबों को दिलवाया। और जप दान अक्षय धारा-घट-सहस्र से पूजन आदि अनेक प्रकार से पुण्य किया गया और हाथी बहुत दान दिये गये[1]। फिर भी जगतसिंह का देहान्त हो गया।

यादवों रे परणीया (१५०/२३३)—करोली के राजा छत्रसिंह की पुत्री जसकुंवरी से उनका यह विवाह हुआ था। यह राणी काबुल में महाराजा की मृत्यु के समय जमरूद के थाने साथ थी। उसके गर्भ से अजीतसिंह का जन्म हुआ था।

उज्जैन का युद्ध, शाही मनसबदार (१७०-१७५,२४२-२४३)—इस युद्ध में शामिल होने वाले मनसबदारों की जो सूची उनके सैनिकों सहित यहाँ दी गई है यह

१. मुरारीदान री ख्यात—२ पृ० २५३-२५४।

कुछ अपूर्ण है। डॉ० रघुवीरसिंहजी ने पंचोली व्रजलाल की जोधपुर हकूमत की वही से जो सूची प्रकाशित की है वह पूर्ण है। (मरु भारती भाग ६ अंक १) अतः इस ग्रन्थ में छूटे हुए मनसबदारों के नाम उक्त सूची के आधार पर यहाँ अंकित किये जाते हैं—

१६२ रा० गोरधन चंपावत आसामी ३ १२६ रा० गोरधन ३० हजारी-पांचसौ असवार।

२५ रा० रूपसी गोरधनोत च्यार सदी पचास असवार।

११ रा० रतन गोरधनोत दोय सदी पचीस असवार।

[पृ० २४][1]

८१ मेहमंद मुराद ३१ हजारी पंचसै असवार गौड़।

१२६ गोड़ भीव ३२ वीठलदासोत हजारी पच सौ असवार।

२२४ झालो दयालदास नरहरदासोत आसामी ५ १२६ दयालदास ३३ हजारी पंच सौ असवार।

६४ झालो राघोदास पंच सदी अढाई सौ असवार।

१६ झालो इन्द्रभांण तीन सदी असवार।

६ जगन्नाथ नरहरदासोत दोय सदी।

६ उदेभाण जगनाथोत दोई सदी तीस असवार।

६७ सैद असवार वेग आसामी २

८१ असवार वेग नव सदी च्यार सौ असवार।

१६ साह कुली असवार वगेरो।

१०१ सिसोदियो सुन्दरदास गोकलदासोत नव सदी च्यार सौ असवार।

४५७ राजा वरसिंघदे वगैरे आसामो १७।

२२६ वरसिंघदे ३६ द्वारकादासोत अठ सदी आठ सौ असवार, दोइ सो दोसपा सैसपा।

३६ विजैसिंघ द्वारकादासोत तीन सदी।

६४ जैचन्द दलपतोत पंच सदी अढाई सौ असवार।

११ स्यामचन्द बलभदोत दोई सदी चालीस असवार।

६ अभैचन्द भवनचंदोत सदी त्रिस असवार।

५ अखैचन्द भवनचदोत सदी पनरै असवार।

---

१. यह बही की पृष्ठ संख्या है।

७६ चौ० प्रतापसिंघ च्यार सदी तीन सौ असवार।
२ चौ० मथुरादास प्रतापसिंघोत।
६ चौ० किसनसिंघ प्रतापसिंघोत।

[पृ० १५][1]

४ चौ० चन्द्रभरण वाघजी री।
१७ चौ० प्रतापसिंघ सबलसिंघोत, आसामी ४।
१०१ हाडो मोहणसिंघ ३६ माधोसिंघोत आठसदी च्यार सो असवार।
६१ सैद टपंदगरम (?) ३७ अठ सदी तीन सो असवार।
६९ चौ० बलु सवतसियोत आसामी ४—]
७६ बलु ३८ सात सदी तीन सौ असवार।
१६ चौ० तुलछीदास बलु रौ तीन सदी आठ असवार।
७ चौ० नरहरदास बलुवोत दोय सदी तीस असवार।
४ चौ० गोयंददास अचलदासोत सदी पनरे असवार।
६६ सैद कुली सात सदी तीन सौ असवार।
५१ सैफुदिन ३९ तरबीयतखां रो सात सदो डोय सो असवार।
४८ मेहमंद मुकीम ४० बेगसाह रौ।
६३ अबदर सुलेवेग रो हजारी तीन सौ असवार।
४६ मेहमंद सैदवेग रो सात सदी सौ असवार।
४१ बाहादरबेग ४१, सात सदो।
२६ रहमवेग पंच सदी।
७५ सुरतण नाजर ४२ वगैरो आसामी २६।
५१ हाडो केसौरसिंघ ४३ माधोसिंघोत छे सदी दोइ सौ असवार।

[पृ० १६]

३९ खोजो हसन वदी (?) वगैरे आसामी ४।
६२ इनातुला वगैरो आसामी २।
६४ वरसौ झालो ४४ पंचसदी अढाई सौ असवार।
६७ मेहमंद शरीफ वगैरे आसामी ३।
५८ रा० श्याम [राम] सिंघ वगैरे आसामी २—
५१ रा० श्याम [राम] सिंघ ४६ वलुओत पंच सदी दोइ सौ असवार।

---

१. यह वही की पृष्ठ संख्या है।

७ उदेसिंघ ४६ रामसिंघोत सदी तीस असवार।
५१ चौ० रुकमंगद प्रीथीराजोत पंच सदी दोय सौ असवार।
२१ अब्दुल्ला नबी ४७ खांन दौरां रो बेटो पंच सदी दोय सौ असवार।
३४ नाहर बेग वगैरे आसामी ४।
२५ सुजा बेग वगैरे आसामी ४।
१५ खौजा इसहाल वगैरा।
२०० रावत हरीसिंघ ४८ च्यार सदी च्यार सौ असवार। जमीदार देवलीया रो, आधा जाबता रा राखै।
६४ माधोसिंघ चन्द्रावत वगैरे।
५१ माधोसिंघ च्यार सदी दोय सौ असवार।
१४ जगतसिंघ माधोसिंघ रो भाई।

[पृ० १७]

४२ मिरक मैहमंद वगैरे।
५१ रा० कल्याणदास महेशदासोत ४९ च्यार सौ असवार च्यार सदी।
५१ रा० महासिंघ केशोदासोत ५० च्यार सदी दोइसै असवार।
५१ कछवाहो पृथीसिंघ भुंझारसिंघोत ५१ च्यार सदी च्यार सौ असवार।
३९ शिशोदियो मम (?) सिंघ ५२ मनसिंघोत च्यार सदी दोढ सौ असवार।

साथ श्री महाराजाजी रो काम आयो[1] (१७६-१८५/२४५)—

१. रा० वीठलदास गोपालदासोत—यह पाली का ठाकुर था। इसके साथ इसके सैनिक पत्तो वीनावत तथा भोजराज पातावत भी काम आये।

२. रा० गिरधरदास मनोहरदासोत—यह आउवा का स्वामी था। मूंदियाड की ख्यात में लिखा है कि काम आने से पहले इसने महाराजा से निवेदन किया कि मैं तो इस युद्ध मे काम आऊँगा और आप आउवा महेशदास को दोगे परन्तु मेरे परिवार की इज्जत का भी खयाल रखना। महाराजा ने उसे कुछ आश्वस्त किया।

१. काम आने वाली कुछ आसामियों का संक्षिप्त परिचय मूंदियाड़ की ख्यात (रा० प्रा० वि० प्र०) में दिया गया है, उसी के आधार पर यहां इनका परिचय दिया जा रहा है।

३. रा० भीम गोपालदासोत – इसकी अवस्था उस समय १६ वर्ष की थी और यह महाराजा की चाकरी की उम्मीदवारी में था।

रा० वलराम (उदावत) दयालदासोत—इसके २५ गांव सहित वदनोर पट्टे में था और कुल छतीस हजार रुपये की जागीरी थी।

४. रा० कुम्भकरण वलरामोत—इसके १६ गाँव सहित रायपुर गाँव पट्टे था, जिसकी रेख इकसठ हजार रुपये थी।

५. रा० वीरमदे मुकनदासोत—इसके तेरह गाँव पट्टे में थे जिसकी रेख आठ हजार रुपये थी।

६. रा० सूरदास वेणीदासोत—इसके छः हजार की रेख के वारह गांव का पट्टा था।

७. रा० आसकरण वलरामोत—इसके चार हजार की रेख के पांच गांव पट्टे में थे।

८. रा० करण सुजानसिंघोत (जैतावत)—इसके वीस हजार की रेख से वगड़ी गांव पट्टे था।

९. रा० जुगराज कुंभकरणोत—इसके १३ गांव सहित घनला पट्टे में था।

१०. रा० उदैभांन भगवानदासोत—इसके दस हजार की रेख के चौदह गाँव पट्टे में थे।

११. रा० काना गोयंददासोत, इसके चार हजार दो सौ की रेख के चार गांव पट्टे में थे।

१२. रा० (जोधा) प्रतापसिंघ करमसिंघोत—पट्टे गांव दो, रेख रुपया तीन हजार।

१३. रा० रतनसिंघ गोयंददासोत—पट्टे गाँव पाँच, रेख छ हजार रुपया।

१४. रा० ईसरदास महासिंघोत—पट्टे गाँव दो, रेख चार हजार रुपया।

१५. रा० (भदावत) पूरणमल जसावत—पट्टे गांव दो, रेख रुपया दो हजार दो सौ।

१६. रा० गोयंददास मानावत—पट्टे गांव एक, रेख रुपया एक हजार।

१७. रा० गोरधन भगवानदासोत—चाकरी की उम्मीदवारी में था।

१८. रा० विहारीदास केसवदासोत—चाकरी की उम्मीदवारी में था।

१९. रा० (ऊहड़) मेघराज उरजनोत—इसके कोरणा आदि तेरह गाँव पट्टे में थे।

२०. रा० नारायणदास गोयंददासोत—पट्टे गाँव दो, रेख दो हजार सात सौ।

२१ रा० (पातावत) भगवानदास मांडणोत—इसके चोटीला गांव पट्टे में था।

२२. रा० नगो (तोगो) रामदासोत—इसके नौसर गाँव पट्टे में था।

२३. रा० जगनाथ चाँदावत—इसके पट्टे में करणू की जागीर थी।

२४. रा० (रूपावत) सबलसिंघ आसकरणोत—यह चाकरी की उम्मीदवारी में था।

२५. रा० (वालावत) किसनदास वेणीदासोत—यह भगवानदास देवराज सहित काम आया।

२६. भा० महेशदास अचलदासोत—पट्टे गांव वीकुंकोहर १५ गाँवों से त० ओसियाँ।

२७. भा० केसरीसिंघ अचलदासोत—पट्टे गाँव केलावा।

२८. भा० विसनसिंह रामचंदोत—पट्टे गाँव खारड़ा।

२९. भा० दुरगदास केसवदासोत—यह दुगोलिया (वदूक) की लगने से मरा।

३०. भा० माधोदास केसवदासोत—पट्टे गाँव आवावस।

३१ भा० नरसिंघ भाणोत—पट्टे गांव जाटिया वास।

३२. भा० मानसिंघ गोपालदासोत—पट्टे गाँव जालखो।

३३. भा० भाँण मनोहरदासोत—पट्टे गांव नांदिया वड़ा।

३४. भा० उदैसिंघ माधवदासोत तथा कुंभा सुनताणोत—चाकरी की उम्मीदवारी में थे।

३५. भा० रतनसिंह प्रागदासोत—पट्टे गाँव कोरणा।

३६. भा० भींव प्रागदासोत—पट्टे गाँव कीटनोद।

३७. भा० गोकलदास संकरदासोत—चाकरी की उम्मोदवारी में था।

३८. भा० केसरीसिंघ वीठलदासोत—पट्टे गाँव विराई तथा तान्नोड़ो (जैतारण)

३९. भा० सुजाणसिंघ सुन्दरदासोत—चाकरी की उम्मोदवारो मे था।

४०. इंदे सरदार छः गाँव बालेसर के काम आये।

४१. पुरोहित दलपत मनोहरदासोत—इसकी अवस्था उस समय बाइस वर्ष की थी। उस समय यह नवविवाहित था। तिंवरी गाँव इसके पट्टे में था।

विशेष—ग्रंथ में दी हुई सूची के अतिरिक्त युद्ध में काम आने वाले कुछ प्रसिद्ध मनसबदारों व अन्य छोटी-बड़ी आसामियों की सूची मूंदियाड़ की ख्यात में इस प्रकार है—

१. रावराजा छत्रसाल बूंदी का स्वामी व कुंवर भारतसिंह छत्रसालोत, बाप बेटा दोनों काम आये जिनके पीछे चालीस सतियें हुईं—छः राणियें तथा चौतीस खवासें।

२. राजा रूपसिंह भारमलोत—किसनगढ़ का स्वामी।

३. राव रामसिंह चन्द्रसेणोत।

४. राजा शिवराम बलराम गोपालदासोत—सरवाड़ का राजा।

५. गौड़ भीम विठलदासोत।

अन्य आसामियें—

१. राठौड़ केसरीसिंघ भगवानदासोत, जगरूप जगनाथोत।

२. राठौड़ सुजाणसिंघ गोपालदासोत मेड़तिया।

३. रा० रुघनाथसिंघ प्रतापसिंघोत मेड़तिया।

४. रा० हरीसिंघ प्रतापसिंघोत मेड़तिया।

५. रा० सूरजमल मनोहरदासोत मेड़तिया।

६. रा० मुकनदास किसनसिंघोत, गोकलदास वृन्दावनदासोत।

७. रा० किसनसिंघ दलपतोत मेड़तिया।

८. रा० किसोरदास सबलसिंघोत मेड़तिया।

९. रा० महासिंघ रुघनाथोत।

१०. रा० रेंवतसिंघ मानसिंघोत।

११. रा० करण जगनाथोत और काना दोनों सगे भाई।

१२. रा० उदैभांण वनमालीदासोत विहारी।

१३. ठाकुरसी सादलोत मेड़तिया।

१४. रा० केसवदास मोहणदासोत।

१५. रा० भावसिंघ जगनाथोत ।

१६. रा० रुघनाथ भोजराजोत करमसोत ।

१७. रा० शुभकरण व मनोहरदास आसकरणोत करमसोत, दोनों भाई ।

१८. रा० माधोदास चतुरभुजोत ।

१९. कलांणदास जसवन्तोत ।

२०. रा० रूपो, तोशाखाना पर था ।

२१. रा० किसनसिंघ अचलावत वगैरे आसामी एक सौ पेंतालीस ।

बाग कागो (१८९/२४६)—यहाँ के कुँए का पानी बड़ा उत्तम और स्वास्थ्य-वर्द्धक माना जाता है। महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम ने यहाँ पर बाहर से मंगवा कर अनेक पेड़ लगवाये थे। वर्तमान में शीतला माता का मेला यहां लगता है तथा कई सामंतों की छतरियें बनी हुई हैं। किंवदंती है कि यहाँ किसी समय काकभुषंड ऋषि ने तपस्या की थी।

बहूजी सेखावत रौ तळाव (१८९/२४६)—यह तालाब महाराजा जसवन्तसिंहजी (प्रथम) की रानी अंतरंगदेजी (खंडेला की) ने बनवाया।[1]

बहूजी सरूपदे रौ तळाव (१८८/२४६)—यह तालाब मालदे की झालीरानी सरूपदे ने संवत् १५९७ में बनवाया। नाम स्वरूपसागर है।[2]

राईको हाडोजी रौ बाग (१८९/२४६)—यह बाग महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) की हाडी रानी जसरंगदे ने संवत् १७३० में लगवाया।[3] पहले इस स्थान को रातानाडा कहते थे।

सूर सागर (१८९/२४६)—यह स्थान महाराजा सूरसिंह ने संवत् १६६४ में भाटी गोयंददास की देखरेख में बनवाया। ८ वर्ष में कार्य पूरा हुआ। पास ही अनेक सामंतों ने भी छोटे-बड़े बाग बनवाये।[4]

बालसमंद (१८९/२४६)—इसे नाहड़ागव पड़िहार के भाई बालाराव ने बंधवाया था। यह बांध मंडोर के पास है।

---

१. द्रष्टव्य—इसी ग्रंथ का परिशिष्ट (ख) पृष्ठ ५८३

२. ,, ,, ,, ,, ,, ५८२

३. ,, ,, ,, ,, ,, ५८२

४. ,, ,, ,, ,, ,, ५८३

डाँगिया वास (२१९/२५०)—बीकानेर से आकर डांगा शाखा के जाट यहां वसे जिससे इसका यह नाम पड़ा।

रांमपुरो बिसाइण बास ६ (२२५/२५०)—यह गाँव रांम कुंभावत भाटी के द्वारा बसाया गया था।[1]

तिंवरी (२३६/२५०)—यहाँ पर संवत् १५२२ में सस्थापित पार्श्वनाथजी का मन्दिर है।

चावंडवा (२३७/२५२)—यहां पहाड़ी पर चामुण्डा का प्राचीन मन्दिर है। यहां राव चूंडा ने चामुण्डा की तपस्या की थी।

बीठू मेहा (२४२/२५२)—इस कवि का लिखा हुआ "पाबूजी रा छंद" डिंगल का उत्तम काव्य है।

पीपाड़ (२४४/२५३)—यहाँ का पीपलाद माता का मन्दिर, एक कुण्ड तथा ९ वीं शताब्दी का विष्णु-मन्दिर दर्शनीय है।[2]

कापरड़ो (२४६/२५३)—यहाँ का प्राचीन जैन मन्दिर द्रष्टव्य है।

वेजड़लो (२४६/२५३)—यहाँ माताजी का प्राचीन मन्दिर पहाड़ पर बना हुआ है।

वाघोरियो (२५२/२५३)—यहाँ पर भी पहाड़ी पर देवी का प्राचीन मन्दिर है।

बड़लू (२५५/२५५)—यह गाँव बड़ला जाति के जाटों ने बसाया। भूतेश्वर पहाड़ मे देवस्थान है जहाँ नंदावाणे सेवा करते है[3]।

बीलाड़ो (२५६/२५६)—यह लूनी नदी के किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर है। यहाँ शाहजहाँ का लगाया हुआ एक प्राचीन बगीचा (मारा-मोरा) प्रसिद्ध रहा है। यह स्थान सीरवी सम्प्रदाय के लोगों का प्रमुख स्थान है। यहाँ पर संवत् १५२१ में आईजी प्रगटी थी और तभी से वहाँ अखंड ज्योति जलती है। इस सम्प्रदाय का प्रधान आईजी का दीवान है, उसके बड़े महल बने हुए हैं। दीवान लोग किसी समय में बड़े सम्पन्न

---

१. बांकीदास री ख्यात: सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ. १२०।

२. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा पृ. ३१।

३ बांकीदास री ख्यात: सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ० २०१।

मांने जाते थे। उनके वहाँ ऐतिहासिक महत्व के दस्तावेजों का भी महत्वपूर्ण संग्रह रहा है।[1]

किसना दुरसावत (आढा) (२६२/२५९)—यह प्रसिद्ध कवि दुरसा आढा का पुत्र था। इसे दुरसा के जीवन-काल में ही पर्याप्त ख्याति मिल गई थी। इसकी स्फुट गीत-रचना भी उपलब्ध होती है।

पाली २६२/२६०)—यहाँ प्रारम्भ में पलीवाल ब्राह्मण रहते थे। ये उदयपुर राणा के गुरु थे। खेड़ पर अधिकार कर लेने के पश्चात् राठौड़ों ने पलीवालों को हटाकर यहाँ अपना कब्जा कर लिया। राठौड़ों के आगमन के पहले जोधपुर के आस-पास पलीवालो की अच्छी बस्ती होनी चाहिए क्यों कि यहाँ के अनेक गाँवों में उन पर बनी छतरिये विद्यमान हैं। यह उस समय यहाँ की प्रमुख व्योपारी कौम होनी चाहिए।

मानसिंघ अखैराजोत सोनिगरा (२६८/२६२)—यह मालदे के प्रसिद्ध सामंत अखैराज सोनीगरा का पुत्र था और राणा की ओर से लड़ता हुआ हल्दीघाटी के युद्ध में काम आया था।

भाद्राजण (२७३/२६५)—यह ग्राम पहाड़ी की ढाल में बसा हुआ है। राव मालदे के समय से यह राठौड़ों के अधिकार में आया।

कोढणो (२९३/२७३)—भारमल जोधावत की बैठक यहाँ थी। फिर उसका पुत्र जैसिंघदे यहाँ रहता था, पर उससे इस जागीर का बन्दोवस्त नही हुआ तब राव गांगा ने महेवा से ऊहडो को बुलाकर १२ गावों सहित यह जागीर उन्हे दी।

बाघावास (२९७/२९३)—चहुवान प्रथुराव के पुत्र वाघ ने यह गाँव बसाया।[2] बाद में दुर्गादास आसकरणोत के वंशजो की जागीर यहाँ रही।

नागाणो (२९९/२९३)—राठौड़ों की कुलदेवी नागणेचियाँजी की मूर्ति यहां पर स्थापित है।

---

१. राजस्थान में राजस्थानी साहित्य की खोज, (डा० हरप्रसाद शास्त्री) पृ० ७०-७९, रा, शो सं. जोधपुर।

२. बांकीदास री ख्यात, पृ० १६३।

दूदा आसिया (३०३/२७६)—इस कवि को बीकानेर के राजा रायसिंघ ने एक हाथी अपने विवाह के अवसर पर प्रदान किया था।[1]

बहळवौ (३०५/२७८)—ईंदा सरदारों का मुख्य स्थान है। यहाँ के जागीरदार को राणा की उपाधि थी।

घटीयाळो (३१०/२८०)—यहाँ पर प्राचीन शिला लेख हैं।

सेतरावौ (३१२/२८२)—यहां पर वीरम ने अपने पुत्र देवराज को महाजनों की बस्ती के साथ बसाया था। फिर लूणा का अधिकार यहाँ हुआ और तत्पश्चात् भाटियों का अधिकार रहा।

केतू गोगादेवां रौ वास (३१५/२८४)—यह गोगादे वीरमदेवोत का मुख्य स्थान रहा।

सेषाळो बडौ बास (३१६/२८४)—यहां पर गुसांईजो प्रगटे थे। यहां से फिर खिरजां में प्रगटे। गुसांईजी की घोड़े पर सवार मूर्ति गोगादे पूजते है।

देछू (३१८/२८७)—देवराज के पुत्र चाहड़दे के वंशज जैमल धनराज आदि स्थायी तौर पर यहाँ रहने लगे थे।[2]

ओसियाँ (३१९/२८९)—ओसवाल महाजनों की उत्पत्ति यहां से हुई। यह नगर बहुत प्राचीन है। यहाँ पर प्राचोन कलात्मक मन्दिर विद्यमान है तथा कई शिलालेख महत्व के है।

हरभुसर (३३२/२८९)—प्रसिद्ध पीर हरभुजी का बसाया हुआ ग्राम।

लवेरो (३४१/२९३)—महाराजा सूरसिंह के प्रसिद्ध प्रधान भाटी गोयन्ददास की जागीर का ग्राम।

बावड़ो (३४१/२९३)—यहाँ की बावली में दलथंभन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण शिलालेख है।

घेड़ापो (३४९/२९४)—यहाँ रामस्नेही सम्प्रदाय की गद्दी है।

---

१. डॉ० टेसीटरी का राजस्थानी ग्रंथ सर्वेक्षण : सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० शो० सं चौपासनी, जोधपुर।

२. मुरारीदान की ख्यात, पृ० ३५१।

सांदू माला(३४६/२६४)—इस कवि द्वारा रचित 'रायसिंघ री वेलि' प्रसिद्ध काव्य-रचना है। इसमें ४३ छद हैं।[1]

गाडण चोला (३४६/२६४)—३१ छंदों में रचित 'सूरसिंघ री वेलि' इसकी सुन्दर काव्य-कृति है।[2]

महेवा (३५३/२६६)—प्रारम्भ में रावळ मलोनाथजी की जागीर का स्थान रहा। रावळ मेघराज हापावत को संवत् १६४० में मोटाराजा ने यह गांव दिया और वह उनके साथ गुजरात चढ़ाई में गया। बाद में मेघराज ने यह जागीर वीरमदे कलावत को दी। संवत् १६६८ में मोटा राजा ने यह दूदा तथा पता को देदी। महेवा के तीसरे हिस्से के गांव आगे जाकर महेसदास पतावत की जागीर में आये। संवत् १६६३ में महेवा के गाव आधो-आध भारमल और महेसदास को आपस में बाँट दिये।[3]

तलवाड़ो (३५६/२६६)—महेवा का प्रसिद्ध ग्राम। यहाँ बहुत बड़ा पशु-मेला लगता है।

पेड़ (३५१/२६६)—राठौड़ों ने प्रारम्भ में यही पर कब्जा किया था इसीलिये इन्हें पेड़ेचा कहते है।

परगना सोझत

सोझत (३८३/१)—सोझत अच्छा कस्बा है। प्राचीन ग्रन्थों में इसका नाम सुद्धदती मिलता है। इसे त्रवावतो नगरी भी कहते थे। यहाँ पर ताँबे की खान थी।[4] यहाँ की अजवायन तथा महंदी प्रसिद्ध है। राव रिड़मल को सोजत राणा की ओर से दी गई थी पर बाद में राणा का पुनः अधिकार हो गया। जब राव जोधा ने मण्डोर पर अधिकार करके जोधपुर बसाया तब उसने सोझत पर भी अधिकार कर लिया।

सोझत नांवे बेटो (३८३/१)—कई ग्रन्थो में इसका नाम सेझल अथवा सोजल भी मिलता है।[4] इसका स्थान सोझत में अब भी पूजा जाता है। सोझत

---

१. परम्परा–भाग १४ पृ. १११।
२. ,, ,, ,, ,, ११३।
३. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० ३१५-२३।
३. परम्परा भा० ११ पृ० १०५।
४. वही।

के शाप से ग्रंवसेन का राज्य गया तथा हुलों का राज्य यहाँ हुआ अतः उसी समय से इसका नाम सोझत पड़ा होगा।

चारणी करणी (३८३/४) —चारण जाति में उत्पन्न देवियों में करणीजी का प्रमुख स्थान है। ख्यातों के वृत्तांतों से पता लगता है कि राव वीका और कांधलजी को वीकानेर राज्य की स्थापना करने में करणीजी ने वड़ी सहायता पहुँचाई थी। तभी से वीकानेर के राठौड़ इन्हें अपनी इष्ट देवी मानते हैं। देशनोक गांव में इनका वड़ा भव्य मन्दिर वना हुआ है। वारहट किशोरसिंहजी ने इनका समय वि० सं० १४४४ से १५९५ माना है।[1]

राव सता (३८६/५)—मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि राव शराव बहुत पीता था इसलिये राज्य का सारा कार्य-भार रणधीर पर था।[2]

इसकी साक्षी का एक गीत अवलोकनीय है—

रायांगुर रौद्र कळोधर रावण
बैठक वींद कळोधर वीर।
सतो मंडोवर राख न सकियो
रावत तो पाखे रिणधीर॥

हींगोला री वासण (४२०/४०)—यह गांव हींगोला पीपाड़ा का वसाया हुआ होना चाहिए।

हींगोला पीपाड़ा (४२३/४२)—यह राठौड़ पृथीराज का चाकर था। पृथीराज ने इसे एक तलवार वक्सी थी इसका वड़ा दिलचस्प किस्सा ख्यातों में है।[3]

रामदास बैरावत (४२६/४४)—यह वड़ा दानी था। इसकी अखाड़ियाँ राजस्थानी साहित्य की सुन्दर रचना है।

सहेवाज खांन (४३१/४४)—यह अकवर का सेनापति था। राव चन्द्रसेन जव सिवाने में था तव वीकानेर के राजा रायसिंघ के साथ यह वादशाह की ओर से उस पर चढ़कर आया था।

---

१. चारण, खण्ड १, अंक ३-४।
२. मुरारीदान की ख्यात २, पृ० ५९।
३. देखें, मुहता नैणसी री ख्यात भा. २, पृ० १२०।

राव राम (४६७/४४)—यह राव मालदे का बड़ा पुत्र था। इसे यह आभास हो गया था कि मालदे के पश्चात् गद्दी उसे नही मिलेगी। अतः जब मालदे अधिक बीमार हुआ तो कुछ सरदारो से मिलकर उसने यह षड़यन्त्र रचा कि मालदे को नजरबन्द कर स्वयं गद्दी पर बैठ जाय। पर भेद खुलजाने से ऐसा न हो सका और उसे देश छोड़कर जाना पड़ा। वह ऊमादे भटियाणी के पास जाकर रहा।

डीघोड़ (४६७/४४)—राव राम के पश्चात् यह स्थान कला के अधिकार में रहा। यहाँ के गुढे में रहते हुए उसने मुगलों से मुकाबला किया।[1]

सींचोयाई (४६९/४८)—ख्यातों में इसका नाम सचियाय मिलता है। यहाँ सचियाय माता का स्थान है। यहाँ की पहाड़ियों में (सचियाय री गाळ) राव चन्द्रसेन का देहान्त हुआ था।[2]

भाटी वेणीदास (४७३/४५)—यह भाटी गोयंददास मानावत का ५ वा पुत्र था।[3]

राधा री बासणी (४७९/४६)—यह गांव १७०९ मे जसवंतसिंह के कुंवर पृथ्वीसिंह के जन्म की बधाई के उपलक्ष में ब्राह्मणां को दिया गया होगा।

पांचेटियो (४८३/४७)—यह गांव महाराज गजसिंह द्वारा संवत् १६७७ मे आढा दुरसा तथा किसना दुरसावत को दिया गया। अर्थात् इसके पहले यह गाँव इनके सांसण में नही था।

सांकर बाहरेट (४८४/४७)—"दातर सूर रौ सवाद" इसकी प्रसिद्ध रचना है। ऐसी प्रसिद्धि है कि बीकानेर के राजा रायसिंह ने इसे सवा करोड का पुरस्कार दिया था। इसके रचे हुए अनेक गीत भी है।[4]

बारहट लखा नांदणोत (४८५/४७)—यह बड़ा प्रभावशालो व्यक्ति था। इसको पहुँच मुगल दरबार तक में थो। दुरसा आढा जैसे कवियो को भी ऊपर उठाने और मुगल दरबार तक ले जाने का श्रेय इसे प्राप्त है। इसने

---

१. ऐतिहासिक वात्तां (परम्परा) पृ० ८३।

२. वही, पृ० ८५।

३. बांकीदास री ख्यात, सं० नरोत्तमदास स्वामी, पृ० ११९।

४. राजस्थानी सवदकोस, प्रथम भाग पृ० १३५।

पावूजी की प्रशंसा में सुन्दर काव्य लिखा है, तथा इसकी अनेक स्फुट रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं।

गाडण केसोदास सांदुवोत (४८६/४७)—महाराजा गजसिंह ने सं. १६८३ में यह गात्र लाखपसाव में इस कवि को दिया था। इस कवि की स्फुट रचनाओं के अतिरिक्त "गज गुण रूपक बंध"[1] नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ मिलता है जिसमें मुख्य रूप से भीम अमरावत के साथ हुए गजसिंह के युद्ध का बडी ओजस्वी शैली में वर्णन किया गया है। "नीसाणी विवेक वार" भी इसकी महत्वपूर्ण कृति है। यह भक्त कवियों में भी अपना स्थान रखता है।

रामा सांदु (४८७/४७)—इसने संवत् १६१६ के लगभग उदयसिंह री वेलि नामक सुन्दर साहित्यिक कृति का सर्जन किया। इसकी स्फुट रचनाएँ भी मिलती है।[2]

माधवदास दधवाड़िया (४८७/४७)—यह प्रसिद्ध कवि राठौड़ पृथ्वीराज का समकालीन था।[3] इसका ग्रन्थ "राम रासो" डिंगल की उत्तम कृतिय में गिना जाता है।

परगना जैतारण

जैतारण (४९२/१)—यह शहर १५२५ में राव जोधा के समय में बसा। यह मारवाड़ का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जोधा के वंशजों में यह ऊदावत राठौड़ों का मुख्य परगना रहा है। इसमें ऊदावतों के बड़े ठिकाने थे तथा यहा के ऊदावत जैतारणिया कहलाये।

रूण (४९२/१)—यह स्थान सांखला राजपूतों का प्रमुख स्थान रहा है। अपने अस्तित्व के लिये सांखलों ने यहाँ रहकर बडे संघर्ष किये हैं। यह नगर पहले सम्पन्न था पर अलाउद्दीन खिलजी के साथ हुए युद्ध-संघर्ष में नष्ट हो गया।

---

१. सं सीताराम लालस, प्र: रा प्रा. वि. प्र० जोधपुर।

२. परम्परा, भाग १४ पृ ११०।

३ पृथ्वीराज ने इसके बारे में यह दोहा कहा है—

चूंडे चत्रभुज सेवियो, तत फल लागो तास।
चारण जीवो चार जुग, मरो न माधवदास॥

ऊदा सूजावत (४६२/१)—यह सूजा की रानी सवरंगदे मांगलियाणी का पुत्र था। इसके वंशज ऊदावत कहलाये।[1]

गळणियो (५११/१२)—यह गाँव अखैराज सोनीगरा के वंशज मुकंददास के १६०००) की रेख से पट्टे में रहा।[2]

लोटोधरी (५१३/१२)—हाजीखां और राणा उदयसिंह के बीच जो युद्ध हुआ उसमें मालदे ने हाजीखाँ की सहायता की थी, तत्पश्चात हाजीखां इस गांव मे आकर रहा था। नैणसी की ख्यात में लिखा है कि इसी समय जब अकबर ने रुष्ट होकर अपनी फौज उस पर भेजी, तो वह वहाँ से भाग गया और फिर जैतारण पर रतनसिंह खीवावत से उस फौज की मुठभेड़ हुई।[3]

मालपुरियौ (५२२/१२)—यह गाँव राव मालदे का बसाया हुआ है।

रतनपुरो (५२३/१२)—यह गाँव प्रसिद्ध वीर राठौड़ रतनसिंह खीवावत का बसाया हुआ है।

पृथ्वीपुरो (५२३/१२)—यह गाँव महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) के राजकुमार पृथ्वीसिंह के नाम पर बसाया गया।

महेसियो (५२७/१२)—यह गाँव भाटी सुरजन आसावत को संवत् १६७४ में जागीर में दिया गया था।[4]

हाजीवास (५२७/१२)—यह गाँव सूबेदार हाजीखां के नाम पर बसा होना चाहिए।

काणूजो (५३६/१२)—यहाँ पर राव चन्द्रसेन ने अपने संकट का समय निकाला था।

लाखावासणी (५५१/२४)—राठौड़ रतनसिंह खीवावत ने गांव गळणिया के खेत चारण लाखा दासावत को दान दिये थे, वही पर बस्ती बस गई, जिसका नाम लाखावासणी पड़ा।

---

१ मुरारीदान की ख्यात २ पृ० १०३।
२. मुंहता नैणसी री ख्यात भाग १ पृ० २११।
३. मुंहता नैणसी री ख्यात भा. १ पृ० ६२।
४. मुंहता नैणसी री ख्यात भा. २ पृ० १४६।

तेजा री वासणी (५५१/२४)—चारण तेजा यहाँ वसा था, उसी के नाम पर इस गाँव का नाम यह पड़ा।

मांनपुरौ (५५२/२४)—मेर माना का वसाया हुआ गाँव।

लालपुरौ (५५३/२४)—यह गांव मेर लाला का बसाया हुआ है।

परगना फलोधी
(भाग २)

फलोधी (१/१)—इसका प्राचीन नाम फलवर्द्धिका है। इस स्थान पर अनेक शिलालेख महत्त्व के है, जिनमें कल्याणरायजी के मन्दिर का शिलालेख वि० सं० १२३६, तथा महाराजा जसवन्तसिंह के समय का लेख १६९६ का है, जिसमें मुंहणोत नैणसी तथा वहाँ की जनता द्वारा रंगमंडप बनवाये जाने का उल्लेख है। शान्तिनाथ के प्राचीन मन्दिर की दीवार पर महाराजा गजसिंह (जोधपुर) के समय के दो लेख—सं० १६८९ के हैं, जिनमें उक्त मन्दिर के जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख है। यहां के गढ़ में भी ५ शिलालेख महत्व के हैं, जिनमें एक शिलालेख सूजा के पुत्र नरा द्वारा सं० १५३२ में गढ़ की पोल के निर्माण करवाने से सम्बन्धित है।[1]

नरा सूजावत (१/१)—प्राचीन ख्यातों में इसका नाम नरसा भी मिलता है। यह भाटियों का भानजा था।[2] डॉ० ओझा ने जोधपुर राज्य के इतिहास (भा० २) में इसका पूरा नाम नरसिंह तथा नरसिंहदेव लिखा है।[3] इस ने सातलमेर के नाम से पोकरण की राजधानी बसाई, दुर्ग बनवाया तथा नरासर तालाब का निर्माण करवाया। इस तालाब पर उसकी छतरी बनी हुई है। मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि सूजा ने इसे गुजरात के बादशाह की सेवा में भी भेजा था। यह रानी लक्ष्मी का पुत्र था।[4]

जगमाल मालावत (२/२)—यह महेवे के स्वामी मल्लीनाथ का पुत्र था। यह वड़ा वीर योद्धा था। इसके वंशज जो पोकरण में है, पोकरणा कहलाये।

---

१ विस्तृत वृत्तांत के लिये देखें—जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा पृ० ४३-४५

२. बांकीदास री ख्यात, सं० नरोत्तमदास स्वामी पृ० ८।

३. जोधपुर राज्य का इतिहास पृ० ४४।

४. मुरारीदान री ख्यात २ पृ० ६७०।

इसके सम्बन्ध में अनेक प्राचीन बातें प्रचलित हैं। राजस्थानी बात साहित्य में 'गणगोर में गींदोली गाई जै तिणरी बात' प्रसिद्ध है। इसका नायक जगमाल है। यह गींदोली महमूद बेगड़े की लड़की थी। बेगड़े का एक सेनापति हाथीखाँ जगमाल के राज्य में से १४० स्त्रियाँ हरण करके ले गया, जिसके बदले में जगमाल बेगड़े की लड़की गींदोली को उठा लाया। फिर युद्ध हुआ, जिसमें बेगड़े की पराजय हुई। इस युद्ध मे जगमाल ने बड़ा पराक्रम दिखाया, जिसकी साक्षी का यह दोहा बड़ा प्रसिद्ध है—

पग पग नेजा पाड़िया, पग पग पाड़ी ढाल।
बीबी पूछे खान नैं, जग केता जगमाल॥

— गींदोली जगमाल से प्रेम करती थी, इसलिये उसे उसने नही लौटाया।[1] जगमाल ने एक विवाह सोलंकियों के यहाँ किया था। सोलंकणी से कुंभा नाम का बड़ा प्रतापी पुत्र हुआ। उसने जगमाल से द्वेष रखने वाले वीर हेमा को मारा था और इसी द्वन्द्व युद्ध मे उसकी भी मृत्यु हुई। साक्षी का दोहा—

डसे अहर जमदूत, मच्छर छिलंते मेलियो।
कूंभे वाळो कूंत, हेमे वप सांसर हुवौ॥[2]

राव हमीर (३/३)—यह नरा का भाई था।

खीचो हद्दो (६/७)—यह केल्हण का पुत्र था और इसी युद्ध में मारा गया।[3]

मुंहतो जैमल (७/६)—यह मुहणोत नैणसी का पिता था। जालोर आदि कई स्थानों की हाकमी करने का अवसर इसको मिला। यह जसवतसिंहजी के समय में कुछ समय के लिये दीवान भी रहा।

जालावाडो (१४/२८)—इस स्थान पर जैसिंघ वीरमदेओत की बैठक थी।[4]

---

१. राजस्थान मे राजस्थानी साहित्य की खोज (हरप्रसाद शास्त्री) सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी रा शो. सं चौपासनी जोधपुर पृ० ६० ।
२ मुहणोत नैणसी री ख्यात (भा० २) रा. प्रा. वि. प्र, पृ० २६८।
३. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० १५६।
४ वही पृ० ३५६।

वरजांगसर (१८/२८)—यह स्थान खींवा के पिता वरजांग के नाम पर बसा।

जांभेळाव (२३/२८)—यह स्थान विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक जांभोजी के नाम पर वसा।

कोळू (२८/२८)—यहाँ प्रसिद्ध लोक देवता पाबूजी धाँधल का देवस्थान है।

परगना मेड़ता

मेड़तो (३७/१)—संस्कृत लेखादि में इसका प्राचीन नाम मेडतंक मिलता है। मण्डोर के प्रतिहार सामन्त वाउक के वि० सं० ८९४ के लेख में उसके ८ वे पूर्व पुरुष नागभट्ट का मेडतंक को राजधानी बनाने का उल्लेख है। यहाँ के मन्दिरों आदि में विद्यमान प्राचीन शिलालेखों का बड़ा ऐतिहासिक महत्व है।[1]

राजा मानधाता (३७/१)—पौराणिक युग में यह राठौड़ों का मूल पुरुष माना जाता है। जवनसत राजा के कोई सन्तान नहीं थी, अतः वह तपस्या के लिये अपनी रानियों सहित तपोवन की ओर चला। जब वह हरिद्वार पहुँचा, तो गौतम ऋषि ने कृपा कर उसे वरदान दिया, जिससे उसके एक पुत्र हुआ, उसका नाम उसने मानधाता रखा। यह लड़का बड़ा पराक्रमी हुआ और इसका राज्य बहुत दूर-दूर तक फैला। इसने मेहपाठ नामक स्थान को अपनी राजधानी वनाया जो वाद में मेड़ता कहलाया।[2]

कान्हड़दे (३७/१)—यह सोनगरा जाति का इतिहास प्रसिद्ध योद्धा जालोर का स्वामी था जिसने आलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध बड़ा संघर्ष किया था। इसका विस्तृत वर्णन कवि पद्मनाभ ने डिंगल भाषा में लिखित 'कान्हड़दे प्रवन्ध' में बड़े सुन्दर ढंग से किया है।

वरसिंघ, दूदो (३७/२)—ओझाजी ने इन्हें जोधा की रानी सोनगरी चम्पा का ही पुत्र माना है। मुरारीदान की ख्यात में इस रानी के पिता का नाम

---

१. विस्तार के लिये देखें—जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा, पृष्ठ २३-२५।

२. राठौड़ वंश री विगत एवं राठौड़ां री वंशावली, सं० मुनि जिनविजयजी, रा. प्रा. वि. प्र. पृष्ठ १-२।

खीचा सतावत (नारलोर) लिखा है।[1] दूदा ने अपने भाई बरसिंघ के साथ मेड़ता बसाया था और उसके वंशज मेड़तिये कहलाये। दूदा का परिचय देते हुए ओझाजी ने लिखा है कि नरसिंघ सींधल के पुत्र को द्वन्द्वयुद्ध में मारकर दूदा ने महत्वपूर्ण कार्य जोधा के संकेत पर किया था और इस प्रकार राठौड़ों का पुराना बैर लिया।[2] नैणसी की ख्यात में लिखा है कि जोधा का राज्य जब मारवाड़ पर कायम हो गया, तो किसी ने ताना मारा कि नरबद तो नरसिंघ की एक स्त्री सुप्यारदे को लाया था पर नरसिंघ के साथी सींधल लोग वदले में यहां की १४० औरतों को ले गये और फिर विनय करने पर बइज्जत उन्हें लौटाया, अतः तब भी उनका पासा ऊपर रहा। इस अपमान का वदला लेने का बीड़ा दूदा ने उठाया[3] और उसने नरसिंघ के पुत्र मेघा को घेर कर मारा।

सवाळख (३९/५)—नागौर के आस पास के छोटे से इलाके का प्राचीन नाम सपादलक्ष था, उसी का अपभ्रंश सवाळख हुआ। यहाँ पहले चौहानों का राज्य था, इसलिये उन्हें 'सपादलक्षीय नृपति' कहा गया है। ओझाजी ने इस प्रसंग पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि आधुनिक समय मे उसे सवाजक या स्वाजक कहते है[4], परन्तु उनका यह मत भ्रामक लगता है। वास्तव में उसे आजकल सवाळख या स्वाळख ही कहा जाता है।

जायल (३९/५)—यह स्थान चौहान राजपूतों की एक शाखा खीचियों का प्रमुख स्थान रहा है।[5] यहाँ के खीची जींदराव का पाबूजी के पवाड़ों में उल्लेख आता है, जिसके हाथ से पाबूजी राठौड़ की मृत्यु हुई थी।

घड़ूको (४४/१५)—यह मुगलों का सेनापति था। राजस्थानी ख्यातों में इसका नाम घडूला मिलता है। इसके सम्बन्ध में यहाँ किस्सा प्रसिद्ध है[6]

---

१ मुरारीदान री ख्यात, २, पृ० ९९।
२. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृ० २५२।
३. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग ३ पृ० ३८।
४. ओझा निबन्ध संग्रह (प्रथम भाग) पृ० २० की पाद-टिप्पणी।
५. मुहणोत नैणसी री ख्यात, भा० ३ पृ० १७४।
६ ओझाजी ने इसे मीर घडूला लिखा है—
जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) पृ० २६१।

कि तृतीया का पर्व मनाती हुई कुछ लड़कियों को यह उठाकर ले गया था, जिस पर सातल ने उस पर चढ़ाई की। उसके मारे जाने पर तीरों से छिदा हुआ उसका सिर उन लड़कियों ने शहर में घुमाया। यह रस्म अब भी मनाई जाती है और घड़े मे छेद करके उसमे दीपक रखे हुए लड़कियाँ घुड़ला गीत गाती है।

अखैराज भादावत (४६/२३)—नैणसी ने अपनी ख्यात में लिखा है कि जब जैमल मेड़ता की गद्दी पर बठा तो एक बार अखैराज को मालदे के दरबार मे यह आशय प्रकट करने को भेजा कि आप हमें क्यों तग करते है आप मेडता सदा के लिए हमे दे दें, हम भी दूसरों की तरह आपकी चाकरी करेंगे। परन्तु राव मालदे और उसके सामंतो ने अखैराज के इस निवेदन को हंसी में उड़ा दिया तब अखैराज गुस्से में आकर वहाँ से उठ कर चला आया और मालदे से कहा—हमें 'मेडता कौन दे और हमारे से कौन ले, तुम्हे जिसने जोधपुर दिया उसीने हमें भी मेड़ता दिया है'।

इसने जैमल की अनेक युद्धो में सहायता की और मालदे के प्रसिद्ध सामंत पृथ्वीराज को मारा था।[1]

पंवार पंचायण (५०/२३)—यह करमचंद का पुत्र था। बांकीदास ने इसे मान कछवाहा का नाना लिखा है। सवत् १५८६ में विक्रमादित्य से चित्तौड़ छूटा तब यह काम आया।[2] मालदे को छोड़ कर यह राणा उदयसिंह के पास चला गया था। इसकी जागीर मे जाजपुर था।

भदो पंचायणोत (५२/२६)—ये लोग उस समय रडोद के थाने पर थे। वहाँ से सूचना मिलते ही सहसा की मदद को लिए आये थे। राव वीरमदे को जीवित युद्ध से निकालने वालो में यह भी था। इसने इस युद्ध मे बडा पराक्रम दिखाया। उसकी साक्षो का यह दोहा प्रसिद्ध है—

'भिडते मादिज मांजिया, वीरत राइ विभाड़।
वीरमड़ा वीसरसी नहीं, रींया वाळी राड़॥[3]

---

१ मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग ३, पृ० ११७, ११८, १२१।
२ बांकीदास री ख्यात, स० नरोत्तमदास स्वामी पृ० १३८।
३ ऐतिहासिक वार्ता: (परम्परा) भा० ११ पृ० ४१।

वीरमदे नुं अजमेर था ही परो काढियो (५४/२७)—मुरारीदान की ख्यात में लिखा है कि अजमेर से निकलने पर जैना को अध्यक्षता मे मालदे की फौज ने वीरम का बहुत पीछा किया। अन्त में वीरमदे मारने मरने को तैयार हो गया। युद्ध की स्थिति बनती देख जैता ने कहा कि वीरम बड़ा राजपूत है, इसका इस प्रकार मारना उचित नही, यह कभी बड़ा नाम करेगा। अतः वे लौट आए।[1]

रणथंभोर री सोबादार (५४/२८)—नैणसी ने अपनी ख्यात में लिखा है कि वीरमदे की मुलाकात रणथभोर के सूबादार से मलारणे के थानेदार ने करवाई।[2] मुरारीदान की ख्यात में वीरम का मांडव के सूबेदार से मिलना लिखा है और उसके मारफत शेरशाह से।[3]

समेळ री नदी रै परै वेढ हुई (५७/३१)—विगत के प्रथम भाग में इस युद्ध में काम आने वाले कुछ ही वीरों के नाम इस घटना के प्रसंग में दिये गये है। मुरारीदान की ख्यात में ऐसे सरदारों की न केवल विस्तृत सूची ही मिलती है, अपितु प्रत्येक सरदार के अधीनस्थ योद्धाओ मे से काम आने वाले योद्धाओ की सख्या भी अकित की गई है। यह सूची निम्न प्रकार है[4]—

१. राठौड़ जैता पंचाइणोत—१०
२. ,, कूंपा महराजोत—२०
३. ,, उदैसिंघ जैतावत—१०१
४. ,, खीवा ऊदावत—११
५. ,, जोगा रावळ अखैराजोत का—११
६. ,, पंचाइण करमसीयोत—५१
७. ,, जैतसी ऊदावत—११
८. ,, सुरतांण गांगाउत—५१

---

१. मुरारीदान री ख्यात २ पृ० ११७।
२. मुहणोत नैणसी की ख्यात, भा० २ पृ० १५७।
३. मुरारीदान री ख्यात २ पृ० ११७।
४. मुरारीदान री ख्यात २ पृ० १२०-१२२।

९. राठोड़ पत्तो कान्हावत (हाथी रै दांत वढ़ियो) ७
१०. „ वैरसी राणावत—२१
११. „ वीदो भारमलोत बाला—११
१२. „ कला भींवोत सुरजनोत—२१
१३. „ हापा सीहावत—११
१४. „ रायमल अखैराजोत रिणमल—११
१५. „ भोजराज पंचाइणोत अखैराजोत—१
१६. „ भद्दा पचाइणोत—५१
१७. „ जमल वीदा परवतोत का—१
१८. „ नींबा अणदोत—११
१९. „ भोजा पंचाइणोत—११
२०. „ भानीदास सूरा अखैराजोत का—३१
२१. „ महेश देदावत—५१
२२. „ जैतसी राघाउत—५१
२३. „ हरपाल जोधाउत—५१
२४. „ हरदास खंगारोत—१
२५. सोनगरा अखैराज रिणधीरोत—१
२६. „ भोजराज अखैराजोत—२१
२७ भाटी पंचाइण जोधावत—११
२८. „ मेरा अचळावत—६१
२९. „ गांगा वरजांगोत—८१
३०. „ केल्हण आसमल हमीरोत का—११
३१. „ हमीर लाखाउत—२१
३२. „ सूरा पाताउत—११
३३. „ माधोदास रावोदासोत—२१
३४. „ सूरा परबतोत—७१
३५. „ नींबा पतावत—५१
३६. सोढा नाथा देदावत—३१
३७ देवड़ा अखैराज वनावत—११
३८. ऊहड़ वीरा लखावत—१

३६. ऊहड़ सुरजन नरहरदासोत—११
४०. सांखला डूंगरसी धामावत—११
४१. मांगळिया हेमा नींबावत—१
४२. ईन्दा किसना ।
४३. चारण भानो खेतावत दधवाड़ियो—१
४४. पठाण अलेदादखां—१
४५. जैमल वीदावत डूंगरेत, राठौड़ खींवा ऊदावत का नौकर ।

इसी ख्यात में आगे लिखा है कि उपरोक्त सरदारों के आदमी व घोड़े वगैरा १००० काम आये तथा राव की (निजी फौज के) २००० आदमी खेत रहे ।

रा० प्रथीराज-जैतावत (५६/३८)—यह प्रसिद्ध वीर जैता का पुत्र था । जैसा भैरवदासोत ने सिफारिश करके राव मालदे से इसे बगड़ी का पट्टा दिलवाया ।[1] इसने मालदे के लिये अनेक युद्धों में भाग लिया । मेड़ता के युद्ध में इसने बड़ी बहादुरी दिखाई थी, जिसकी साक्षी का दोहा उल्लेखनीय है—

फुळ कमंध तेथाह, हुवा नर केई भळे ।
न को गहीर गुणेह, पैं सारीखो पीथला ॥

वीदास जैतावत (५६/४०)—यह मालदे के प्रसिद्ध सामंतों में से था । यह प्रारम्भ में ऊदावत रतनसिंह खींवावत का सरदार था । इसके बांझा-कुड़ी ग्राम उस समय पट्टे था । राठौड़ पृथ्वीराज के काम आजाने के बाद राव मालदे उसकी पूर्ति के लिये किसी ऐसे ही वीर की खोज में था, अतः उसने देवीदास का अपने सामतों में स्थान दिया । इसने हाजीखाँ और राणा उदयसिंह के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें हाजीखां की ओर से लड़कर बड़ी वीरता दिखाई । राव ने प्रसन्न होकर इसे बगड़ी का पट्टा ८० गाँवों सहित दिया । इसके ऊपर राव ने मेड़ता की सुरक्षा का प्रबन्ध सौंपा था, जिसे उसने भली भाँति निभाया और अंततः उसके रक्षार्थं ही काम आया ।[2]

१. ऐतिहासिक बातां (परम्परा) पृ० ४६ ।
२ ,, ,, ,, पृ० ५५ ।

इसके वीरोचित कार्यों की प्रशंसा में अखा भारणेत ने वीर रसात्मक रचन 'देवीदास जैतावत री वेल' डिंगल भाषा में लिखी है।[1]

तेजसी डूंगरसियोत (६०/४०)—यह भी अपने समय का बड़ा वीर हुआ। प्राचीन वातों में इसके लिये 'असंख प्रवाड़े जैतवादी' विरूद प्रयोग में लिया गया है। इसने चाटस् के पँवारों को लूट कर अपना वैर लिया था। इसने राव मालदे की ओर से सिवाने की रक्षा का प्रबन्ध भी किया था। इस अवसर पर खर्च के लिये एक लाख फदिया राव ने तेजसी को देना स्वीकारा था, परन्तु हुजदारों ने यह रकम कई दिनों तक नही दी। एक दिन जव राव भोजन कर रहा था और राव का कामदार अभा उससे मिलने को ड्योढ़ी में जाने लगा, तो तेजसी ने उसे रोक लिया और कहा—मेरी रकम देकर अन्दर जाओ। अभा ने जैसे-तैसे करके पीछा छुड़ाया और वह मालदे से मिलने अन्दर गया। जव मालदे ने उसे विलम्ब से आने का कारण पूछा, तो उसने तेजसी द्वारा किये गये तकाजे की वात की। राव ने तेजसी को अन्दर बुलवा कर पूछा तो उसने वही तकाजा राव के सामने भी किया। राव ने गुस्से में आकर भोजन का थाल (सोने का) पटका, तेजसी अपनी रकम की पूर्ति के वदले वह थाल उठा कर अपने डेरे पर चला आया। तव से यह कहावत प्रचलित हुई कि 'वंटाव में थाली तेजसी ली'।

इसने सिरोही को महमूद के आक्रमण से बचाया—'माडे राखी महमदे सरणे सिरोही' वाद में राव मालदे ने इसे अपनी सेवा से मुक्त कर दिया था, तव यह कुछ समय तक गुजरात के वादशाह की सेवा में भी रहा। फिर राणा उदयसिंह की सेवा में रहा। गाँव घूलोप इसके पट्टे में था। हाजीखाँ के विरुद्ध यह वहुत वीरता से लड़ा था।[2] साक्षी का दोहा—

झाल्यां तावया झाड़, सीसोद्यां सेरी करी।
माणस नै मेवाड़, तनै मळाया तेजसी॥

१परम्परा (मा० १४) पृ० १०६।
२ ऐतिहासिक वातां (परम्परा)भा० ११, पृ० ६१-६८।

जगमाल (६३/४२)—यह राव वीरम का पुत्र था। यह राव मालदे की चाकरी करता था। प्रारम्भ में इसे राव ने खेरवा का पट्टा दिया था, फिर आधा मेड़ता दिया। जब अकबर बादशाह ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया, तब यह बादशाह से जा मिला और जब जैमल चित्तौड़ को चला गया तब बादशाह ने फिर आधा मेड़ता इसे दे दिया।[1] इसके वंशज मसूदा के जागीरदार है।[2]

राव री साथ काम आयौ (६५/४७)—सरफुदीन ने जब मेड़ता पर चढ़ाई की तब राव के आसामी ३४ सरदार और राजपूत चाकर ६६ काम आये।[3]

वीठलदास जैमलोत (६७/४८)—इसके पट्टे में गाँव आल्हणियावास और केकींद थे। फिर यह राणाजी के आश्रय में चला गया तथा हल्दीघाटी के युद्ध में अपने भाई रामदास के साथ काम आया।

सादूल जैमलोत (६७/५०)—इसको जैमलजी ने जागीर में कुड़की ग्राम दे रखा था। इसके तीन पुत्र थे—परशुराम, राघोदास और चतुर्भुज।[4]

सुरतांण जैमलोत (६९/५४)—यह सोलंकियों का भानजा था। जब चित्तौड़ के साके में जैमलजी काम आये, तब बादशाह ने इन्हे शाही सेवा में उपस्थित हो जाने की सूचना राजा मान कछवाहे के मारफत इसके पास भेजी। तब सुरतांण ने यह उत्तर दिया कि सकट के समय अभी तो राणा को नही छोड़ेंगे। बाद में यह अकबर की सेवा मे उपस्थित हुआ, तब आधा मेड़ता इसे दे दिया गया। एक बार मेडता के एवजाने में सोझत भी इसके पट्टे में रहा। यह जब राजा मानसिंह के साथ पूर्व की ओर चढ़ाई मे गया, तब गोकुल में सवत् १६४६ में इसका स्वर्गवास हुआ। यह कट्टर राजपूत था। इसके चरित्र पर निम्न दोहे से प्रकाश पड़ता है—

सुरताण आखं पतसाह सू, दो वातां न बणेह।[5]
धी दे धरा न भोगवा, महळ न देखण देह॥

---

१. मुरारीदान री ख्यात, पृ० ५२०-२१।
२. वही, पृ० ५२२।
३. वही, भा० ३, पृ० १९६।
४. मुरारीदान री ख्यात २. पृ० ४७०।
५. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० ४६२-६४।

केसोदास (६९/५४)—यह सोलंकियों का भानजा था। जैमलजी के काम आने पर यह अकबर के पास उपस्थित हुआ, तब बादशाह ने इसे आधा मेड़ता दिया। संवत् १६५५ में दक्षिण की लड़ाई में गोपालदास सुरताणोत के साथ काम आया।

जगनाथ गोपालदासोत (७२/६०)—मुरारीदान की ख्यात में इसे राणा प्रताप का दोहीत्र लिखा है। संवत् १६५७ में जब आधा मेड़ता बादशाह ने इससे ले लिया तो नागौर की रूण की पट्टी इसे जागीर में दी। संवत् १६६६ में यह अहमदाबाद में काल-कवलित हुआ।[1]

कान्ह केसोदासोत (७२/६०)—केसोदास की मृत्यु के बाद वह आधे मेड़ते का हकदार हुआ। संवत् १६५८ में दक्षिण में रहते हुए इसका स्वर्गवास हुआ।

इन्द्रभाण (७३/६२)—यह कान्हदास का पुत्र था। इसे बादशाह ने इसके पिता को जगीर न देकर केकीद का पट्टा २२ गाँवों से दिया था। बाद में यह जागीर भी उससे लेली गई और जोधपुर के राजा को देदी गई।[2]

अबू (७३/६३)—इसका पूरा नाम अबुमुहम्मद था। इसके साथ बलूंदा के ठाकुर रामदास सूरसिंघोत ने मुगदड़ा में युद्ध किया था इसका वृत्तांत विगत के प्रथम भाग में आया है।[3] इस सम्बन्ध में कुछ अतिरिक्त जानकारी बलूंदा ठिकाने की तवारीख में मिली है। उसमें लिखा है कि नंदवाणे वोहरों को पकड़ कर अबू ले जाने लगा, तो उन्होंने बोलूंदा के ठाकुर रामदासजी से फरियाद की, इस पर रामदासजी ने मुगदड़े में आकर लड़ाई की। पंचोली राघोदास बलुओत (जैतारण का अधिकारी) राठौड़ जैतसिंह कछावत (२१ आदमियों सहित) मुगदड़े का ठाकुर तथा माधवदास दधवाड़िया आदि ५२ आदमी काम आये। राठौड़ गोपालदास सुंदरदासोत (रीयाँ का ठाकुर) के घायल होने का उल्लेख इसमें है

---

१. मुरारीदान की ख्यात २, पृ० ५६५।

२. वही, पृ० ४७२।

३. मारवाड़ रा परगनां री विगत, भाग १ पृ० ११३।

रामदास इस युद्ध में बड़ी वीरता से लड़ा था[1] और उसके काम आने पर उसकी ठकुरानी रभादे उसके पीछे संवत् १६७६, जेठ सुदो ६ को सती हुई, जिसका स्मारक (छत्री) श्रीमालियों की बगीचे मे सवत् १६६४ को जेठ सुदि १३ को बनाया गया।[2]

इस प्रसंग पर रामदास और माधवदास दधवाड़िया की कर्त्तव्यपरायणता को अमर करने वाला एक गीत महाकवि राठौड़ पृथ्वीराज विरचित उपलब्ध हैं। गीत इस प्रकार है—

बडो एक रजपूत नै एक चारण बडो।
वहु जां जलम लग होत वाधो।
महा गजसिंह छळ सूर रामो मरै।
मरै राम सुछळ म र माधो॥ ॥
सांसह मुरधरा काम खोसीजती।
मुरधरां तणी जुहरे भुजां मढ।
सूर सुत छळ जुड़ मरे रण चंद सुत।
चंद-सुत सुछळ जुड़ मरै सुत चंद॥२॥
हेत अमीज सध उवे सत्रवां जैत हर।
परठिया वीन वासक कमळ पाव।
राव कमधज तणो चाड कमधज रहै।
रहे विहु चाड दधवाड़ियो राव॥३॥
पल खड़ खेत जल चाड कुल आपरै।
राम मधकर दिन सार रसिया।
कवारी घड़ा वर चद नावो करै।
वीरहर मयंकहर स्वर्ग वसीया॥४॥[3]

कान्ह खींवावत (७५/६७)—यह आसोप के ठाकुर खींवकरण का पाटवी पुत्र था। यह जोधपुर के महाराजा सूरसिंह की सेवा में था। कुँवर

---

१. विप्र बचावण कारणे बजे जुंझारू ढोल।
चढ धांदा रा पारधी, बंदी जाय निवोल॥
रामदास जद राम भज, चढियो तुरकां लार।
तुरकां रा तंडल करे, विप्र छुडावण वार॥
२. बलूंदा कुँवर भवानीसिंहजी के सौजन्य से प्राप्त।
३. शोध विद्यार्थी माधवप्रसाद सोनी के सौजन्य से प्राप्त।

गजसिंह के साथ इसने भी खुर्रम की सहायतार्थ मेवाड़ के घेरे में भाग लिया था।[1]

अजमेर में जब किशनसिंह राठौड़ आदि ने भाटी गोयंददास को मारा, तब इसने किशनसिंह का पक्ष लिया, जिससे राजा सूरसिंह नाराज हो गये और आसोप का अधिकार इससे लेकर इसके भाई राजसिंह को दिया। सूरसिंह की मृत्यु होने पर यह गजसिंह की सेवा में उपस्थित हुआ। गजसिंह इसकी कार्यक्षमता से परिचित था, अतः उसने इसे मेडता के प्रबन्ध के लिये भंडारी लूणा के साथ भेजा।[2] इसके ७ पुत्र थे, जिनमें से रामचन्द्र महाराजा जसवंतसिंह की सेवा में कांबुल इलाके के ग्राम सुरखाव में काम आया।[3]

पठुखां री बासणी (११७/९२)—यहाँ के एक प्राचीन कुंए पर दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के समय का वि० सं० १३५८ का एक शिला-लेख है, जिसमें मेड़ता में उक्त सुल्तान द्वारा अपना फौजदार नियुक्त किये जाने का उल्लेख है।[4]

रांमा चारणां री बासणी (११९/९२)—यहाँ का स्थान रामा चारण ने बसाया, अतः इसी के नाम पर इस गाँव का नाम पड़ा।

केकीदर (१२०/९३)—इसका संस्कृत लेखों में किस्कन्धा नाम मिलता है यह स्थान मेडता से १४ मील दक्षिण में है। यहाँ ११ वीं शताब्दी का एक शिव मन्दिर है, जिसके सभा-मण्डप में ४ शिला-लेख है। दूसरा मन्दिर पार्श्वनाथ का है, यह मूलतः १३ वीं शताब्दी के आस-पास का बना हुआ है, परन्तु अधिकांश भाग बाद का है जैसा कि महाराजा गजसिंह के समय के एक लेख से प्रतीत होता है।[5]

भवाळ (१२१/९३)—यह मेड़ता से १२ मील दक्षिण में है। यहाँ महाकाली का

---

१ मुरारीदान री ख्यात २ पृ० ४७२।

२. कूंपावत राठौड़ों का इतिहास राव शिवनाथ, पृ० १९२।

३ खींवसर ठिकाने की ख्यात।

४ जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा, पृ० ३३।

५. वही पृ० ३४-३५।

प्राचीन मंदिर है, जिसमें ११७१ सवत् का लेख है।[1] यह ग्राम ग्रास-करण मानसिंघोत मेडतिया की जागीर में था।[2]

नीलियाँ (१२१/९३)—यह ग्र म मेड़तिया जैमल के पौत्र बिहारीदास वीठल-दासोत को संवत् १६६७ में मिला।[3] यहाँ ऊदाजी और वीरम के बीच घोड़ियों के सम्बन्ध मे युद्ध हुआ था। ऊदा ने वीरम की कटार खुलवादी, तबसे मेडतिये कटार नही बाँधते।

सेहरियो (१२३/९३)—यह गाँव जोधपुर के राजा की ओर से सवत् १६६६ में कल्याणदास जैमलोत के पुत्र बिहारीदास को मिला और १६६९ मे जब्त हुआ।[4] बाद में इस स्थान को सवत् १६९५ में चांपावत केहरखान ने आबाद किया।[5]

देहरियो (१२८/९३)—यह गाँव ३ अन्य गाँवों सहित प्रयागदास हरीसिंघोत के पट्टे में था। इसके बाद वीराणी और रलावता उसके पट्टे में रहे।[6]

हंदो (१३१/९५)—यह गाँव साँवळ कल्याणदासोत मेडतिया को संवत् १६६४ में सात गाँवों से मिला।[7] बाद मे सवत् १६८४ में गोपीनाथ गोकुल-दासोत को मिला। यह उज्जैन की लड़ाई मे काम आने वाले योद्धाओं में से था।[8]

खुवासपुरो (१३३/९५)—शेरशाह के सामंत खवासखाँ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहां खवासखां की कब्र व उसके महलों के खण्डहर है।

सिरसलो (१४२/९७)—यह गांव संवत् १६६६ में सांवळदास गोयंददासोत मेडतिया को जागीर मे मिला।[9]

---

१. जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम भाग) डॉ० ओझा पृ० ३६।
२. मुरारीदान री ख्यात, २, पृ० ५१५।
३. मुरारीदान की ख्यात, २ पृ० ४८९।
४. वही पृ० ४८०-८१।
५. फुटकर ख्यात पृ० ६९।
६. मुरारीदान री ख्यात, २, पृ० ५४५।
७. वही ० ४८३]।
८. वही ० ४७७।
९. वही, २ पृ० ५०१।

राहण (खास) (१५३/१००)—यह गाँव दूदा ने सीहा को जागीर में देकर मेडता अपने अधिकार में कर लिया था। रायमल दूदावत के पट्टे मे भी कुछ समय तक रहा। फिर सुरताण जैमलोत की ओर से कल्याणदास जैमलोत के पट्टे में रहा। सवत् १६५७ में ४५ गांवों से उदैसिघ भगवानदासोत मेड़तिया को मिला।[1]

छापरी बडी (१५९/१००)—सं० १६७२ में मोहणदास तेजसिहोत के पट्टे में थी।[2]

ईडवो (१६७/१०४)—यह गाँव अर्जुन रायमलोत मेड़तिया के पट्टे में था। जब अर्जुन चित्तौड़ के युद्ध में राणा की ओर से लड़कर काम आ गया, तो उसके पुत्र नरवद को मिला।[3]

पालड़ी बड़ी (१०८/१०४)—चतुर्भुज मनोहरदासोत मेड़तिया के पट्टे में थी।[4]

सीरासणो (१०८/१०४)—संवत् १६६० में १३ गाँवों से हरीसिंह चाँदावत मेड़तिया को जागीर में मिला था।[5]

डूगरवास (१७३/१०४)—यह गाँव संवत् १६८३ मे अमरा रायसिघोत मेड़तिया को दो अन्य गाँवो सहित जागीर में मिला।[6]

फरासतपुरो (१७३/१०४)—इस गाँव का नाम महाराजा जसवंतसिह के हाकिम मिया फरासत के नाम पर पड़ा।

अलतवो (१७६/१०५)—संवत् १६८३ में रणछोड़ गोपालदासोत को यह गाँव मिला था। फिर वनसालीदास विहारीदासोत को सं० १६८८ में १३ गाँवों से दिया गया। संवत् १६९६ में महासिंह जगनाथोत को दिया गया।[7]

---

१. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० ५५५, ४७३, ५६१।
२. वही पृ ५२३।
३. वही पृ० ५५९।
४. वही २, पृ० ४८७।
५ वही पृ ५४४।
६ वही पृ० ५३३।
७. वही पृ० ४८९, ५८०।

मदीयांन (१७६/१०५)—संवत् १६८० मे ३ गाँवों सहित भगवानदास परसरामोत मेड़तिये के पट्टे में था।[1]

भयो लडो (१७७/१०५)—संवत् १६८० में ५ गाँवों सहित हरीदास गोयंददासोत मेड़तिया को मिला था। तत्पश्चात् सवत् १६८२ में सबलसिंह सेखाउत को मिला।[2]

डोभड़ी वड़ी (१७९/१०५)—संवत् १६०० में यह मनोहरदास सुन्दरदासोत की जागीर मे ४ गाँवों सहित थी। सवत् १६९० में सिंघ हरीदासोत को मिली।[3]

रतनसी दूदावत (१८५/१०६)—प्रसिद्ध भक्त कवयित्री मेड़तणी मीरा का पिता। यह राणा सांगा की ओर से लड़ता हुआ खनवा के युद्ध में काम आया।

लसू बडी (१८८/१०७)—संवत् १६८० में उग्रसेन सुन्दरदासोत मेड़तिया को मिली। सं० १६८९ में अजबसिंह रामदासोत को ७ गाँवों सहित दी गई।[4]

तांबड़ोली (१८९/१०७)—संवत् १६८४ में यह ग्राम मुरारीदास गोयंददासोत को ७ गाँवो से जागीर में मिला था।[5]

रेवंत (१९१)—संवत् १६८० में सुजाणसिह उग्रसेनोत मेड़तिया के पट्टे में थी।[6]

रेयां (१९९/१०९)—माधोदास जैमलोत का वतन था। उसके बाद सुन्दरदास और उसके पुत्र गोपालदास की जागीर में रहा। संवत् १७२४ में आणंदसिंह भीवसिघोत को मिला।[7]

कुड़की (२००/१०९)—भोज सीहावत से छुडवाकर यह ग्राम वीरमदे ने रतनसी दूदावत को दिया था।[8] यह स्थान मीराँबाई का जन्म-स्थान माना जाता है।

---

१. मुरारीदान री ख्यात, पृ० ५०३।
२. वही, २, पृ० ५३६, ५४१।
३. वही, पृ० ४८६, ५६८।
४. वही, पृ० ५६१।
५. वही, पृ० ५३८।
६. वही, पृ० ५९१।
७. वही पृ० ४८३-४८४।
८. वही, पृ० ५७३-५७४।

लाडपुरो (२०२/१०९)—सं० १६६७ में यह ग्राम हरीराम कलाउत को मिला। संवत् १६७१ में उसका पुत्र रामचन्द्र अधिकारी हुआ।[1]

केरियो (२०४/१०९)—रामचन्द्र रघुनाथोत को संवत् १६७५ में मिला था।

नरसिंघवासणो (२११/१०९)—नरसिंघदास रायमलोत मेड़तिया की बसाई हुई।

परगना सिवाना

सीवाणो (२१६/१)—सीवाने का गढ़ वीरनारायण पँवार द्वारा बनवाया हुआ माना जाता है। ख्यातों में इसे कुंभटा भी कहा गया है। मुरारीदान की ख्यात मे लिखा है कि यह किला सिह-लंका होने से कड़तोड़ियल (जिसकी कटि टूटी हुई है) माना जाता है, अतः यह राजधानी बनाने योग्य नहीं है,[2] यहाँ पर कोई भी शासक पनप नही सकता।

तीडो छाडावत (२१६/२)—इसकी उपलब्धियों पर लिखा हुआ एक प्राचीन गीत इस प्रकार है—

पिड़ सांचोर सौनगिर पासै।
सीहाहरै चढै रिण सोक।
मातंगपुर मझ कटक मरावै।
मुंह भजाइ गयो मछरीक ॥१॥
गौतमपुर हूंता ग्रह गांजै।
भिड़ सेन वळियो वंक माळ।
खाडा वळ जीतो खेड़ेचे।
राव जाळोरो रिणताळ ॥२॥
छोडवियो मछरी छाडावत।
मुणस घणा ग्रहै कमाण।
भागो राव राठौड़ भिड़ंते।
चोरंग सांवतसी चहुवाण ॥३॥[3]

जैतमाल सलखावत (२१६/३)—यह सलखा की पड़िहारी रानी (राणा रूपड़ा की लड़की) का पुत्र था। इसके १२ पुत्र थे। इनमें से खीवकर्ण बड़ा प्रतापी हुआ। इसने अपने पुत्रों को मृत्यु के समय यह निर्देश दिया

---

१. मुरारीदान री ख्यात २, पृ० ५२५।
२. वही, पृ० ६३०।
३. वही, पृ० ५४।

कि सिवाना हापा के अधिकार में रहने देना और तुम सभी विदेशों में अपने-अपने ठिकाने कायम करना।[1] इसके वंशज जैतमालोत कहलाये।

रायमल मालदेश्रोत (२१९/७)—यह मालदे की झाली रानी हीरांदे का पुत्र था। संवत् १६२७ में बादशाह अकबर जब नागौर आया, तब मोटाराजा उदयसिह के साथ यह भी बादशाह से मिला। इसे शाही नौकरी में रख लिया गया। इसके ५ पुत्र थे- कल्याणदास, प्रतापसी, कान्ह, बलभद्र तथा सांवलदास।[2]

राजा रायसिंघ भुरटियो (२१९/८)—बीकानेर का प्रसिद्ध शासक था। इसका नाम भुरटिया कैसे पड़ा, इसका बड़ा दिलचस्प किस्सा है। मुगलों की ओर से फरमान लेकर जो अहदी वगैरह आते थे, उन्हें मरुप्रदेश का लंबा रास्ता पार करना होता था। रास्ते में कांटेदार भरूंट घास बहुत होने से यात्रा कष्टदायक होती थी, फिर बीकानेर पहुँचने पर उनकी आवभगत न होकर उपेक्षा-सी होती थी, इसलिये उन लोगों ने राजा के नाम के साथ 'भरूटियों' शब्द कहना प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार यह नाम प्रचलित हो गया।

थोभ बडोबास (२३६/१९)—यह प्राचीन नगर है। किसी समय में यहाँ जैनियों की अच्छी बस्ती थी। इस स्थान पर लिपिबद्ध अनेक जैन-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं।

सूरपुरौ (२४१/१९)—महाराजा सूरसिंह के राज्य-काल में बसा, इसलिये इसका यह नाम पड़ा।

बालोतरो (२४६/१९)—यह बड़ा गाँव लूनी नदी के पास बसा हुआ है तथा यहाँ की जमीन सरसब्ज है।

पचपदरो (२४७/१९)—नमक की खानों के लिये यह स्थान प्रसिद्ध है। यहाँ नमक की खानों पर पुश्तैनी तौर से कार्य करने वाले खारवालों की बड़ी बस्ती है।

---

१. बांकीदास री ख्यात, पृ० ५।

२. वही, पृ० १९।

गोपड़ी (२४८/१६)—यहाँ रावळ मलीनाथजी का प्राचीन स्थान है।

नेवाई (२४८/२१)—यह ग्राम सं० १६७६ में सोनगरा भाखरसी जसवंतोत के पट्टे मे आया।[1]

पाटोधी (२५०/१६)—मारवाड़ में वढ़िया नस्ल की घोड़ियों के लिये यह स्थान प्रसिद्ध रहा हैं। यह राठौड़ महेसदास मालदेओत को पट्टे में मिला था।[2]

गुधरट (२५५/१६)—हेमा सीमालोत के साथ जगमाल की जब अनवन हो गई, तो यहाँ के पहाड़ो पर रह कर हेमा ने महेवा की धरती में खूब नुक्सान किया था।[3] विखे के समय मालदे भी यहाँ कुछ समय तक रहा।

नाईली (२६२/१६)—नाइलो नामक पहाड़ो के पास वसा हुआ होने से इसका यह नाम पड़ा।

परगना पोहकरण

पोहकरण (२८६/१)—यह स्थान पुष्कर ऋषि द्वारा वसाया हुआ माना जाता है। पूरा परगना मरुस्थली है, पर जहां पोकरण शहर वसा है, वहाँ पानी की कमी नहीं है। जैसलमेर की सीमा पर होने के कारण इस स्थान का विशेष महत्व है, क्योंकि यहाँ जैसलमेर वालों का भी अधिकार रह चुका है। उनके द्वारा किले में करवाये हुए कार्य तथा याचकों को सांसण में दिये हुए गाँवो का उल्लेख इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। यहाँ पर वसने वाले राठौड़ पोकरणा राठौड़ कहलाते है।

रांमदे पीर (२६१/५)—मारवाड़ के प्रसिद्ध पाँच पीरों में इनका स्थान है। रांमदे ने जनता के कष्ट निवारणार्थ अनेक कार्य किये थे, जिसके कारण आज दिन भी राजस्थान और गुजरात के लोग उनमें श्रद्धा रखते हैं, तथा वहुत दूर-दूर से मनौती के लिए लोग आते है। संत हरजी भाटी की लिखी 'रांमदे री वेल'[4] में इनकी उपलब्धियों का उल्लेख है। वैसे

---

१. मुरारीदान री ख्यात, २, पृ० २५६।

२ वही, पृ० २५२।

३. मुंहता नैणसी री ख्यात भा० २, पृ० २८८।

४. परम्परा भा० १४ पृ० १०५।

इनके गीत मेघवाल जाति में अत्यधिक प्रचलित हैं।

नरै आपरी आंण फेरी (२९२/६)—मुहता नैणसी ने अपनी ख्यात में इस प्रसंग का बड़ा दिलचस्प किस्सा लिखा है। पोकरण पर खीवा का अधिकार था और नरा फलोधी पर शासन कर रहा था। एक दिन जब नरा अपनी माँ लक्ष्मीबाई के पास बैठा भोजन कर रहा था, तो पोकरण पर बिजली चमकती हुई दिखाई दी। लक्ष्मीबाई ने उस ओर देख कर निश्वास लिया। नरा ने इसका कारण पूछा तो अधिक आग्रह करनें पर उसने बताया कि खीवा ने किस तरह निदात्मक भाव से किसी समय उसके साथ शादी करने के प्रस्ताव को ठुकरा कर एक कुंआरी लड़की का अपमान किया था। इस पर नरा ने इसका वैर लेने का निश्चय किया और अपने पुरोहित को गुप्तचर के तौर पर पोकरण भेजा। उसने कई दिनों तक वहाँ रहकर सारी स्थिति का पता लगाया और एक दिन खीवा की अनुपस्थिति में उपयुक्त अवसर समझकर नरा को सूचना दी, जिससे नरा ने आकार सहज ही मे गढ़ पर अधिकार कर लिया।[1]

नरौ बाहर चढियौ (२९२/६)—बारह वर्ष बाद नरा से वैर लेने के लिये खीवा और उसका पुत्र लूंका अपने सैनिकों सहित पोकरण पर चढ आए और वहाँ की गायों को घेर कर ले गये। नरा ने उनका पीछा किया और पोकरण से ५ कोस दूर नादणहाई ग्राम के पास युद्ध हुआ, जिसमे लूंका के हाथ से नरा काम आया। वहाँ एक जाल के पास उसका सिर कट कर पड़ा।[2]

पोकरण रा दुय बांट किया (२९३/७)—खीचा के वंशज गोयंद के राज्य मे बराबर लूट-पाट करते रहे, जिससे तंग आकर उसने लूंका को ३० गाँवों का बंट दिया[3] और जिस जाल के पास नरा का सिर कट कर गिरा था, वहाँ सीमा कायम करदी। लूंका ने अपनी राजधानी भुणियाणा ग्राम मे कायम की।

---

१ मुहणोत नैणसी री ख्यात, भा० ३ पृ० १०३-१२।
२. वही, पृ० ११४।
३. वही।

राव बरसांग (३११/३)—यह पोकरण का शासक और खींवा का पिता था।

बाळनाथजी (३११/३)—खींवा के शासन-काल मे यहाँ यह योगी रहता था। फिर वह रुष्ट होकर वहाँ से चला गया। जाते समय उसने शाप दिया, जिससे खोदा को राज्य खोना पड़ा।[1]

देढीयां रौ वास (३३०/३६)—यहाँ बसने वाले राठौड़ दोढिया राठौड़ कहलाये।

चांदसमो (३३५/३६)—यहाँ के राठौड़ चांदसमेचा कहलाये।

ढंढ री सरेह (३३६/३६)—ढंढ पड़िहार अड़वाल[2] का खुदवाया हुआ यहाँ तालाब है, अतः उसीके पीछे इस गाँव का यह नाम पुकारा जाता है।

साकड़ो (३४०/४०)—यह पोकरण के प्रसिद्ध गांवों में से है। भूमितल में अब भी पानी ८-१० पुरस पर खूब उपलब्ध होता है।

पड़िहार राणो रूपड़ो (३४३/४०)—यह रूपड़ा मारवाड़ी गीतों मे गाया जाता है। इसके १२ पुत्रियें थी। इसने प्रण कर रखा था कि बारह ही लड़कियाँ वह रावों (राव की पदवी वालों) को व्याहेगा। ११ लड़कियाँ तो उसने रावों को व्याह दी पर १२ वीं के लिये वर न मिलने पर उसने भाटी राव केलण को व्याही। तब से केलणों और पड़िहारो के सम्बन्ध होने लगे।[3]

भुणियांणो (३४४/४१)—लूंका पोकरणा पोकरण के आधे गाँव ३० की ठकुराई यहां रहकर करता था। इसके खडहरों से ज्ञात होता है कि यह गाँव प्राचीन समय में सम्पन्न था।

बांभणू (३४६/४५)—यहां के राठौड बांमणुवा कहलाये।

रांमदेहरो (३४६/४२)—रामदेवजी ने जब पोकरण हमोर जगमालोत को दे दी, तब वे यहाँ आकर रहे। यह पोकरण का महत्वपूर्ण स्थान है क्यो कि

---

१. मुहणोत नैणसी री ख्यात ३, पृ० १०७।

२. यह अड़वाल कोई प्रसिद्ध व्यक्ति होना चाहिए। सालोड़ी ग्राम के पास अड़वाल नामक बड़ा पहाड़ है। संभव है, इसी के नाम पर इस पहाड़ का नाम भी रखा गया हो।

३. मुरारीदान की ख्यात ३ पृ० १७५।

वर्ष में दो बार यहां रामदे पीर का मेला लगता है, जिसमें लाखों लोग आते है।

म्हड़ जीवण रौ वास (३५१/४३)—महडू जीवण ने पोकरणों और गोयंदोतों का बैरभाव प्रयत्न करके समाप्त करवाया, तब पोकरणों ने उसे यहाँ जमीन दी। उसकी बसी का यही नाम पड गया।

रतनू रूपसी रौ बास (३५२/४३)—यह ग्राम रतनू रूपसी को जैसलमेर के रावळ भीव द्वारा उस समय दिया गया जब पोकरण जैसलमेर के अधिकार मैं थी।

म्हड़ू षीदा रौ बास (३५२/४३)—यह ग्राम जैसलमेर के रावळ मनोहरदास द्वारा महड़ू षीदा को संवत् १६८८ में दिया गया। यहाँ पर म्हड़ू खीदा की बसी थी इसलिये उक्त स्थान का नाम यह पड़ा।

रतनू भारमल रौ बास (३५३/४३)—इस स्थान का अन्य नाम कीलांणपुर शायद जैसलमेर के रावळ कल्याणदास के नाम पर पड़ा हो। कल्याणमल ने यह गॉव रतनू भारमल को दत्त में दिया तब पोकरण के अधिकारियों ने आकर शासक के आदेशानुसार इसकी सीमा निश्चित करदी। अतः इससे ज्ञात होता है कि पूरा ग्राम दत्त मे न देकर उसका कुछ भाग ही उक्त चारण को दिया गया होगा और उसकी बसी उक्त नाम से प्रसिद्ध हुई।

नांदणहाई रो बास (३५४/४३)—यह ग्राम लूंका के पुत्रों द्वारा चारण लूंभा और सादा मेघावत को दिया गया। इससे पता चलता है कि कभी-कभी शासक के पुत्रों द्वारा सामूहिक रूप से भी ग्राम दत्त मे दिये जाते थे।

गाँव केलावौ आधौ (३५५/४३)—यह ग्राम राव गोयंद नरावत द्वारा चारण नाल्हा को इस उपकार के बदले में दिया गया कि जब षीवा बरजांगोत गाये घेर कर लेजाने लगा तब नरा उसके पीछे बाहर चढा और नरा ने युद्ध करके वीरगति प्राप्त की परन्तु उसके बहुत से साथी बुरी तरह घायल हुए, इनकी सेवा सुश्रुसा चारण नाल्हा ने खूब अच्छी तरह की।

केलावा ग्राम उस समय सूना पडा था उसका आधा हिस्सा उक्त चारण को और आधा भाटी वीरम जोवावत को दिया गया तभी से इसके दो वास अलग-अलग वसे।

बाकी २५ गाँव मांडणा (३५५/४३)—लेखक ने पोकरण के पूरे गाँवों की विगत प्रस्तुत न करके ६१ गांवों को ही विगत प्रस्तुत की है। संभवत: उसने यह विगत पोकरण परगने की हाकिमी करते समय तैयार की[1] परन्तु शीघ्र ही उसका स्थानान्तरण हो जाने से इसे वह पूरी नहीं कर पाया।

१, द्रष्टव्य—मारवाड़ रा परगना री विगत भा० २ पृ० ३०५-६।

विगत में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दों का अर्थ

अडांणी—रहन रखना

अफीरण—अफीम पर कर।

अणी—फौज की टुकडी, फौज का एक भाग।

अमीन—मुगल साम्राज्य का बडा राजस्व अधिकारी जिसको पशुधन आदि सम्पत्ति कुड़क करके भी वसूली करने का अधिकार होता था।

अनड़—वड़ा पहाड, ऐसा पहाड़ जो किसी के कब्जे मे न आ सके।

अरट—रहट।

अवल ऊनाली—प्रथम दर्जे की रवी की फसल।

असुष—वैमनस्य, मनमुटाव।

अहधी—वह मुगल राज्य-कर्मचारी जो विशेष सदेश लेकर राजा आदि के यहां पहुंचता था।

आंण दांण—शासक के नाम की दुहाई।

आईठांण—निशान, शेष चिन्ह।

आषा—अक्षत।

आषारिया—वह कु आ जिसमे से एक बार पानी निकालने के बाद कुछ समय के लिये ठहर कर पानी निकाला जा सकता है।

आध बंटाई—जमीन की पैदावार का आधा हिस्सा बाट कर लगान स्वरूप लेना।

आरण—रणस्थल, युद्ध भूमि।

आवदांन—आवाद।

ओठी—सुतर सवार, ऊंट पर चढ़ कर सदेश ले जाने वाला व्यक्ति।

ओढ़ी ठौड़—विकट जगह।

ओलगण—प्रेमिका, गायिका।

औनाड़—किसी के वन्धन मे न आने वाला। वीर प्रकृति का पुरुष।

इजाफो—अधिक, अतिरिक्त।

उछाह—उत्सव, किसी विशेष उपलब्धि के निमित्त प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए किया जाने वाला आयोजन।

उदक—चारण अथवा ब्राह्मण आदि को जमीन आदि दान मे देने का सकल्प।

उधरांणो—पहले की सालो का उधार (वकाया) रहा हुआ कर।

ऊतन—वतन, जन्म स्थान।

ऊनवा—वह स्थल जहा आसपास का पानी वह कर भर जाता है और सूखने पर उसमे गेहूँ चने आदि की फसल होती है।

ऊनाली—रवी की फसल।

ऊरी ताली—हल्की ताली, वह खलिहान जिसमें बहुत कम या नही के बराबर अनाज निकला हो।

एका—भाटियों की एक शाखा।

कंवल-पूजा—देवी अथवा महादेव की तुष्टि हेतु शीश समर्पण करके पूजा करना।

कड़ब घास—पशुओ के लिए विशेप प्रकार की घास पर लगान।

कटक—फौज।

कणवारिया—वह अधिकारी जो गांव की सीमा मे खेतों तथा वृक्षों आदि की रखवाली करता है।

कमठौ—भवन-निर्माण कार्य। दुर्ग महल आदि बनवाने का कार्य।

कमेत घोड़ो—गहरे तम्बाखू रंग का घोडा।

करवरे बरस—फसल के हिसाब से हल्का वर्ष।

कांकड़—सीमा।

कांठे—किनारे पर, सीमा पर।

कुंवरपदौ—राजा अथवा ठाकुर के जीतेजी समाज में उसके कुंवर के लिये मान्य पद, जिसके अधीन उसे कुछ अधिकार प्राप्त होते थे।

कुकाऊ—पुकार करने वाला व्यक्ति जो किसी संकट की सूचना देने पहुंता था।

कुमया—वैर भाव।

कीरत-थंभ—किर्ती-स्तंभ।

कीरोड़ी—करोड़ रुपये तक की वसूली करने का अधिकार रखने वाला राजस्व अधिकारी।

कोसीटा—वह कुंआ जिसका पानी ज्यादा गहराई पर न हो और हाथी की सूंड के आकार के चरस (सूंडिया) से पानी निकाला जाता है।

कोहर—गहरा कुंआ।

खरड़ो—उस व्यक्ति से वसूल किया जाने वाला कर जो गांव मे घर बसा कर रहता था।

खडचर लोग—जानवर चराने वाले लोग।

खडीण—वह जमीन जो वोई जाती हो।

खरक कूण—वायव्य उत्तर और पश्चिम के बीच की दिशा।

खांनाजगी—झगड़ा, युद्ध।

खारचिया—विशेप किस्म के गेहूं जो साधारण खारे पाने से पकाये जाते हैं।

खाटी—जीती हुई, कब्जे मे की हुई।

खारोल—इनका पेशा नमक बनाना रहा है। मारवाड मे जहां नमक की खाने है वहां प्रायः ये पाये जाते हैं। ये शाक्त मत को मानते हैं।

खालसै—वह भूमि जो किसी जागीरदार के अधिकार में नही है।

खासी दोढ़ी—उस महल का मुख्य द्वार जहा शासक विश्राम करता था।

खिजमत—नौकरी, सेवा।

खीचड़ी—मृत्यु-भोज पर लिया जाने वाला कर।

घोहल—गोद, पुत्र के अभाव मे अपने गोत्र के नजदीक रिश्तेदार के लड़के को दत्तक पुत्र बनाना।

गढ़ री रांग—किले की नीव।

गलत कोढ़—गलित कुष्ठ।

गांवेती—गाव मे बसने वाले लोग।

ग्रासी बेध—जीवन यापन के लिये जमीन प्राप्त करने को किया जाने वाला संघर्ष।

गुढ़ो—पहाड आदि मे रहने का सुरक्षित स्थान।

गुमट—गुंबजदार स्मारक।

गूघरी—कुंओं पर वधे हुए रुप मे निश्चित माप मे लिया जाने वाला लगान।

गोढ़वाड़—पाली व कुछ जालोर परगने का इलका।

गोसवारो—सार रुप मे हिसाब।

गोरां—कब्र।

गोवली—ग्वाले।

गोरवौ—गांव के नजदीक का वह स्थान जहा गायें आदि रखी जाती है।

घांणी—तेल या सरसो की घाणी निकालने वालो से लिया जाने वाला कर।

घासमारी—पशुओ की गिनती के अनुसार उन पर लिया जाने वाला कर।

घीआई—जिसके घर मे गायें भैंसें होती थी उससे घी के रुप मे लिया जाने वाला कर।

घूघरी—फसल मे से लिया जाने वाला (कर के तैर पर) विशेष हिस्सा।

चंवरी—चौरी। विवाह की विधिवत रश्म सम्पन्न करने के लिये जहा वर वधू को वैठाकर ब्राह्मण द्वारा मंत्र आदि बोले जाते हैं।

चक—जमीन का एक बड़ा हिस्सा।

चांच—साधारण कच्चा कुआ, जिसमे से पानी निकालने के लिये एक लबे लट्ठे के पीछे पत्थर बांध कर अगले हिस्से मे बरतन लटका कर हाथो से उसको ऊपर नीचे करने पर पानी निकाला जा सकता है।

चोढो—कम पानी।

चोतरो—परगने का मुख्य स्थान जहां परगने का हाकिम या बड़ा अधिकारी रहता था।

चौरासी—चौरासी गांवो का समूह।

छतीस पवन जात—प्राचीन ग्रथो मे इनके नाम इस प्रकार है—
सीसगर, दरजी, तवोली, रंरवाल, गवाल, वाढेई, सिणगतरा, सुनेली, धोवी, धूनिया, कदोई, कहार, काछी, कुलाल, कलाल, माली, कुदीगर, कागदी, किसान, पटवूनिया, चतेरा, वबे रेवारी, लबेरा, ठठेरा, राजपटवा, छपरबध, नाई, भरभूनिया, सोनार, लोहार, सकलीगर, हवाइगर, धीवर, चमार,—ऐ छतीस पवनीया।

छाली—बकरी।

छोरू—वशज। छोकरा। वड़े आदमी के अधीन व्यक्ति।

जमीयत—जमा सामान।

जात—जाति। धर्म-लाभ के निमित्त की जाने वाली किसी स्थान की यात्रा।

जाव—कुंए के पास की वह भूमि जिसमे सिंचाई करके फसल ली जाती है।

जुआरी—फसल के सिट्टो की कटाई प्रारंभ करते समय लिया जाने वाला कर।

जीव सिलै—युद्ध के समय अगों की रक्षा के लिए पहिना जाने वाला लोहे का अंग-त्राण।

टीकायत—राज्यतिलक का अधिकारी, वड़ा लड़का।

टीको—राज्य-रोहण के दस्तूर की रश्म, जिसके अनुसार ललाट पर तिलक किया जाता है। मगनी का प्रस्ताव। मगनी के प्रस्ताव के समय किया जाने वाला तिलक।

ठरड़ो—कठोर जमीन।

डाक चौकी—राज्य की डाक आगे पहुंचाने के लिये नियत चौकी।

डायजो—दहेज। प्रचीन प्रथानुसार कपड़े व गहनो के अतिरिक्त हाथी घोडे, दास - दासियां पुरोहित व अन्य नौकर आदि भी दहेज में दिये जाते थे। इन्हें दायजवाल कहा जाता था।

डावड़ा—लड़का।

डोलौ—वह रश्म जिसके अनुसार लडकी को शादी के लिये उसके (होने वाले) पति के घर अथवा निश्चित स्थान पर पहुचाया जाता था।

डोहली—ब्राह्मण, साधु, भाट आदि को दी गई दान की भूमि।

ढूंढ—वह नीचा स्थल जहां स्वतः पानी शामिल हो जाता हो।

ढ़ीमड़ा—एक प्रकार का कुंआ।

ढ़ोवा—छापामार हमले।

तहवारी—विशेष अवसरों पर दी जाने वाली लाग।

तलहटी—पहाड़ी आदि पर वने दुर्ग के नीचे का स्थान।

तला—गहरा कुंआ।

तकिया—सन्यासी के समाधि-स्थल पर वना चवूतरा।

तागीर—जब्त।

तागीरात—जागीरदार से गांव जब्त होने पर लिए जाने वाला कर।

ताती बाहर—शीघ्रता से, उसी घड़ी चढ़ने वाली बाहर।

ताली—खलिहान वुहारा जाता है उस समय लिया जाने वाला कर।

तीरवा—तीर की मार पहुचे उतनी दूरी।

तुरकांण राज—मुसलिम राज्य।

थड़ो—सम्माननीय व्यक्ति का स्मारका।

थल—रेतीली भूमि। स्थल।

थांणो—वह स्थल अथवा दुर्ग, कोटड़ी आदि जहा राज्य की ओर से सुरक्षात्मक प्रवन्ध के लिए सिपाही आदि रखे जाते हैं।

थांणेदार—थानेदार, परगने की सुरक्षा का जिम्मा रखने वाला अधिकारी।

दत्त—दान में दिया हुआ गाव या भूमि।

दरगाह—मुगल दरबार, वह स्थान जहा बादशाह बैठकर आदेश देता है।

दइव—दैव।

दांण—बिसाती (मनिहारा) आदि से माल का अनुमान करके एक साथ लिया जाने वाला कर।

द्राव—पशु।

दांती—सिट्टे काटने के लिये दांत (काटने का औजार) लेकर जाने पर कर।

परसंग—सम्बन्ध। रिश्तेदारी।

परकोटो—शहरपना।

पटी—जमीन का चक विशेष।

पलीवाल—पाली के मूल निवासी होने से पलीवाल कहलाये। ये लोग उदयपुर के राणा के गुरु रहे हैं और किसी समय मे व्योपार आदि भी करते थे तथा सम्पन्न थे।

पगवाय—वह बावली जिसमे सीढ़ियों के द्वारा उतर कर पानी भरा जा सकता है।

पटैल—एक खेतीहर जाति।

पसायता—निम्न जाति के लोगों को दिये गये खत जो राजा की सेवा-टहल करते थे। जैसे नाई, दर्जी, ढोली, कुम्हा आदि, इनसे कोई कर नही लिया जाता था।

परधांन—राज्य का प्रधान मत्री, प्रमुख अधिकारी, प्रमुख प्रतिनिधि (देखो-प्रथम भाग की भूमिका)

प्रतसही—प्रति सैकड़ा।

प्रवाड़ा—वीरता पूर्ण कार्य।

पाही—जागीरदार को कुछ चाकरी देकर उसकी एवज में खेत बोना।

पायगा—अस्तबल।

पाठा कागल—राजस्व आदि का हिसाब लिखने के लिये खर्च होने वाली लेखन-सामग्री के निमित लिया जाने वाला कर।

पालेज दूध रा—दूध पर रोकड़ पैसों मे लिया जाने वाले कर। मुफ्त में आये हुय जानवरों पर लिया जाने वाला कर।

पातसाही मारग—शाही मार्ग। वह मार्ग जिससे होकर शाही सामान जाता हो।

पारका धाड़ा—बहुत दूर तक लूट पाट करना, लुटेरों को भी लूट लेना।

पानचराई—ऊंटो की चाराई के निमित्त लिया जाने वाला कर।

पितर—पित्र योनि।

पीरोजी—एक मुगल कालीन छोटा सिक्का।

पीछ रौ बेरो—वह कुंआ जिसमें से केवल पीने के लिये पानी निकाला जाता है।

पीयल—वह फसल जो सिंचाई द्वारा होती है।

पुकारु—पुकार करने वाले, फरियादी।

पेंडौ—यात्रा।

पेटवाणी—केवल पीने लायक पानी।

पेसकसो—सरकार को दी जाने वाली वेगार आदि, चाकरी।
पेटियौ—घर के नौकरो को निर्वाह के लिये दी जाने वाली खाने-पीने की निश्चित सामग्री।
पोतरा—पौत्र, वशज।
पौल् रा चाकर—राज्य विशेप की रक्षार्थ नियुक्त नौकर।
फदिया—मुगल समय का सिक्का विशेप।
फलसो—ग्राम का मुख्य द्वारा, मकान आदि को रक्षित करने के लिये वनाई गई वाड़ या दीवार का मुख्य द्वार।
दावै—वदले मे।
द्राह—गहरा गड्ढा जिसमे वर्षा का पानी कई दिनों तक रहता है।
दीवांण—उदयपुर के राणा की पदवी। राज्य का प्रमुख राजस्व अधिकारी (देखो प्रथम भाग की भूमिका पृ० १४)
दीवांनगी—मुगल राज्य-व्यवस्था मे सवसे वड़े राजस्व अधिकारी का पद, देखो दीवाण।
दीवांण खांनों—वह स्थान जहां दीवान अपना दरवार लगता है।
दुकाल्—अकाल। दूसरे वर्ष फिर पड़ने वाला अकाल।
दुगाणी—मुगल कालीन छोटा सिक्का।
देवचो—देवता के आगे वचन-निर्वाह की शपथ ग्रहण करना।
देहरो—मदिर।
देसौत—देशपति, राजा।
दोढ़ी—राजा के निजी निवास स्थान का मुख्य द्वार।
दोत पूजा—दवात-पूजा के निमित्त लिया जाने वाला लगान।
दोहीता—दुहिता का लड़का, दोहित्र।
देसोटो—देश निकाला, किसी व्यक्ति द्वारा वड़ा अपराध किये जाने पर उसे देश से वहार चले जाने की सजा।
दौम—दोयम, दूसरे दर्जे की जमीन।
धरणो—चारणो आदि की जागीर जव्त करने पर अथवा किसी अधिकार को समाप्त करने पर उनके द्वारा सम्वन्धित शासक के द्वारा या जागीर के मुख्य स्थान पर असंतोप व्यक्त करने के लिये धरना देकर वैठना।
धरमदुआर—धर्मद्वार। युद्ध के समय चारों ओर से घिर जाने पर प्राणों की भिक्षा मांगकर निकलने वालो के लिये कहा जाता था कि वे धर्मद्वार से निकले।
धुमालो—कर विशेप।
धोंकल्—झगड़ा, फिसाद।
धोरावंध खेत—वह खेत जिसके किनारे पर रेत की पाल वाध कर पानी खेत मे रोका जाता है।
नंदवाणा बोहरा—वोहरों की एक शाखा।
नटघट—नट आदि जातियें।

नाल्—संकरा कुंआ।
नाल्—विशेप प्रकार की तोपे।
नाल्-बंदी—कर विशेप।
नाल्ेर—नालियर। नालियर का फल भेज कर लडकी की मगनी का प्रस्ताव किसी योग्य व्यक्ति को भेजने का रिवाज राजस्थान में रहा है। नालियर का लौट जाना दोनो पक्षो के लिये अपमान–जनक समझा जाता था।
पंडव—घोड़ो का सेवक।
पांतया—पक्तिवद्ध करके अतिथियों को भोजन कराने की व्यवस्था।
फारकती—कुल हिसाब का निपटारा।
बड़ी नेपै—खूव उपज।
बंधवौ कोहर—वह कुंआ जो अन्दर से पत्थर आदि द्वारा पक्का वंधा हुआ होता है।
बधारा—किसी की सेवा को पुरस्कृत करने के उद्देश्य से उसकी जागीरी में विस्तार करने के लिये अतिरिक्त गाव या जमीन आदि देना।
बरसोंदियो—वह तलाव जिसमे वर्प भर के लिये पानी रहता है।
बरठो—भैसा।
बसीटाला—वीच वचाव करने वाले। सदेश वाहक।
बापोती—पुरखो द्वारा अधिकृत स्थान- राज्य, जमीन आदि।
बाब—रेशमी कपड़ा व किनार गोटे आदि पर लिया जाने वाला कर।
बावसु—गुप्त रूप से खवर लाने वाला व्यक्ति।
बाहर—चोर अथवा डाकू का पीछा करने का कार्य। प्राचीन समय मे गायो की वाहर के लिये चढना वड़ा पुण्य-कार्य समझा जाता था।
बित—गायें आदि पशु-धन।
बिश्नोई—इस सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक पंवार राजपूत जाभाजी थे। इनके अनुयायी जाटों को इन्होने २९ (वीस तथा नौ) प्रकार के नियमों का पालन कर वाया, इसलिये यह विश्नोई कहलाये। इनका मुख्य पेशा खेती करना रहा है।
बीछाहीत—विसाती।
बेठ—जागीरदार अथवा शासक द्वारा बेगार मे लिया जाने वाला कार्य अथवा वस्तु।
बोह सींवो—वडी सीमा वाला।
भरोती—कर भरने के पश्चात रसीद करते समय लिया जाने वाला कर।
भरेत रा खेत—वह खेत जिनमे वर्पा का पानी भर जाता हो।
भांणेज—भानजा, वहिन का लड़का।
भाई बांटै—सम्पत्ति को भाईयो मे वांटने की क्रिया। वह सम्पनि जो भाइयो में वांटी जाने पर किसी एक भाई को प्राप्त होती हे।
भाखर री घुड़ै—पहाड़ की मोडदार ढाल।
भाखर री गाल्—दो पहाडो के वीच का सकरा गहरा स्थान।

भाषरी री षांभ—पहाड़ी की मोड़ में।

भुंजाई—भुना हुआ खाना। वड़े ठाकुर अथवा शासक के यहां नोकरो तथा आने जाने वाले लोगों के लिये तैयार किया जाने वाला पुष्टिदायक भोजन।

भोग—राज्य द्वारा जमीन की उपज से लिया जाने वाला लगान।

भोगलावै—खेत को इस हिसाव से रहन रखना कि उसके पेटे ली गई रकम का व्याज खेत के मालिक को नही देना पड़ता और खेत का कोई लगान वह रकम देने वाले से वसूल नही कर सकता।

भोगसील—भोगिशैल। ऐसी किंवदती है कि यहा सर्प वहुत अधिक मात्रा मे पाये जाते थे इस लिये इस शैल का यह नाम पड़ा।

भोमिया—शासक से जिसे चौकसी रखने के लिये जमीन मिली हो वह व्यक्ति।

मांणो—वारह मन के वरावर का माप।

मापो—गांव से खरीद कर जो चीज वाहर ले जाई जाती थी उस पर यह कर लगता था।

मिलणो—भेंट के निमित्त (सम्मान स्वरूप) लिया जाने वाला लगान।

मिरजो—उच्च मुगल अधिकारी को मिलने वाली एक उपाधि।

मुकातो—रुपयो के रूप मे प्राप्त होने वाला जमीन का लगान।

मुसला—मुसलमान लोग।

मुहम—सैनिक अभियान।

मूक—एक दिशा का नाम।

मेर—मारवाड़ की एक प्राचीन जाति।

मेंहरेलण—महि को रेलने वाला। द्रव्य-दान द्वारा समस्त लोगो को तुष्ट करने वाला।

रसत—फौज की खुराक के लिये लिया जाने वाला लगान।

राजलोग—राजा के परिवार के लोग।

रातीबाहो—रात के समय किया जाने वाला हमला।

राह वेधी—हरएक समस्या की उलझनों को वारीकी से समझने वाला। भविष्य की गति विधि का सही अनुमान लगा लेने वाला।

रिण—अनउपजाऊ भूमि, वह भूमि जहां खारा पानी शामिल होता हो।

रोड़ो—छोटी पहाड़ी, पठार।

रेल—दूर से वहकर आने वाला पानी जो खेतों में फैल जाता हो।

रैंत—प्रजा।

लिखावणी—हिसाव किताव लिखने के पारिश्रमिक स्वरूप लिया जाने वाला लगान।

लूण रौ दरीबो—नमक की पैदावार का स्थान।

वडो रजपूत—प्रसिद्ध राजपूत। अनेक गुणों से सम्पन्न अपने समय का जाना-माना वीर राजपूत।

वणी—रुई की खेती।

वदावणो—वन्दना करना।

नामानुक्रमणिकाएँ :

पुरुष व स्त्री नामानुक्रमणिकाएं

दू

दे

दो

दौ

ध

धी

धु

न

पां

पा

पि

प्रि

फ

फा

फु

फू

फो

ब

वां

वा

वीं

वी

वु

वे

वो

भ

भां

भा

भी

र

रा

रि

रु

लि

ली

लु

लू

लो

वू

वे

वैं

सां

सा

सिं

सुं

सु

सू

से

सै

सो

सौ

स्

ह

हा

हीं

ही

हे

है

नामानुक्रमणिकाएं :

ग्राम, नगर, देश आदि

कि

की

कूं

के

को

खि

खीं

खी

खु

खे

खो

गं

ग

गां

छ

छां

छा

छीं

छी

छै

छो

ज

जां

जा

जी

जु

जे

जै

जो

दो

घं

घ

घां

घा

घीं

घी

नीं

नी

नु

नुं

नें

प

पां

पा

पीं

पी

पुं

पु

पे

पो

प्र

फ

फा

फी

फु

बं

ब

बां

बा

बि

बीं

बी

वु

वू

वे

भां

भा

भि

भी

भु

मं

म

मी

मु

मु

मे

म्हे

रं

र

रां

रा

रि

वि

वीं

वी

सां

सा

सिं

सि

सीं

सी

सू

से

सो

———

परिशिष्टों की नामानुक्रमणिकाएँ

स्त्री व पुरुष नामानुक्रमणिका :

[नोट—३५६ से ५०१ तक पृष्ठ सं० द्वितीय भाग की तथा ५५६ से ६०२ तक की प्रथम-भाग की है !]

ऊं

ऊ

ओ

कं

क

जां

जा

जुं

जु

जूं

न

ना

नी

नू

ने

प्र

प्री

फ

फा

फू

ब

वां

वा

वी

वु

वे

वो

भ

भां

भा

भीं

भी

भू

भैं

भो

रि

रु

रू

रे

रै

ल

ला

लि

ली

लु

लू

लो

व

सां

सा

सिं

सि

सीं

सी

सुं

सु

हां

हा

हि

हीं

ही

हु

हे

ग्राम, नगर, देश आदि

नोटः—पृष्ठाक ५५६ से ६०० तक प्रथम भाग के परिशिष्टों के पृष्ठांक हैं और ३५६ से ५०१ तक के दूसरे भाग के परिशिष्टों के पृष्ठांक हैं।

खां

खा

खीं

खी

खे

गं

ग

गां

गा

घू

घो

चं

च

चां

चा

चि

ची

चूं

चे

चो

चौ

छी

डु

डूं

डे

डो

ढू

ढे

त

तां

ता

ती

तु

ते

तो

थ

दं

द

दां

दा

दि

दी

दु

दू

दे

दो

ध

धां

सि

सीं

सी

सुं

सु

सूं

सू

सें

पर्वत और पठार

तीर्थ मंदिर मसजिद आदि

नदी तालाब कुंड आदि

———

विविध नामानुक्रमणिकाएं (परिशिष्टों की)

नोट—३५६ से ५०१ तक पृष्ठ सं० द्वितीय भाग की तथा ५५६ से ६०२ तक प्रथम भाग की ।

पर्वत, पठार

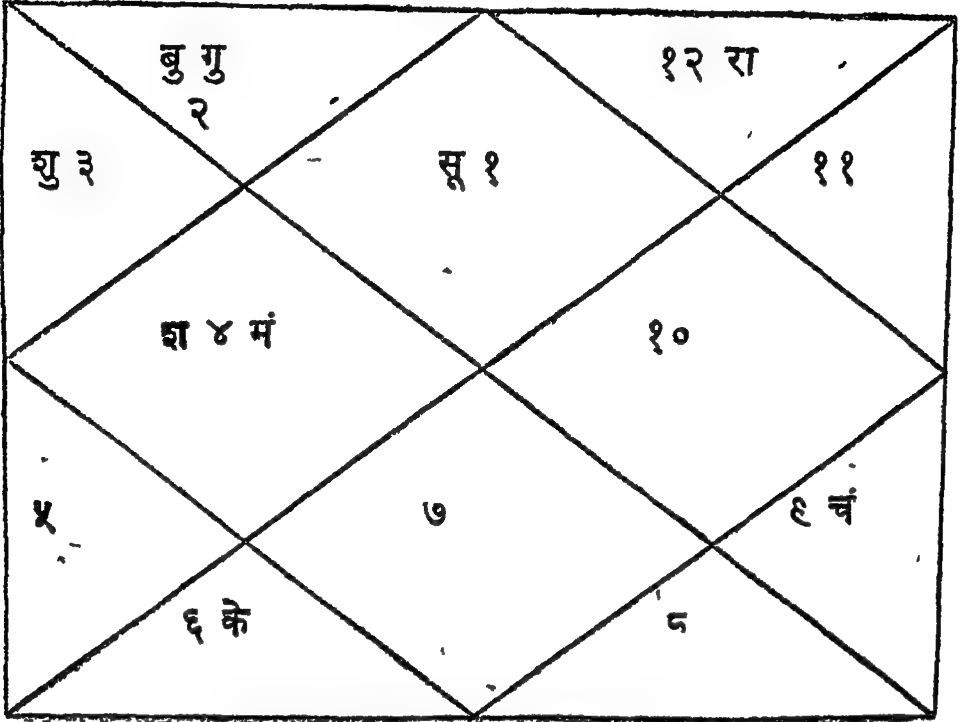
मन्दिर, छतरी, थान आदि

तालाब, कुंड, नदी

राव श्री जोधाजी री जन्मकुंडली

सम्वत १४७२ वैशाख सुदि ४ बुधे उदयात घटी १ मूल नक्षत्रे

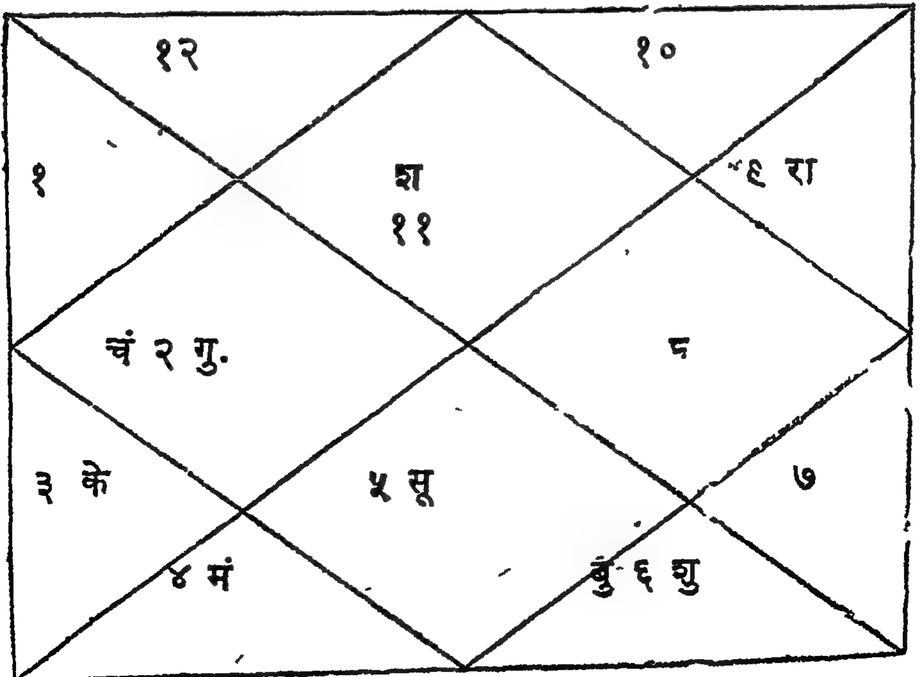
राव श्री जोधाजी री जन्म



राव सूजाजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १४९६ भादवा वदि ८ गुरौ (रवि० अगस्त २, १४३९ ई०)

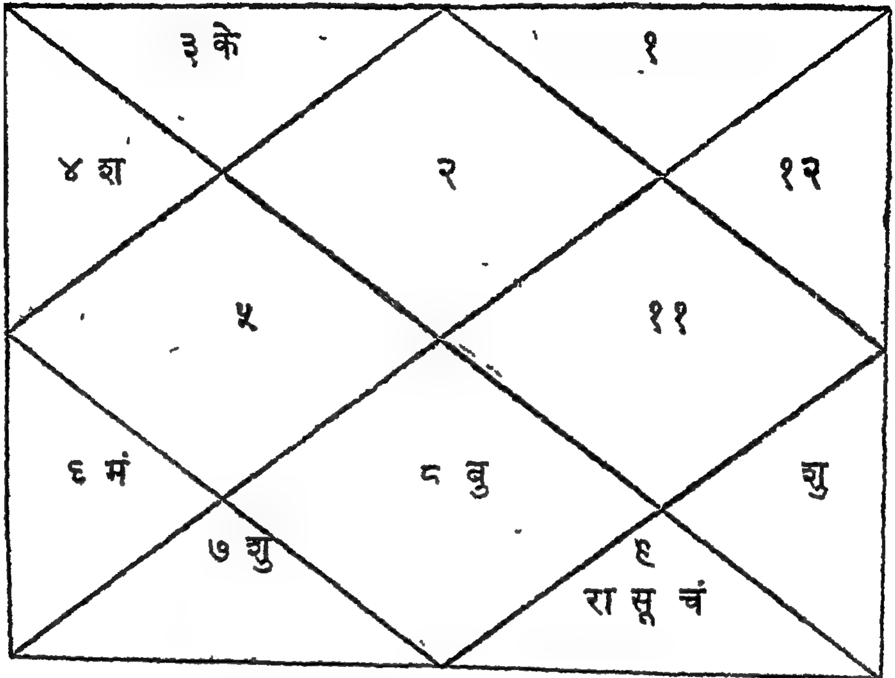
उदयात ३४/१५ राव सूजाजी जन्म सुत जोधाजी गृहे पुत्र ।



कु॰ वाघजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १५१४ पोह वद ऽऽ उदयात घटी २४/४४

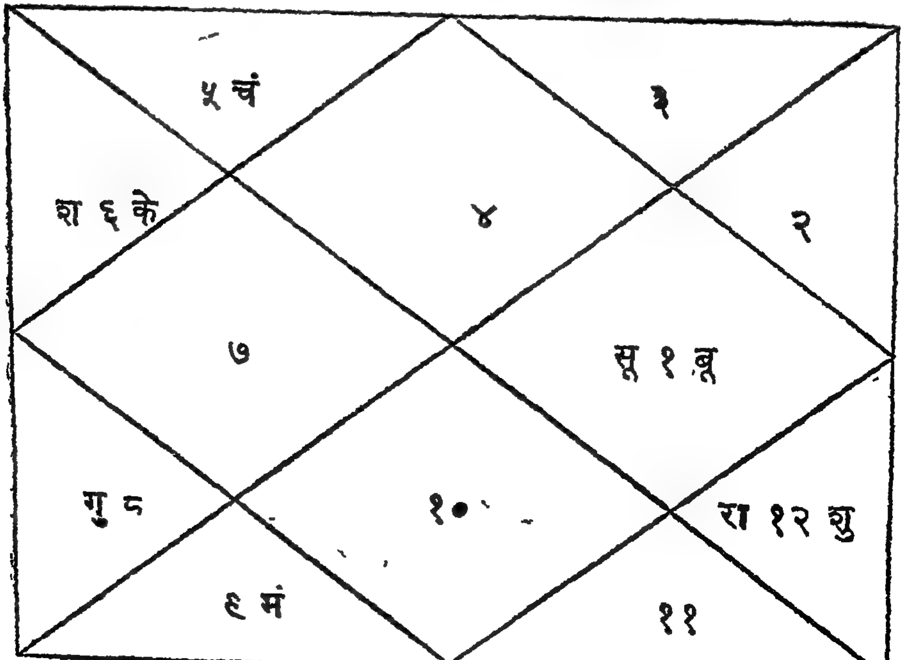
(शुक्र., दिसम्बर १६, १४५७ ई॰) राव सूजाजी गृहे वाघाजी जन्म



राव गांगाजी राठौड़ री जन्मकुंडली

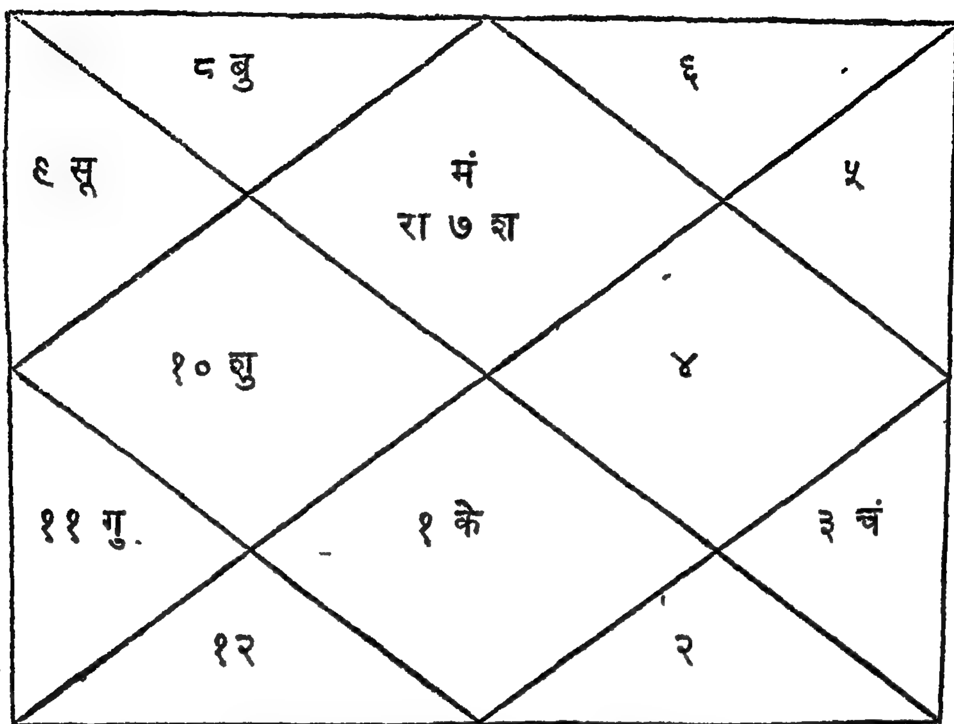
सम्वत १५४० वैशाख सुदि १० गुरौ उदयात १५/१२ स.

(गुरु, अप्रैल १७, १४८३ ई॰) राव गांगाजी री जन्म



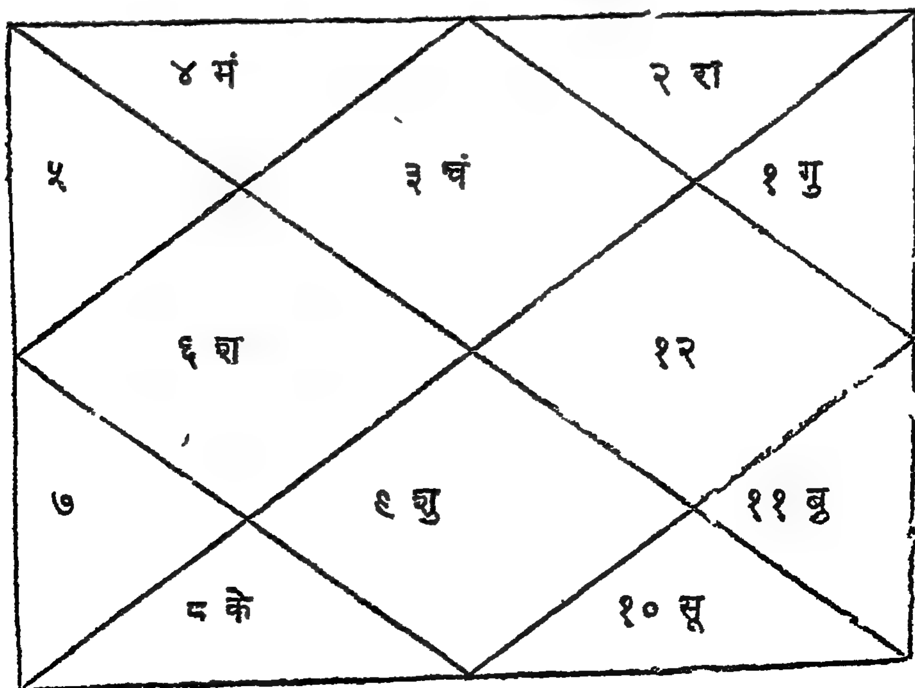
राव मालदेजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १५६८ पोह वद १ शुक्रे रात्रिगत घटि २४/२२
(शुक्र०, दिसम्बर ५, १५११ ई०) समये रावजी श्री मालदेजी री जन्म



राजा उदयसिंह मालदेओत री जन्मकुंडली

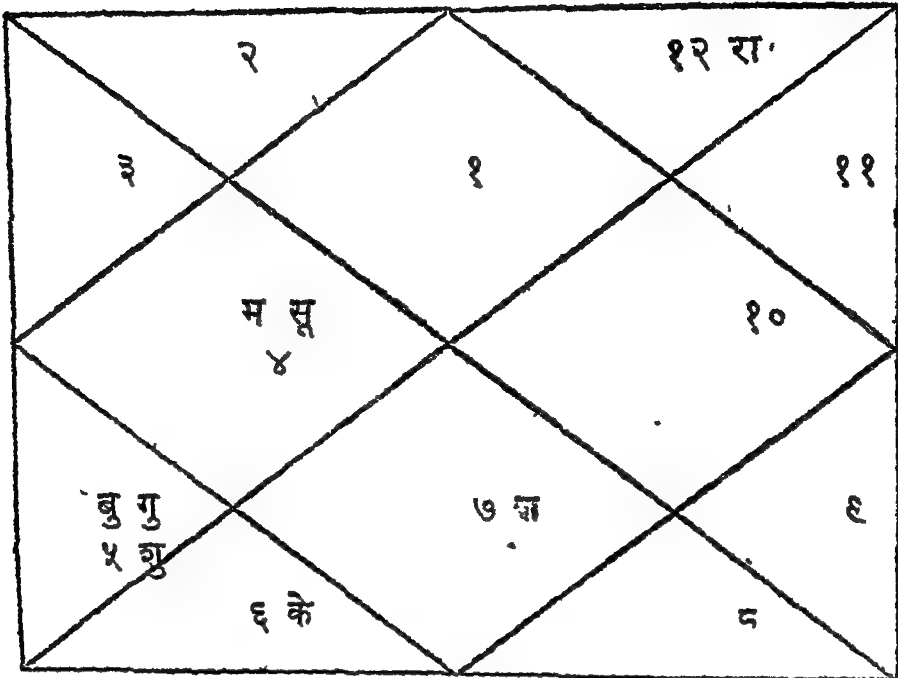
सम्वत १५९४ माघ सुद १३ रवौ उदयात २१/३२ (रवि०, जनवरी १३, १५३८ ई०)
समये राजा उदैसिंह जन्म मालदे गृहे पुत्र



राव चन्द्रसेन री जन्मकुंडली

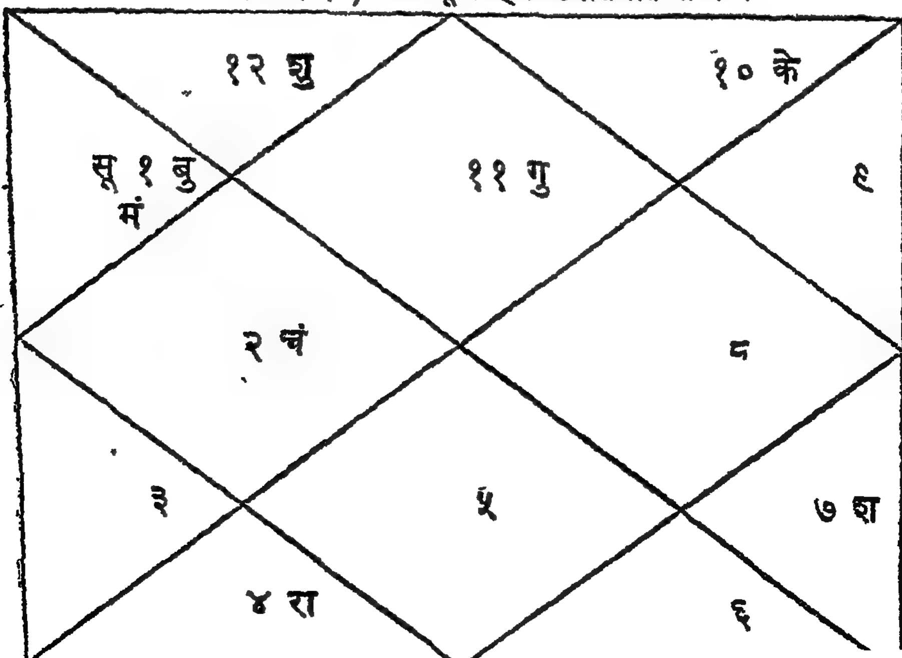
सम्वत १५९८ श्रावण सुद ८ रात्रि गत घटी १०/२६ (शनि०, जुलाई ३०, १५४१ ई०)

राव मालदेजी गृहे चन्द्रसेन रो जन्म



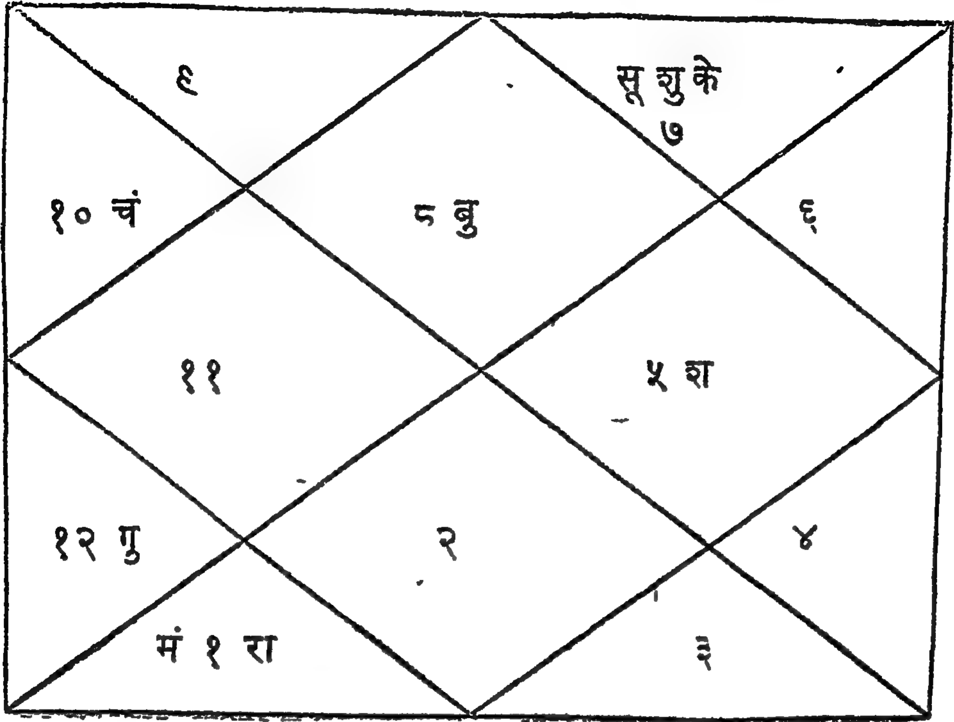
राजा सूरसिंह उदयसिंघोत री जन्मकुंडली

सम्वत १६२७ शाके १४९३. वैशाख वदि ऽऽ उदयात् ५०/२२ स. (मंगल०, अप्रेल २४, १५७१ ई०) राजा सूरसिंहजी उदैसिंघोत रो जन्म



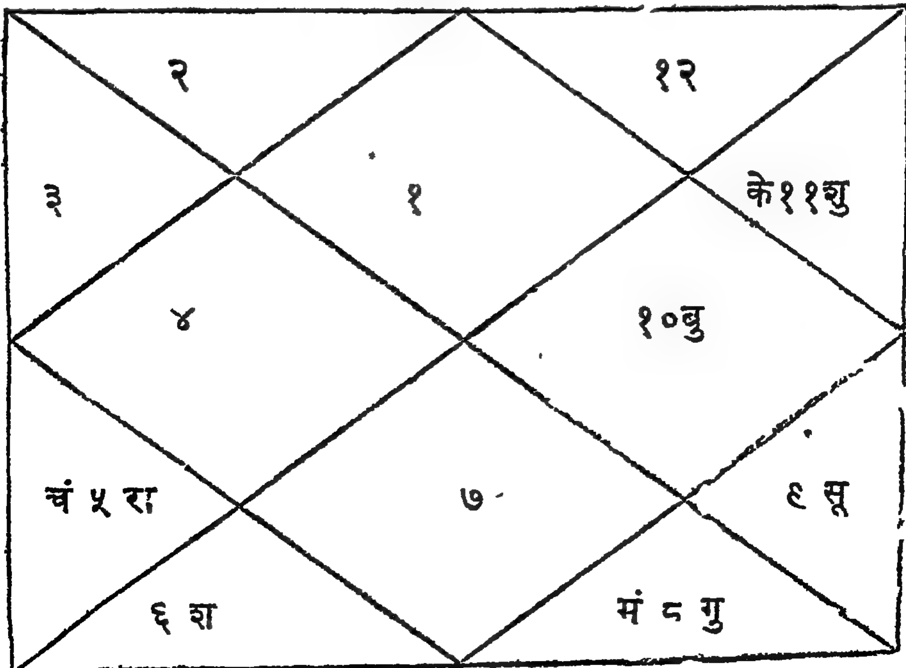
राजा गजसिंह राठौड़ री जनमकुंडली

सम्वत १६५२ शाके १५१७ काती सुद ८ गुरी उदयात १/७ (गुरु०, अक्टूबर ३०, १५९५ ई०) समये महाराजा गजसिंहजी रो जन्म



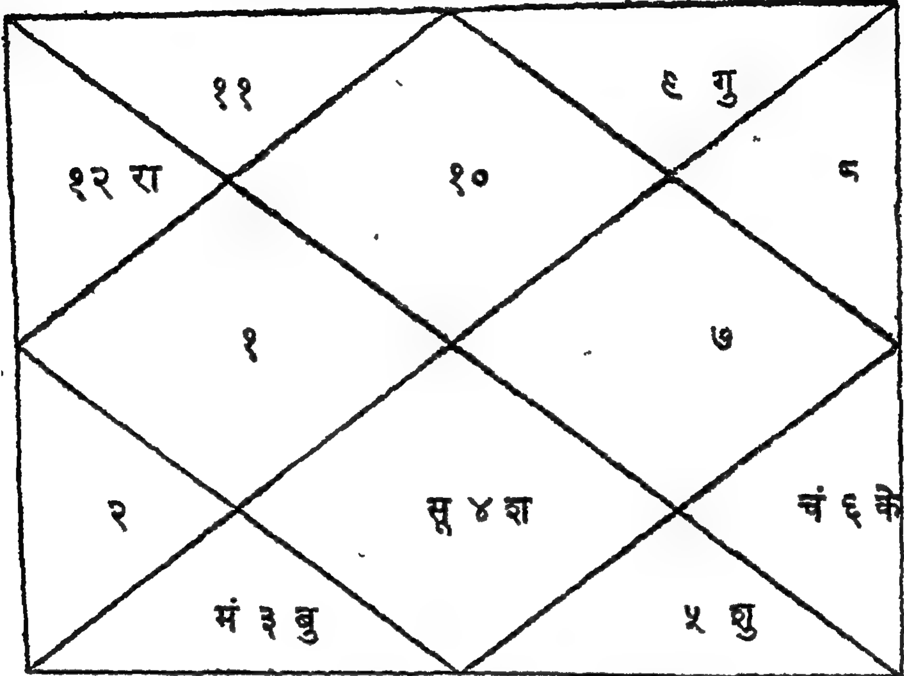
राजा जसवन्तसिंह राठौड़ री जन्मकुंडलो

सम्वत १६८३ शाके १५४८ माघ वद ४ भौमे उदयात १३/३२ (मंगल०, दिसम्बर २६, १६२६ ई०) समये महाराजा जसवंतसिंहजी मघा नक्षत्रे सूर्य ८/२६/५०/१



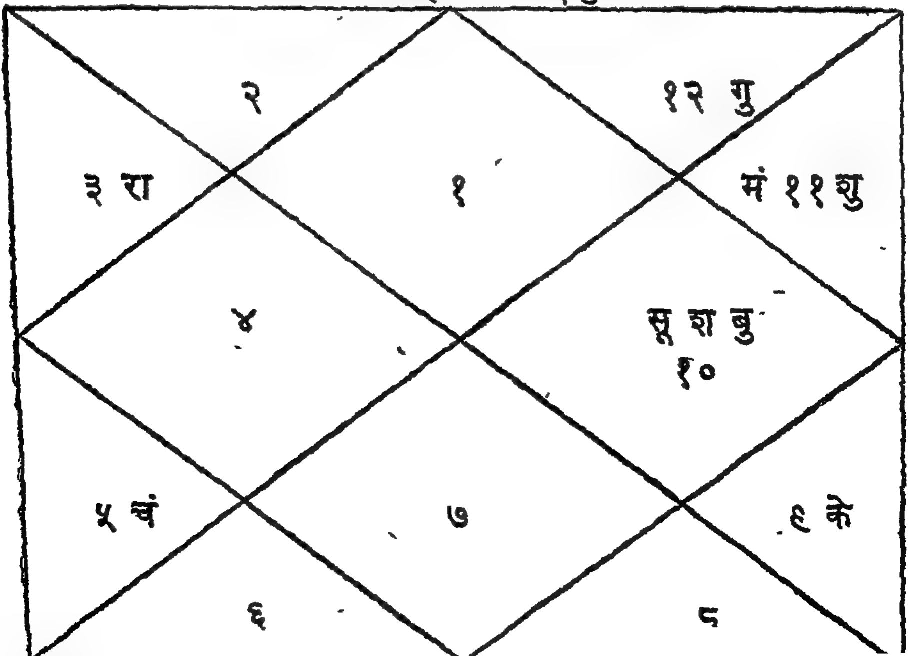
कुं० पृथ्वीसिंह री जन्मकुंडली

सम्वत १७०९ आसाढ सुद ५ गुरौ (गुरु०, जुलाई १, १६५२ ई०) उदयात महाराज जसवन्तसिंहजी गृहे पृथ्वीसिंहजी जन्म



कुं० जगतसिंह राठोड़ री जन्मकुंडली

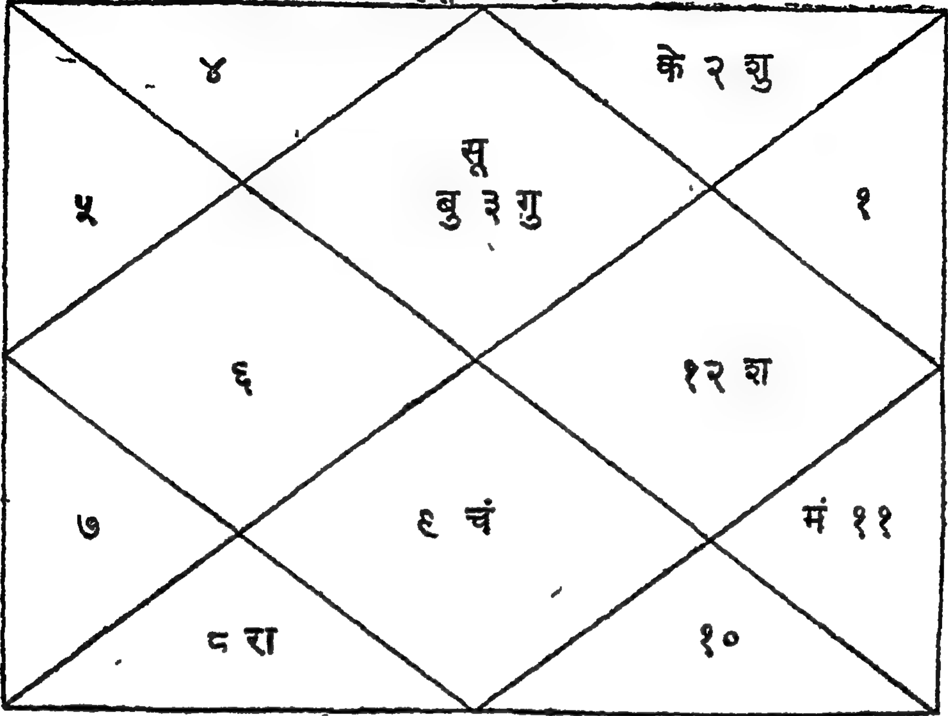
सम्वत १७२३ शाके १५८८ माघ वदि ३ गुरौ उदय १३/१२ (शनि०, मार्च ४, १६७६ ई०) कवर जगतसिंहजी चन्द्रावत् कुक्षौ जन्म



दूदा मेड़तिया री जन्मकुंडली

सम्वत १४९७ आसाढ सुद १५ उदयात २/१३ सा (बुध०, जून १५, १४४० ई०)

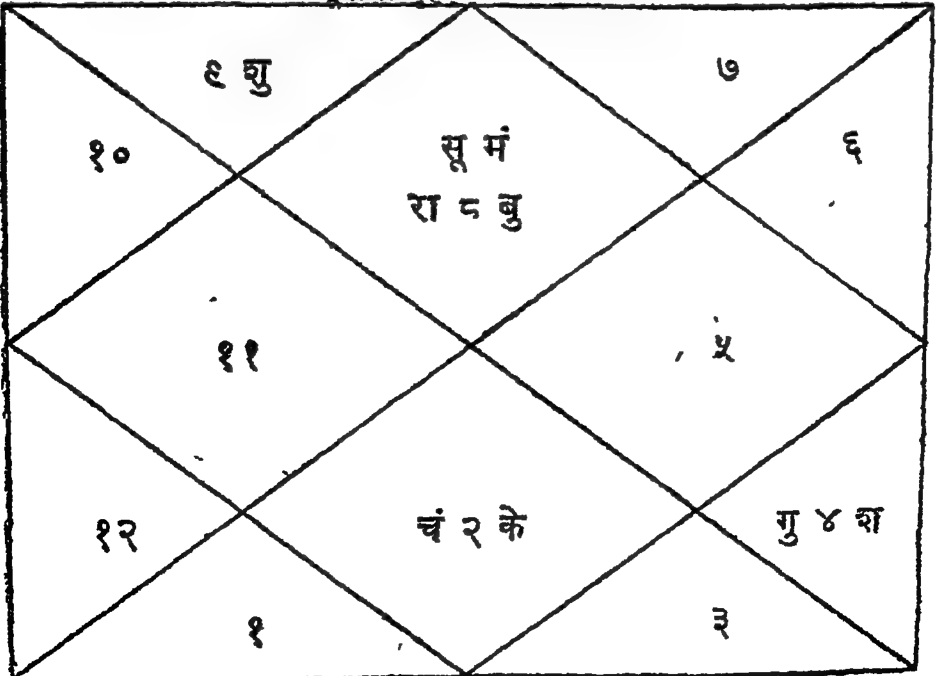
राव जोधाजी गृहे दूदाजी मेड़तिया री जन्म



वीरमदेजी दूदावत री जन्मकुंडली

सम्वत १५३४ मिगसर सुद १४ (बुध०, नवम्बर १९, १४७७ ई०)

दूदाजी गृहे वीरमदेजी री जन्म



जैमलजी मेड़तिया री जन्मकुंडली

सम्वत १५६४ आसोज सुद ११ (सितम्बर १७, १५६४ ई०)
वीरमदेव सुत जैमलजी मेड़तिया री जन्म

३ के
१
४
२
१२
शु ५ श
११ चं
६
८
१०
७
९ बु गु
९ रा

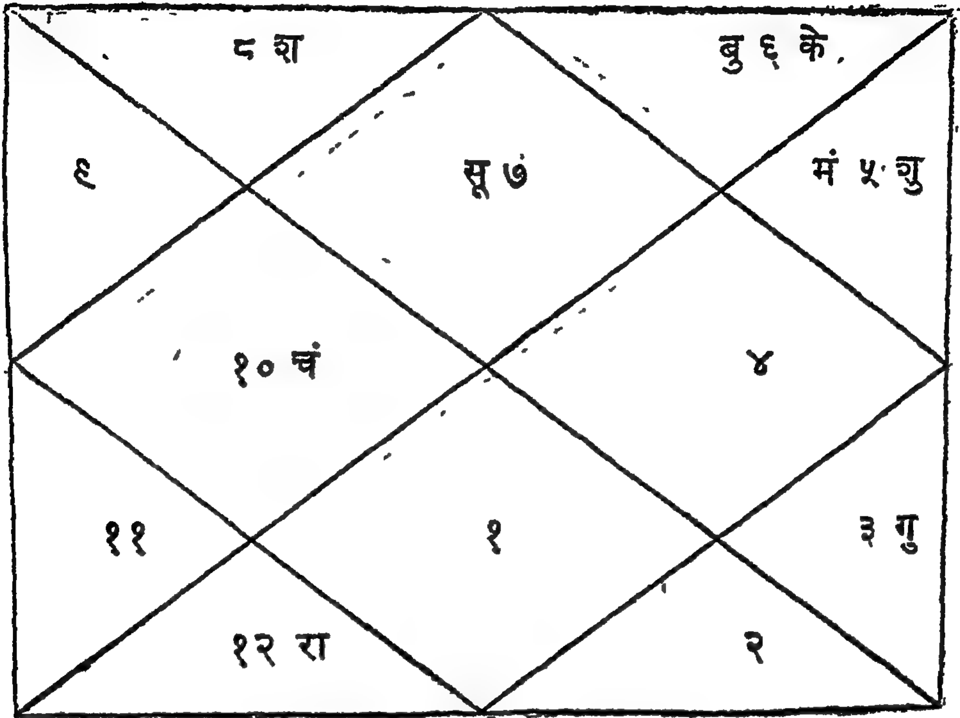
राव अमरसिंहजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १६७० शाके १५३५ पोह ५/५ सुद ११ रवी ३ रात्रिगत घटी २८ (रवि०, दिसम्बर १२, १६१३ ई०) रावजी श्री अमरसिंहजी री जन्म

४
२
५
३
रा १ चं
६
१२ श
गु ७ के
सू मं बु
९
११
८
१० शु

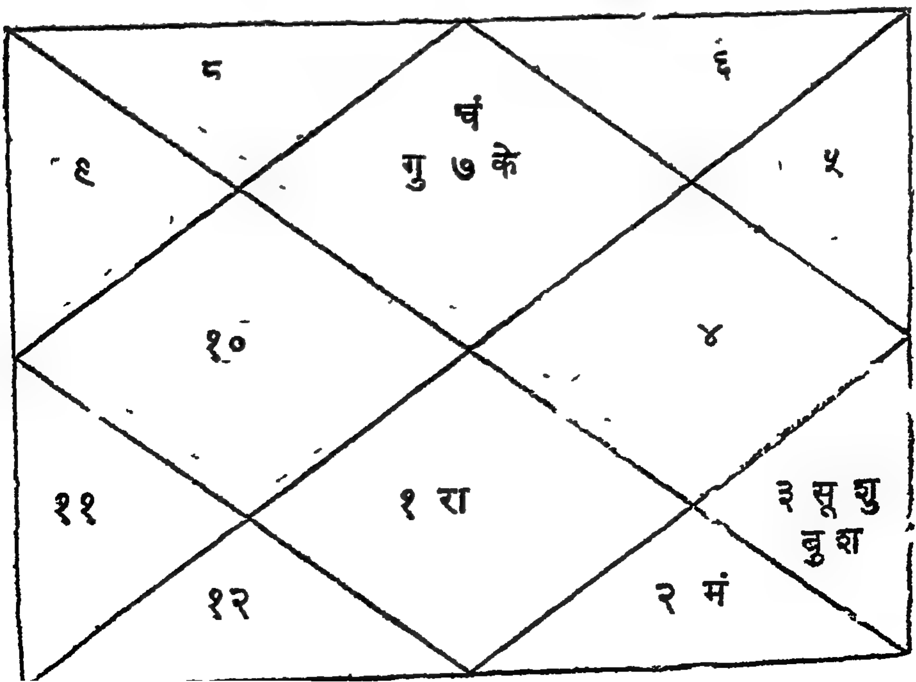
राव रायसिंघजी राठौड़ री जन्मकुंडली

सम्वत १६६० आसोज सुद १० बुध उदयात सू १/४१
(बुध०, अक्टूबर २, १६३३ ई०) समये राव-रायसिंहजी रो जन्म



इन्द्रसिंहजी राठौड़ री जन्मकुंडली

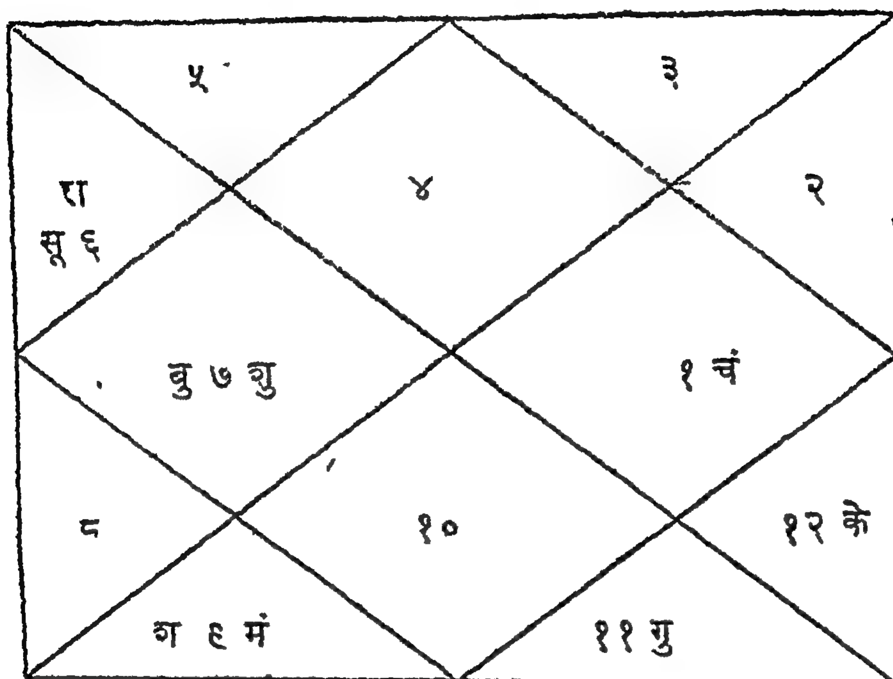
सम्वत १७०७ जेठ सुद १२ शनी विशाखा ५३/८ उदयात २१/३८ (शनि०, जून १, १६५० ई०) समये रायसिंहजी ग्रहे इन्द्रसिंहजी जन्म सू २/३



कु० रार्मासघ री जन्मकुंडली

सम्वत १६३० आसोज वदि २ उदयात ५२ (रवि०, सितम्बर १३, १५७३ ई०)

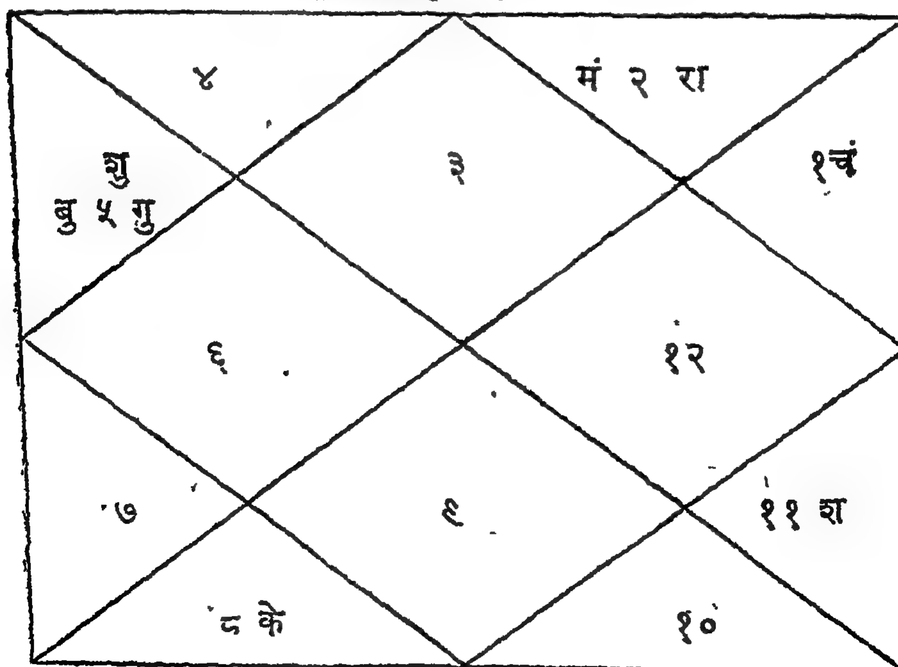
कर्मसेन पुत्र रार्मासिह री जन्म



कु० सत्रुसाल री जन्मकुंडली

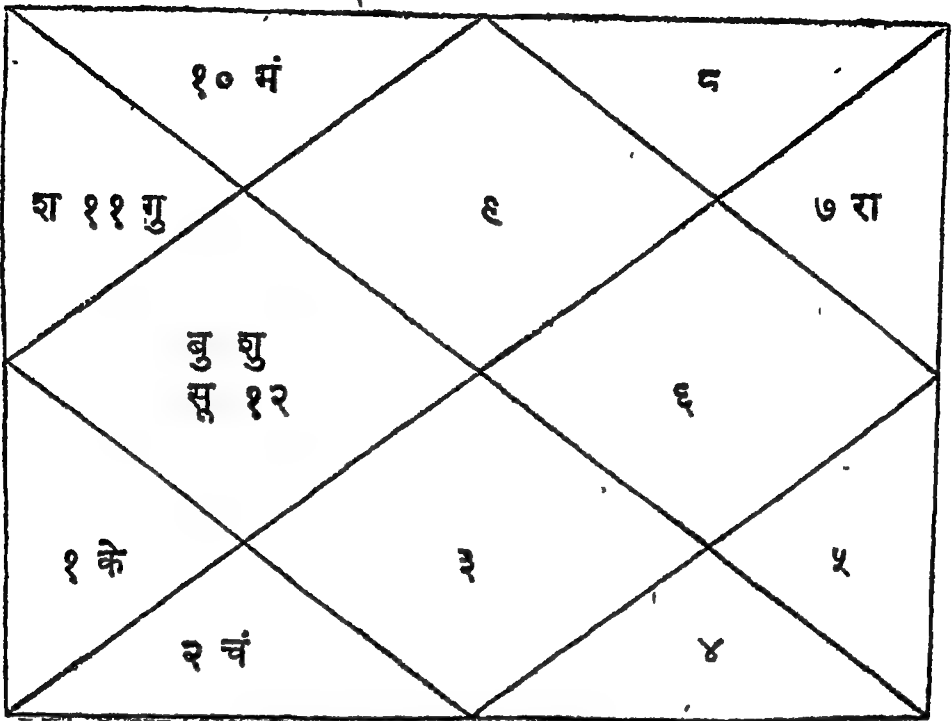
सम्वत १६६९ भादवा वद ५ उदयात् ५०/१२ अश्विनी (गुरु०, अगस्त ६, १६१२ ई०)

राजा सूरसिंहजी गृहे सत्रुसाल री जन्म



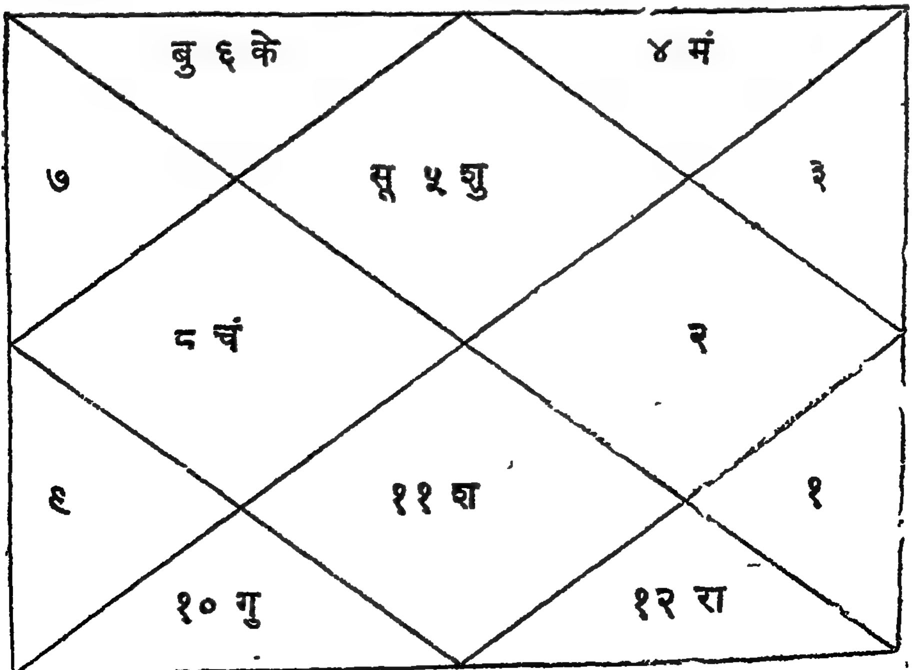
वनमालीदास री जन्मकुंडली

सम्वत १६९९ चैत्र सुद ३ बुध घटी २ भरणी ७ आयुष्मान रात्रगत घटी (बुध०, मार्च २३, १६४२ई०) कु. वनमाली दास रौ जन्म



राणा उदयसिंघ री जन्मकुंडली

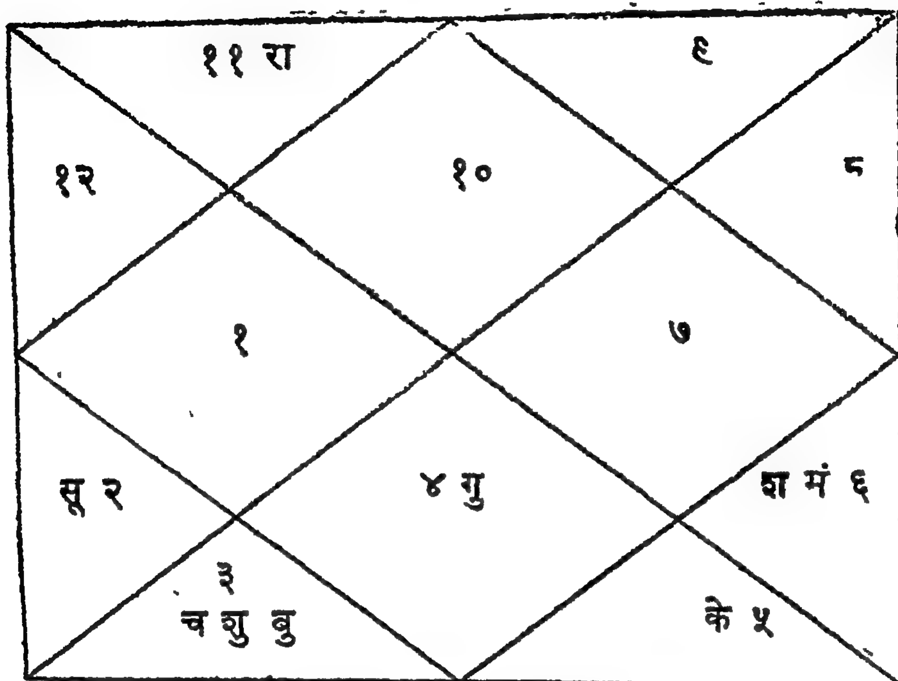
सम्वत १५७८ भादवा सुद १२ वुधे सूर्योदयात (बुध., अगस्त १४, १५२१ ई०) राणा सांगा पुत्र उदैसिंह रौ जन्म



राणा प्रताप री जन्मकुंडली

सम्वत १५६७ जेठ सुद ३ रवि उदयात ४७/१३ (रवि०, मई ६, १५४० ई०)

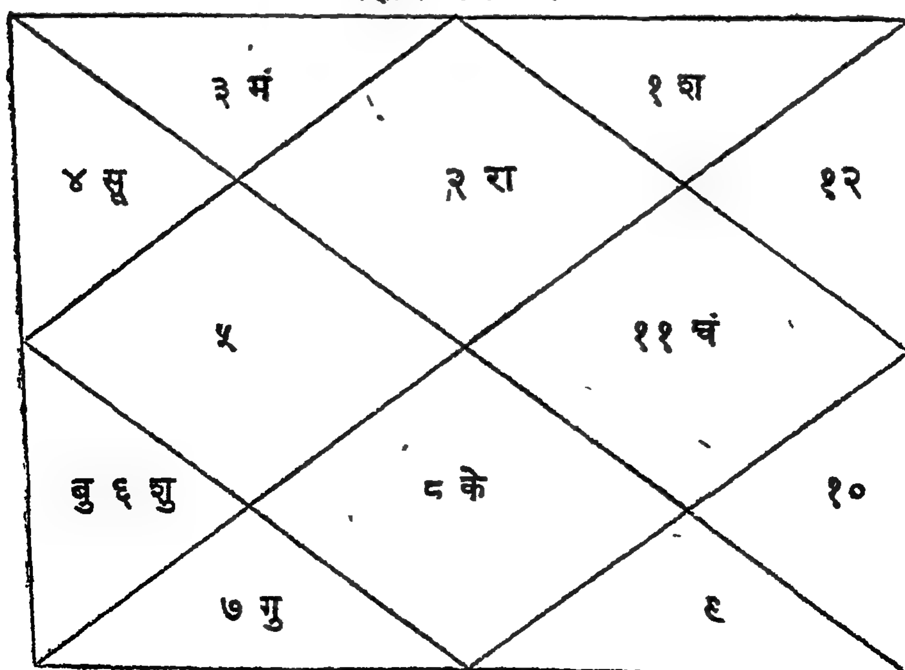
राणा प्रताप री जन्म



राणा सगर री जन्मकुंडली

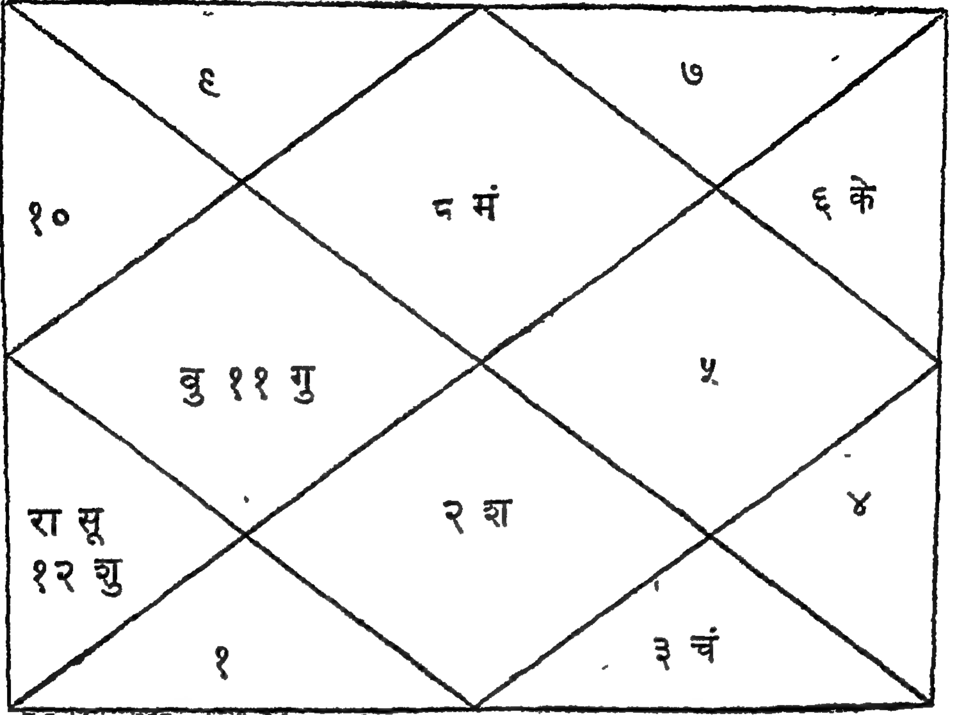
सम्वत १६११ भादवा वद २ शुक्रे उदयात ४७/३३ (शुक्र० जुलाई २४, १५५६ ई०)

राणा सगर री जन्म



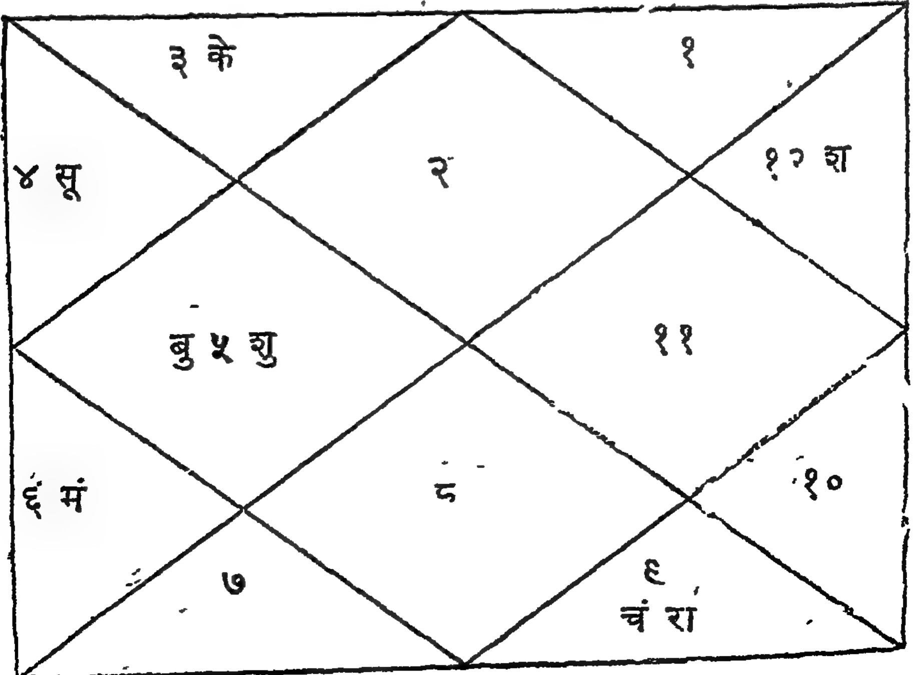
राणा अमरसिंघ री जन्मकुंडली

सम्वत १६१६ चैत्र सुद ७ (गुरु०, मार्च १६, १५५९ ई०)
राणा अमरसिंह री जन्म



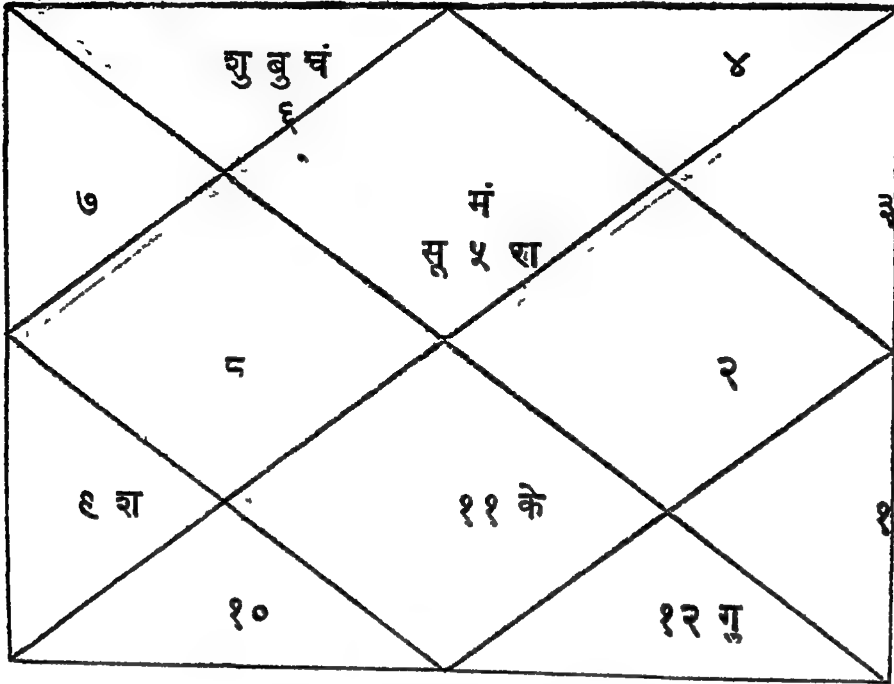
राणा करणसिंघ री जन्मकुंडली

सम्वत १६४० श्रावण सुदी १२, उदयात ४९ (रवि०, जुलाई २१, १५८३ ई०) राणा करण सिंघ री जन्म (मंगल०, जनवरी ७, १५८४ है।) वीर विनोद मे माघ सु० ४



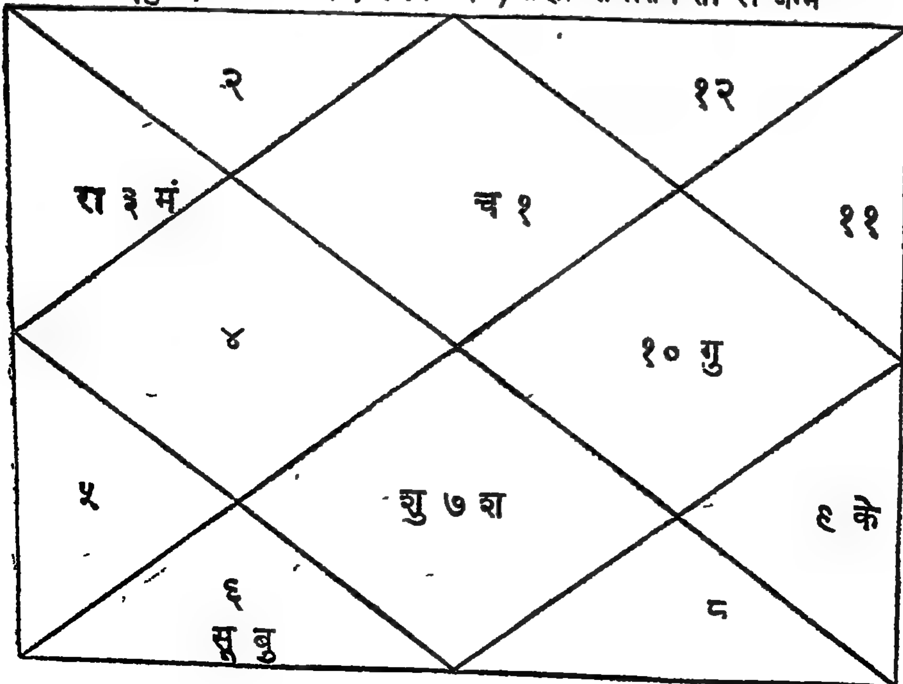
राणा जगतसिंघ री जनमकुंडलो

सम्वत १६६४ भादवा सुद२ शुक्रे हस्त नक्षत्र रात्र शेष घटी २ (शुक्र०, अगस्त १४, १६०७ ई०) राणा जगतसिंघ री जन्म



राणा राजसिंघ री जन्मकुंडली

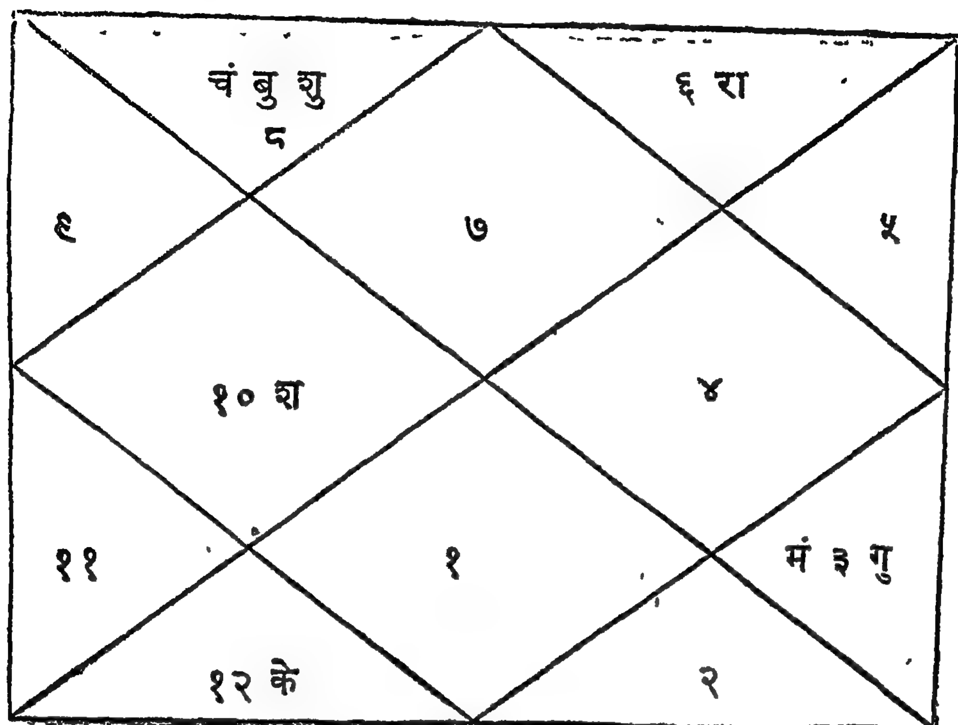
सम्वत १६६८ काती वदी २ गुरौ उदयात २४ रात्रगत घटी २/५१ अ ७ हर्षण १२ (गुरु०, सितम्बर २४, १६२९ ई०) राणा राजसिंघ सा री जन्म



राजा मानसिंघ कछावा री जन्मकुंडली

सम्वत १६०७ पोह वदी १३ शनो उ: ४८ (शनि०, दिसम्बर ६, १५५० ई०)

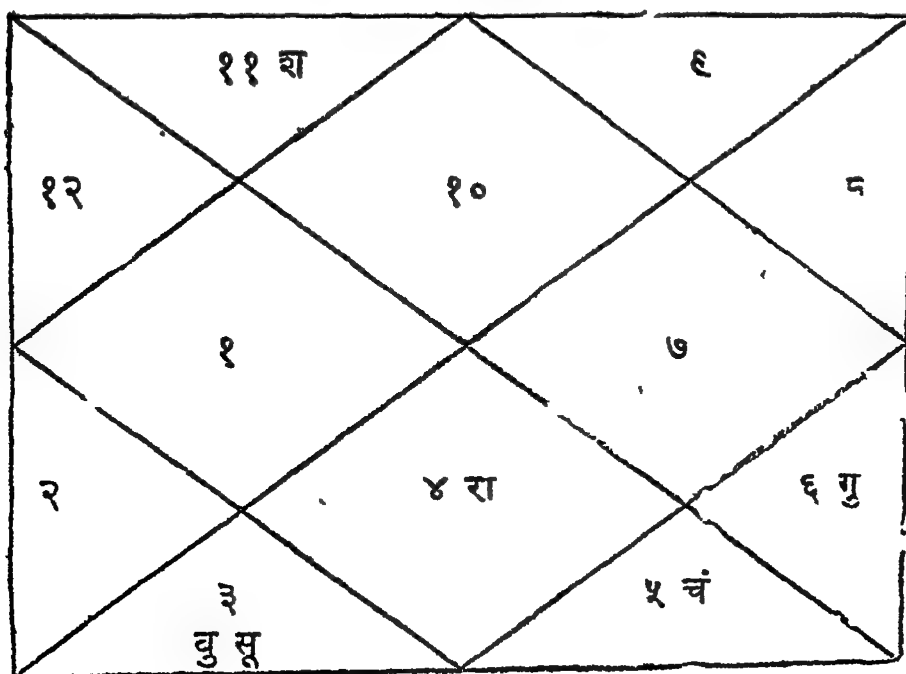
राजा मानसिंघ रो जन्म



राजा माधोसिंघ कछावा री जन्मकुंडली

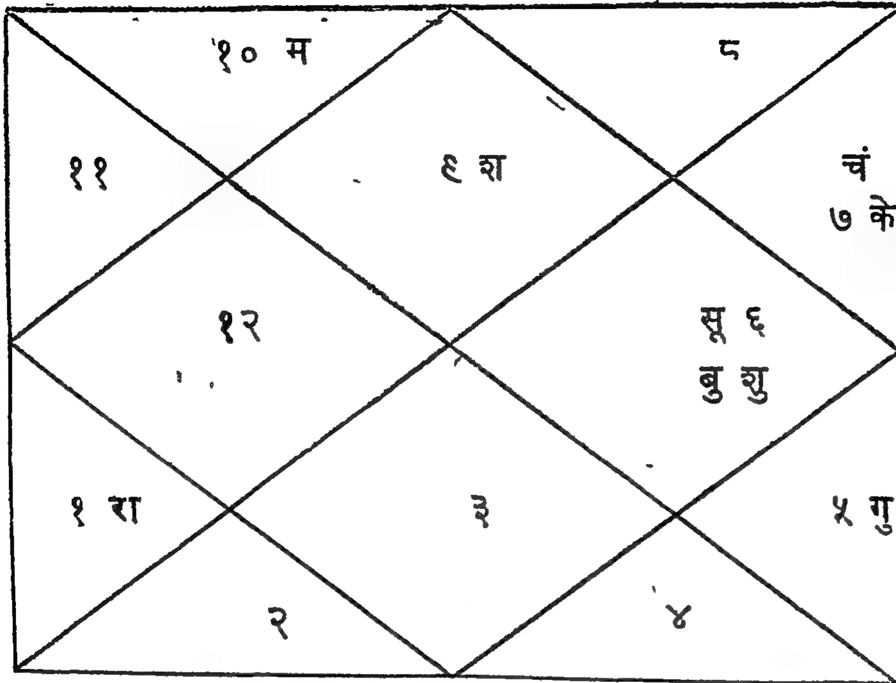
सम्वत १६१० आसोज सुद ५ (मगल०, सितम्बर १२, १५५३ ई०)

माधोसिंघ सा रो जन्म



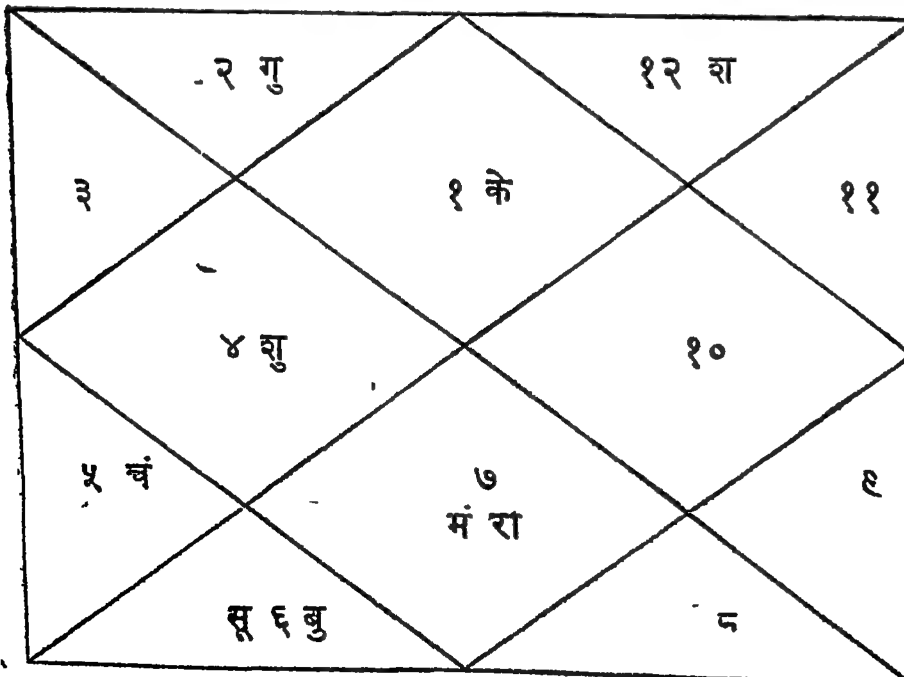
राजा भावसिंघ कछावा री जन्मकुंडली

सम्वत १६३३ आसोज वद २ उदयात १३ (सोम०, सितम्बर १०, १५७६ ई०)
राजा भावसिंह रौ जन्म



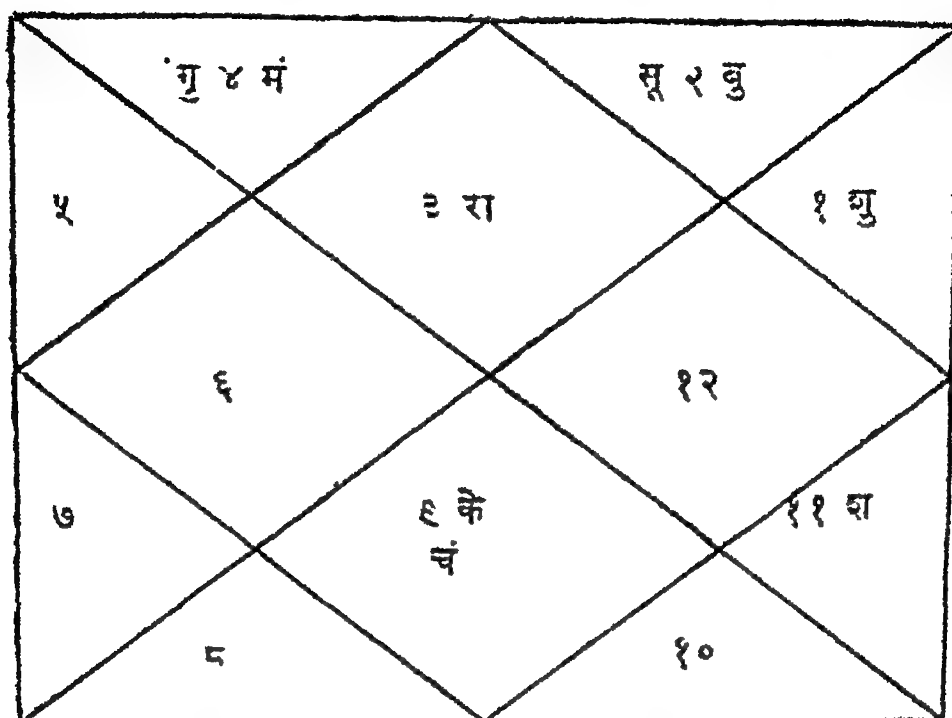
राजा महासिंघ कछावा री जन्मकुंडली

सम्वत १६४२ आसोज वद १२ शनौ उदयात ३५/४९ सू ५/१०/५२/५४ ल०/२७/१२/९
चं. ४/१६/४३/४५ (शनि०, सितम्बर ११, १५८५ ई०) राजा महासिंह री जन्म



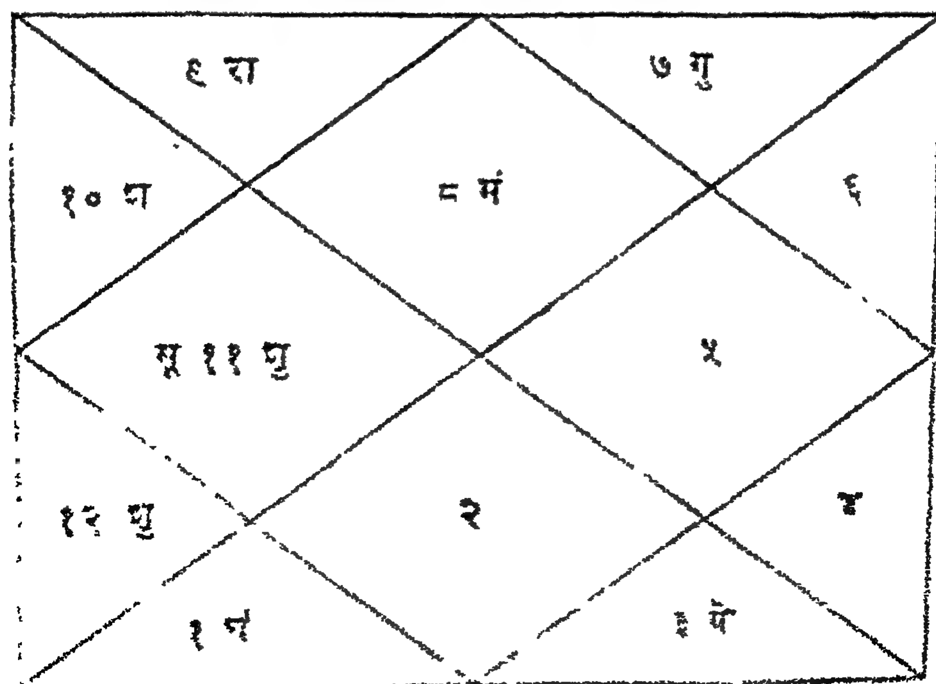
मिरजा राजा जैसिंघ रो जन्मकुंडली

सम्वत १६६८ प्रथम आषाढ वद १ शुक्रे ज्येष्ठा नक्षत्रे उदयात ३/२० सू १/१७/४०/३० ल २/७/२८/४ (शुक्र०, मई १७, १६११ ई०) राजा जैसिंघ रो जन्म



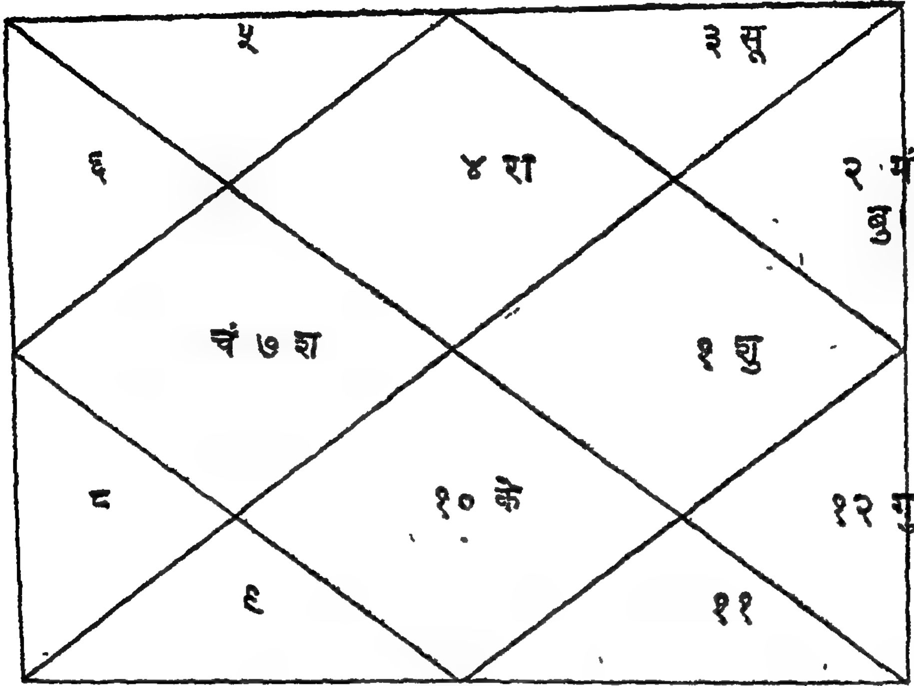
राजा कीरतसिंह रो जन्मकुंडली

सम्वत १६९४ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रे उदयात ४५ (शुक्र०, फरवरी ९, १६३८ ई०) मिरजा राजा जयसिंह रहे पुत्र कीरतसिंह रो जन्म



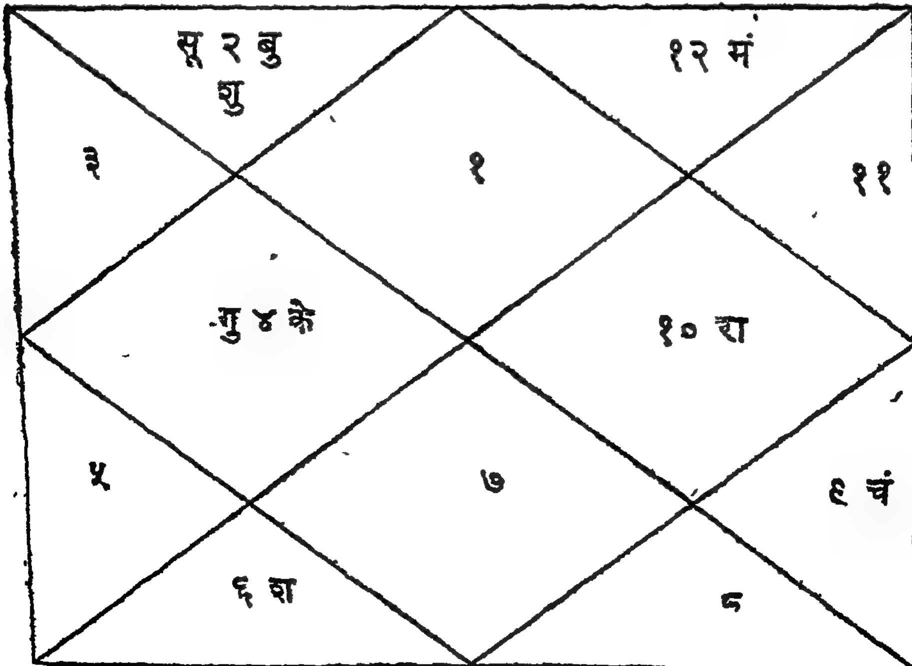
राव रतन हाड़ा री जन्मकुंडली

सम्वत १६२८ जेठ सुद १० रवौ उदयात ११ (रवि० जून ३, १५७१ ई०)
राव रतन रौ जन्म



राव माधोसिंघ हाड़ा री जन्मकुंडली

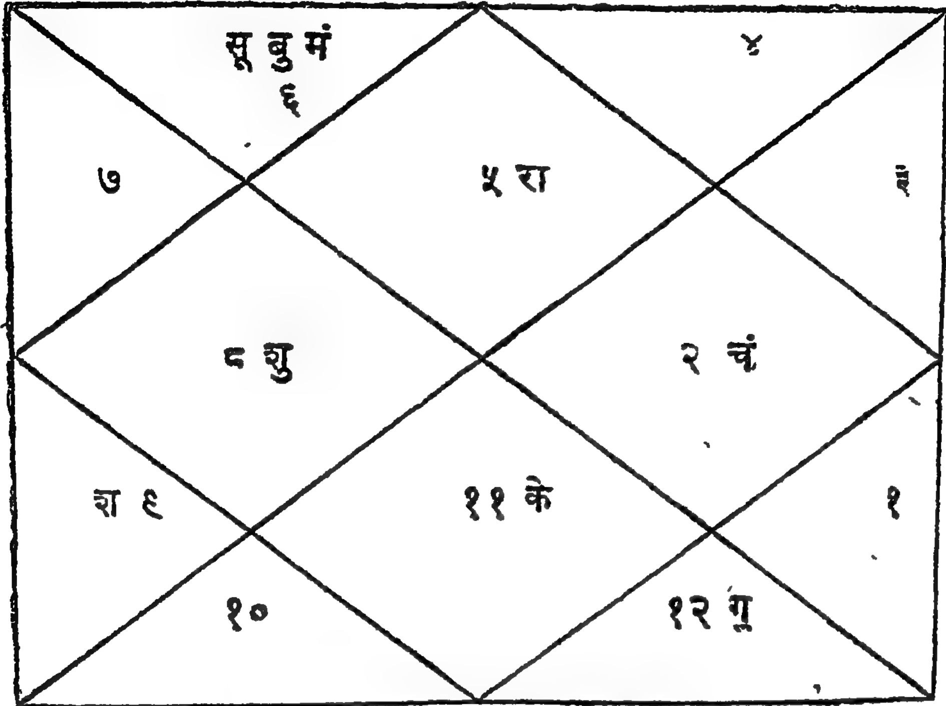
सम्वत १६५६ जेठ वद ३ गुरौ उदयात ५५ (गुरु०, मई ३, १५९९ ई०) रावरत्न गृहे
पुत्र माधोसिंघ हाडा रौ जन्म



हाड़ा सत्रुसाल री जनमकुंडली

सम्वत १६६४ कातीवद ३ सोमे उदयात ५/५७ (सोम०, सितम्बर २८, १६०७ ई०)

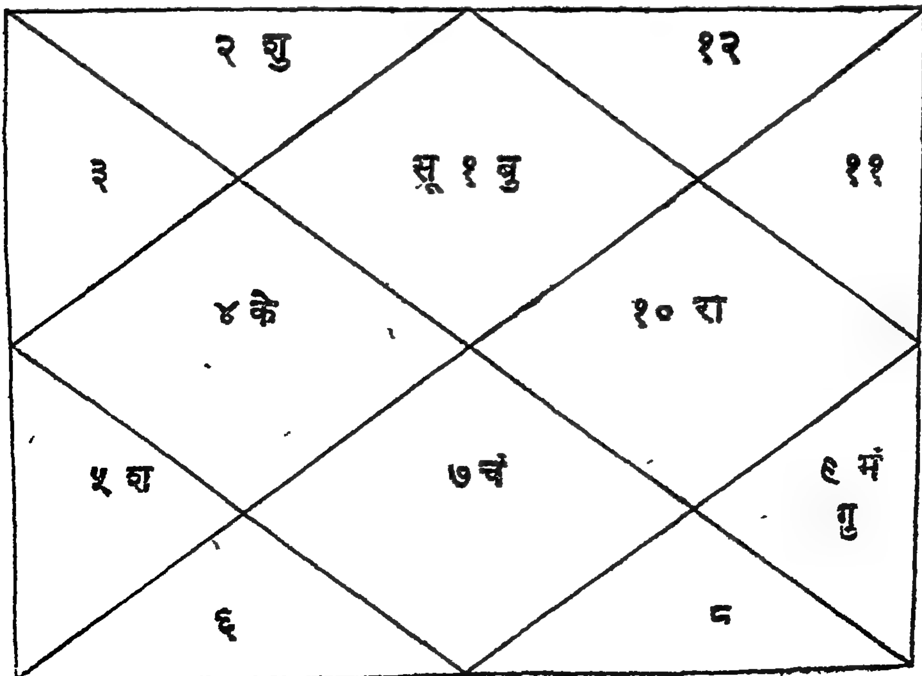
राव सत्रुसाल हाड़ा री जन्म



रावळ लूणकरण री जन्मकुंडली

सम्वत १५२४ वैशाख सुदी १४ (गुरु०, अप्रेल २८, १४८५ ई०)

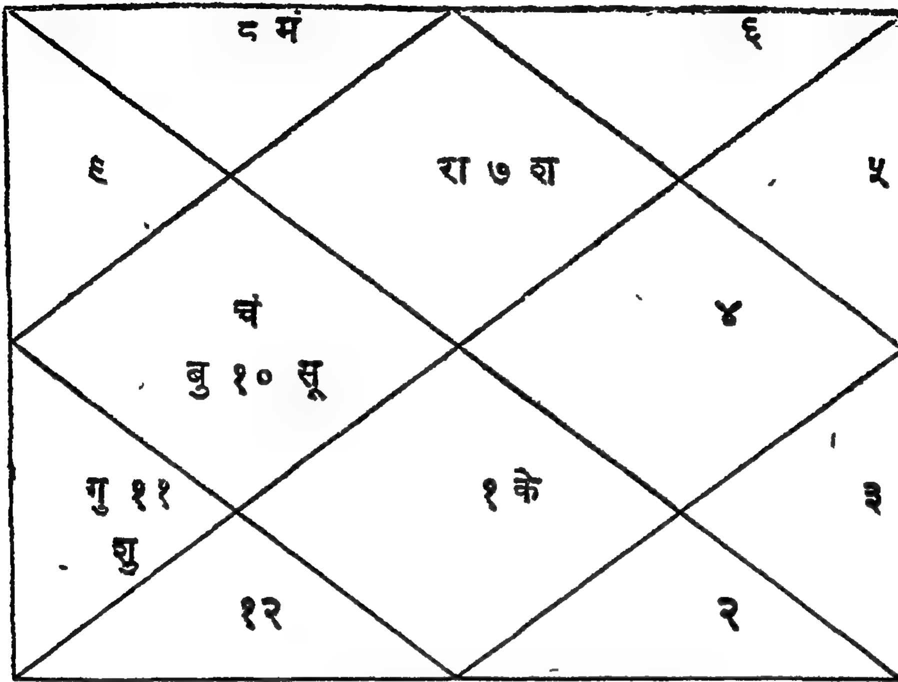
रावळ लूणकरण भाटी (जैसलमेर) री जन्म



रावळ मालदे री जन्मकुंडली

सम्वत १५६८ माह वद ७ रात्रिगत १७ रा (शनि०, जनवरी १०, १५१२ ई०)

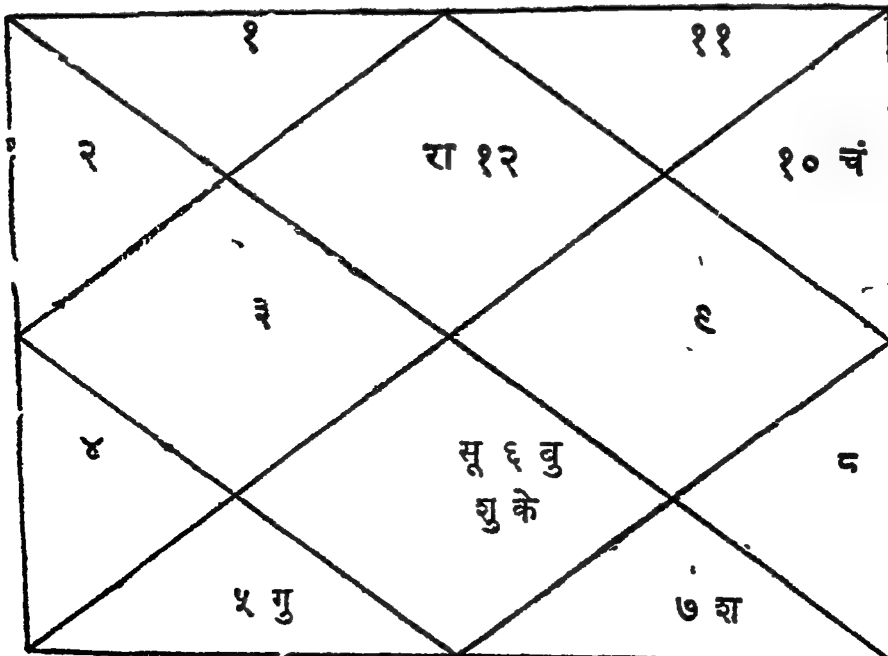
मालदे रौ जन्म



रावळ हरराज री जन्मकुंडली

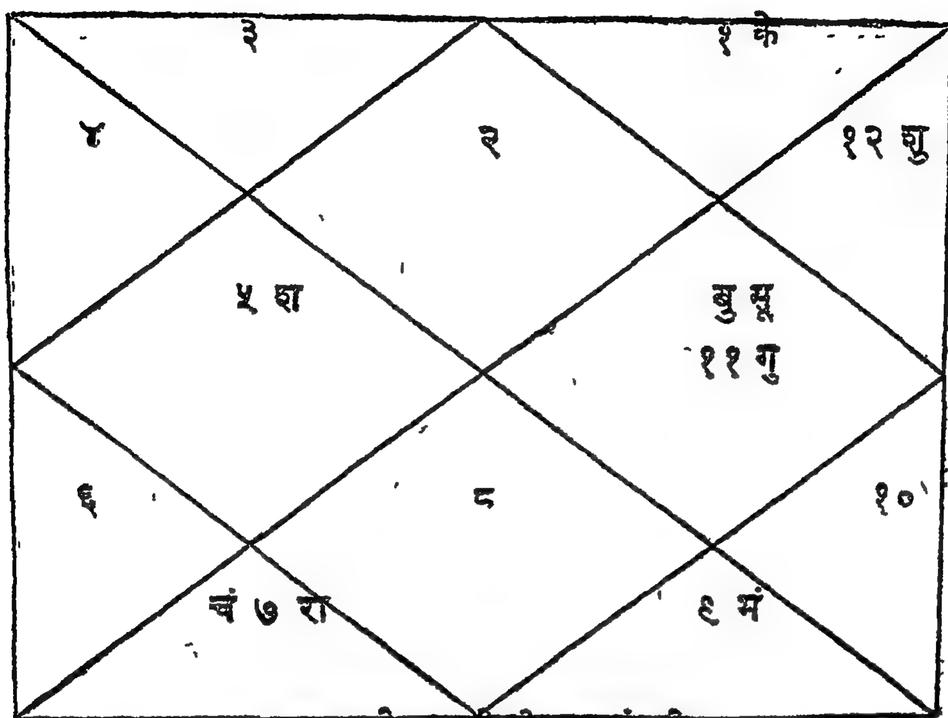
सम्वत १५९८ आसोज सुद ८ (मगल०, सितम्बर २७, १५४१ ई०)

रावळ हरराज भाटी रो जन्म



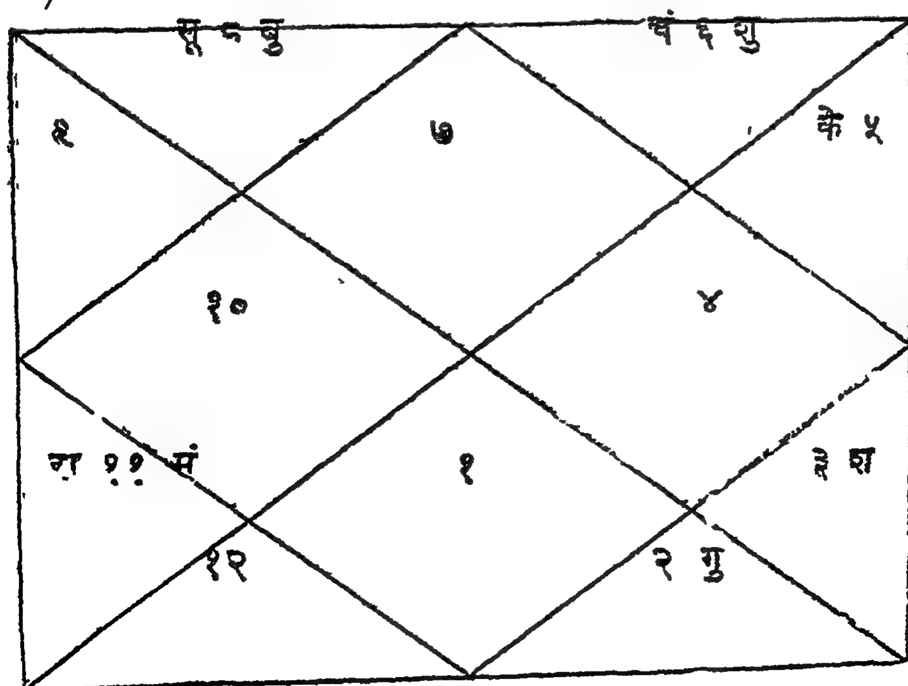
रावळ मनोहरदासरी जन्मकुंडली

सम्वत १६५१ चैत्र वद ६ बुधे (बुध०, फरवरी १६, १५६५ ई०)
रावळ मनोहरदास री जन्म



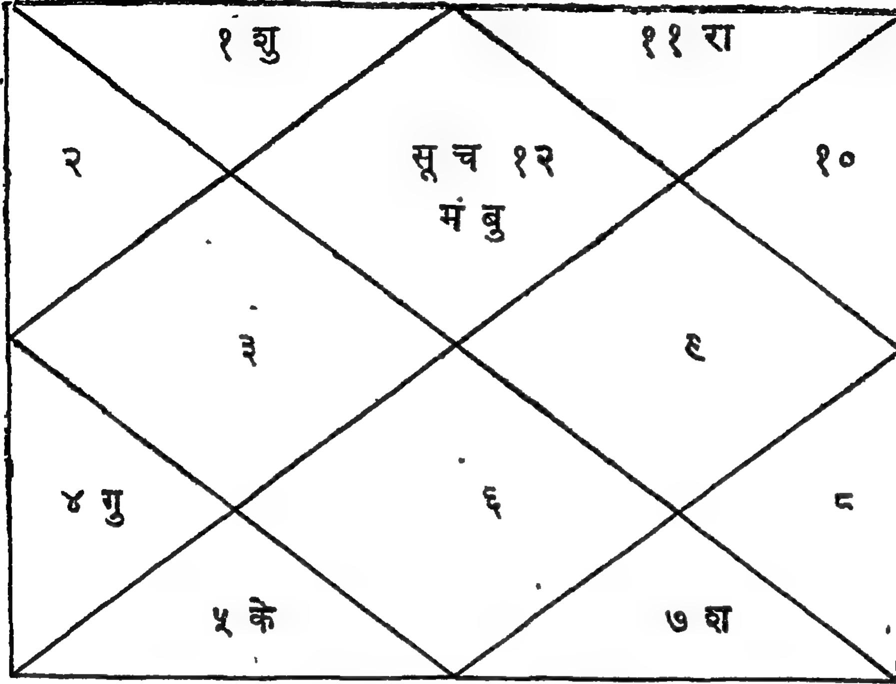
रावळ भीम भाटी री जन्मकुंडली

सम्वत १६१८ मार्गशीर्ष वदि ११ (सोम०, नवम्बर ३, १५६१ ई०) रावळ भीम भाटी री जन्म



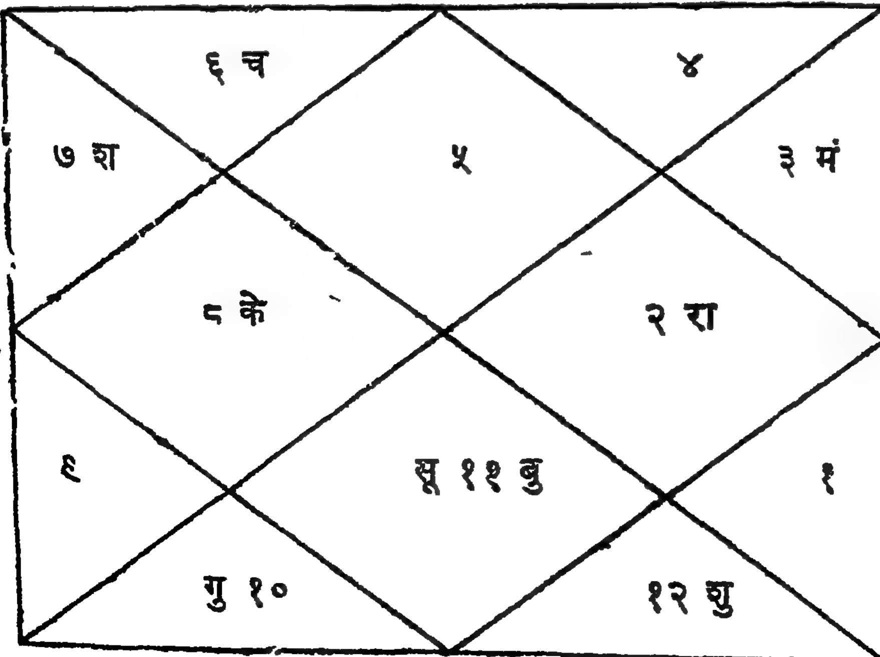
साहजी भोंसल री जन्मकुंडली

सम्वत १६५५ फाल्गुण वद १४ गुरु रात्रिगत २७ सूर्य ११/……… ………ल ११/०
(गुरुवार, मार्च १५, १५९९ ई०) साहजी भोंसला री जन्म



शिवाजी मराठे री जन्मकुंडली

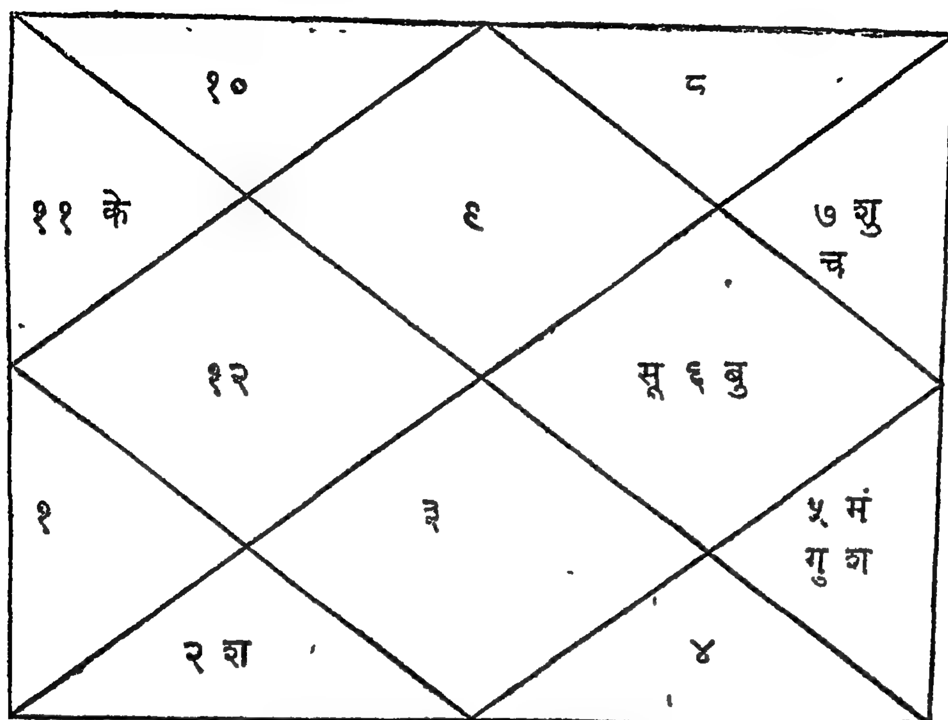
सम्वत १६८६ फाल्गुण सुद ३ रात्रिगत घटी १ पल समये (शुक्र० फरवरी ५, १६३० ई०)
शिवाजी री जन्म



बुंदेला जोगराज री जन्मकुंडली

सम्वत १६४५ आसोज सुद ७ उदयात (मंगल०, सितम्बर १७, १५८८ ई०)

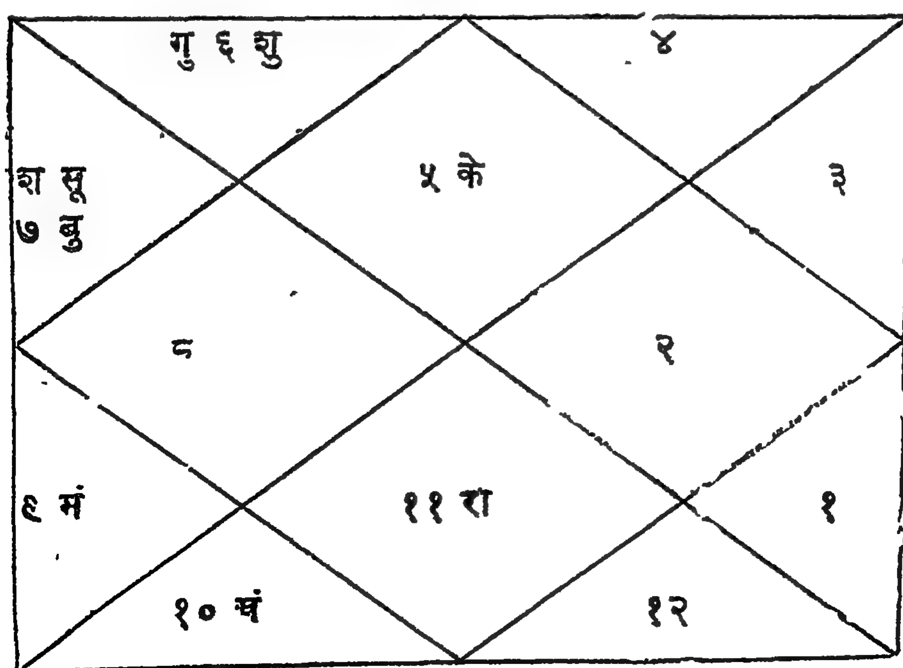
बुंदेला जोगराज री जन्म



बादशाह अकबर री जन्मकुंडली

सम्वत १५९९ काती सुदी ६, शनी रात्रिगत घटी २१/९ सूर्य (शनि०, अक्टूबर १४, १५४२ ई०)

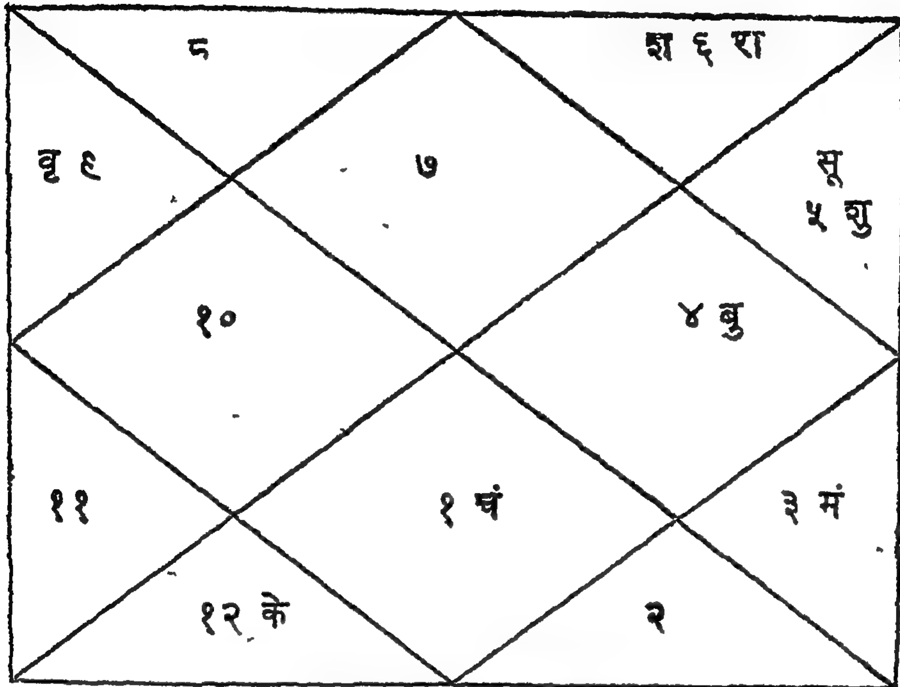
बादशाह अकबर री जन्म



बादशाह जहांगीर री जन्मकुंडली

सम्वत १६२६ आश्विन वद ५ बुधे (बुध०, अगस्त ३१, १५६९ ई०)

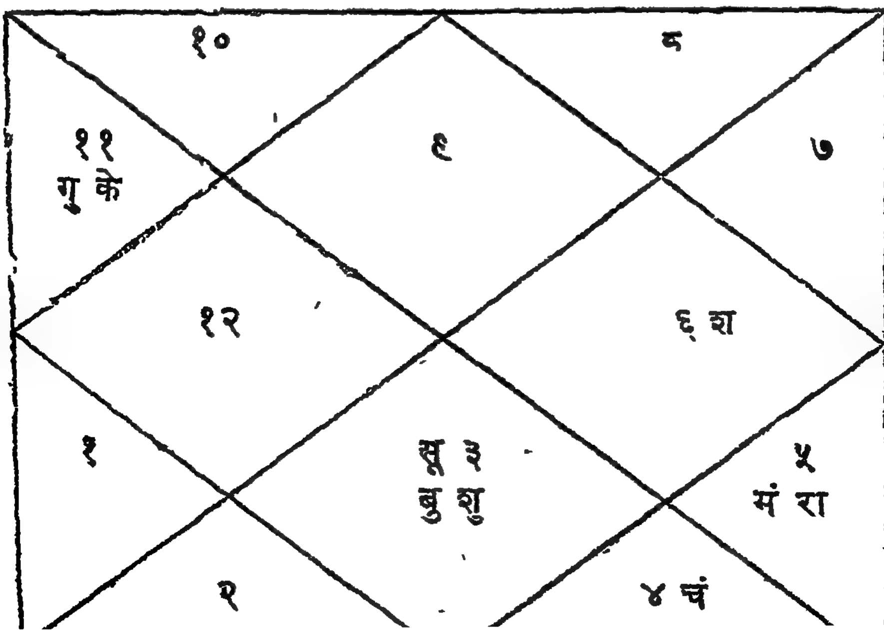
पातसाह जहांगीर री जन्म



शाह मुराद री जन्मकुंडली

सम्वत १६२७ आसाढ सुद ४ बुधे पुष्य नक्षत्रे उदयात (बुध०, जून ७, १५७० ई०)

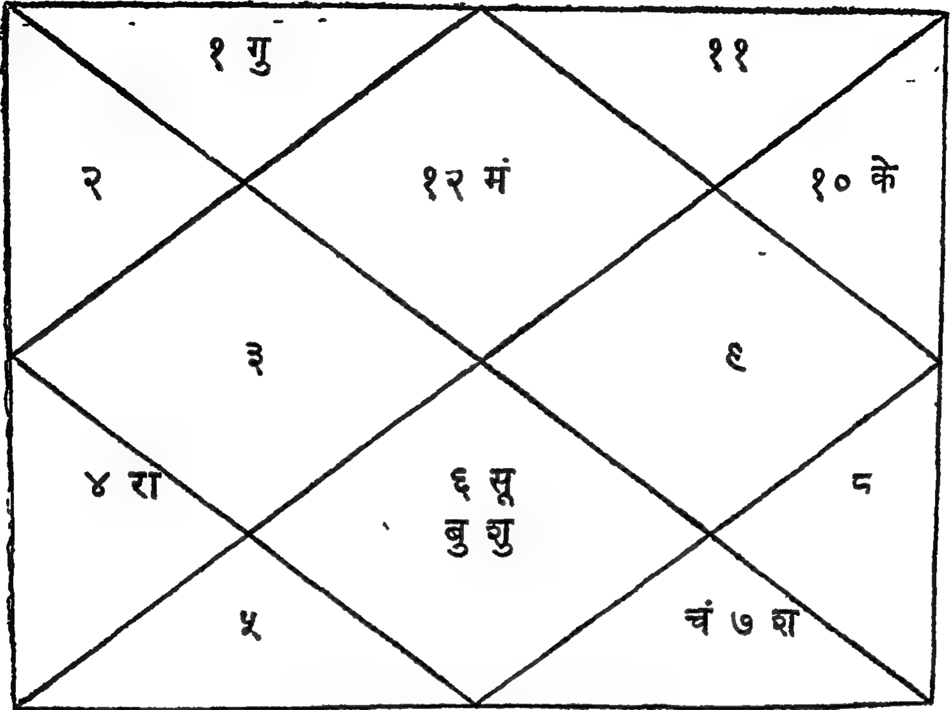
शाह मुराद री जन्म



दीनशाह री जन्मकुंडली

सम्वत १६२६ आश्विन सुद २ भौमे (मंगल०, सितम्बर ९, १५७२ ई०)

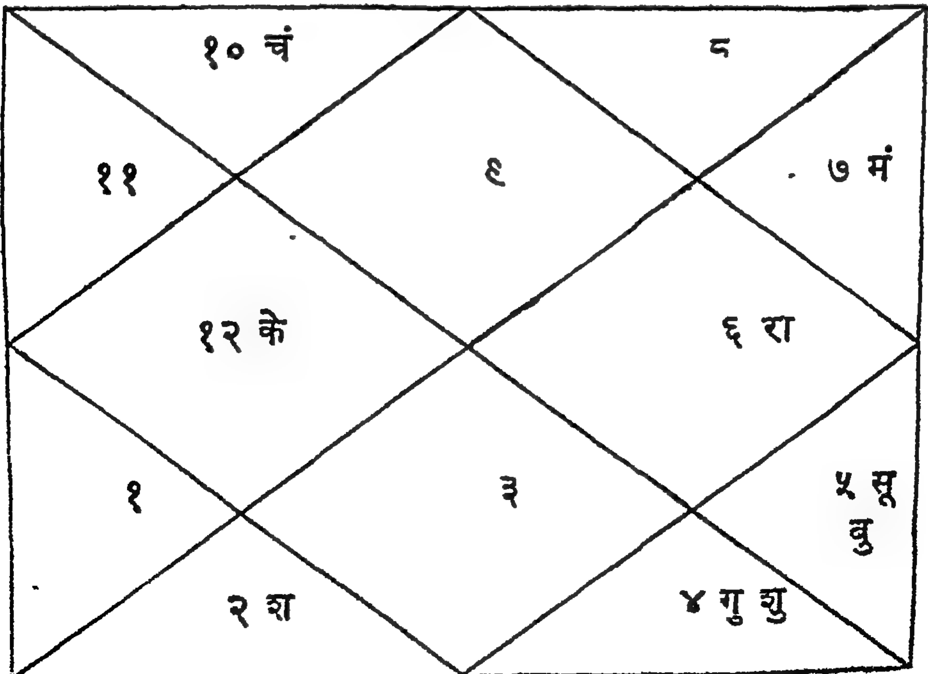
दीनशाह री जन्म



सुरतांण खुसरू री जन्मकुंडली

सम्वत १६४४ श्रावण सुद १२ (रवि०, अगस्त ६, १५८७ ई०)

खुसरू सुरतांण री जन्म



सुरतांण खेजड़ले री जनमकुंडली

सम्वत १६११ काती सुदी ४ बुधवार (सन् १५५४ ई०)

सुरतांण खेजड़ले रो जन्म

१० मं

८ सू बु शु

११ के

९ चं

७

१२

६ गु

१

३

५ रा

२ श

४

बादशाह शाहजहां री जन्मकुंडली

सम्वत १६४८ माघ सुदी २, गुरु [illegible] (जुलूस [illegible] १५९२) बादशाह शाहजहां री जन्मी (बादशाहनामा, [illegible] पृष्ठ [illegible] में माघ सुदी [illegible] दिया है)

७

५

८ गु

६

४

के ९ शु

श ३ रा

१० बु सू चं

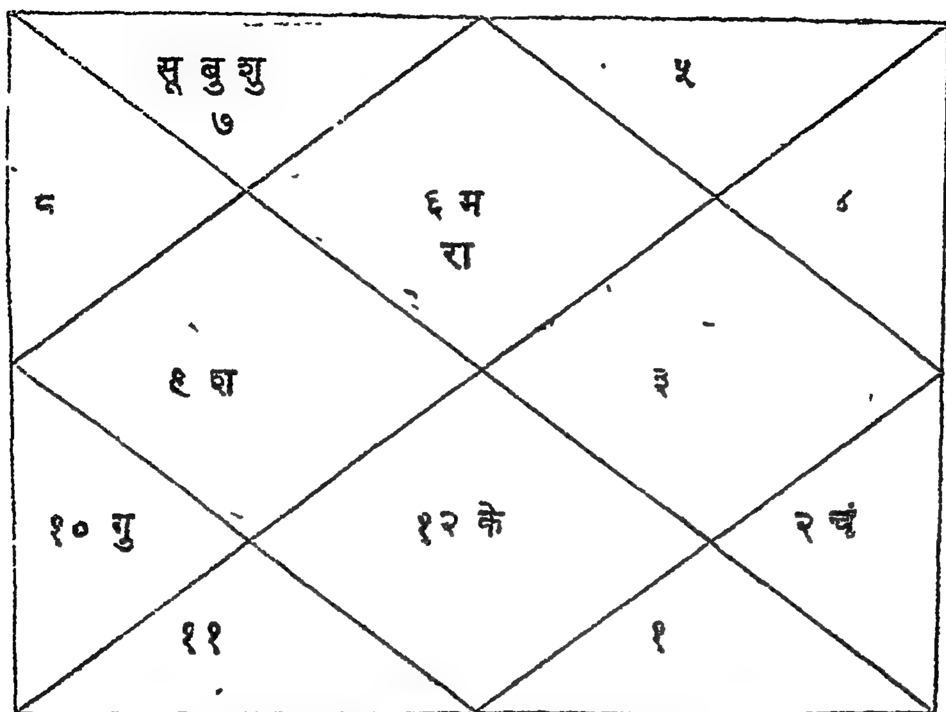
१२ मं

२

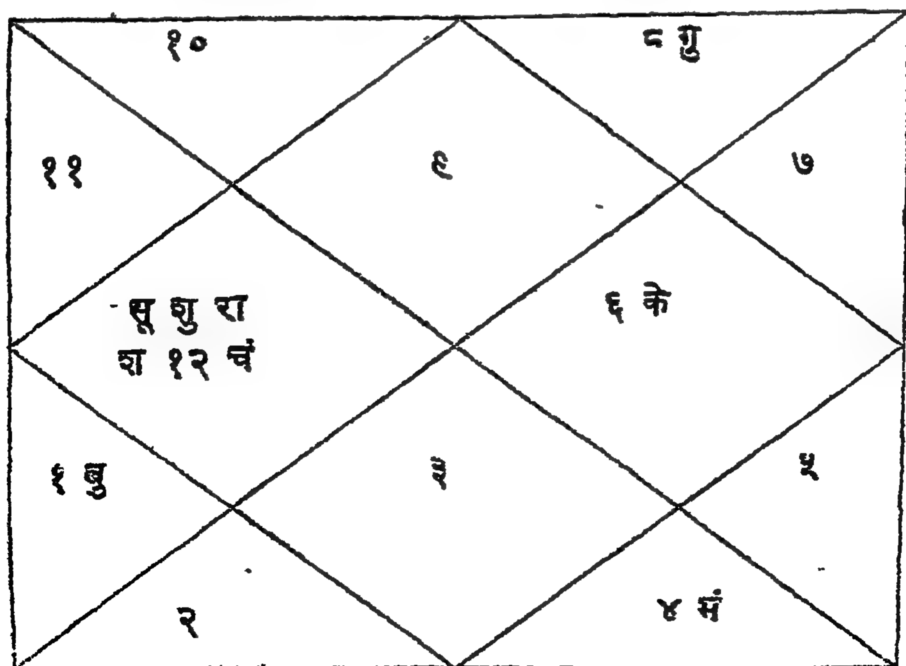
११

१

शहरयार री जनमकुंडली
सम्वत १६६२ मार्गशीर्ष वद ३ शनै (१६०५ ई०) जहांगीर गृहे
सहरियार री जन्म



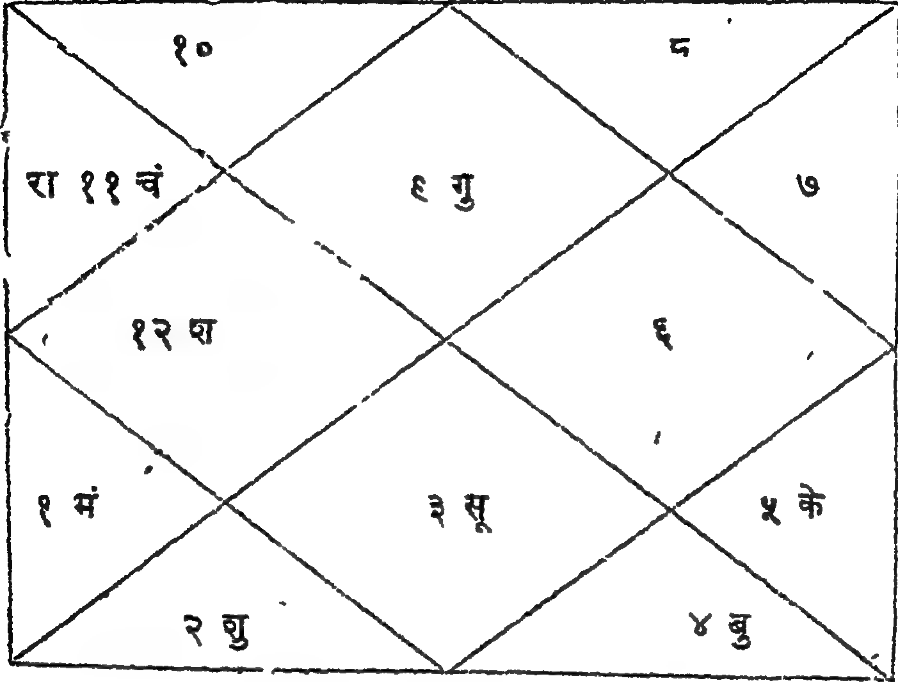
बादशाह दाराशिकोह री जन्मकुंडली
सम्वत १६७१ चैत्र वद अमा० रवौ (रवि०, मार्च १९, १६१५ ई०)
बादशाह दाराशिकोह री जन्म (उस दिन सूर्य ग्रहण हुआ था)



शाह सूजा री जन्मकुंडली

सम्वत १६७३ श्रावण वद ३ शनी (शनि०, जुन २२, १६१६ ई०)

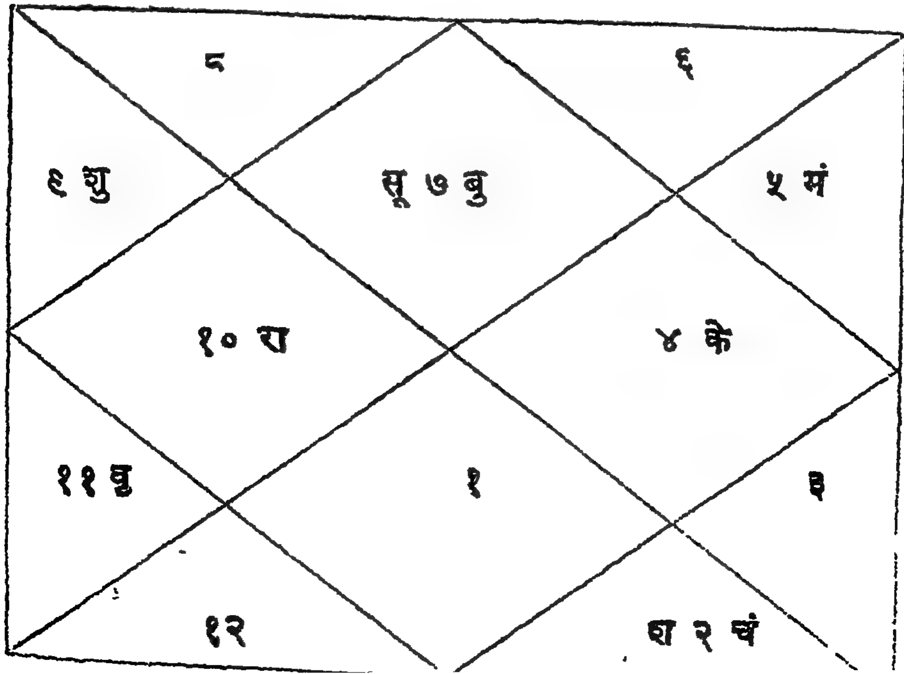
शाह सूजा री जन्म



बादशाह औरंगजेब री जन्मकुंडली

सम्वत १६७५ मार्गशीर्ष वद १ शनी ५६/६ सू ६/२४ ल ६/१५/२०

(शनि०, अक्टूबर २४, १६१८ ई०) बादशाह औरंगजेब री जन्म



मुरादबक्स री जन्मकुंडली

मुरादबक्स री जन्म

बु ७ बु ७ शु

श ५ श ५ चं

८

रा ६ सं ६ मं
गु सू गु सू

४ ४

९ ९

३ ३

१० १०

१२ के १२ के

२ २

११ ११

१ १

नवाब ... री जन्मकुंडली

४ ४

रा २ सं २ चं

५ ५

३ ३

१ १

६ मं ६ मं

१२ श १२ श

७ शु ७ शु

बु ६ बु ६ गु

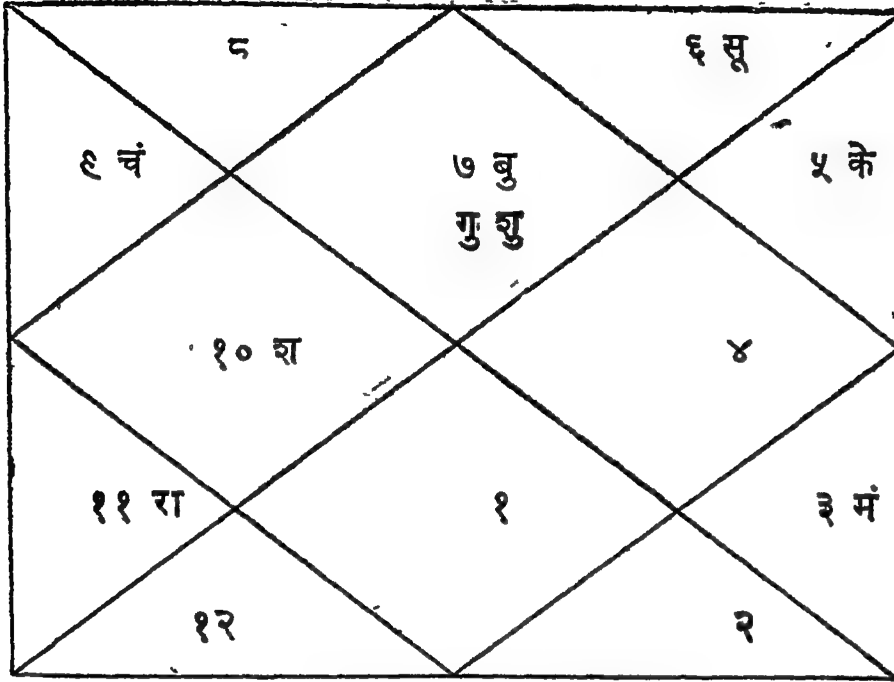
११ ११

के ८ के ८ सू

१० १०

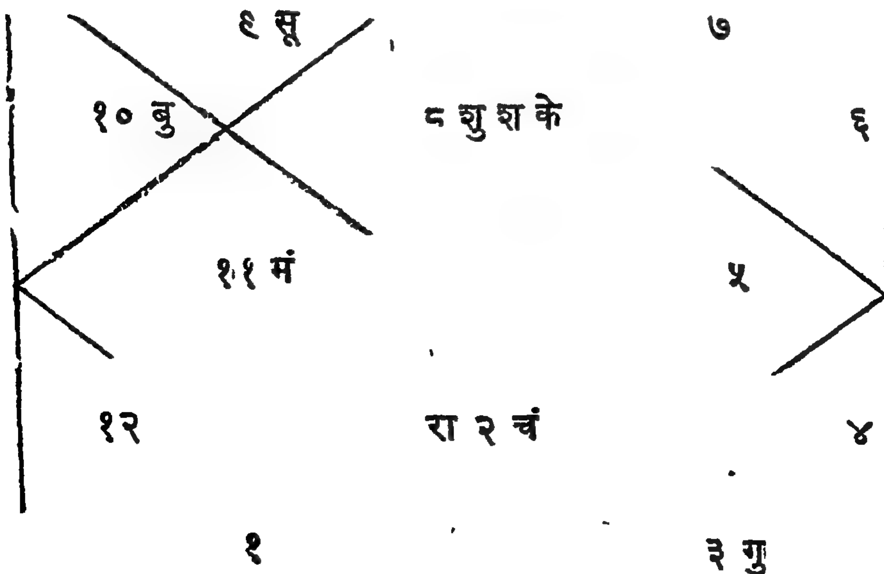
खानेजहां पठाण री जन्मकुंडली

सम्वत १६३१ आश्विन सुद ३ शनी उदयात घटी ४ सू ५/२१
(शनि०, सितम्बर १८, १५७४ ई०) खानेजहां पठाण रौ जन्म



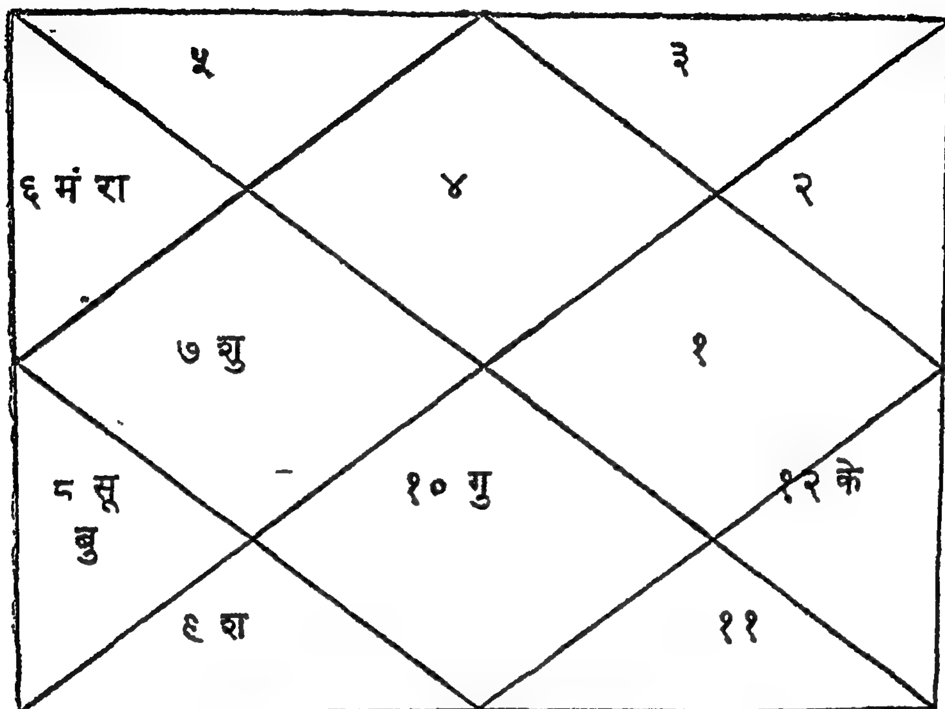
आसफ खां री जन्मकुंडली

सम्वत १६३१ पोह (पोष) सुद ६ गुरौ (गुरु०, दिसम्बर ३०, १५७४ ई०)
आसफ खां रौ जन्म



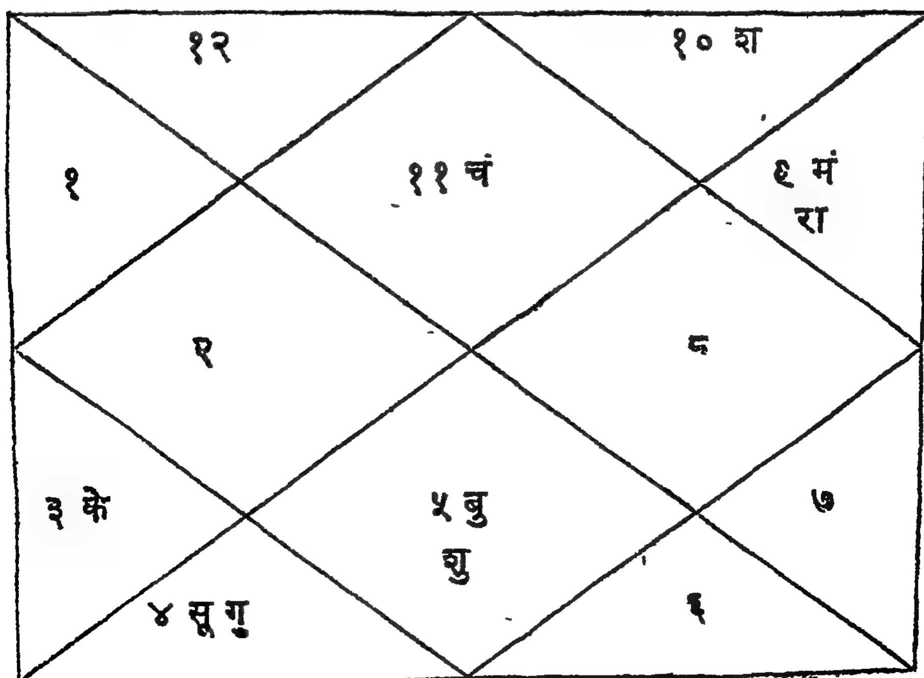
शायस्ताखां री जन्मकुंडली

सम्वत १६६२ पोह सुद ७ (शुक्र०, दिसम्बर ६, १६०५ ई०)
शायश्ता खां री जन्म



दुर्गादास आसकरनोत री जन्मकुंडली

सम्वत १६९५ द्वितीय श्रावण सुद १४, भौमे उदय ३१/३८ धनिष्ठा ६०/सूर्य ४/११/५२/४७ लग्न १०/१३/५९/१ दुर्गादास आसकरनोत री जन्म



गांवों के पट्टों व जागीरदारों की पीढियों की विगत

[खांप करमसोतां रै ठिकाणां री विगत]

गांव-खींवसर— (राव जोधा का पुत्र करमसी जिसके वशज करमसोत)

पट्टे री विगत :-	रेख कदीम	रेख मोजूदा
खींवसर वास वड़ो (४)	४५००)	४५००)
लुणावास	१०००)	१०००)
ताडावास	१०००)	१०००)
अखावास	३००)	३००)
रतनावास	१५०)	०
काटीयो	१४००)	१४००)
अंबावास	२५०)	०
केलणसर	२००)	०
खीयावास	१५०)	०
निरभुवास	१५०)	०
विकरणवास	३००)	०
वीरावास (खुर्द)	४५०)	०
माहलोवास	१५०)	०
महेसपुरो	५००)	५००)
नारसुओ वडो (३)	९००)	९००)
नीलावास	६००)	६००)
हरनाथपुरो गुडो	२००)	२००)
बीरावासणी	१००)	१००)
जोरावरपुरो	६००)	६००)
रांणावास	३००)	०
आसावास	१०००)	०
गेमलियावास	४००)	०
गोदावास	२००)	०
छीकरण	३००)	०
भलडां रो वास	२००)	०
बीरावास	१०५०)	१०५०)
	१६३५०)	१२१५०)

पीढियें:— ३. पंचायण करमसी रो (पट्टे खीवसर) ४. महेसदास ५. हरदास
६. दयालदास ७. भीवसिंघ ८. हरनाथसिंघ ७. ऊदैसिंघ १०. जोरा-

वरसिंघ ११ करणसिंघ १२. वेरीसाल १३. ....
१४. बखतावरसिंघ १५. .... १६. सादूळसिंघ

गांव - भोजावास— रेख कदीम २०००) रेख मौजूदा २०००)
प० जोधपुर

पीढियेः– (पांती आध में) ९. सभूसिंघ हरनाथसिंघोत[1] १०. अभेसिंघ ११. सेरसिंघ
१२ पहाड़सिंघ १३. भारथसिंघ १४. मोतीसिंघ

पांती आध मे:–११. बखतावरसिंघ अभेसिंघोत १२. रतनसिंघ १३. अमरसिंघ

गांव - घणारी बड़ी (आधी)—

पीढियें:– १०. दोलतसिंघ सम्भुसिंघोत[2] ११. माधोसिंघ १२. बुधसिंघ १३. थानसिंघ
१४. जोगीदास

गांव - पांचोड़ी— रेख कदीम ३०००) रेख मौजूदा ३०००)
प० जोधपुर

गांव - बोंमणवाड़ो— रे. क. ६२५) रे. मौ. ६२५)
प० जोधपुर

गांव - साठीको— रे. क. ५००) रे. मौ. १००)
प० जोधपुर

पीढियें:– ९. उदेसिंघ, हरनाथसिंघोत[3] १०. जोरावरसिंघ ११. करणसिंघ
१२. दुरजणसिंघ १३. रामसिंघ १४. लिछमणसिंघ

गांव - आचीणो — रे. क. १९००) रे. मौ. १९००)
प० जोधपुर

गांव–हमीराणो (पट्टै) रे. क. ५००) रे. मौ. ०
प० जोधपुर

पीढियें:– ८. हरीसिंघ, भीवसिंघोत[4] ९. जसकरण १०. पदमसिंघ ११. रायसिंघ
१२. जवानसिंघ १३. इंदरसिंघ १४. लालसिंघ १५. हणवतसिंघ

गांव - देऊ — रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार नागोर

पीढियें– ८. फतेहसिंघ भीवसिंघोत[5] ९. लखधीरसिंघ १०. अनोपसिंघ ११. कीरतसिंघ
१२. सेरसिंघ १३. ग्यानसिंघ १४. बखतावरसिंघ

---

१. ठिकाने खीवसर के (८) ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र।
२ ठिकाने भोजावास के (९) ठाकुर संभुसिंह का पुत्र।
३ ठि खीवसर के (८) ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र।
४. ठि. खीवसर के (७) ठाकुर भीवसिंह का पुत्र।
५. ठि खीवसर के (७) ठाकुर भीवसिंह का पुत्र।

ांव - गोदण— रे. क. ५) रे. मौ. ५)
सिरकार नागोर

पीढियें:- (पाती आध मे) ७. भगवानदास दयालदासोत[1] ८. मावसिंघ ९. जेतसिंघ
१०. अनोपसिंघ ११. दानसिंघ १२. सालमसिंघ १३. छतरसिंघ
१४. सुमेळसिंघ

ांव - टाळो माडपुरो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:- (पांती आध मे) ७. केसरसिंघ दयालदासोत[2] ८. मेगराज ९. सिरदारसिंघ
१०. जालमसिंघ ११. किलांणसिंघ १२. ऊरजणसिंघ १३. विजेराज
पांती आध में:- १०. हटीसिंघ सिरदारसिंघोत[3] ११. पनेसिंघ १२. दलेलसिंघ
१३. रावतसिंघ

ांव - चटाळियो— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
प० जोधपुर

पीढ़ियें:- ६. दलपत हरदासोत[4] ७. पिरथीराज ८. प्रतापसिंघ ९....................
१०. रायसिंघ ११. जोरावरसिंघ

ांव - सोयलो— रे. क. १८७५) रे. मौ. १८७५)
प० जोधपुर

पीढियें:- १२. ईसरीसिंघ जोरावर सिंघोत[5] १३. भीवसिंघ १४. मगलसिंघ
१५. विजेसिंघ

ांव - नागड़ी—

पीढिये:- ७. पीरथीराज दलपतोत[6] ८. महासिंघ ९. सिवसिंघ १०. सुलतानसिंघ
११. सेरसिंघ १२. रिधकरण १३. सांवतसिंघ

ांव - खारी — रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:- ८ लिखमीदास पिरथीराजोत[7] ९. जेतसिंघ १०. भवानीसिंघ ११. चतरसिंघ
१२. बेरीसाल १३. प्रभुदान १४. बभूतसिंघ

गांव - भदवासो (आधो) — रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार नागोर

---

१ ठि. खींवसर के (६) ठाकुर दयालदास का पुत्र।
२. ठि खींवसर के (६) ठाकुर दयालदास का पुत्र।
३. ठिकाने टालो माडपुरा के (९) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र।
४. ठि खीवसर के (५) ठाकुर हरदास का पुत्र।
५. ठि. चटालियो के (११) ठाकुर जोरावरसिंह का पुत्र।
६. ठि. ,, ,, (६) ठा० दलपत का पुत्र।
७. ठि. ,, ,, (७) ठा० पिरथीराज का पुत्र।

पीढियें:- ११. वखतसिंघ भवानीसिंघोत[1] १२. बुधसिंह १३. घनसिंह

गांव - गिरावड़ी— रे. क. २०००) रे. मौ. ६३७॥)
सिरकार नागोर

पीढियें:- ६. जगतसिंघ लिखमीदासोत[2] १०. सवाईसिंघ ११. हिमतसिंघ
१२. जालमसिंघ १३. गजसिंघ

गाँव - हरीमो— रे. क ३०००) रे. मौ. १५००)
सिरकार नागोर

पीढियें:- १०. सुरतसिंघ, जगतसिंघोत[3] ११. वाघसिंघ १२. अमानसिंघ
१३. जगरांमसिंघ १४. देवीसिंघ

गांव - जिदास — रे क. १०००) रे. मौ १०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:- १०. सिरदारसिंघ जगतसिंघोत[4] ११. हिंदुसिंघ १२. अनाडसिंघ
१३. माधोसिंघ

गाँव सीगड- रेख कदीम ४०००) रेख मौजूदा ४०००)

पीढियें- ५.................महेसदासोत[5] ६. द्वारकादास ७.............. ८. जगरूपसिंघ
९. हरभाण १०. सांवतसिंघ ११. तेजसिंघ १२. सालमसिंघ १३. अमांनसिंघ
१४. सूरसिंघ

गाँव कादर पुरो (आधो)- रे. क. १५००) रे. मौ. १५००)
सिरकार नागोर

पीढियें- ११. दलेलसिंघ सांवतसिंघोत[6] १२. मानसिंघ १३. चतुरसिंघ
१४. लिछमणसिंघ

गांव थळाजू- रे. क. १०००) रे मौ. १०००)
सिरकार नागोर

पीढियेः- ८. अभेराम कीरतसिंघोत ९. सतीदांन १०. सुजाणसिंघ ११. जेतसिंघ
१२. प्रतापसिंघ

गांव बुह (आध)- रे. क. ३०००) रे. मौ. ३०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:- ३. मानसिंघ पचायणोत[7] ४. ईसरदास ६. केसरीसिंघ ७. ऊदेसिंघ

---

१. गाव खारी के (१०) ठाकुर भवानीसिंघ का पुत्र ।
२. गांव खारी के (८) ठाकुर लिखमीदास का पुत्र ।
३. ठि. गिरावड़ी के (९) ठाकुर जगतसिंह का पुत्र ।
४. ठि० गिरावडी के (९) ठाकुर जगतसिंह का पुत्र ।
५ ठि० खीवसर के (४) ठाकुर महेसदास का पुत्र ।
६. ठि० सीगड़ के (१०) ठाकुर सावतसिंघ का पुत्र ।
७. ठि० खीवसर के (३) ठाकुर पचायण का पुत्र ।

८. कुसलसिंघ ९. प्रतापसिंघ १०. दोलतसिंघ ११. चांदसिंघ १२. सेरसिंघ १३. सादूलसिंघ १४. बभूतसिंघ

पांती आध में:– ११. सालमसिंघ दोलतसिंघोत[1] १२. नाहरसिंघ १३. सिवनाथसिंघ

गांव - आसरनडो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००) प० जोधपुर

पीढियें:– ४......................तेमाल पचाणोत ५. ईसरदास ६...................... ७. रुगनाथसिंघ ८...................... ९. जसकरण १०...................... ११. करणसिंघ १२...................... १३. जसवंतसिंघ

गांव - ऊस्तरां— रे. क. ४०००) रे. मौ. ४०००) प० जोधपुर

पीढियें:– ९. सिवदांनसिंघ साहबसिंघोत १०. बाकीदास ११. राजसिंघ १२. रिडमलसिंघ १३. मंगलसिंघ

गांव सांवतकुआे— रे. क. ५००) रे. मौ. ५००) प० जोधपुर

पीढियें:– १२. सरूपसिंघ राजसिंघोत[2] १३. ईसरीसिंघ

गांव ऊमरलाई (आधी)— रे. क. ५००) रे. मौ. ५००) प० सिवाणा

पीढियें:– ३. धनराज करमसिंघोत ४. नगराज ५. सांगो ६. प्रतापसिंघ ७. किसनसिंघ ८. संकरदास ९. गुमांनसिंघ १०. सुजांणसिंघ ११. सगतसिंघ १२. ग्यांनसिंघ

गांव - खारी— .... सिरकार जालोर

पीढियें:– ५. गणेसदास नगराजोत ६. विठलदास ७. रांमसिंघ ८. रिणछोडदास ९. सांवतसिंघ १०. किलांणसिंघ ११, मोकमसिंघ १२. संभुसिंघ १३. गुलाबसिंघ

गांव - रंगालो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००) सिरकार जालोर

पीढियें:– ८. चपराज रांमसिंघोत[3] ९. विजेसिंघ १०. सुरताणसिंघ ११. विसनसिंघ १२. सेरसिंघ १३. अनाडसिंघ १४. भारथसिंघ

गांव - सिराणी— रे. क. १२५०) रे. मौ. १२५०) सिरकार जालोर

पीढिये:– १२. सेरसिंघ विसन दासोत[4] १३. अमांनसिंघ १४. आईदांन

---

१. ठि बुह के (१०) ठाकुर दौलतसिंह का पुत्र ।
२ ठि. उस्तरा के (११) ठाकुर राजसिंह का पुत्र ।
३. ठि खारी के (७) ठा० रामसिंह का पुत्र ।
४. ठि. रंगाली के (११) ठा० विसनसिंह का पुत्र ।

गांव - छजालो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ७. माधोदास विठलदासोत[1] ८. बलुंतसिंघ ९. धनसिंघ १०. जालमसिंघ ११. सूरजमल १२..................

गांव - सोमडावास— रे. क. ५००) रे. मौ. ५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:– ९. सूरतसिंघ बलुंतसिंघोत[2] १०. चेनसिंघ ११. सोनसिंघ

गांव - गीगालो— ... .
प० जोधपुर

पीढियें:– ४. नेतसी धनराजोत ५. सुरतांणसिंघ ६. भोजराज ७. चुतरभुज ८. रिण-छोड़दास ९. जगरूपसिंघ १०. भारथसिंघ ११. भोमसिंघ १२. पेमसिंघ १३. छतरसिंघ

गांव - राजुवास— रे. क. ५००) रे. मौ. ५००)
सिरकार नागोर

पीढियें:– (पांती आध में) १२. अमरसिंघ भोमसिंघोत[3] १३ पीरथीसिंघ
पांती आध में:– १२. नरसिंघदास भोमसिंघोत[4] १३. नारसिंघ १४. राजसिंघ १५. महासिंघ

गांव - जाखणीयो— रे. क. १५००) रे. मौ. १०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:– ९. दीपसिंघ रिणछोड़दासोत[5] १०. अभुंतसिंघ ११. रुगनाथसिंघ १२. मूल-सिंघ १३. मोतीसिंघ १४. विजेसिंघ १५. मुकनसिंघ

गांव - बाळवो— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:– ७. खगारसिंघ भोजराजोत[6] ८. विजेसिंघ ९. राजसिंघ १०. सबलसिंघ ११. ऊदेसिंघ १२. खुमांणसिंघ

गांव - डांवरो— ....
प० जोधपुर

पीढियें:– ५. किलांणदास नेतसिंघोत ६. बीको ७. मोहणदास ८. विठलदास ९. सत्ती–

---

१. ठि. खारी के (६) ठाकुर विठलदास का पुत्र।
२. ठि. छजालो के (८) ठाकुर बलुंतसिंघ का पुत्र।
३. ठि. गीगालो के (११) ठाकुर भोमसिंघ का पुत्र।
४. ठि गीगालो के (११) ठाकुर भोमसिंह का पुत्र
५. ठि. गीगालो (८) ठाकुर रिणछोडदास का पुत्र
६. ठि. गीगालो के (६) ठाकुर भोजराज का पुत्र।

दांनसिंघ १०. प्रतापसिंघ ११. मानसिंघ १२. बुधसिंघ १३. परूपसिंघ १४. जसवंतसिंघ १५. मोतीसिंघ

गांव - बाहारो बडो— रे. क. १५००) रे. मौ. १५००)
प० जोधपुर

पीढिये:— (पांती आध में) ३. नरांणदास करमसी रो ४. सांईदास ५. सगतसिंघ ६. नरहरदास ७. रुगनाथसिंघ ८. ईसरीसिंघ ६. पदमसिंघ हठीसिंघोत १०. सवाईसिंघ ११. जालमसिंघ १२. अभेसिंघ १३. जुहारसिंघ

पांती आध में:— १२. नाथुसिंघ जालमसिंघोत[1]

[खांप मांडणोतां रै ठिकाणां री विगत]

(राव रिड़मल का पुत्र मांडण जिसके वंशज मांडणोत)

मांव - अळाय— ....
सिरकार नागोर

पीढियें:— ३ सादो मांडणोत ४. जोगो ५. पुंजो ६. लिखमीदास ७. रुगनाथसिंघ ८. दुरजणसिंघ ६. जोधसिंघ १०. हरनाथसिंघ ११. रामसिंघ १२. भेरूसिंघ १३. सोमसिंघ १४. दोलतसिंघ

गांव - गोरेरी— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:—११.........हरनाथसिंघोत[2] १२. रावतसिंघ १३. बगसीरांम १४. बखतावरसिंघ

गांव - गडरीयो— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें— ६. रूपसिंह दुरजणसिंघोत[3] १०. करणसिंघ ११. देवीसिंघ १२. प्रतापसिंघ १३ अखेसिंघ

गांव - रोहीणो— रे. क. ३०००) रे. मौ. ०
सिरकार नागोर

पीढियें — (पाती आध मे) ६. चंद्रसेण दुरजणसिंघोत[4] १०. दीपसिंघ ११. लालसिंघ १२. इंदरसिंघ १३. केसरीसिंघ १४. भोपालसिंघ १५. रतनसिंघ १६ माधोसिंघ

---

१. ठि. बाहारो (आधा) के (११) ठाकुर जालमसिंघ का पुत्र।
२. ठि अलाय के (१०) ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र।
३. ,, ,, ,, (८) ,, दुरजणसिंह का पुत्र।
४. ,, ,, ,, (८) ,, ,, ,, ,,

पांती आध में:—९. जेतसिंघ दुरजणसिंघोत[1] १०. इंद्रभांण ११. अमरसिंघ १२. भीवसिंघ
१३. बाघसिंघ १४. सिवसिंघ

गांव - ढीलासर— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागोर

पीढियें:— (पाती दोय में ⅓) ५. सावलदास जोगारो[2] ६. किलांणदास ७. गोयंददास ८. भारमल ९. अभेसिंघ १०. दलपत. ११. सिवदानसिंघ १२. रतनसिंघ १३. बखतावरसिंघ

पांती तीजी मे ⅓:— ११. रांमसिंघ दलपतोत १२. नाहरसिंघ १३.................... १४. रावतसिंघ

गांव - हिंगवांणीयो— रे. क. ५००) रे.मौ. ०
सिरकार नागोर

पीढियें:— ३. सीघण मांडण रो ४. परवत ५. गोपालदास ६. नराणदास ७ चतुरभुज ८. अजु ९. दांनसिंघ १०. संभुसिंघ ११. बखतावरसिंघ

[खांप भदावतां रै ठिकाणाँ री विगत]

(राव रिडमल का अखेराज, अखेराज का पंचायण और पंचायण का भदा जिसके वशज भदावत)

गांव - देछु— ....
सिरकार जालोर

पीढियें:— ५. लखमण भदावत[3] ६. जेसो ७. मनोहरदास ८. राजसिंघ ९. महासिंघ १०. अखीसिंघ ११. पदमसिंघ १२. जगतसिंघ १३. बहादरसिंघ

गांव खांबल – रे. क. ३९०) रे. मौ. ३९०)
प० सोजत

पीढियें:— (पांती चौथी) भगवांनदास, रुगनाथसिंघ, सिवसिंघ, नरायणदास ।

गांव - भदावतां रो गुडो— रे. क. ११००) रे. मौ. ११००)
प० सोजत

पीढियें:— पेमसिंघ, रामसिंघ, बिजेसिंघ, देवीसिंघ, भगोतसिंघ, अजीतसिंघ

[खांप बालां रै ठिकाणाँ री विगत]

(राव रिडमल का भाखरसी और भाखरसी का वाला जिसके वशज वाला)

गांव - मोकळसर— ७५०) गांव लोघराडो १५०)

---

१. ठि. अलाय के (८) ठाकुर दुरजणसिंह का पुत्र ।

२. अलाय के (४) ठाकुर जोगा का पुत्र ।

३. भदा का पुत्र लखमण ।

गांव - फूलण— २००) गांव सुजरे ५०)
गांव - करमास— ५०) गांव मोतीसरो १८७५)
गांव - बालू— ४५०) गाव रमणीयो २५०)
प० सिवांणो

गांव - सिणली— रे. क. १०००) रे. मो. १०००)
प० जोधपुर

पीढियें:– ४. भारमल बाला रो ५. नगराज[1] ६. जेतसी ७. केसोदास ८. माधवदास ९. अखेराज[2] १०. खीवराज ११. ऊदेराज १२. नाथूसिंघ १३. लालसिंघ १४.·········· १५. बनेसिंघ १६. ········ १७. जुझारसिंघ

पांती आध में:– १०. हिरदेराम अखेराजोत[3] ११. जगतसिंघ १२. अभैसिंघ १३. सेरसिंघ १४. अमानसिंघ १५. मूलराज १६. अजीतसिंघ

गांव - भुती— रे. क. ५००) रे. मो. ५००)
प० सिवांणो

पीढिये.– १३. संगरामसिंघ अभेसिंघोत[4] १४. भवानीसिंघ १५. फतेसिंघ १६. खगारसिंघ

गांव - पूजापुरो— रे. क. ५००) प० गोढवाळ
पीढिये.– १२. जालमसिंघ जगतसिंघोत[5] १३. चेनसिंघ १४. पेमसिंघ

गांव - देवड़ो— रे क. ७००) रे. मो. ७००)
प० सिवांणो

पीढियें– ११.··········हिरदयरामोत १२. सुरतसिंघ १३.··········१४. गुलाबसिंघ १५. सगतसिंघ १६. गुमानसिंघ

गांव - बालवाड़ो-(आधी पाति) रे. क. २०००) रे. मो. २०००) सिरकार जालोर
गांव - आवलज— रे. क. ७५०) रे. मो. ७५०) ,, ,,
गांव - नारनडी— रे. क. ३०००) रे. मो ३०००) प० जोधपुर
पीढियें.– ८. सुरजमल[6] केसवदासोत[7] ९. तेजपाल[8] १०. रामदास[9] ११. लालसिंघ

---

१. यह मेडते के युद्ध में काम आया था। २. नूरअली इनायतखा से युद्ध हुआ वहा पडदलखा को मार काणाणे का थाणा उठाया इसका भाई रतन वहा काम आया।
३. ठि. सिणली के (९) ठाकुर अखेराज का पुत्र।
४. गांव सिणली (पांती आघ) के (१२) ठाकुर अभेसिंह का पुत्र।
५. गाव सिणली के (११) ठाकुर जगतसिंघ का पुत्र।
६. अखेराज ने जब काणाणे के थाणे पर पडदलखा को मारा तब यह भी युद्ध में उसके साथ था।
७ गाव सिणली के (७) केसवदास का पुत्र।
८. महाराजा अजीतसिंघ ने जब जोधपुर से मुगलो का थाणा उठाकर उस पर अधिकार किया उस चढाई मे यह शामिल था तथा इसका भाई गोपालदास युद्ध मे काम आया।
९. इसने भी अजीतसिंघ के विखे के दिनो मे उनका साथ दिया था।

१२. रिणछोड़दास १३. किलांणसिंघ[1] १४. अचलसिंघ १५. जगतसिंघ[2]

गांव–आबळज— रे. क. ७५०) रे. मौ. ७५०)
सिरकार जालोर

पीढिये:– (पाती आधी) १५ सिरदारसिंघ अचलसिंघोत[3]

गांव–बुगरडो— रे. क. २०००) रे. मौ. २०००)
सिरकार नागौर

पीढियें:– (पांती आध में) ११. फतेसिंघ रामदासोत[4] १२ अनोपसिंघ १३. जेतसिंघ १४. अखेसिंघ १५. उमेदसिंघ
(पांती पाव मे):– १०००) (बाकी पाव पांती सांसण)

पीढिये:– ७. चांदसिंघ जैतसिंघोत[5] ८. किलाणदास ९. भगवांनदास १०. लालसिंघ ११. किरतसिंघ १२. जसवंतसिंघ १३. पेमसिंघ १४. बहादरसिंघ।

गांव–नरसांणो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
प. नागौर

पीढियें:– ९. रामचन्द सूरजमलोत[6] १०. नराणदास ११. पदमसिंघ १२. जोरावरसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. कानसिंघ १५. गजसिंघ १६ शिवनाथसिंघ।

गाँव–मांडवला— रे. क. ३०००) रे मौ. ३०००)
सिरकार जालोर

गांव–सांवलतो खुरद— रे. क. १२५०) रे. मौ. १२५०)
प. जोधपुर

पीढियें:– ८. अमरदास केसवदासोत[7] ९ बरसल १० करणसिंघ ११. जगराम १२. रुगनाथसिंघ १३. प्रतापसिंघ १४. जेतसिंघ १५. गुमानसिंघ १६. बखुतसिंघ १७. तेजसिंघ।

गांव–काठेड़ी— रे. क. ७००) रे. मौ. ७००)
प. सिवाणो

पीढियें.– १४. कीरतसिंघ प्रतापसिंघोत १५. तखतसिंघ

---

१. यह सिरोही तथा धोरीमना के युद्धो मे घायल हुआ था।
२. आउवा पर सवत् १९१४ मे जब अंग्रेजो की फौज चढकर आई तब यह वहा काम आया।
३. गाव सिणली के (१४) ठाकुर अचलसिंघ का पुत्र।
४. ठि. वालवाड़ा के (१०) ठाकुर रामदास का पुत्र।
५. ठि सिणली के (६) जैतसिंघ का पुत्र।
६. ठि. वालवाडा के (८) ठा. सूरजमल का पुत्र।
७. ठि. सिणली के (७) ठा. केसोदास का पुत्र।

गांव-जेसावो— रे. क १०००) रे. मो. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:- १४. जेतसिंघ प्रतापसिंघोत १५. सादूलसिंघ ।

गांव-पीसाणो— रे. क. २०००) रे. मो. २०००)
सिरकार जालोर

पीढिये:- १४. रतनसिंघ प्रतापसिंघोत १५. भोमसिंघ १६. लिछमणसिंघ ।

गांव-चुरां— रे. क. १०००) रे. मो. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:- १२. सिरदारसिंघ जगरांमोत[1] १३. सूरजमल १४. छतरसिंघ १५. अनाड़सिंघ १६. बभुतसिंघ १७. सबलसिंघ १८. जुहारसिंघ ।

गांव-थलुडो— रे. क. १०००) रे. मो. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:- ८. धनराज केसवदासोत[2] ९. बलरांम १०. जसवतसिंघ ११. लखधीरसिंघ १२. लालसिंघ १३. तखतसिंघ ।

***गांव-अेलांणो—** रे. क. २०००) रे. मो. २०००)
सिरकार जालोर

गांव-जोजावर री वासणी— रे. क. १०००) रे. मो. १०००)
प. गोढवाड़

गांव-गगारडी— रे. क. २०००) रे. मो. १०००)
प. मेड़ता

५०००) ४०००)

पीढियें:- १०. सुजाणसिंघ भगवानदासोत ११. अोपसिंघ १२. जोरावरसिंघ १३. जसवतसिंघ १४. रतनसिंघ १५. जोधसिंघ ।

गांव-पीडीयो— रे. क. २०००) रे. मो. २०००)
सिरकार नागोर

*पीढियें:- ११. देवीसिंघ सुजाणसिंघोत[3] १२. हीदुसिंघ १३. गिरधरदास १४. भेरूसिंघ १५. भोपालसिंघ १६. भूरसिंघ ।

---

१. ठि. माडवला के (११) ठा. जगराम का पुत्र ।
२. ठि. सिणली के (७) ठा. केसवदास का पुत्र ।
३. ठि. अेलाणा के (१०) ठा. सुजाणसिंघ का पुत्र ।

गांव-कलापुरो— रे. क. १०००) रे. मौ. ५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:— ८. ....चांदसिंघोत ९. लिखमीदास १०. ....
११. भावसिंघ १२. .... १३. केसरीसिंघ १४. नवलसिंघ
१५. गुलाबसिंघ १६. सादुलसिंघ ।

गांव-बासण— रे. क. ६२५) रे. मौ. ६२५)
सिरकार जालोर

पीढियें:— ८. प्रिथीसिंघ चांदूसिंघोत[1] ९ फतेसिंघ १०. अजबसिंघ ११. दौलतसिंघ
१२. लखधीरसिंघ १३. जेतसिंघ १४. हरदानसिंघ ।

गांव-हठुजो— रे. क. १०००) रे. मौ. ५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:— ७- किमनदास जेतसिंघोत[2] ८. मनोरदास ९. नाडो १०. प्रेमसिंघ ११. रुघनाथसिंघ १२. रामसिंघ १३. जवानसिंघ १४. .... ।

गांव-देभावास— .... सिरकार जालोर

गांव-गुढो सांवलदास रो— ....

पीढियें:— ५. बीदो भारमलोत ६. जेमल ७. भवानीदास ८. अमरसिंघ ९. नरसिंगदास
१०. जवानसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. अभेसिंघ १३. सुरतसिंघ १४. जालमसिंघ १५. अनाड़सिंघ १६. सिवनाथसिंघ ।

गांव-ओड़वाडो— रे क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:— १०. डुंगरसिंघ नरसिंघदासोत[3] ११. ओपसिंघ १२. लालसिंघ १३. भोमसिंघ १४. अचलसिंघ ।

गांव-कुहाडो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:— १०. जुगतसिंघ नरसिंगदासोत[4] ११. सिरदारसिंघ १२. हिंदुसिंघ १३. थानसिंघ ।

गांव-डाभली— रे. क. ७५०) रे. मौ. ७५०)
प. जोधपुर

---

१. ठि. बुगरडो (पाव पांती) के (७) ठाकुर चांदसिंघ का पुत्र ।
२. ठि. सिणली के (६) ठाकुर जैतसिंघ का पुत्र ।
३. ठि. देभावास के (९) ठाकुर नरसिंगदास का पुत्र ।
४. ठि देभावास के (९) ठा. नरसिंघदास का पुत्र ।

पीढियें:— ६. कलो बीदावत ७. भोजराज ८. जेतमाल ९. रामसिंघ १०. भींवसिंघ ११. प्रागदास १२. सिवदानसिंघ १३. नारायणदास १४. महासिंघ १५. जेतमाल।

गांव-महेसरो बाडो— रे क. ६२५) रे. मौ. ६२५)
प. जोधपुर

पीढियें:— ८. आसकरण भोजराजोत[1] ९. जोगीदास १०. हठीसिंघ ११. मांनसिंघ १२. चुतरसिंघ १३. खींवसिंघ १४. रुघनाथसिंघ।

गांव-बाघणवाडो— रे. क. १५००) रे. मौ १५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:— ५. दूदो भारमलोत ६. महेसदास ७. राघवदास ८. सांवतसिंघ ९. गोरधनसिंघ १०. वाघसिंघ ११ जगतसिंघ १२. चेनसिंघ १३. अनाडसिंघ १४. ग्यानसिंघ।

गांव-बारोला वासलो— रे क १०००) रे. मौ १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:— ८ ....केसवदासोत[2] ९ नरसिंगदास १०. बखतावरसिंघ ११. जोधसिंघ १२. सेरसिंघ १३. पदमसिंघ १४. धनसिंघ।

गांव-बोकडा— रे. क. १०००) रे मौ. १०००)
सिरकार जालोर

पीढियें:— ११. तोखसिंघ बखतावरसिंघोत[3] १२ सरूपसिंघ १३. विजयसिंघ १४. दुलेहसिंघ।

गांव-सापणी— रे. क. ५००) रे. मौ ५००)
सिरकार जालोर

पीढियें:— ११. रतनसिंघ बखतावरसिंघोत[4] १२. उमेदसिंघ १३. अणंदसिंघ १४. जेतसिंघ १५. हिमतसिंघ।

गांव-सांवलीयास— रे. क. ५००) रे. मौ ५००)
प. भीनमाल

---

१. ठि. डाभली के (७) ठाकुर भोजराज का पुत्र।
२. ठि. सिणली के (७) ठाकुर केसोदास का पुत्र।
३. ठि. बारोला वांसलो के (१०) ठाकुर बखतावरसिंघ का पुत्र।
४. „ „ „ „ „ „ „ „ ।

पीढियें:– ८ गोपालदास राघवदासोत[1] ९. छतरसिंघ १०. दोलतसिंघ ११. भैंरुदास १२. संभुसिंघ १३. माधोसिंघ।

गांव–मेलावास— .... प. सांचोर

पीढिये.– १०. लालसिंघ भगवानदासोत[2] ११. कीरतसिंघ १२. मानसिंघ १३. अचलसिंघ १४. मेगराज।

गांव–नीबलाणो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००) सिरकार जालोर

गांव–डांगरो— रे. क. १०००) रे. मौ. १०००) सिरकार जालोर

गांव–धांनपड — रे क. १०००) रे. मौ. १०००) सिरकार जालोर

गांव–रांमासनी— रे क. ५०००) रे. मौ. ४०००) प. सोजत

गांव–सुखवासणी ⅔ — रे. क. ६६७) रे. मौ. ६६७) प. सोजत

[खांप ऊदावतां रे ठिकांणा री विगत]

(राव जोधा का पुत्र सूजा और सूजा का पुत्र ऊदा जिसके ऊदावत कहलाये)

गांव रायपुर—३९४७५)

पट्टे की विगत—

गांव	रेख	गांव	रेख
रायपुर खास	६०००)	जूटी	१७००)
सबलपुरो	१०००)	बाधीपडो	७०००)
भीचरडी	१०००)	चडालियो	५००)
मालणी मालासणी	२००)	कालप	१५०)
मोडरियो	१५०)	देवली	४०)
धवलियो	४०)	देपावस	१५०)
पचाणपुरो	१५०)	कोलुजो	१२०)
जाजणडावास	४०००)	सारगपुरो	४०)

---

१. ठि. बांघणवाड़ा के (७) ठाकुर राघवदास का पुत्र।
२. ठि. बुगरड़ो (पाती पाव) के (९) ठाकुर भगवानदास का पुत्र।

गांव	रेख	गांव	रेख
नीवेड़ो	६७५)	गिररी	३७५०)
रामावास	५००)	वानणो	३५०)
चांग	५०)	चीनार	५०)
हाजीवस	५००)	सायपुरो	५००)
काणेचो	२५०)	कोटड़ो	५००)
चैनपुरो	२५०)	दवे ·····	७५०)
सीपली पोकापड़ी	४०००)	·········	२५०)
रामास खुर्द	२५००)	रहेलड़ो	७५०)
टोकलो	१२५०)		
परगने मेड़ता रो गांव—		लूणियावास	३७५०)
परगने सोजत रा गांव—		-	
करमावास	४०००)	कालप	२५०)
कालकोट	१०००)	सीधपुरो	३२५)

गांव रामपुरो—

पीढियें:– ११. पिरथीसिंघ भाकरसिंघोत १२. नाहरसिंघ १३. सबलसिंघ १४. धीरतसिंघ १५. भोमसिंघ १६. सोनसिंघ १७. ······

गांव नीलाबो— रे. क. ६००) रे. मो. ०
प० जैतारण

पीढियें:– १०. हरनाथसिंघ हिरदैनारायणोत ११. किलाणसिंघ १२. ग्यानसिंघ १३. चुतरसिंघ १४. बाघसिंघ १५ तेजसिंघ।

गांव पालासणी— रे क. ६०००) रे. मो. ६०००)
प० जोधपुर

भैंरूंदो— रे. क. १५०००) रे. मो. ५०००)
प० मेड़तो

२४०००) १४०००)

पीढिये:– ६. प्रतापसिंघ राजसिंघोत १०. जसकरण ११. भवानीसिंघ १२. जैतसिंह १३. अमरसिंघ १४. गजसिंघ १५. रिडमलसिंघ १६. सवाईसिंघ।

गांव बांसियो— रे. क. ६०००) रे. मो. ६०००)
प० जैतारण

पीढियें:– ११. भावसिंघ जसकरणोत[1] १२. सिभूसिंघ १३. जोधसिंघ १४. सुरजण-सिंघ १५. प्रीथीसिंघ १६. रतनसिंघ ।

गांव देवली—	रे. क. ११०००)	रे. मौ. ११०००) प जैतारण
गांव अभैपुरो—	रे. क. २०००)	रे. मौ. २०००) प जैतारण
	१३०००)	१३०००)

पीढियें:– १०. उमेदसिंघ प्रतापसिंघोत[2] ११. सिवसिंघ १२. नवलसिंघ १३. जुहार-सिंघ १४. वखतावरसिंघ १५. विजैसिंघ १६. रुघनाथसिंघ ।

गांव आकेलो—	रे. क. २५००)	रे. मौ. २५००) प० जैतारण

पीढ़ियें:– १०. ......' प्रतापसिंघोत[3] ११ उमेदसिंघ १२. .... १३. स्यांमसिंघ १४. विरदसिंघ १५. गोपालसिंघ १६. मूकनसिंघ ।

गांव नीबेड़ो बड़ो—	रे. क. ५०००)	रे. मौ. ५०००) प० जैतारण

पीढियें:– १०. उदैसिंघ प्रतापसिंघोत[4] ११. चैनसिंघ १२. ईंदसिंघ १३. बागसिंघ १४. अनाड़सिंघ १५. समरथसिंघ ।

गांव वीकरलाई (आधो)—	रे. क. ९००)	रे. मौ. ९००) प० जैतारण

पीढ़ियें:– ७. नरसिंगदास दयालदासोत ८. जुंझारसिंघ ९ ईंदरसिंघ १० कीरतसिंघ ११. जैतसिंघ १२. अमरसिंघ १३. सुरजमल १४. किसनशिंघ १५. जालम-सिंघ १६. सेरसिंघ १७ कुमलसिंघ १८. .... १९. आईदान ।

गांव नीबाज—	रे. क. १३०००)	रे. मौ. १३०००)	प० जैतारण
बरांटियो बड़ो	१५००)	१५०००)	,,
वीसावास खुर्द	३००)	३००)	,,
मांगावास	४०००)	४०००)	,,
वीसावास वड़ो	५००)	५००)	,,

१. ठि. पालासणी के (१०) ठाकुर जसकरण का पुत्र ।
२. ,, ,, ,, (९) ठाकुर प्रतापसिंह का पुत्र ।
३. ,, ,, ,, (९) ,, ,, ,,
४. ,, ,, ,, (९) ,, ,, ,,

वोगासणी	२००)	२००)	प्र. जैतारण
वीरमवासणी	२००)	२००)	"
पीपाड़ वडो	६१५०)	६१५०)	जोधपुर
खांगटो	६२५०)	६२५०)	"
	३५१००)	३५१००)	

पीढियें—: ६. मुकनदास किळाणदासोत ७. विजैराम मुकनदासोत ८. जगरामसिंघ ९. कुसलसिंघ १०. अमरसिंघ ११. किलांणसिंघ १२. दोलतसिंघ १३ सिंभूसिंघ १४. सुल्तानसिंघ १५. सांवतसिंघ १६. सवाईसिंघ १७ गुलाबसिंघ १८. छतरसिंघ

गांव मोडरो—	४०००)	४०००)	प्र. जैतारण

पीढियें—: १६. सिवसिंघ सावतसिंघोत[1] १७...............

गांव भुंभलियो—	३६००)	३६००	प्र मेड़तो
गांव सेसड़ो—	७०००)	७०००)	प्र "

पीढियें—: १३ सिरदारसिंघ दोलतसिंघोत[2] १४ समरथसिंघ १५ रणजीतसिंघ

गांव रास—

पट्टे री विगत—:

रास वडो २	३६००)	३६००)	प्र जैतारण
वरडोटी	३००)	३००)	"
रेवारिया री वासणी	१००)	१००)	"
वलुपुरो	१०००)	१०००)	"
समोषी	१५००)	१५००)	"
राणीवाल	३०००)	३०००)	"
नीवेटी	३००)	३००)	"
पालीवास १	६००)	६००)	"
म्हाराजपुरो	१३००)	१३००)	"
पातुवास	१०००)	१०००)	"
फुलमाल	८०००)	६०००)	"
कनावस	२०००)	२०००)	"

१ नीवाज के (१५) ठाकुर सावतसिंघ का पुत्र।
२ ठि नीवाज के (१२) ठाकुर दौलतसिंघ का पुत्र।

जगतियो	६००)	६००)	प्र. जैतारण
	२४०००)	२२०००	
केकीदडो	६२५०)	६२५०)	प्र. मेडतो
लखमणियावास	५००)	०	
	६७५०)	६२५०)	

भाखरोद—　　सिरकार नागोर री।

पीढिये—: ६. सुभराम जगरामसिघोत[1] १० वखतसिघ ११. केसरीसिंघ १२. बनेसिंघ १३. जवानसिंघ १४. भोमसिंघ १५. भींवसिह १६. प्रतापसिंघ

गाँव हुनावस वडो—	२५००)	२५००)	प्र जैतारण

पीढिये—· १५. हमीरसिंघ भोमसिघोत

गाँव गरणियो—	६०००)	६०००)	प्र. जैतारण

पीढिये—: ११. सुखसिंघ वखतसिंघोत[2] १२. जोरावरसिंघ १३. भैरूसिंघ १४ नाथूसिंघ १५. उरजनसिंघ १६. मुकनदास

गाँव लांबियां—	१२०००)	६०००)	प्र. मेडतो
गाघलियो	२५००)	२५००)	"
अमरपुरो	१०००)	१०००)	"
ओढूवास	२५००)	१२५०)	"
	१६०००)	१२७५०)	
पीपलियो वडो	३७५०)	३७५०)	प्र. जैतारण
कुसलपुरो	२०००)	२०००)	"
	५७५०)	५७५०)	

पीढियें—: १०. पेमसिंघ सुभरामोत[3] ११. भारथसिंघ १२. चांदसिंघ १३ भवानीसिंघ १४. अजीतसिंघ १५ वभूतसिंघ १६ गभीरसिंह

गाँव पाटवो—	६०००)	६०००)	प्र. जैतारण
गाव आगेवो	......	......	"

---

१. ठि नीवाज के (८) ठाकुर जगरामसिंघ का पुत्र।

२. ठि राम के (१०) ठाकुर वखतसिंघ का पुत्र।

३ ठि राम के (६) ठाकुर सुभराम का पुत्र।

पीढियें— १०. तेजसिंघ सुभरामोत[1] ११. वेरीसाल १२. म्हासिंघ १३. भोमसिंघ १४. सूरसिंघ १५. सिवनाथसिंघ १६. वखतावरसिंघ

ाँव गेमलियावास— (आधो) . २५००) २५००) प्र. मेड़तो

पीढिये—. १०. चैनसिंघ सुभरामोत[2] ११. फतैसिंघ १२. सिभूसिंघ १३. गजसिंघ १४. वखतावरसिंघ १५. जुझारसिंघ

ाँव नीवोल— ६०००) ६०००) प्र जैतारण

पीढियें—: ९ उदैसिंघ जगरामोत[3] १०. जगतसिंघ ११. न्हारसिंघ १२. सरुपसिंघ १३ सादूलसिंघ १४ वहादरसिंघ

ाँव वेहड़— ५०००) ५०००) प्र जैतारण

पीढियें—: ९ रूपराम जगरामोत[4] १०. रामसिंघ ११ सगतसिंघ १२. अभैसिंघ १३. विसनसिंघ १४ अनाडसिंघ १५ भगौतसिंघ

ाँव खीनावड़ी— २०००) २०००) प्र. जैतारण

पीढिये—. ७. मनीराम मुकनदासोत ८ गोरधनदास ९. सुरतराम १०. राजसिंघ ११ गजसिंघ १२ सवलसिंघ १३ नवलसिंघ १४ देवीसिंघ

ाँव विरोल— .... प्र. जैतारण

गाव वलुदाम (आधो)

पीढिये— ८ सादूलसिंघ मनीरामोत[5] ९ अभैसिंघ १०. हरीसिंघ ११ वनेसिंघ १२. मोभासिंघ १३ सेरसिंह १४ सिवनाथसिंघ

ाँव रामावास वडो— ३०००) ३०००) प्र. जैतारण

पीढियें—: ९.·······सादूलसिंगोत[6] १० जीवणदास ११. भवानीसिंघ १२. स्यामसिंघ १३. हिंदूसिंघ १४ सावतसिंघ १५ समरथसिंघ १६ रेवतसिंघ

गाँव जालीवाडो— १०००) ०) प्र. जोधपुर

पीढियें—· ७ नारायणदास मुकनदासोत ८ सावलदास ९ पूरणमल १० सिरदारसिंघ

---

१ ठि रास के (९) ठाकुर सुभराम का पुत्र।
२ ठि रास के (९) ठाकुर सुभराम का पुत्र।
३ ठि नीवाज के (८) ठाकुर जगराम का पुत्र।
४ ,, ,, ,, ,,
५ ठि खीनावडी के (७) ठाकुर मनीराम का पुत्र।
६ ठि विरोल के (८) ठा सादूलसिंघ का पुत्र।

११. दुरजनसिंघ १२. मालमसिंघ १३. जसवतसिंघ १४. हरीसिंघ
१५. किसनसिंघ

गाँव वर—	९००)	९००)	प्र. जैंतारण
खातीवास	१२५०)	१२५०)	"
माकड वाली	१६००)	१६००)	"
वली खुरद	५००)	५००)	"
	४२५०)	४२५०)	

पीढियें—. (पाती ग्राध मे) ६ जगनाथसिंघ किलाणदासोत ७. रूपसिंघ ८. सुभराम ९ अभैसिंघ १० सगरामसिंघ ११ चाँदसिंघ १२. प्रतापसिंघ १३. वखतावरसिंघ १४ सवाईसिंघ १५. संतानसिंघ

पाती ग्राध में—१२. विसनसिंघ चादसिंघोत १३. किलिणसिंघ

गाँव डेह— .. .. सिरकार नागोर

पीढियें—: ६. भीव किलाणदासोत ७. दलपतसिंघ ८ भारमल ९. सवलसिंघ १०. सिवदानसिंघ ११ दलकरण १२. सूरजमल १३. रतनसिंघ १४. सेरसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गाँव सांडीलो—	५०००)	४५००)	सिरकार नागोर
गाँव गुढो	१०००)	१०००)	"

पीढियें—: १०. संगरामसिंघ सवलसिंघोत[1] ११. देवीसिंघ १२. सरूपसिंघ १३. माधोसिंघ १४. रणजीतसिंघ १५. हरनाथसिंघ १६ दौलतसिंघ

गाँव बेदावड़ी— (पाती दो) १०००) १०००) प्र. मेडतो

पीढियें—: ९. देईदास भारमलोत[2] १०. सायबखान ११. पेमसिंघ १२. जसकरण १३. विसनसिंघ १४. गुलाबसिंघ १५ गोरधनदास

गाँव करमावास— ५०००) ५०००) प्र. जैंतारण

पीढियें—: ९. अजबसिंघ भारमलोत[3] १०. जोधसिंघ ११. सुभराम १२. सालमसिंघ १३. अमरसिंघ १४. विड़दसिंघ १५. दौलतसिंघ

गाँव बोयल— २०००) २०००) प्र सोजत

---

१ ठि डेह के (९) ठाकुर सवलसिंह का पुत्र।
२ ठि " (८) " भारमल का पुत्र।
३ " " " "

गाव मडलो २०००) २०००) प्र. सोजत

४०००) ४०००)

पीढियें —: १४ जोरावरसिंघ विसनसिंघोत[1] १५ हिमतसिंघ १६ लिछमणसिंघ

व डाभली— ५००) ५००) गढ जोधपुर

पीढियें —: ८. मनोहरदास दलपतोत[2] ९ रामसिंघ १०.........करण ११ हिन्दूसिंघ १२............१३ उमेदसिंघ १४............१५ भारथसिंघ

व पीह ७०००) ७०००) प्र. परवतसर

पीढियें—: ७ रुघनाथसिंघ भीवसिंघोत[3] ८ वंद्रावनदास ९ कनीराम १०. मांनसिंघ ११ चादसिंघ १२ धीरतसिंघ १३ बखतावरसिंघ १४. रणजीतसिंघ १५ रिड़मलसिंघ १६. गोपालसिंघ १७. चिमनसिंघ

व काल्यारडो ७०००) ७०००) प्र. परवतसर

पीढियें—: १०. विजैसिंघ कनीरामोत[4] ११. उमेदसिंघ १२. देवीसिंघ १३. प्रतापसिंघ १४ अरजनसिंघ

व मडोवरी ३०००) ३०००) प्र. परवतसर

पीढियें—: १० भिवसिंघ कनीरामोत ११. वदनसिंघ १२ स्यामसिंघ १३. सुरताणसिंघ

व फूलियांणो— ३०००) ३०००) प्र. परवतसर

पीढियें —: ९ अमरदास व्रंदावनदासोत[5] १०. किसनदास ११. उदैभाण १२. सालमसिंघ १३. मालमसिंघ १४. सगरामसिंघ १५. केसरीसिंघ

व बंवाल— १०००) ७००) प्र. परवतसर

पीढियें —: (पाती आध मे) ८. गरीबदास रुघनाथसिंघोत[6] ९. जगमाल १०.......... ११. सिरदारसिंघ १२.......... १३ अमानीसिंघ १४.......... १५ हमीरसिंघ

पाती आध मे —११. सवाईसिंघ पदमसिंघोत १२. अजीतसिंघ १३. अमरसिंघ

---

१ ठि वेहड के (१३) ठाकुर विसनसिंह का पुत्र ।
२ ठि डेह के (७) ठा० दलपतसिंह का पुत्र ।
३ ठि डेह के (६) ठाकुर भीवसिंह का पुत्र ।
४ ठि पीह के (९) ठाकुर कनीराम का पुत्र ।
५. ठि पीह के (८) ठाकुर व्रंद्रावनदास का पुत्र ।
६ ठि पीह के (७) ठाकुर रुघनाथसिंह का पुत्र ।

१४. सिवनाथसिंघ १५. मोतीसिंघ

गाँव रेवडा रो वास १०००) १०००) सिरकार नागौर

पीढिये —: ६. वेणीदास किलाणदासोत ७. सूरदास ८. सावळदास ९. कुसलसिंघ १०. गुमानसिंघ ११. सिवसिंघ १२. खगारसिंह १३ केसरसिंघ १४. छतरसिंह

गाँव धोलियो— २०००) २०००)

कानावास	०)	०)
गाव वावड़ी	१०००)	१०००)
	३०००)	३०००)

पीढियें—: ९. मोकमसिंघ सावलदासोत[1] १०. हरीदास ११. सवाईसिंघ १२ सुरताणसिंघ १३. चैनसिंघ १४. रतनसिंघ १५. लालसिंघ

गाँव रिड़मल रो वास २०००) २०००) सिरकार नागौर

पीढिये —: १३. भैरूसिंघ सुरतांणसिंघोत[2] १४ जुंझारसिंघ।

गाँव सारड़ी .... सिरकार नागौर

पीढिये—: ८. तुलछीदास सुंदरदासोत ९. वखतावरसिंघ १०. दयाराम ११. वदनसिंघ १२. डूंगरसिंघ १३. पहाडसिंघ १४. वभूतसिंघ १५. लिछमणसिंघ १६ सिवनाथसिंघ

गाँव चांदवासणी १५००) १५००) दरीवे डीडवाणे

पीढिये—: ८ ......सुंदरदासोत ९. रामसिंघ १०. सवाईसिंघ ११ सालमसिंघ १२. अमानसिंघ १३. वखतावरसिंघ।

गाँव कालाउना— ४२५०) ४२५०) गढ जोधपुर

पोढिये— ५. गोपालदास रतनदासोत ६. माधोदास ७. अणदराम ८. भावसिंघ ९. सिवदानसिंघ १०. चैनसिंघ ११. सोभासिंघ १२. इंदरसिंघ १३ सादूलसिंघ १४. करणसिंघ १५. तेजसिंघ १६. गुलाबसिंघ

गाँव खडालो— ३१२५) २०००) गढ जोधपुर

पीढिये — ६. माधोदास गोपालदासोत[3] ७. कनैयादास ८ हिरदैराम ९ अभैराम १०. हरनाथसिंघ ११. उदेसिंघ १२. पिरथीसिंघ १३. थानसिंघ

गाँव भुंडुवडो— ५००) ५००) गढ़ जोधपुर

१ ठि रेवडा रो वास के (८) ठाकुर सावलदास का पुत्र।

२, ठि धोलिया के (१२) ठाकुर सुरताणसिंह का पुत्र।

३ ठि कलाउना के (५) ठाकुर गोपालदास का पुत्र।

पीढिये —: १२. म्होकमसिंघ उदैसिंघोत[1] १३. सोभासिंघ १४. रतनसिंघ
१५. तेजसिंघ १६. फतैसिंघ

गाँव मोडावली— ३७५) ३७५) गढ़ जोधपुर

पीढिये— : १२. सूरजमल उदैसिंघोत १३. रूपसिंघ

गाँव स्याह रौ वडौ— १३००) १३००) प्र. मेड़तो

पीढियें— : ५. रामसिंघ रतनसिंघोत ६. किसोरदास ७. मनोहरदास ८. मुथरादास
९. जगतसिंघ १०. सावतसिंघ ११. हिरदेराम १२. वनेसिंघ
१३. म्होबतसिंघ १४. भोमसिंघ

गाँव कापड़ोद— ३०००) ३०००) प्र. कोलिया

पीढिये— : ११. म्होकमसिंघ सावतसिंघोत[2] १२. धीरतसिंघ १३. मदमसिंघ
१४. वखतावरसिंघ १५. विड़दसिंघ १६. रामनाथसिंघ

गाँव ठाकुरवास— १५००) १२५०) प्र. जैतारण

पीढिये— ४ भवानीदास खीवकरणोत ५. वाघसिंघ ६. किसनदास ७. मोहणदास
८. हिरदैराम ९ नराणदास १०. सावतसिंघ ११. लखमीसिंघ
१२. केसरीसिंघ १३. नाथूसिंघ १४. अमरसिंघ १५. अखैसिंघ

गाँव वासड़ो भोजां रौ— ७००) ६२५) प्र. भीनमाल

पीढिये—: ११. हरीसिंघ सावतसिंघोत[3] १२. जालमसिंघ १३. सादूलसिंघ
१४. वभूतसिंघ १५. लादूसिंघ

गाँव बालेरां— १०००) ७५०) प्र. जालोर

पीढियें— : १०. भाखरसिंघ नारायणदासोत[4] ११. सेरसिंघ १२. तखतसिंघ

गाँव देवरियो— ८०००) ८०००)

गाँव देवरियो—	८०००)	८०००)	
गाव लुवडास	१२००)	१२००)	प्र. जैतारण
	९२००)	९२००)	

पीढियें— : ३. डूगरसिंघ ऊदावत ४. तेजसिंघ ५. सीधो ६. दुरजनसाल ७. फरसराम

---

१ ठि खडाला के (११) ठाकुर उदैसिंघ का पुत्र।
२ ठि स्याहरो के (१०) ठाकुर सावतसिंह का पुत्र।
३ ठि. स्याहरो के (१०) ठाकुर सावतसिंह का पुत्र।
४. ठाकुर वास (९) ठाकुर नराणदास का पुत्र।

८. गोरधनदास ९. नांहरखान १०. हिंदूसिंघ ११. गुमानसिंघ
१२. उमेदसिंघ १३. लालसिंघ १४. सालमसिंघ १५. माधोसिंघ
१६. गुमानसिंघ

गांव राजाडंड— २५००) २५००) प्र. जैतारण

पीढियें—: १०. जोधसिंघ नारखांनोत[1] ११. अखैसिंघ १२. रामसिंघ १३. हरीसिंघ
१४. सिरदारसिंघ १५. कुसलसिंघ १६. वखतावरसिंघ

गांव लासणी— ३५००) २५००) प्र. जैतारण

पीढियें —: ६. हिरदैरांम सिंघ री ७. गोरधन ८. उरजनसिंघ ९. सुजाणसिंघ
१०. जोरावरसिंघ ११. मालमसिंघ १२. धीरतसिंघ १३. हमीरसिंघ

गांव गुदवच — ६२५०) ६२५०)

पातुवास	१००)	१००)
वहेड	१००)	१००)
देवलियो	१००)	१००)
गीगावास	४००)	४००)
गोदरला	......	......
	६९५०)	६९५०)

पीढियें—: ५. कानसिंघ तेजसिंघोत ६. गोयददास ७. रांमचंद ८ रूपसिंघ
९. जीवणदास १०. हरनाथसिंघ ११. सेरसिंघ १२. इंदरसिंघ
१३. माधोसिंघ १४. कुसालसिंघ १५. फतैसिंघ १६. रणजीतसिंघ

गांव रिखलियो (गुडो) ९००) ९००) प्र. जैतारण

पीढियें—: ६. नाराणदास कानसिंघोत ७. चतरभुज ८. स्यामसिंघ ९. पिरथीराज
१०. वछराज ११. अखैराज १२. भारथसिंघ १३. दौलतसिंघ
१४. हिमतसिंघ १५. सुरताणसिंघ

गांव सांमुजो — २५००) २५००) सिरकार जालोर

पीढियें—: ६. भेजराज कानसिंघोत ७. भीवसिंघ ८. मुरजमल ९. सूरसिंघ
१०. जगतसिंघ ११. देवीसिंघ १२. लालसिंघ १३. गुमानसिंघ
१४. नवलसिंघ

गांव लुणोदो— ३०००) १५४०) प्र. जालोर

---

१. ठि. देवरिया के (९) ठाकुर नारखान का पुत्र।

भदवासियो	——	——	

पीढियें—. ७. बोरीदास भोजराजोत[1] ८. रायसिंघ ९. किलाणसिंघ १०. उदैसिंघ ११. भवानीसिंघ १२. सगतसिंघ १३. कुसलसिंघ

गाँव गोपड़ी—	१०००)	१०००)	प्र. सीवाणो

पीढियें—: ७. मोहणदास भोजराजोत[2] ८. करणसिंघ ९. अणदसिंघ १०. सवाईसिंघ ११. सगरामसिंघ १२. बुदसिंघ १३. वेरीसाल

गाँव बरांटियो खुरद—	२५००)	२५००)	प्र. जैतारण
जैंतपुर	७००)	७००)	"
	——	——	
	३२००)	३२००)	

पीढियें—: ५. किसनसिंघ तेजसिंघोत ६. करणसिंघ ७. मनोहरदास ८. गोकलदास ९. महासिंघ १०. कीरतसिंघ ११. मदमसिंघ १२. स्यामसिंघ १३. गुलावसिंघ १४. फतैसिंघ १५. भारथसिंघ १६. रामसिंघ १७ अभैसिंघ

गाँव महेसियो—	२०००)	२०००)	
चावड़ियो	३००)	३००)	
	——	——	
	२३००)	२३००)	

पीढियें—: ११ खीवकरण कीरतसिंघोत[3] १२. मावोसिंघ १३. सुखसिंघ १४. अजीतसिंघ १५ रुघनाथसिंघ १६. विजैसिंघ

गाँव खींवावास—	६२५)	६२५)	प्र. मेड़तो

पीढियें—: ९. हरीसिंघ गोकलदासोत[4] १०. जीवणदास ११. अचलसिंघ १२. भोमसिंघ १३. मोतीसिंघ १४. बखतावरसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गाँव धूलकोट—	१४९०)	१४९०)	

पीढियें—: ८. गिरधरदास मनोहरदासोत[5] ९. वखतसिंघ १०. वभूतसिंघ ११. अणदसिंघ

---

१. ठि सामूजो के (६) ठाकुर भोजराज का पुत्र।
२. ठि. " " " " "
३. ठि वराटियो खुरद के (१०) ठाकुर कीरतसिंह का पुत्र।
४ ठि वराटियो खुरद के (८) ठाकुर गोकुलदास का पुत्र।
५ " " " (७) " मनोहरदास का पुत्र।

१२. सुखसिंघ १३. संगरामसिंघ १४. केसरीसिंघ

गांव पिरलीपुरो—　　३०००)　　३०००)　　प्र. जैतारण

पीढियें—: (ग्राध मे) ६. पचांणदासकिसनदासोत[1] ७. राजसिंघ ८. स्यामसिंघ ९. प्रतापसिंघ १०. सिरदारसिंघ ११. माधोसिंघ १२. रूपसिंघ १३. सिवसिंघ १४. रतनसिंघ

पाती ग्राध मे—९. हिमतसिंघ स्यामसिंघोत[2] १०. मांडण ११. ग्रभैसिंघ १२. रुघनाथसिंघ १३. वहादरसिंघ

गांव पुनड़ाऊ—　　५००)　　५००)　　सिरकार जालोर

पीढियें—: ४. परतापसिंघ रूघनाथसिंघोत ५. नरांणदास ६ स्यामदास ७. वीरमदे ८ ग्रजवसिंघ ९. ग्रमरसिंघ १०. लालसिंघ ११. सिवसिंघ १२ सुरतसिंघ १३. जीवराज १४. दौलतसिंघ

खांप मेड़तीयां री पीढ़ीयां

१. राव जोधाजी तिण रा वेटा—१ वरसिंग १ दूदो ।

तिणां नैं राव जोधे मेड़तो दीयो सु मेड़तो सैंर सूनो पड़ीयो थो तिण नैं इणां ग्रावादान कीयो ।

२. दूदो तिण रा वसरा मेडतीया कहीजैं ।

खांप रायमलोत मेड़तीयां

१. दूदो जोधावत, २. रायमल दूदावत

रायमलोतां रा ठिकांणां री विगत

	रेख कदीम	रेख हमार भरे	परगना
गांव रांयण—	१४०००)	१४०००)	प्र० मेड़तो

पीढियें—: ४ ग्रचलदास रायमलोत ५ भगवानदास ६. ऊंमसिंघ ७. रामसिंघ ८. ग्रजवसिंघ ९ दलराम १० मुकनसिंघ ११. लालसिंघ १२. मालमसिंघ १३. स्यामसिंघ १४. मेहतावसिंघ १५. हमीरसिंघ १६. जोरावरसिंघ

---

(१) ठि वराटियों खुरद के (५) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र ।
(२) ठि. पिरलीपुरो के　(८) ठाकुर स्यामसिंह का पुत्र ।

[1] चित्तौड के रांणा सांगा रैं वे पातसाह वावर के वीच सीकरी में युद्ध हुग्रा वह रांणा की तरफ से काम ग्राया ।

गांव ढावो— ४०००) ४०००) प्र. मेडतो

पीढियें—: १२ बुधसिघ लालसिघोत[1] १३ भगोतसिघ १४. जुहारसिघ

गांव जारोड़ो वडो— (पाती २ मे) २०००) २०००) प्र. मेड़ता

१२. नारसिंघ लालसिघोत १३ बिडदसिघ १४ वेसीसाल १५. रामनाथसिंघ १६. भीवसिंघ।

गांव जाजू वासणी— (आधी) ३१२५) १०००) प्र. मेड़तो

पीढियें—: १२. सूरजमल लालसिघोत[2] १३. भवानीसिंघ १४ अमानसिंघ १५. अमरसिंघ १६. हरीसिंघ।

गांव अग्यासणी— १०००) १०००) प्र मेडतो

पीढियें— १०. पीरथीसिंघ दलरामोत[3] ११ प्रतापसिंघ १२. भैरूसिंघ १३. हणवतसिंघ १४. सबलसिंघ।

गांव बावरलो— ३२००) ३२००) प्र. मेडतो

पीढियें—: ८. विजेसिंघ*रामसिघोत[4] ९. राजसिंघ १० जोधसिंघ ११. फकीरदास १२ बखसीराम १३ फतेसिंघ १४ बाघसिंघ १५. मगलीसिंघ १६ बहादरसिंघ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गांव जेसावास—	५००)	५००)	प्र. मेड़तो

५. स्यामदास अचलदासोत[5] ६ आसकरण ७. हठीसिंघ ८. रतनसिंघ ९ हीदुसिंघ १०. गुलाबसिंघ ११. करणसिंघ १२. हुकमसिंघ १३. सुरताणसिंघ।

गांव देवलोमासां— १२५०) १२५०) प्र. मेडतो

४ उरजणसिंघ रायमलोत[6] ५ नरवदसिंघ ६. जसवतसिंघ ७. सुरजमल ८. नेतसी ९. हीदुसिंघ १०. बखतसिंघ ११ अभैसिंघ १२फतेसिंघ

---

*उज्जैन के युद्ध में काम आया, सवत् १७१५ में।

(१) ठि. रायण के (११) ठाकुर लालसिंह का पुत्र।
(२) „ „ „ „ „ „ „
(३) ठि. „ „ (९) ठाकुर दलराम का पुत्र।
(४) ठि „ „ (७) „ रामसिंह का पुत्र।
(५) ठि रायण के (४) ठाकुर अचलदास का पुत्र।
(६) रायसल दूदावत का पुत्र।

१३. मोतीसिंघ १४. भोपालसिंह ।

गाँव छींकणा वास— १०००) १०००) प्र. मेडतो

४. सुरजनसिंघ रायमलोत ५. नाहर खान ६. प्रीथीराज ७. ऊदेभाण ८. चद्रभाण ६. अखेसिंघ १०. अनाडसिंघ ११ खुमांणसिंघ ।

गाँव दुगोर अचलो— ५००) ५००) प्र. मेड़तो

गाव दुगोर दासा ६५०) ६२५) "

——— ———

११५०) ११२५)

५. आसकरण सुरजनसिंघोत[1] ६. सीधो ७. डुंगरसिंघ ८. किसनसिंघ ६. सवाईसिंघ १०. जालमसिंघ ११. गुलावसिंघ १२. भभुतसिंघ १३. भैरूसिंघ ।

खांप जगमालोत मेड़तियां

२. दुदो जोधावत ३. वीरम दूदावत

४. जगमाल वीरमोत रा वस रा जगमालोत कही जैं ।

जगमालोत मेड़तियां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेखकदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव डसांणो वडो—	२०००)	२०००)	प्र. परवतसर	आसांमी २ रे

पाती आध में—

पीढियें.— ५. वाघसिंघ जगमालोत ६. सावतसिंघ ७. भोपतसिंघ ८. रामसिंघ ६. दीपसिंघ १०. पूरणसिंघ ११. मुकनसिंघ १२. विजैसिंघ ।

पाती आध मे—

पीढियें — ६. किसनसिंघ वाघसिंघोत ७. सुजाणसिंघ ८. ईसरदास ६. अमरसिंघ १०. जोधसिंघ ११. धीरतसिंघ १२. सुजाणसिंघ १३. दलेलसिंघ १४. वाघसिंघ १५. मोतीसिंघ ।

गाँव घिरडोदो जेसलां— १०००) १०००) प्र. कोलियो

पीढियें:— ७. सुजाणसिंघ किसनदासोत[2] ८. मोकमसिंघ ६. हिंमतसिंघ १०. किलाणसिंघ ११. मयासिंघ १२. मूथरादास १३. सिंभूसिंघ १४. गणेससिंघ ।

---

(१) ठि छीकणांवास के (४) ठाकुर सुरजणसिंह का पुत्र ।

(२) ठि. डसांणो वडो के (६) ठाकुर किमनसिंह का पुत्र ।

गाँव कुडलि— २०००) २०००) प्र. दोलतपुरो

पीढिये—७. अचलदास किसनदासोत[1] ८. बिहारीदास ९. सिवरांम १०. जगतसिंघ ११. मोकमसिंघ १२. कनीराम १३. बखतावरसिंघ १४. विजेसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना

गाँव छापरी बड़ी २०००) २०००) प्र. दौलतपुरो

पीढिये.—९. इदरभाण विहारी दासोत[2] १०. सावतसिंघ ११. किसोरसिंघ १२ सलेसिंघ १३ चादसिंघ १४. भूरसिंघ १५. केसरीसिंघ

गाँव राठील २०००) २०००) प्र. कोलियो

पीढियें.—१०. पिरथीराज ईदरभाणोत[3] ११ मुकनसिंघ १२ सोभासिंघ १३. प्रतापसिंघ ।

गाँव दाऊदसर— २०००) २०००) प्र. दौलतपुरो

पीढियें:—९. घासीराम विहारीदासोत[4] १०. जोरावरसिंघ ११. खडगसिंघ १२. सुरताणसिंघ† १३ सुखसिंघ १४. पाहाड़सिंघ १५. भोपालसिंघ

गाँव वनवासो २०००) २०००) प्र. दोलतपुरो

पीढियें:—१०. जगतसिंघ घासीरामोत[5] ११. मोहणसिंघ १२. लिछमणसिंघ १३. डुगरसिंघ १४ चिमनसिंघ

गाँव भांडासर— १०००) १०००) प्र. दोलतपुरो

पीढियें:—७. सगतसिंघ किसनदासोत[6] ८. खगारसिंघ ९ सेखराज १०. जोरावरसिंघ ११. भगोतसिंघ १२. फकीरसिंघ १३. रूपसिंघ १४. माधोसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गाँव घिरडोदो—	२०००)	११६२॥)	प्र. कोलियो

धुंबो १०००) लार ९३) भरे

---

†संवत् १८४७ रा माग सुद २ मेडता मे मराहठो से युद्ध हुआ उसमे काम आया ।

(१) ठि डसाणो वडो के (६) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र ।

(२) ठि० कुडली के (८) ठाकुर विहारीदास का पुत्र ।

(३) ठि० छापरी वडी के (९) ठाकुर इन्द्रभाण का पुत्र ।

(४) ठि० कुडली के (८) ठाकुर विहारीदास का पुत्र ।

(५) ठि० दाउदसर के (९) ठाकुर घासीराम का पुत्र ।

(६) ठि० डसाणो वडो के (६) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र ।

१—पांती आध मे—

पीढियें:— ५. आसकरण जगमालोत ६. मानसिंघ ७ ऊदेभाण ८. हरकरण ९. किसनसिंघ १०. लालसिंघ ११. अजीतसिंघ १२ पुरणसिंघ १३. सालमसिंघ

२—पाती आध मे—

११. सरूपसिंघ लालसिंघोत १२. हाथीसिंघ १३. वाहादरसिंघ

गांव घिरडोदो डुंडी— २०००) १२८७॥) प्र. कोलियो

घुवो १०००) लार १०३) भरे

पीढियें:— १०. सायवसिंघ किसनसिंघोत[1] ११. हीदूसिंघ १२ सिवसिंघ १३. सिवदांनसिंघ १४. डुंगरसिंघ १५ विजेसिंघ।

गांव मनारी ढांणी— .... सिरकार नागोर

पीढियें:— ७. महासिंघ मानसिंघोत[2] ८. अमरसिंघ ९. अमैसिंघ १० भगवतसिंघ ११. नवलसिंघ १२. चेनसिंघ १३. भीवसिंघ १४. पनसिंघ

खांप ईसरदासोत मेड़तीयां

२. दुदो ३. वीरमदेव ४. ईसरदास रा वस रा ईसरदासोत कहीजै।

ईसरदासोतां रा ठिकांणां री विगत

गांव सुमेल— १४०००) १४०००) प्र मेड़ता

गाव ११ री रेख भेली भरै। मेड़ता रा गांव ११—

१. सुमेल १. खेडो १. प्रतापगढ १. सोडपुरो १ करणपुरो १. नारसुवो १. गाव मोडरी १. रामपुरो १ गाव गुढो १. रावणीयो १ करण पुरो खुर्द।

पीढियें:— ५. साईदास ईसरदासोत ६ जसवतसिंघ ७ विंदरावन दास ८ नारसिंघ ९. जगतसिंघ १० पेमसिंघ ११ सुखसिंघ १२ थानसिंघ १३ मुकनसिंघ १४. हुकमसिंघ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गांव खरवो—	१०००)	१०००)	प्र. मेड़ता

पीढियें—. ५. सकरदास ईसरदासोत ६ जगनाथ ७ हरीराम ८. सकतसिंघ ९ मुकनसिंघ १०. वाहादरसिंघ ११. विसनसिंघ १२ प्रभुदान १३. चावडसिंघ

---

(१) ठि० घिरडोदी के (९) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र।

(२) " " " (६) " मानसिंह का पुत्र।

खांप चांवावत मेड़तीया

२. दुदो जोधावत ३ वीरम-दुदावत ४. चांदोजी वीरमोत

चांदोजी रा वस रा चादावत कहीजे ।

चांदोजी रा ठिकांणा री विगत

गांव बलूंदो—	५०००)	५०००)	प्र. जोधपुर
,, घोडावड	३१२५)	३१२५)	,,
,, भेरूवासी	८७५)	८७५)	प्र. मेड़ता
,, केरीयो रावा	५०००)	५०००)	,,
,, केरीयो माकडो	३७५०)	३७५०)	,,
,, खारचीया	२५००)	२५००)	,,

पीढियें—. ५ रामदास चांदावत* ६ जगतसिंघ ७. मोकमसिंघ ८. हरीसिंघ ९. विजेसिंघ १०. अभैसिंघ ११. स्यामसिंघ§ १२. फतेसिंघ १३. सीवसिंघ १४. वागसिंघ १५ जीवणसिंघ

गांव	रेख कदीम	हुमार भरे	परगना
गांव धनापो—	२०००)	२०००)	प्र. मेड़ता

पीढियें—. १०. नरसिंगदास विजेसिंघोत[1] १°. जगरूपसिंघ १२. अखेसिंघ १३. प्रीथीसिंघ १४ सुमेलसिंघ

गांव दुदड़ास—	१२५०)	१२५०)	प्र. मेडता

पीढियें—· ७ नाथूसिंघ जगतसिंघोत[2] ८. हीदुसिंघ ९. लालसिंघ १०. अमानसिंघ ११. वेरीसाल १२. चीमनसिंघ

गांव सुंदरी—	१२५०)	१२५०)	प्र. मेडता

---

†नागोर मे सुबायत हसनअली ने सवत् १६२१ मे चूक से मरवाया.

* मेडता के सूबायत के गाव नीबोद न दवाणा को पकड़ा तब झगड़ा हुआ, वहा गाँव काखडकी—मु गधडाके बीच मे काम आया ।

§श्री महाराज श्रीरामसिंघजी व बखतसिंघजी के बीच संवत् १८०७ मे झगडा हुआ उसमे कांम आया ।

(१) ठि० बलूदा के (६) ठाकुर विजैसिंह का पुत्र ।

(२) ,, ,, ,, (६) ,, जगतसिंह का पुत्र ।

पीढियें—: ६. जसवतसिंघ रांमदासोत[१] ७. जगरूपसिंघ ८. अभसिंघ ९. ऊदेसिंघ १०. कोजूराम ११. दुलेसिंघ १२. ग्यानसिंघ १३. रावतसिंघ १४. वभूतसिंघ १५. पावुदान

गाँव तिगरो—	२५००)	२५००)	प्र. मेडता

पीढियें—: ७. वेणीदास जसवतसिंघोत[२] ८. ऊदेसिंघ ९. रामसिंघ १०. सीवसिंघ ११. वनेसिंघ १२. जूजारसिंघ १३. सुरताणसिंघ

गाँव कुडकी खास—	८०००)	८०००)	प्र. मेडता
,, मोठा कोटड़ो	१२५०)	१२५०)	,,
,, खीदावास	७५०)	७५०)	,,
,, आलसर	१५००)	१५००)	प्र. दौलतपुरो
,, अलखपुर	३०००)	३०००)	,,
,, नादोली	२०००)	२०००)	प्र. परवतसर
	१६५००)	१६५००)	

पीढियें—: ५. गोपालदास चादावत ६. मुकनदास ७. सगतसिंघ ८ घासीराम ९. पाहाडसिंघ १०. देवसिंघ ११ बाहादरसिंघ १२ अमानसिंघ १३ लिछमणसिंघ १४ रणजीतसिंघ १५. वखतावरसिंघ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गाँव डाभड़ो—	४०००)	३०००)	प्र. दौलतपुरा

पीढियें—: १३. चिमनसिंघ अमांनसिंघोत[३]।

गांव पालियास—	४५००)	४०००)	प्र. मेडता

पीढिये—: ११. रामसिंव देवीसिंघोत[४] १२. हणवतसिंघ १३. रणजीतसिंघ।

गाँव खाँनड़ी—	४०००)	४०००)	प्र दौलतपुर

पीढियें—: १२ जोवसिंघ रांमसिंघोत[५] १३. अजीतसिंघ।

गाँव वडवालो—	३०००)	२०००)	प्र. परवतसर

पाँती आध मे—

पीढियें—: ६. सुंदरदास गोपालदासोत[६] ७. ऊदेसिंघ ८ नराणदास ९. हठीसिंघ १०. लछीराम ११. पाहाडसिंघ १२. मगलसिंघ १३. गुमानसिंघ।

---

(१) ठि वलूदा के (५) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।
(२) ठि० सुदरी के (६) ,, जसवतसिंह का पुत्र।
(३ ठि कुडली के (१२) ठाकुर अमानसिंह का पुत्र।
(४) ठि कुडली के (१०) ठाकुर देवीसिंह का पुत्र।
(५) ठि पालियास के (११) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।
(६) ठि कुडली के (५· ठाकुर गोपालदास का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना

पांती आध मे

पीढियें—: ८. प्रथीसिंघ-उदेसिंघोत[1] ९. प्रतापसिंघ १०. कुसलसिंघ ११. सलेसिंघ १२. कीलाणसिंघ १३. चतर साल १४. विजेसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गांव सेवरीयो—	७०००)	७०००)	प्र. मेड़तो
,, देवरीयो रजपुता	१०००)	१०००)	,,
,, वानसी	१०००)	१०००)	,,
,, नेण पुरीयो	१८७५)	१८७५)	,,
	१०८७५)	१०८७५)	

पीढियें:—: ६. नारसिंघ-गोपालदासोत[2] ७. केसरखां ८. सांवलदास ९. अचलसिंघ १०. फतेसिंघ ११. भवांनीसिंघ १२. दांनसिंघ १३. रतनसिंघ १४. रुगनाथसिंघ १५. देवीसिंघ

गांव बनवाड़ो—	३७५०)	३७५०)	प्र. मेड़तो

पाती आध मे—:

पीढियें—: ६. दलपत गोपालदासोत[3] ७. भीवराज ८. सेखराज ९. वाहादरसिंघ १०. ऊमेदसिंघ ११. रिड़मलसिंघ १२. छतरसिंघ

पाती आध मे—:

पीढियें—: ६. जैतसिंघ-गोपालदासोत[4] ७. जोरावरसिंघ ८. किलाणसिंघ ९. नाहरसिंघ १०. पनेसिंघ ११. छतरसिंघ १२ विसालसिंघ

गांव आजडोलो—	२०००)	२०००)	प्र. परबतसर

पीढियें—: ६. रूपसिंघ-गोपालदासोत[5] ७. इंदरभाण ८. नरहरदास ९. माघोसिंघ १०. जतनसिंघ ११. सुजांणसिंघ १२. नाथूसिंघ १३. अमानसिंघ १४. भगवतसिंघ १५. रांमनाथ

गांव लाडपुरो—	१०००)	१०००)	प्र. परवतसर

---

(१) ठि वडवालो (आध) के (७) ठाकुर उदैसिंह का पुत्र ।

(२) ठि. कुडकी के (५) ठाकुर गोपालदास का पुत्र ।

(३) ठि. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

(४) ठि. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

(५) ठि. ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष

पीढिये—: ७ देवकीदास रूपसिंघोत[1] ८. कनीरांम ९. देवीसिंघ १० वदनसिंघ ११. जोरावरसिंघ १२. भेरूसिंघ १३. वखतावरसिंघ १४. खंगारसिंघ

गांव सूंथलि—	२०००)	२०००)	प्र. परवतसर	

पीढिये—: ७. वलराम रूपसिंघोत[2] ८. जसवर्तासिंघ ९. नरसिंगदास १०. सावतसिंघ ११. दानसिंघ १२. किसनसिंघ १३. रीडमलसिंघ १४. फतेसिंघ

गांव हासियास—	१०००)	१०००)	प्र मेडता	ग्रासामी २ रे

पाती ग्राध मे—.

पीढियें—: ७. राजसिंघ रूपसिंघोत[3] ८. किलाणसिंघ ९. भोपतसिंघ १० तेजसिंघ ११. जालमसिंघ १२ कीलाणसिंघ १३. चुतरसिंघ १४. पीरदान

पाती ग्राध मे—. गोयंददास चांदावत रा वस रा—

पीढियें—. ६. कीरतसिंघ गोयंद दासोत ७. भगोतसिंघ ८ ऊमेदसिंघ ९. सीरदारसिंघ १० रणजीतसिंघ ११ समनसिंघ १२. खीवकरण

गांव पूजीयास—	१२५०)	१२५०)	प्र. मेडता	

पीढियें—: ५. राघोदास चाँदावत ६. भोजराज ७. ग्रासकरण ८. चतरसाल-राजसिंघोत ९. मानसिंघ १०. सोभासिंघ ११ वाहादरसिंघ १२. हुकम-सिंघ १३. मगलसिंघ

गांव डीगराणो—	२५००)	०)	प्र. मेडता	रेख भरे नही

पीढियें—: गोयंद दास चादावत रा वस रा—

७ सुखसिंघ कीरतसिंघोत ८. दलेलसिंघ ९ सीभूसिंघ १०. भेरूसिंघ ११. चीमनसिंघ १२. समरथसिंघ

गांव ऊंचाखेड़ो—	२०००)	२०००)		सिरकार नागोर

पीढियें— ७. पदमसिंघ-कीरतसिंघोत ८. देवीसिंघ ९ धीरतसिंघ १०. मोहकमसिंघ ११. हणवतसिंघ १२ कुसालसिंघ

गांव लाई—	३१२५)	३१२५)	प्र मेडता	
„ कुपडास	२०००)	२०००)	„	खेडा २

(१) ठि. अजडोली के (६) ठाकुर रूपसिंह का पुत्र।
(२) ठि. „ „ „ „ „ „।
(३) ठि. „ „ „ „ „ „।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे		परगना
गांव ऊडास	७००)	७००)	,,	खेडो १ सूनो

पीढियें—: ६. मुरारदास-गोयददासोत ७ ऊरजणसिंघ-मुरारदासोत ८. प्रतापसिंघ ९. सबलसिंघ १०. रतनसिंघ ११. लालसिंघ १२. देवीसिंघ १३. बखतावर सिंघ १४. ग्यानसिंघ

गांव मुगधड़ो—	३००)	३०००)	प्र. मेडता

पीढियें—: ११. जालमसिंघ-रतनसिंघोत[1] १२. कीलाणसिंघ १३. सादूलसिंघ १४. मोहवतसिंघ

गांव देसवाल—	४०००)	४०००)	सिरकार नागोर

पाती आध मे—:

पीढियें—: १० बाहादरसिंघ-सबलसिंघोत[2] ११. भोमसिंघ १२. माधोसिंघ १३. सीरदारसिंघ

पांती आध मे—: रणजीतसिंघ, फकीरदास, जैतसिंघ,

गांव बाखलिया वास—	७००)	७००)	प्र. मेडतो

पीढियें—: ७ आयव खान-मुरारदासोत[3] ८ अनोपसिंघ ९. कीसनसिंघ १०. ऊमेदसिंघ ११. सेरसिंघ १२ रणजीतसिंघ

गांव रेवत –	२५००)	२५००)	प्र मेडतो

पीढियें—: ७. वाघसिंघ-मुगरदासोत[4] ८. दोलतसिंघ ९ ऊदेसिंघ १०. जसवतसिंघ ११. लिछमणसिंघ १२. अमानसिंघ १३. विडदसिंघ

गांव रोहल—	२०००)	२०००)	सिरकार नागोर

पीढियें—: १२. चेनसिंघ-तेजसिंघोत १३. सगरामसिंघ १४. भवानीसिंघ १५ हरीसिंघ

गांव नोखो —	२०००)	२०००)	सिरकार नागोर
,, चीताणी	१०००)	१०००)	,, ,,
,, धीगावास	५००)	५००)	,, ,,

पीढियें— ६. रुगनाथसिंघ-गोयददासोत ७ कीलाणसिंघ ८. भावसिंघ ९. ऊदेसिंघ-

---

(१) ठि. लाई के (१०) ठाकुर रतनसिंह का पुत्र।
(२) ठि ,, (९) ,, सबलसिंह का पुत्र।
(३) ठि लाई के (६) ठाकुर मुरारदास का पुत्र।
(४) ठि ,, ,, ,, ,, ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना

गगराणा री राड मे काम आया १०. जालसिंघ ११. बखसीराम १२. अमरसिंघ १३. फकीरसिंघ १४. हिमतसिंघ १५. प्रतापसिंघ १६. विजेसिंघ

गांव नोवड़ी— ६०००) ६०००) सिरकार नागोर

पीढियें—: ६. हरीसिंघ भावसिंघोत † १०. सिरदारसिंघ ११. छतरसिंघ १२. रायसिंघ १३ नवलसिंघ १४. हुकमसिंघ

गांव ओलादण— ३०००) ३०००) सिरकार नागोर

पीढियें—: ६. विजेराम-गोयनदासोत ७. बलरांम ८. कनीराम ६. मोकमसिंघ १०. अभेसिंघ ११. समेलसिंघ १२. जेतसिंघ १३. हरीसिंघ

गांव गागुरडो— २०००) १०००) सिरकार नागोर

पीढिये—: ६. करमसेण-गोयंदासोत ७. जोदसिंघ ८. फतेसिंघ ६. अजबसिंघ १०. सीरदारसिंघ-काम आयो मेडते गनीमारी राड मे सवत १८११ मे ११. अभेसिंघ १२. किसनसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. सिवनाथसिंघ

गांव छापर वडी— १२५०) १२५०) प्र. मेड़तो

पीढियें—: ६. सिवदानसिंघ-फतेसिंघोत[1] १०. सिरदारसिंघ ११. ईदरसिंघ १२. मालमसिंघ १३. दानसिंघ १४. भोपालसिंघ

गांव पीडियो (आधो) २०००) २०००) सिरकार नागोर

पीढिये—: ६. अभैराज-गोयददासोत ७ मानसिंघ ८ जसकरण ६. ईदर भांण १०. जूजारसिंघ ११. सायबसिंघ १२. हणवतसिंघ १३. रामसिंघ १४. चुतरसिंघ

गांव रोहिणो— (आधो) २०००) २०००) सि. नागोर

पीढियें—; १० भावसिंघ-ईदरभाणोत[2] ११. मदनसिंघ १२. गुलाबसिंघ १३. अजीतसिंघ

---

† सवत १७८७ में महाराजा अभयसिंह ने अहमदाबाद पर चढाई की उसमे काम आया। यह नोखा के (८) ठाकुर भावसिंह का पुत्र था।

(१) गाव गागुरडो के (८) ठाकुर सिवदानसिंह का पुत्र।

(२) ठि० पीढियो के (८) ठाकुर इन्द्र भाण का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बसी—	१०००)	१०००)		प्र. परबतसर

पीढियें—: ७. ईसरदास अभैराजोत[1] ८. देवीसिंघ ९. मोहणसिंघ १०. मोबतसिंघ ११. सुदरसिंघ १२. रूपसिंघ १३ नवलसिंघ १४. केसरीसिंघ

गाँव सीराधणो—:	१०००)	१०००)		सि. नागोर

पीढियें—: ७. कनीराम-अभैराजोत[2] ८. अमरसिंघ ९. ऊदेसिंघ १०. हीदुसिंघ ११. रायसिंघ १२. मालमसिंघ १३. सादुलसिंघ

गाँव मांगलियास—:	१०००)	१०००)		प्र. मेडतो

पीढियें—: ६. हरीराम गोयददासोत ७. भोजराज ८. बिहारीदास ९. छतरसिंघ सभासिंघ ११. भगवतसिंघ १२. जवानसिंह, १३. मदनसिंघ १४. लालसिंघ

रीयां स्यामदास री—	२५००)	२५००)	मेड़ता	आसामीर

पाती आध में—:

पीढियें—: ७. जूझारसिंघ-हरीरामोत[3] ८. नाहरसिंघ ९. नाथुसिंघ १०. मालमसिंघ ११. केसरीसिंघ १२ अजीतसिंघ

पाती आध मे:—

पीढियें—: ८. दोलतसिंघ-जूझार सिंघोत† ९ देवीसिंघ १०. सवेसिंघ ११. खीवकरण १२. रणजीतसिंघ

गाँव चिवली—	५००)	५००)		प्र. परबतसर

पीढियें—: ५. हरिसिंघ चादावत ६. प्रागदास ७ आसकरण ८. सलेसिंघ ९. अजबसिंघ १० प्रतापसिंघ ११ सरदारसिंघ १२ मेहतावसिंघ १३. रतनसिंघ

गाँव पुजीयास—	१२५०)	१२५०)		प्र. मेडतो

पीढियें—: ५ राघोदास चादावत ६ भोजराज ७ आसकरण ८ महासिंघ ९. सभासिंघ १० बहादरसिंघ ११. हुक्मसिंघ १२ मगलसिंघ

खांप गोयनदासोत मेड़तिया—

२. दूदो जोधावत ३. वीरम उदावत ४. जैमल वीरमोत ५. गोयनदास

---

(१) ठि. पीढियो के (६) ठाकुर अभैराज का पुत्र।
(२) " " " " " "
(३) ठि मागलियास के (६) ठाकुर हरीराम का पुत्र।
(†) यह महाराजा रामसिंह और बखतसिंह के सघर्ष मे काम आया।

जयमलोत तिण रा वस रा जयमलोत कई जै ।

गोयनदासोतां रा ठिकाणां री वीगतः—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भावतो	१५००)	१५००)	मारोठ	आधो
,, केसरपुरो	—	—	मारोठ	,,
,, नरसिंघपुरो	५००)	५००)	,,	
,, अजितपुरो	१०००)	१०००)	,,	
,, सुखियो	७५०)	७५०)	,,	आधो
,, हरियोमी	७५०)	७५०)	,,	पाव
,, रामपुरो	—	—	,,	पाव
,, सुग्रोणो	५१२॥)	५१२॥)	,,	,,
,, कसारी	१७५०)	१७५०)	,,	
,, छापरी	५८७॥)	५६२॥)	,,	आधो
,, हरिपुरो	५६२॥)	५६२॥)	,,	,,
,, वाजणो	३३७॥)	३३७॥)	,,	पाव
,, घाटवो	१५७५)	१५८१)	,,	,,
,, सिमरथपुरो	—	—	,,	,,
,, चितावो	८१२॥)	८१२॥)	,,	,,
,, भुणी	५५६।)	५५६।)	,,	,,
,, वरजग	४००)	४००)	,,	
,, लालावास	२०००)	२०००)	,,	
,, लोबो	२०००)	२०००)	,,	
,, गवारीयो	५००)	५००)	,,	
, तोडरो (रूपपुरो)	११०)	१०६) दस आने	,	सवा आना पाती
,, इडाली	६३७)॥	६३७)॥	,,	पाव
,, जीवणवार	२०००)	२०००)	,,	
,, सोलवो	१०००)	१०००)	मारोठ	
,, उरलायो	—	—	,	
,, महाराज पुरो	७५०)	७५०)	,,	आधो
,, रामपुरो	—	—	,,	,,
,, मिडो	१००००)	००)	नावा	
,, देदारो वास	—	—	,,	
,, चोसली	४०००)	००)	,,	
,, जवेलीयावास	१५००)	००)	परव्रतसर	

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष

पीढियें:—: ६ सावलदास-गोयनदासोत ७. रघुनाथसिंघ (मारोठ पाई तिण रा वश रा रघुनाथ-सिंघोत है) ८. सबलसिंघ ९. इन्द्रसिंघ १०. छत्रसाल ११. सालमसिंघ १२. महेशदास १३. देविसिंघ १४. सघतसिंघ १५. सपतसिंघ (खोले) १६ सुलतानसिंघ

गांव भावलो—	१५८७)॥	१५००)	मारोठ	आधो
,, केसरपुरो	—	—	,,	,,
,, हरियाणो	७५०)	७००)	,,	पाव
,, रामपुरो	—	—	,,	,,
,, छापरी	२९३)॥।	२८१)।	,,	,,
,, बाजणो	३३७)॥	३३७)॥	,,	,,
,, बरजण	२००)	२००)	,,	दो आने पाती
,, महाराज पुरो	३७५)	३७५)	,,	आधो
,, सुखियो	३७५)	३७५)	,,	तीन आने पाती
,, मोहाएडो	५१२)॥	५१२)॥	,,	पाव
,, हरिपुरो	२७५	२८१)।	,,	,,
,, भुजी	६६०)	६५६)।	,,	,,
,, इडोली	६३६)	६३७)॥	,,	

पीढियें— १०. वैरीसाल-इन्द्रसिंघोत ११. सरुपसिंघ १२. हुक्मसिंघ काम आयो तुगारी रे राड सं. १८४४ मे १३ देविसिंघ १४. रिधसिंघ १५. अनाडसिंघ

,, खरेस	४०००)	४०००)	परवतसर	

पीढियें—: ११ जगतसिंघ-छत्रसिंघोत १२. रूदरदान १३ भेरूसिंघ

गांव घाटवो—	१५७५)	१५८१)।	मारोठ	पाव पाती
,, समरतपुरो	—	—	,,	,,
,, छापरी	२९३)॥	२८१)।	,,	,,
,, चितावो	८१२)॥	८१२)॥	,,	,,
,, तोडरी रूपपुरो	११०)	१०९) छ आने	,,	दो आने पाती
,, गोयदी	७२५)	७००)	,,	।-) पाती
,, सुखियो	५००)	३७५)	,,	।) ,,
,, हरिपुरो	२८१)	२८१)।	,,	।) ,,
,, वरजण	२००)	२००)	,,	दो आने ,,
,, महाराज पुरो	३७५)	३७५)	,,	।) ,,
,, रामपुरो	—	—	,,	।) ,,

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष

पीढियें—: ११. समरथसिंघ-वैरीसालोत　१२. दुरजण साल　१३. सभा सिंघ
१४. अभैसिंघ

नारोण पुरो—	१३२५)	१३५०)	मारोठ	
,, हरियोणी	१४००)	१४००)	,,	
,, मुवाणो	१०२५)	१०२५)	,,	आधी पांती
,, वाजणो	३३७)॥	३३७)॥	,,	
,, घाटवो	३१५०)	३१६२)॥	,,	
,, सिमरथपुरो	—	—	,,	
,, वरजण	४००)	४००)	,,	पाव पाती
,, तोडरी (रूपपुरो)	२२०)	२१८)॥।	,,	दो पाती
,, इडोली	१०४३)	१०४३)	,,	साढे छ आने पाती
,, मोगलोदो	६७५)	६७५)	,,	आधो
,, सिरसी	६३७)॥	६३७)॥	,,	पाव पाती
,, डावली	१३२५)	१३५०)	,,	
,, इन्द्रोखो	५६८)॥	५६८)॥	,	
,, काकरो रों वास	—	—	,,	
,, जावली	२०००)	००)	मेड़तो	
,, पुडी	१५००)	००)	,,	

पीढियें—: १०. हरिसिंघ-इन्द्रसिंघोत　११. अरजणसिंघ　१२. अजीतसिंघ
१३. श्यामसिंघ　१४. रतनसिंघ　१५. राजसिंघ　१६. रामसिंघ
१७. जुहारसिंघ

गांव नडवो	५०००)	५०००)	दोलत पुरो	
,, मागलोदो	३७५)	३३७)॥	मारोठ	। पाती
,, सिग्सी	६५०)	६३७)॥	,,	। ,,
,, गोयंदी	१०८७)॥	१०५०)	,,	छः आने ,,
,, माधा सुरतो	६५०)	६५०)	,,	आधो
,, फरडोद	१००००)	—	नागोर	

पीढियें—: १०. जोधसिंघ-इन्दरसिंघोत ११　मोतीसिंघ १२.　नोनदसिंघ
१३.दुरजन साल १४. सिवदानसिंघ १५. प्रतापसिंघ

गांव वासां—	४०००)	४०००)	दोलतपुरा

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव वासां—	४०००)	४०००)	दोलतपुरा	
,, मुडीयो	४०००)	४०००)	,,	
,, नोसर	१५००)	१५००)	,,	
,, मागलोद	३२५)	३३७॥)	मारोठ	पाव पांती
,, सीरसी	६५०)	६३७॥)	,,	,, ,,
,, गोयंदी	१०५०)	१०५०)	,,	छः आने ,,
,, माथा सुतो	६५०)	६५०)	,,	आधी पाती

पीढियें—: ११. रणजीतसिंघ जोधसिंघोत[1] १२. सुरताणसिंघ† १३. बखतावरसिंघ १४. देवीसिंघ १५ सुरजभाण

बंट श्रेक रे पेटे—

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मंगलाणो गुढो—	४०००)	३६००)	मारोठ	
,, भूणी	१३१२)	१३१२॥)	,,	
,, ईडोली	२६६)	२७०)	,,	
,, सीरसी	६४०)	६३७॥)		पाव,पाती
,, राजावास	१७५०)	१७५०)	,,	
,, वाजणो	३४०)	३३७॥)	,,	पाव पाती
,, वरजण	४००)	४००)	,,	
,, चीतावो	१६२५)	१६२५)	,,	आधी ,,
,, ईदोखो	५६२॥)	५६२॥)	,,	
,, सीडीयावास	१४००)	१४००)	,,	

पीढियें—: १०. बखतसिंघ ईदरसिंघोत ११. सुजाणसिंघ १२ अमानसिंघ १३ फतेसिंघ १३. सीरदारसिंघ १५ भेरूसिंघ

बंट दूजो—

पीढियें —: ११. जीवणसिंघ* बखतसिंघोत[2] १२. हणवतसिंघ १३ विसालसिंघ १४. मिलापसिंघ १५. मगलसिंघ १६. भारथसिंघ १७. हिमतसिंघ

---

† यह मरहठों से हुई मुठभेड मे सवत् १८४४ मे श्रावण सुद १३ को काम आया।
* मरहठा माधोराय से स १८४४ मे युद्ध हुआ उसमे काम आया।
१ ठि नडवो के (१०) ठाकुर जोधसिंह का पुत्र।
२. ठि. मगलाणो गुडो के (१०) ठाकुर बखतसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भिलियो—	१३०५)	१३०५)	मारोठ	आसामी ३ रे छः आने पाती
,, आसापुरो	४००)	४००)	,,	पाव पाती
,, वाटलीयो	८५०)	८५०)	,,	पाव पाती
,, हुडील	११२५)	११२५)	,,	छः आने पाती
,, परवेडी	६५२)	६५३)	,,	छः आने पाती
,, सीऊ	१३००)	१३००)	,,	आधी पाती
,, अणदपुर	४१७)	४१७)	,,	छः आने पांती
,, मूड घसोई	५८४।)	५०६।।।)	,,	तीन आने पांती
,, चारणवास	१८१।)	१८१)	,,	छः आने पाती
,, भीलाल	३७५)	३१८)	,,	छः आने पाती
,, खोसी (दलेलपुरो)	७६७।।।)	३२६।)	,,	साढे पांच आने पांती
,, सवाईपुरो	१०००)	१०००)	,,	—
,, अभेपुरीयो	१०००)	१०००)	,,	—
,, फोगालो	३०००)	३०००)	नावा	

वंट अेक में—

पीढियें—: ८. विजेसिंघ-रूघनाथसिंघोत ९. सांवतसिंघ १०जसवंतसिंघ ११. नवनदसिंघ १२. दुरजणसाल १३. चांदसिंघ १४. भगवतसिंघ

गाव भिलीयो	६५२।।)	०	मारोठ	तीन आने पांती
,, आसापुरो	२००)	०	,,	दो आने पाती
,, वाटलियो	४२५)	०	,,	दो आने पांती
,, हुडील	५६२।।)	०	,,	तीन आने पांती
,, परवेडी	३२६।।)	०	,,	तीन आने पांती
,, अणदपुरो	२०८।।)	०	,,	तीन आने पातो
,, मुडगसोई	२५५)	०	,,	छः पैसे पाती
,, चारणावास	९७।।)	९०।।)	,,	तीन आने पांती
,, भीलाल	१८६)	१५९)	,,	तीन आने पाती
,, खोसी (दलेलपुरो)	१६५) पाच आने	१६३।)	,,	पाच पैसे पाती
,, सीऊ	६५०)	०	,,	पाव पाती

वंट दूजा री—

पीढियें—: सूरसिंघ सावतसिंघोत[1] ११. ईसरीसिंघ १२. ऊदेभाण १३. वलवतसिंघ १४. सिवसिंघ

---

१. पहली पाती (झिलियो ठि) के (९) ठाकुर सावतसिंह का पुत्र।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव झिलियो—	६५२॥)	०	मारोठ	तीन आने पाती
,, आसापुरो	२००)	०	,,	दो आने पाँती
,, बाटलियो	४२५)	०	,,	दो आने पाती
,, हुडील	५६२॥)	०	,,	तीन आने पाती
,, भीलाल	२२६॥)	१५६)	,,	तीन आने पाती
,, सीऊ	६५०)	०	,,	पाव ,,
,, अणद पुरो	२००॥)	२०८॥)	,,	तीन आने पाती
,, मुड गसोई	२५५)	०	,,	आधी पाती
,, चारणवास	६०॥)	६०॥)	,,	तीन आने पाती
,, खोसी (दलेल पुरो)	०	१६३।)	,,	पाच पैसे पाती
,, परवेडी	३२६।)	३२६॥)	,,	तीन आने पाती

बंट तीजा री—

पीढियें—: भवानीसिंघ-सावतसिंघोत[1] ११. डुगरसिंघ १२. रामप्रतापसिंघ १३. मोहनसिंघ १४. सवाईसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सरगोठ—	५०००)	०	दरीबे नावा	खेडा ३
,, मुड गसोई	१४००)	१४०६)	मारोठ	आधो
,, हुडील	३५०)	०	,,	दो आने पाती
,, ढाणीया	२०००)	१५००)	,,	
,, गुगर गवाड	३०००)	२६००)	,,	
,, कुकडवाली	४७०)	०	,,	
,, अडकसर	१५५०)	१५२५)	,,	आधी पाती
,, बाटलीयो	१७५०)	१७००)	,,	आधी पाती
,, खोसी (दलेल पुरो)	८५०)	६४५)	,,	पाच आने पाती
,, विजेपुरो	१०००)	०	,,	
,, नोलासीयो	२०००)	१६७५)	,,	
,, कालोली	१२५०)	१२३८)	,,	
,, रुगनाथपुरो	६००)	६३७॥)	,,	

पीढियें— ६. पदमसिंघ-विजेसिंघोत[2] १०. दौलतसिंघ ११. दीपसिंघ १२. माधोसिंघ

---

१ पहली पाती (झिलियो ठि.) के (६) ठाकुर सावतसिंह का पुत्र।

२. ठि झिलियो (पहला वट) के (८) ठाकुर विजयसिंह का पुत्र।

(कांम [आयो] झवर्र री राड़ मे संवत् १८४६ चेत सुद ६) १३. जोरावरसिंघ १४. वखतावरसिंघ १५. प्रतापसिंघ १६. वेरीसाल

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव कूकड़वाली—	६४०)	६४०)	मारोठ	
,, तोडरो (रूपपुरो)	३२८)	३२८)	,,	
,, रुगनाथपुरा	२६०)	२६०)	,,	
,, अड़कसर	७६२)	७६२॥)	,,	
,, तोडावास	१३००)	१३००)	,,	

पीढियें—: ६. मोहणसिंघ-विजेसिंघोत[1] १०. हीदुसिंघ ११. नवलसिंघ १२. हरनाथसिंघ १३. चतरसिंघ १४. पोपसिंघ

गांव लिचाणो—	१५००)	१४००)	मारोठ	आधो वंट
,, डुंगरपुरो	५५५)	४१२॥)	,,	आधो वट
,, खोसी (दलेल पुरो)	४३१)	३२६।)	,,	छ आने पाती
,, घोकलीयो	३५०)	३००)	,,	छ आने पाती
,, गोगोर	७६०)	६७०।)	,,	साढे तीन आने पाती
,, गुढो	१००-)	०	नांवा	—

बंट पेला में—

पीढियें—. ६. फतेसिंघ विजेसिंघोत[2] १०. नाहरसिंघ* ११. सुरताणसिंघ १२. जवानसिंघ १३. सिवदांनसिंघ १४. अमांनसिंघ

गांव लीचाणो—	१५००)	१४००)	मारोठ	आधो
,, डुंगर पुरो	४००)	४१२॥)	,,	सवा सात आने पाती
,, खोसी(दलेलपुरो	३४५)	३२६।)	,,	साढे सात आने पाती
,, घोकलीयो	३००)	३३७॥)	,,	साढे पाच आने पाती
,, गोगोर	४६०)	४०७॥)	,,	साढे तीन आने पाती
,, गुढो	१०००)	०	,,	नावा

बंट दूजा में—

पीढियें—: १०. दुलेसिंघ फतेसिंघोत ११. जेतसिंघ १२ ऊमेदसिंघ १३. भेरुसिंघ १४. भगोतसिंघ

---

* यह राजगढ मे संवत् १८२३ मे लड़कर काम आया।

१ झिलियो (पहला वट) के (८) ठाकुर विजयसिंह का पुत्र।

२. ठि. झिलियां (पहला वट) के (८) ठाकुर विजैसिंह का पुत्र।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव हवसपुरो—	१०००)	०	दरीवे सांभर	आधो

पीढियें—: १३. दीनसिंघ जवानसिंघोत[1] १४. पिरथीसिंघ १५. रिड़मलसिंघ

गाँव नथावडी—	३०००)	३०००)	मेड़ता	पाती आध में

पांती आध में—

पीढियें—: ११. किसनसिंघ-नाहरसिंघोत[2] १२. वनेसिंघ १३. सोभासिंघ.

पांती आध में—

पीढियें—: १२. प्रतापसिंघ किसनसिंघोत १३. बलवतसिंघ

गाँव जावदी नगर—	५००)	०	दरीवे नावा	पांती आधी
,, तोडरो रूपपुरो	१६५)	१६४।)	मारोठ	
,, कुकणवाल	४७०)	४७०)	,,	
,, अरडकसर	३९१)	३८१।)	,,	
,, रुगनाथपुरो	२९०)	२९०)	,,	
,, कारोली	२७५)	२७५)	,,	
,, तोडावास	६५०)	६५०)	,,	

पांती आध रो वंट (पहली)

पीढियें—: ९. वाहादरसिंघ-विजेसिंघोत[3] १०. अरजनसिंघ ११. मगलसिंघ १२. हणवतसिंघ १३. हीमतसिंघ १४. भेरूसिंघ १५. रामसिंघ

गाँव जावदी नगर—	१५००)	०	नावा	पाती आधी
,, तोडरो (रूपपुरो)	१६५)	१६४।)	मारोठ	,,
,, कुकणवाली	४७०)	४७०)	,,	,,
,, अरडकसर	३८०)	३८१।)	,,	,,
,, रुगनाथपुरो	२९०)	२९०)	,,	,,
,, कारोली	१३५)	१३७॥)	,,	,,
,, तोडावास	६५०)	६५०)	,	,,

पांती दूजी आध री—

पीढियें—: १०. वक्सीराम-वहादुरसिंघोत[4] ११. कनीराम १२. शिवनाथसिंघ १३. अमानसिंघ १४. केशुसिंघ

---

१. ठि लिचाणा (पहला वट) के (१२) ठाकुर जवानसिंह का पुत्र।

२. ठि. लिचाण (वट पहला) के (१०) ठाकुर नाहरसिंह का पुत्र।

३. ठि झिलियो (वट पहला) के (८) ठाकुर विजयसिंह का पुत्र।

४. ठि. जावदी नगर (पात आध पहली) के (९) ठाकुर बहादुरसिंह का पुत्र।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
देवली—	३०००)	००)	नावा	

पीढियें—: १०. भारतसिंघ-बहादुरसिंघोत[1] ११. तेजसिंघ १२. जीवणसिंघ १३. सकरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव देवली बडी—	६०००)	६०००)	मारोठ	आसामी दो रे
पांती आध में रेख —	३०००)			

पीढियें—: ८. अमरसिंघ-रघुनाथसिंघोत ९. रामसिंघ १०. रायसिंघ ११. सूरसिंघ १२. दलेलसिंघ १३. दुलेहसिंघ १४. लुणकरण १५. रिडमलसिंघ १६. प्रतापसिंघ

पांती आध में रेख— ३०००)

पीढियें—: ८. किशोरसिंघ-रघुनाथसिंघोत ९. सेरसिंघ (काम आयो हिन्दोण री राड़ मे सं. १८०७ रा) १०. सवाईसिंघ ११. नाहारसिंघ १२. सिरदारसिंघ १३. उत्तमसिंघ १४. किसनसिंघ १५ दानसिंघ १६. वलवतसिंघ १७ सलावतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मीठड़ी	५५००)	००)	नावा	रेख भरे नही
,, कासेड़ो	१०००)	००)	,,	,,
,, उलाणो	१५००)	००)	,,	,,
,, वावली खेडो	२५००)	००)	,,	,,
,, पलाडो	११००)	११००)	मारोठ	,,
,, बटाणो	१०००)	१०००)	,,	,,
,, गेलासर	३५००)	३०००)	परवतसर	,,
,, इन्द्रोको	२०००)	२०००)	,,	,,
,, झुझडो	३०००)	३०००)	नागोर	आसामी दो रे
,, वासणी	३०००)	३०००)	,,	,,
,, खेडो लालीयो	८००)	८००)	मेडता	,,
,, वोकली	२५००)	२५००)	,,	,,
,, सातलास	५०००)	५०००)	,,	,,
,, सेखपुरो	१५००)	१५००)	,,	,,
,, नीवोलो	३०००)	३०००)	,,	,,

[1] ठि जावदी नगर (पात आध पहली) के (९) ठाकुर बहादुरसिंह का पुत्र ।

पांती आध में—

पीढियें—: ९. सघतसिंघ-किसोरसिंघोत[1] १०. रिडमलसिंघ ११. जवानसिंघ १२. वेरीसाल १३. नाथूसिंघ १४. प्रतापसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १४. वहादरसिंघ-नाथूसिंघोत[2]

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव केराप—	५०००)	५०००)	कोलीयो	
„ वसीर सलो	२५००)	२५००)	मेड़ता	
„ सिरदारपुर	१०००)	१०००)	दोलतपुर	

पीढियें —: ११. फतेसिंघ-रिडमलसिंघोत[3] १२. जोरावरसिंघ १३. उदयभांण

गांव खारडीयो—	२०००)	००)	नावा	आसामी-३ रे
„ मोहनपुरो	८००)	००)	„	„

पांती आध में— रेख १४००)

पीढियें—: १०. अगरसिंघ-सघतसिंघोत[4] ११. कलीरांम १२. विजयसिंघ

पांती चोथी मे रेख— ७००)

पीढियें—: १०. नाहरसिंघ-सघतसिंघोत[5] ११. मोहवतसिंघ

पांती चोथी रेख में— ७००)

पीढियें—: ९. वनेसिंघ-किसोरसिंघोत[6] १०. अभयसिंघ ११. दानसिंघ १२. लिखमणसिंघ

गांव कुचामण—	५०००)	०	नावा	नादकार है
„ पालोडो	११००)	१०५०)	मारोठ	
„ पालडी	१४५०)	१४५०)	„	
„ भगवानपुरो	६०००)	२०००)	„	
„ मोलासर	६०००)	३०००)	दौलतपुरा	

---

१ ठि देवली वडी दूसरी पाती, के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र।
२. ठि, मीठडी की पहली पातो के (१३) ठाकुर नाथुसिंह का पुत्र।
३. „ „ „ „ (१०) „ रिडमलसिंह का पुत्र।
४. „ „ „ „ (९) „ सघतसिंह का पुत्र।
५ „ „ „ „ (९) „ „ „।
६ ठि, देवली वड़ी (दूसरी पाती) के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, गांगवो	१००००)	७०००)	परवतसर	
,, जुसरी	४०००)	४०००)	,	
,, भवाल	७५००)	३०००)	मेडता	
,, मोडी	५०००)	३०००)	,,	
,, खेड़ी दुजी	१०००)	५००)	,,	
,, सीतावट	४०००)	२०००)	,,	
,, डेगाणो	६२५०)	६२५०)	,,	
,, खेडी सीला	२०००)	२०००)	,,	
,, ओटीयाणो	३०००)	१५००)	,,	
,, खेडूली	३०००)	३०००)	,,	
,, रीड	६०००)	३०००)	,,	
कुल रेख—	५०००)	०	दरीवे नावा	
	८५५०)	४५००)	परगना मारोठ रा गांव	
	६०००)	३०००)	परगना दौलतपुरो रा गांव	
	१४०००)	११०००)	परगना परवतसर रा गाव	
	३७७५०)	२४२५०)	परगना मेड़ता रा गाव	
	७१३००)	४२७५०)		

पीढियें—. ९ जालमसिंघ§ किसोरसिंघोत[1] १०. सभासिंघ* ११. सुरजमल†
१२. सिवनाथसिंघ १३. रणजीतसिंघ १४. केसरीसिंघ

गांव चोलुखों—	३०००)	३०००)	दोलतपुरा
,, आसावरी	१०००)	१०००)	नागोर सवा पांच आने पांती

पीढियें—: १५. माधोसिंघ-केसरीसिंघोत[2] १६. सवलसिंघ

गांव बुखवास—	१०००)	१०००)	कोलिया

पीढियें—: १५. देवीसिंघ-केसरीसिंघोत[3]

§ जालमसिंह लुढावास नामक स्थान पर संवत् १८०७ मे आसोज सुद ९ को युद्ध मे काम आया इनके वंशज जालिमसिंघोत कहलाते हैं।

* सभासिंह मरहठा माधोराय से १८४४ श्रावण मे युद्ध हुआ उसमे मारा गया

† यह झवर मे संवत् १८४६ मे चैत्र ६ को काम आया।

१. ठिकाना देवली वडी (दूसरी पाती) के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र।

२. ठि. कुचामन के (१४) ठाकुर केसरीसिंह का पुत्र।

३. ,, ,, (१४) ,, ,, ,, ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव आसावरी—	१० ०)	१०००)	नागोर	सवा पाच आने पाती
पीढियें—: १४. केसरीसिंघ-रणजीतसिंघोत[1] १५. बनेसिंघ				
गांव आसावरी—	१०००)	१०००)	नागोर	साढे पाच आने पाती
पीढियें—: १३. बलदेवसिंघ-सिवनाथसिंघोत[2] १४. बाहादरसिंघ १५. जसवतसिंघ				
गांव फोगडी—	४०००)	२५००)	दौलतपुरा	
पीढियें—: १२. अमानसिंघ-सुरजसिंघोत[3] १३. सपतसिंघ				
गांव लादडीयो—	४०००)	४०००)	दोलतपुरा	
पीढियें—; १३. सवाईसिंघ-अमानसिंघोत[4]				
गांव पलाडो—	११००)	११००)	मारोठ	
पीढियें—: १२. हरनाथसिंघ-सुरजमलोत[5] १३. सगतीदान १४. दुरजणसाल				
गांव नीबी—	१५००)	१०००)	दौलतपुरा	
,, डीगाल	१५००)	१५००)	,,	
,, चुगनी	२०००)	२०००)	,,	
,, साहवास	१०००)	१०००)	,,	
,, खुडी	२०००)	२०००)	,,	
,, पाथी	३०००)	३०००)	नागौर	
पीढियें—: १२. लिछमणसिंघ-सुरजमलोत[6] १३. धिडदसिंघ १४. सावतसिंघ १५. मेगसिंघ				
गांव अलतवो	६२५०)	६२५०)	मेडतो	
,, पालड़ी	८३००)	८३००)	,,	
पीढियें—: ११. जवानसिंघ†सभासिंघोत[7] १२. हणवतसिंघ १३ रामनाथसिंघ १४. बखतावरसिंघ १५. सिवसिंघ				

† सिंधिया माधोराय से सवत् १८४७ मे मेडते मे युद्ध हुआ वहा काम आया ।

१ ठि कुचामन के (१३) ठाकुर रणजीतसिंह का पुत्र ।

२. ,, ,, (१२) ,, सिवनाथसिंह का पुत्र ।

३. ,, ,, (११) ,, सुरजमल का पुत्र ।

४. ,, फोगडी के (१२) ,, अमानसिंह का पुत्र ।

५. ,, कुचामन के (११) ,, सुरजमल का पुत्र ।

६. ठि. कुचामन के (११) ठाकुर सुरजमल का पुत्र ।

७ ,, ,, ,, (१०) ,, सभासिंह का पुत्र ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव डोडीयांणो	८०००)	८०००)	मेड़तो	
,, लाडपुरो	६२५०)	६२५०)	,,	
,, घांमाणीयो	१०००)	१०००)	,,	
,, मुदीयाड	३०००)	३०००)	,,	
,, जसवतपुरो	३०००)	३०००)	,	
,, मुडीयो	२५०)	२५०)	,,	
	२१५००)	२१५००)		
गाँव पीपलाद—	२५००)	२५००)	परवतसर	
,, नीबोलो	५०००)	५०००)	,,	
,, सामपुरो	२५००)	२५००)	,,	
,, छीतरोली	५००)	५००)	,,	
	१०५००)	१०५००)		
कुल रेख—	३२०००)	३२०००)		

पीढियें—: १०. पाहाड़सिंघ-जालमसिंघोत[1] ११. रतनसिंघ १२. सादुलसिंघ १३. विसनसिंघ

गाँव कोडीयो—	१०००)	१०००)	मेड़ता	खवासवाल

पीढिये —: १४. रामसिंघ-विसनसिंघोत[2] खवास रो

गाँव लापोलाई—	७५००)	७५००)	मेड़ता
,, मीडकीयो	२५००)	२५००)	परवतसर
,, पीडवो	३०००)	३०००)	,,

पीढियें —: ११. करणसिंघ-पहाड़सिंघोत[3] १२. अमरसिंघ १३. चतरसिंघ १४ नाथूसिंघ

गाँव रोहीसडो—	६२५)	६२५)	मेड़तो

---

१. ठि. कुचामन के (६) ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र।
२. ठि. पीपलाद के (१३) ठाकुर विसनसिंह का पुत्र ।
३ ठि. ,, ,, (१०) ठाकुर पहाड़सिंह का पुत्र।

पीढियें—: ११. गोकलदास-पाहाड़सिंघोत[1] १२. जसवंतसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भदलियो—	४०००)	३०००)	दौलतपुरो	
„ सारसंडो	३०००)	३०००)	मेड़ता	
„ मीडकीयो	२०००)	२०००)	परबतसर	
„ जवालियो	४०००)	४०००)	गोढवाड	
	१३०००)	१२०००)		

पीढियें—: १०. सरूपसिंघ-जालमसिंघोत[2] ११. जोरावरसिंघ १२. धीरतसिंघ १३. बेरीसाल

गांव जावो सीसोदीयो—	३२००)	३२००)	मेड़ता	

पीढियें—: ११. फतेसिंघ-सरूपसिंघोत[3] १२. मगलसिंघ १३. मेघसिंघ १४. सवाईसिंघ

गांव घणकोली—	७०००)	७०००)	दौलतपुरा	

पीढियें—: १०. सुरताणसिंघ-जालमसिंघोत[4] ११. मालमसिंघ १२. सिवदानसिंघ १३. हुकमसिंघ १४. पिरथीसिंघ १५. सगतीदात १६. पाबुदान

गांव सुदरासण—	६०००)	६०००)	दौलतपुरा	

पीढियें—: १०. बँनसिंघ-जालमसिंघोत[5] ११. सालमसिंघ १२. जीवणसिंघ १३. वखतावरसिंघ

गांव आछोजाई—	३०००)	३०००)	मेड़ता	
„ गीनरडो	४०००)	४०००)	„	
„ सिरदारपुरो	२०००)	२०००)	„	

पीढियें—: १०. दलसिंघ-जालमसिंघोत[6] ११. सिरदारसिंघ १२. लखधीरसिंघ १३. केसरीसिंघ

---

१ ठि पीपलाद के (१०) ठाकुर पहाडसिंह का पुत्र।
२ ठि कुचामन के (६) ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र।
३. ठि. भदलियो के (१०) ठाकुर सरूपसिंह का पुत्र।
४. ठि कुचामन के (६) ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र।
५. ठि „ „ „ „ „ „।
६ ठि. „ „ (६) „ „ „।

पांती श्रेक—

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव लूणवो—	२६६०)	२६६०)	मारोठ	आसामी ५ रे ।– पांती
,, पीपराली	१७६७)	१७६६)	,,	॥=॥ पांती
,, सुरतपुरो	७५०)	११२५)	,,	
,, आभावास	२०००)	२१५०)	,,	
,, काठीयो	१३५०)	१३५०)	,,	
,, ठीकरीयो	१०८०)	१०८०)	,,	॥)॥। पाती
,, नानणो	१४५०)	१४५०)	,,	
,, रावा	१५००)	१५००)	,,	

पांती श्रेक—

पीढियें—: ६. सेरसिंघ-किसोरसिंघोत[1] १०. सुरतसिंघ ११. भारथसिंघ १२. मिलापसिंघ १३. देवीसिंघ १४. रणजीतसिंघ १५. जोरावरसिंघ १६. वखतावरसिंघ

पांती दूजी—

गाँव लुणवो—	२१३४)	११२१)	मारोठ
,, चांवडीयो	१०००)	५००)	,,
,, घडवांणो	६००)	६००)	,,
,, नगवाडो	१०००)	१०००)	,,
,, पीपराली	१७६५)	१७६६)	,,
,, ठीकरियो	४८०)	४८०)	,,
,, सवाईपुरो	६७२)	६७२)	,,
,, गोगोर	८००)	८००)	,,

पीढियें—: १०. सवाईसिंघ-सेरसिंघोत[2] ११. गजसिंघ १२. रिदसिंघ १३. संकरदांन १४. सुरजभाण

पांती तीजी—

गाँव लुणवो—	६००)	६००)	मारोठ	= पाती
,, सुरतपुरो	३७५)	१८७॥)	,,	।)॥। ,,

---

१ ठि देवली वडी (दूसरी पाती) के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र।

२. ठि लूणवो की (पहली पाती, के (६) ठाकुर सेरसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, पीपराली	११७६)	११७६)	मारोठ	पाव पांती
,, लोहराणो	१४१०)	१४१०)	,,	॥=॥। पांती
,, पोदी	२०००)	०)	सांभर	॥) ,,

पीढियें—: १०. सिरदारसिंघ-सेरसिंघोत[1] ११. सुजाणसिंघ १२. भेरूसिंघ १३. दोलतसिंघ १४. समरथसिंघ १५. किसनसिंघ

पांती चौथी—

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव लुणवो—	५६४)	५६७)	मारोठ	छः पैसे पांती
,, सुरतपुरो	३७५)	१८७॥)	,,	॥)॥) ,,
,, पीपराली	५६०)	५६०)	,,	≡) ,,
,, लोहराणो	६४०)	६४०)	,,	।-)। ,,

पीढियें—: ११. सोभागसिंघ-सिरदारसिंघोत[2] १२. जगरांमसिंघ १३. किलयाणसिंघ १४. पदमसिंघ १५ प्रभूदांन १६ सिवनाथसिंघ

पांती पांचवी—

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव लुणवो—	११२१)	११२१)	मारोठ	पाव पाती
,, ठीकरियो	२४०)	२४०)	,,	=॥ पाती
,, सवाईपुरो	७५०)	६७५)	,,	पाव पाती
,, घणवाली	६००)	६००)	,,	आधी पाती
,, गोगोर	८०८)	८०८)	,,	,, ,,
,, चावडीयो	५००)	५००)	,,	
,, नगवाडो	१०००)	१०००)	,,	आधी ,
गांव कुणी—	३०००)	०)	दरीबे नावा	पाव पांती
,, मिसरीपुरो	३०००)	०)	,,	,,
,, वेरी वडी	५०००)	५०००)	दौलतपुरा	,,
,, मोडीयाव	४०००)	४०००)	,,	,,
,, खाखलो	५०००)	५०००)	,,	,,
,, वेरी खुर्द	२०००)	२०००)	,,	,,
,, पावली	२०००)	२०००)	,,	,,

१ ठि. लूणवो (पहली पाती) के (६) ठाकुर सेरसिंह का पुत्र।

२. ठि. ,, ,, (तीसरी पाती) के (१०) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र।

विगत पटा रा गांवां री परगना वार आसांमी ५ री—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
	३१०८७)	३१०८७)	परगना मारोठ रा गाव	
	०	०	दरीबे साभर रा गाव	
	६०००)	०	दरीबे नांवा रा गाव	
	१८०००)	१८०००)	अगना दोलतपुरा रा गांव	
	५५०८७)	४६०८७) कुल		
गाँव वावडी—	४०००)	४०००)	दौलतपुरो	

पीढियें—: ६. सेरसिंघ-किसोरसिंघोत[1] १०. जगतसिंघ ११. सगतसिंघ १२. दलेलसिंघ १३. जसवतसिंघ १४. जोरावरसिंघ १५. हमीरसिंघ

गाँव मांडल देवां—	३१५०)	१०००)	मेड़तो	

पीढियें—: ११ संतोखसिंघ-जगतसिंघोत[2] १२. सोभासिंघ १३. मोवतसिंघ १४ अजीतसिंघ

गाँव पांचोतो—	२४००)	२४००)	मारोठ	। = पाती
,, राणासर	३७५०)	३७५०)	,,	
,, नालोट	२४००)	२४००)	,,	
,, पनवाडी	९७५)	९७५)	,,	
,, मडावरो	१५५०)	१५५८)	,,	॥≡॥ पाती
,, सीरोई	२६५०)	२६५०)	,,	२ आसामी
,, सिभूपुरो	१७००)	१७००)	,,	
,, खोरडी	९५०)	९५०)	,,	आधो
,, खोरडो	११३०)	०	,,	,,
,, काखडकी	६०००)	०	दरीवे नावा	,,

पांती अेक में— (मारोठ रा पांच मेहलां में)

पीढियें—: ८. हठीसिंघ-रूगनाथसिंघोत ९. सिभुसिंघ १०. देवीसिंघ ११. वाघसिंघ १२. बिसनसिंघ १३. स्यांमसिंघ १४. फतेसिंघ १५. पनेसिंघ

गाँव पांचोतो—	२१५०)	१८००)	मारोठ	॥= पाती

---

१ ठि देवली वडी (दूसरी पाती) के (८) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र ।

२ ठि. वावडी के (१०) ठाकुर जगतसिंह का पुत्र ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, जीजोट	१६७५)	१६७५)	मारोठ	
,, खोरडी	६५०)	६५०)	,,	आधी पांती
,, रसाल	४०००)	४०००)	,,	
,, मडावरो	११५०)	११४२)	,,	–।)॥ पाती
,, खोरडो	११६०)	११४२)		
,, कवरासो	१५००)	०)	दरीबे साभर	
,, रसुलपुरो		०)	,,	
,, रिणगीयो	५००)	०)	,,	

पांती दूजी रा—

पीढियें— ९. सिवसिंघ-हठीसिंघोत[1] १०. भावसिंघ ११. कायमसिंघ १२. मंगलसिंघ १३. प्रतापसिंघ

गांव चूंदियां—	४०००)	२५००)	मेड़ता

पीढियें— १०. भोपालसिंघ-सिवसिंघोत[2] ११. बुदसिंघ १२ मगलसिंघ* १३. अखेसिंघ १४. माधोसिंघ

गांव पांचवां— (खेडा ४ सु)	८०००)	०	मारोठ
,, करकेडी	२५००)	०	,,
,, देवलीखुर्द	२१००)	०	,,
,, बापडी	२२५०)	०	,,
,, सवलपुरो	८००)	०	,,
,, मगलपुरो	८००)	०	,,
,, कोटडो	६००)	०	,,
,, राजलीयो	११२५)	०	,,
,, दांनपुरो	११२५)	०	,,
,, ठीकरीयो	१२७५)	०	,,
,, अखेपुरो	१२७५)	०	,,
,, काकोट	६००)	०	,,
,, पेमपुरो	६००)	०	,,
,, रूणीजो	२०५०)	२०५०)	परबतसर

---

* काम आया गनीमो की राड मे स १८११ मे

१ ठि पाचोतो (पहली पाती) के (८) ठाकुर हठीसिंह का पुत्र।

२. ,, ,, ,, (दूसरी पांती) ,,(९) ,, सिवसिंह का पुत्र।

पीढियें—: ८. अणदसिंघ-रुगनाथसिंघोत ९. पेमसिंघ १०. राजसिंघ ११. सुजाणसिंघ १२. भेरूंसिंघ १३. भारथसिंघ १४. मोवणसिंघ १५. सिवदांनसिंघ १६. अगरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नीवोद—	६०००)	६०००)	दोलतपुरा	
,, खारीयो	३०००)	०	दरीवे नांवा	
,, सीरसी	—	—	मारोठ	
,, गोपदी	—	—	,,	

पीढियें—: ९. मांनसिंघ-अणदसिंघोत[1] १०. दीपसिंघ ११. जूझारसिंघ १२. मालमसिंघ १३. देवीसिंघ १४. सादुलसिंघ १५. रामसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भयो-वडो—	५०००)	५०००)	मेड़तो	

पीढियें—: ६. जगनाथ-गोयददासोत[2] ७. पिरागदास ८. भावसिंघ ९. गोपीनाथ १०. सिवसिंघ ११. लखधीरसिंघ १२. हरदांनसिंघ १३. सकरदांन १४. समदरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव गेडो—	२०००)	२०००)	मेड़ता	
,, खेडो अखेराज	१०००)	१०००)	,,	
,, हिंगवाणीयो	५००)	५००)	,,	

पीढियें—: ११. लखधीरसिंघ-सिवसिंघोत[3] १२. रतनसिंघ १३. सुखसिंघ १४ सिवनाथसिंघ १५. हणवतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सरनावडो—	६०००)	●	नागोर	
,, भयो	२०००)	२०००)	मेड़ता	
,, नावद	२०००)	२०००)	परवतसर	
,, वडावरो	२५००)	२५००)	,,	
,, हरसांणी	१५००)	१०००)	,,	
,, गोठडां	२०००)	२०००)	,,	

पीढियें—: १२. सालमसिंघ-लखधीरसिंघोत[4] १३. फतेसिंघ १४. सरूपसिंघ १५. देवीसिंघ

१. ठि पाचवा के (८) ठा. अणंदसिंह का पुत्र।
२. इसके वंशज गोयददासोत कहलाते हैं।
३. ठि. भयो वडो के (१०) ठाकुर सिवसिंह का पुत्र।
४. ठि गेडो के (१०) ठाकुर लखधीरसिंह का पुत्र।

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव डोभड़ी मंडां—	४००)	४००)	मेडता	
,, सावलदास	७००)	७००)	,,	

पीढियें—: १०. सायबसिंघ-गोपीनाथोत[1] ११. चादसिंघ १२. कनीराम १३. दानसिंघ १४. विड़दसिंघ १५. दीपसिंघ

गाँव ईटावो बिरामणां रो—	६२५)	६२५)	मेड़ता	आधी पाती
,, पडवालो	१५००)	१५००)	,,	

पांती अेक री—

पीढियें—: ९. जसकरण-भावसिंघोत[2] १०. अणदसिंघ ११. जोदसिंघ १२ बुधसिंघ १३. सुमेरसिंघ १४. फतेसिंघ १५ सिवनाथसिंघ १६. सुरतांणसिंघ

पांती दूजी रा—

गाँव ईटावो बिरामणां—	६२५)	६२५)	मेडता	आधी पाती

पीढियें—: १३. पाहाडसिंघ-सुमेरसिंघोत १४. रामनाथ

गाँव ईटावो लाखो—	३०००)	३०००)	मेडता	आसामी २ रे

पांती पेली आध में—

पीढियें—: ११ भारथसिंघ-अणंदसिघोत[3] १२. पाहाड़सिंघ १३. सलेसिंघ १४. बखतावरसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—. १३. सूरसिंघ-पाहाडसिंघ[4] १४. नाथूसिंघ १५. संपतसिंघ

गाँव ईटावो खोचियां—	१०००)	१०००)	मेडता	आसामी २ रे

पांती पेली आध में—

पीढिये—: १०. दोलतसिंघ-जसकरणोत[5] ११ कांनकसिंघ १२. तेजसिंघ १३. कनीराम १४. ईसरीसिंघ

पांती दूजी आध में—

---

१. ठि. भयो वडो के (९) ठाकुर गोपीनाथ का पुत्र।
२. ,, ,, ,, ,, (८) ,, भावसिंह का पुत्र।
३. ठि ईटावो (विरामणा) के (१०) ठाकुर अणदसिंह का पुत्र।
४ ठि ईटावो (लाखो) की पहली पाती के (१२) ठाकुर पहाडसिंह का पुत्र।
५ ठि ईटावो विरामणा (पाती एक) के (९) ठाकुर जसकरण का पुत्र।

पीढियें—: ७. रामसिंघ-जगनाथोत[1] ८. रूपसिंघ ९. दोलतसिंघ १०. कनकसिंघ ११. धीरतसिंघ १२. भारथसिंघ १३. रुगनाथसिंघ १४. भीवसिंघ १५ सूरसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गाँव जसवंतपुरो	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: १०. सुजाणसिंघ-जसकरणोत[2] ११. केसरीसिंघ १२. समरथसिंघ १३. रामसिंघ १४. लिछमणसिंघ १५. लालसिंघ

गाँव दमोई वडी—	१५००)	१५००)	मेड़ता

पीढियें—: ९. कुंभकरण-भारथसिंघोत १०. आईदान ११. किलाणसिंघ १२. मालमसिंघ १३. वखतावरसिंघ १४. हमीरसिंघ

गाँव दमोई खुरद—	१०००)	१०००)	मेड़ता

पीढियें—: ९. विजेसिंघ-भावसिंघोत[3] १०. पेमसिंघ ११. जोवसिंघ १२. समानसिंघ

गाँव पालड़ी राजां	५००)	०	मेडता
,, भूतावो	१४००)	०	,,

पीढियें—: ९. खीवकरण-भावसिंघोत[4] १०. केसरीसिंघ ११. भोपालसिंघ १२. सुरजमल १३. मगलसिंघ

गाँव डोभड़ी खुरद—	१०००)	५००)	मेड़ता

पीढियें—: ९. भगवतसिंघ-भावसिंघोत[5] १०. सिभूसिंघ ११. सांवतसिंघ १२. मोतीसिंघ १३. जोरावरसिंघ १४ रुगनाथसिंघ

गाँव रामसीयो—	२५००)	२५००)	परवतसर

पीढियें—: ९. छतरसाल-भावसिंघोत[6] १०. जोधसिंघ ११. ईदरसिंघ १२. पिरथीसिंघ १३. रांमसिंघ १४. रिडमलसिंघ १५. सूरजमल १६. चतरसिंघ १७. सुरतांणसिंघ

गाँव खूडो—	१०००)	१०००)	नागोर

---

१. ठि. भयो वडो के (६) ठाकुर जगन्नाथसिंह का पुत्र ।
२. ठि ईंटावो विरामणा (पाती एक) के (९) ठाकुर जसकरण का पुत्र ।
३. ठि. भयो वडो के (८) ठाकुर भावसिंह का पुत्र ।
४ ,, ,, (८) ,, ,, ,, ।
५. ठि. भयो वडो के (८) ठाकुर भावसिंह का पुत्र ।
६. ,, ,, ,, (८) ,, ,, ,, ।

पीढियें—: ८. गोरधनदास-प्रागदासोत[1] ९. जगतसिंघ १०. जोगीदास ११. दानसिंघ १२. सभासिंघ १३. लिछमणसिंघ १४. ईंदरसिंघ १५. मंगलसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव रांणीगाँव—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ११. गुमानसिंघ-जोगीदासोत[2] १२. दुलेसिंघ १३. बाघसिंघ १४. मोहवतसिंघ

गाँव भवाद—	२५००)	२५००)	परवतसर	

पीढियें—: ७ किसोरदास-जगनाथोत ८. रायसिंघ ९. हीदुसिंघ १०. किलांणसिंघ ११. दानसिंघ १२. हरीसिंघ १३. गोपालसिंघ

गाँव नोरंग्रपुरो—	२०००)	२०००)	डीडवाणो	आसामी २ रे

पांती पेली आघ मे—

पीढियें—: ६. नाथो-गोयददासोत ७. विदरावनदास-नाथावत ८. राजसिंघ ९. सेखराज १०. अजबसिंघ ११. मोहणसिंघ १२. बुधसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. भूरसिंघ

पांती दूजी आघ में—

पीढियें—: ९. अमरसिंघ-राजसिंघोत[3] १० हरीसिंघ ११. सवाईसिंघ १२. भारथसिंघ १३. किसनसिंघ १४. अनाड़सिंघ १५. विजेसिंघ

गांव वेहड़वो—	४०००)	४०००)	दौलतपुरो	

पीढियें—: ७. फतेसिंघ-नाथावत ८. हिमतसिंघ ९. सीसराम १०. सीवसिंघ ११. भोमसिंघ १२. प्रतापसिंघ १३. सलेसिंघ

गांव भाड़ोद—	१५००)	७५०)	दौलतपुरो	कुचांमण री भायप

पीढियें—: १०. सरूपसिंघ-जालमसिंघोत[4] ११. किलांणसिंघ १२ स्यामसिंघ १३ जसवतसिंघ

खांप माधोदासोत मेड़तीया—

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दुदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. माधोदास, तिण रा वस रा माधोदासोत मेड़तीया कहीजे।

---

१. ठि भयो वडो के (७) ठाकुर प्रागदास का पुत्र।

२. ठि. खुडी के (१०) ठाकुर जोगीदास का पुत्र।

३. ठि नोरगपुर (पहली पांती) के (८) ठाकुर राजसिंह का पुत्र।

४. ठि कुचामन के (९) ठाकुर जालिमसिंह का पुत्र।

माधोदासोत मेडतीयां रा ठिकांणां री विगत—

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रीयां खास—	११२५१)	११२५१)	मेड़ता	
,, अरनीयालो	६०००)	६०००)	,,	
,, ऊपादीयावास	५००)	५००)	,,	
,, वहडवास	१८७५)	१७७५)	,,	
,, अखावास	२७२७)	२७२७)	,,	
,, जडाऊखेडा २	६२५०)	६२५०)	,,	
,, सीरासणो	४५००)	४५००)	,,	
कुल रेख	३६१०३)	३६१०३)		

पीढिये—. ६. सुंदरदास-माधोदासोत ७. गोपालदास ८. प्रतापसिंघ ९. अचलसिंघ १०. कुसलसिंघ ११. सीरदारसिंघ १२. सुरजमल † १३. जवानसिंघ १४. वखतावरसिंघ १५. वीड़दसिंघ १६. सीवनाथसिंघ १७. देवीसिंघ १८. गभीरसिंघ १९. विजेसिंघ

गांव मेडास—	५०००)	५०००)	मेडतो	

पीढिये—: १६. स्यामसिंघ-विडदसिंघोत[1] १७. लिछमणसिंघ

गांव वीजाथल—	४०००)	४०००)	मेड़ता	
,, भेसड़ो खुरद	४०००)	४०००)	,,	
,, कालीयाठडो	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	१००००)	१००००)		

पीढियें—: १४. ईदरसिंघ-जवांनसिंघोत[2] १५. समरथसिंघ १६. सूरसिंघ

गांव चीखरणीयो-वडो—	७५००)	७५००)	मेडता	
,, चीखरणीयो-खुर्द	३२५०)	३२५०)	,,	
कुल रेख	१०७५०)	१०७५०)		

---

† सुरजमल महाराजा वखतसिंघ व रामसिंह के वीच मेडता मे सवत् १८०७ मे मिगसर सुद ९ को युद्ध हुआ उसमे काम आया।

१. ठि रीयाखास के (१५) ठाकुर विडदसिंह का पुत्र।

२ ठि रीयाखास के (१३) ठाकुर जवानसिंह का पुत्र।

पीढियें —: १३. मालमसिंघ-सुरजमलोत[1] १४. जेतसिंघ १५. सिवदानसिंघ
१६. सुरताणसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव चांदा रुण	२५००)	२५००)	मेडता	
,, मेह्रासी	२८००)	२८००)	,,	
,, माणकीयावास	३०००)	३०००)	,,	
,, काटीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, घोलीयो	३००)	३००)	,,	
कुल रेख	९८५०)	९८५०)		

पीढियें —: ११. सुरताणसिंघ-कुसलसिंघोत[2] १२. कनीराम † १३. सीवसिंघ
१४. विसनसिंघ १५. रणजीतसिंघ १६ देवीसिंघ १७. रामसिंघ

गांव ईडवो—	८७७५)	८७७५)	मेडता

पीढियें—; १०. जूजारसिंघ-अचलसिंघोत[3] ११. वनेसिंघ १२. सगरामसिंघ
१३. नरसिंघदास* १४. हणवतसिंघ-खोळे १५. हरीसिंघ १६. बखसीराम
१७. रामनाथसिंघ

गांव घोलेराव बडो—	४०००)	४०००)	मेडता

पीढिये -: १२. फकीरदास-वनेसिंघोत[4] १३. जैसिंघ १४. मोहवतसिंघ

गांव पोलास गाडेतीयां—	१०००)	१०००)	मेडता

पीढियें —: १३. वाघसिंघ-फकीरदासोत[5] १४ धीरतसिंघ

गांव आलणीयावास—	११२२५)	११२२५)	मेडता
,, नाधु री वासणी	१०००)	१०००)	,,
,, कीलाणी वासणी	६२५)	६२५)	,,

---

† कनीराम मरहठो के साथ हुए मेडता के युद्ध मे सवत् १८४७ मे काम आया।

* काम आयो सवत् १८४७ भादवा सुद २ मेडते दिखणीया री फोज सु झगड़ो हुवो तरे।

१. ठि. रीया खास के (१२) ठाकुर सुरजमल का पुत्र।

२ ,, ,, ,, (१०) ,, कुसलसिंह का पुत्र।

३. ठि. रीया खास के (९) ठाकुर अचलसिंह का पुत्र।

४. ठि ईडवो के (११) ठाकुर वनेसिंह का पुत्र।

५. ठि घोलेराव बडो के (१२) ठाकुर फकीरदास का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, पीपलीयो	७५०)	७५०)	मेड़ता	
कुल रेख	१३६००)	१३६००)		

पीढियें—: ९. राजसिंघ † प्रतापसिंघोत[1] १०. किलाँणसिंघ ११ रामसिंघ १२. लखधीरसिंघ १३. फकीरसिंघ १४. भारथसिंघ १५. हणवतसिंघ १६. अजीतसिंघ १७. ऊदेसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बालोली जाटां—	६२५०)	६२५०)	मेड़ता	
,, वीजारूण	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	८२५०)	८२५०)		

पीढियें—: ९. गोकलदास-प्रतापसिंघोत[2] १०. हीदुसिंघ ११. जोधसिंघ १२. नीरभेराम १३. मोहबंतसिंघ १४. दोलतसिंघ १५. बभूतसिंघ§ १६. दुरजणसिंघ १७. भवानीसिंघ १८. सगतसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नैणीयो—	२५००)	२५००)	परबतसर	

पीढियें—: १०. हठीसिंघ-गोकलदासोत[3] ११. दीपसिंघ १२. वछराज १३. मालमसिंघ १४. लखधीरसिंघ १५. खुमांणसिंघ १६. सिवनाथसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव गोठड़ो—	५२५०)	५२५०)	मेड़ता	

पीढियें—: ९. रांमचदर-प्रतापसिंघोत[4] १०. जसवतसिंघ ११. चांदसिंघ १२. दांनसिंघ १३. फतेसिंघ १४. बखतावरसिंघ १५. मनरूपसिंघ १६. वीजेसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव चांनणी वड़ी—	३७५)	३७५)	मेड़ता	
,, चांनणी खुरद	३७५)	३७५)	,,	

पीढियें—: ९. रूपसिंघ-प्रतापसिंघोत[5] १०. ईसरीसिंघ ११. दोलतसिंघ १२. चदरभाण

† संवत् १७६२ भादवा सुद ११ को यह तेवर के नवाव से युद्ध कर पुष्कर में काम आया।

§ बुंदी श्री बाईजी साथे बंदगी मे थो सु ऊठे भगड़ो हुवो तरे काम आयो संवत् १८८६ में।

१. ठि. रीयां खास के (८) ठाकुर प्रतापसिंह का पुत्र।

२. ठि. रीया खास के (८) ठाकुर प्रतापसिंह का पुत्र।

३. ठि. बालोली जाटां के (९) ठाकुर गोकुलदास पुत्र।

४. ठि. रीया खास के (८) ठाकुर प्रतापसिंह का पुत्र।

५ ,, ,, (८) ,, ,, ,, ,,

१३. भारथसिंघ १४. निरभेसिंघ १५. अरजणसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सुरियास—	२५००)	२५००)	मेड़ता	

पीढियें—: ८. भाखरसिंघ-गोपालदासोत[1] ९. भोजराज १०. जगरांमसिंघ ११. डूगरसिंघ १२. नवलसिंघ १३. हणवतसिंघ १४. बलवंतसिंघ

गांव भेसड़ो वडो—	३५००)	३५००)	मेड़ता	

पीढियें— ८ भीवसिंघ-गोपालदासोत[2] ९. अणदसिंघ १०. भगवानसिंघ ११. रिणछोड़दास १२. वनेसिंघ १३. समरथसिंघ १४. सरुपसिंघ १५. रामनाथसिंघ

गांव कोतलसर—	३२००)	३२००)	मेड़ता	

पीढियें—: ७. सगतसिंघ-सुदरदासोत[3] ८. हीमतसिंघ ९. प्रीथीराज १०. मानसिंघ ११. नवलसिंघ १२. जुजारसिंघ १३. जोरावरसिंघ १४. हीरदेराम १५ भवानीसिंघ १६ मगलसिंघ

गांव कीरड—	१८७५)	१८७५)	मेड़ता	
,, पालडी सेस	६५०)	६२५)	,,	
कुल रेख	२५२५)	२५२५)		

पीढियें— : ९. रतनसिंघ-हीमतसिंघोत[4] १० अरजनसिंघ ११. सगरांमसिंघ १२. मदनसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. गजसिंघ १५. मगलसिंघ

गांव भाडली—	१३५०)	६२५)	मेड़तो	

पीढियें—: १०. पदमसिंघ-रतनसिंघोत[5] ११. अमरसिंघ १२. बाहादरसिंघ १३. किलाणसिंघ १४. कनीराम १५. हिंदुसिंघ १६ अबेसिंघ १७. ईदरसिंघ १८. डुगरसिंघ १९. दुरजनसिंघ २०. चिमनसिंघ २१. रामनाथसिंघ

गांव कवाल—	२०००)	१०००)	सि. नागोर	

---

१. ठि. रीया खास के (७) ठाकुर गोपालदास का पुत्र।
२. ठि ,, (७) ,, ,, ,,।
३ ,, ,, (६) सुदरदास का पुत्र।
४. ठि कोतलसर के (८) ठाकुर हिमतसिंह का पुत्र।
५. ठि कीरड के (९) ठाकुर रतनसिंह का पुत्र।

पीढियें—: ११. दानसिंघ-पदमसिघोत[1] १२. कनकसिंघ १३. सोभासिंघ
१४. चुतरसिंघ १५. ऊदेसिंघ १६. माधोसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बुताटी—	४०००)	४०००)	सि. नागोर	

पीढियें—: ११. अमरसिंघ-पदमसिंघोत[2] १२. वाहादरसिंघ १३. वगसीराम
१४. अनाडसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गांव चुई—	३०००)	३०००)	सि नागोर	

पीढियें—: ११ सुदरसिंघ-पदमसिंघोत[3] १२. रूघनाथसिंघ १३. करणसिंघ
१४. अमानसिंघ

गांव डोभड़ी—	२५००)	२५००)	प्र. मेडतो	

पीढिये—: ८. माहासिंघ-सगतसिंघोत[4] ९. जगरामसिंघ १०. बुधसिंघ
११ जालमसिंघ १२ जगरूपसिंघ १३. भेरूसिंघ १४. रामनाथ
१५. चादसिंघ

गांव वरसणु—	२०००)	२०००)	स. नागोर	आसामी २ रे

पांती अेक आध में—

पीढियें—: ७. सवलसिंघ-सुदरदासोत[5] ८. जुजारसिंघ ९. विसनसिंघ १०. सीभुसिंघ
११. पेमसिंघ १२. भवानीसिंघ १३. पाहाडसिंघ १४. नाहरसिंघ
१५. मुकनसिंघ १६. लिछमणसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—: १४. करणसिंघ-पाहाड़सिंघोत[6] १५. अनाडसिंघ

गांव लंगोड—	२०००)	१९००)	मेड़तो	

पीढियें—: ६. मोहवणदास-माधोदासोत ७ दलपतसिंघ ८ मनसिंघ ९. पीरथीसिंघ
१०. हरीसिंघ ११. सांवतसिंघ १२. सालमसिंघ १३. दलेलसिंघ १४. जैतसिंघ

खांप-सुरतांणोत-मेड़तीया—

---

† कांम आयो १८२४ मे नागोर री फोज मे जट-वाडा कानी।
१. ठि. भडाला के (१०) ठाकुर पदमसिंह का पुत्र।
२. „ „ (१०) „ „ „।
३. „ „ (१०) „ „ ।
४. ठि कीतलसर के (७) ठाकुर सगतसिंह का पुत्र।
५. ठि. रीया खास के (६) ठाकुर सुदरदास का पुत्र।
६. ठि. वरसणु (की पहली पाती) के (१३) ठाकुर पहाडसिंह का पुत्र।

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. सुरताणसिंघ, तिण रा वस-रा सुरताणोत कहीजै ।

सुरतांणोतां रा ठिकांणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव गुलर—	७०००)	७०००)	परवतसर	
„ नीवडी	१५००)	१५००)	„	
„ कुराडो	६०००)	६०००)	„	
„ साचोर	१५००)	१५००)	„	
„ अरठ	१०००)	१०००)	„	
	१७०००)	१७०००)		
गांव ललांणो-वडो—	१२५०)	१२५०)	मेड़ता	
„ बीठवाल	५०००)	५०००)	„	
	६२५०)	६२५०)	„	
कुल रेख	२३२५०)	२३२५०)		

पीढियें—: ६. गोपालदास-सुरताणोत[1] ७. हरनाथसिंघ ८ अचलदास § ९. रुघनाथसिंघ * १०. अरजनसिंघ ११ जगतसिंघ १२. हरीसिंघ १३. देवकरण १४. मालमसिंघ १५. वखतावरसिंघ १६. गोपालसिंघ १७. विसनसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रोहंडो—	६०००)	६०००)	परवतसर	
„ छीतरो	५००)	५००)	„	
„ पीपलाद	२५००)	२५००)	„	
„ मेहगांव	१५००)	१५००)	„	
कुल रेख	१०५००)	१०५००)		

---

§ अचलदास सेतुबंध रामेस्वर मे बादशाही सेवा मे काम आया ।

* चित्तोड़ मे काम आया सवत् १८२४ रा चेत सुदे ३ ।

1. जैमल के पुत्र सुरताण का पुत्र ।

पीढियें— . १०. भीवसिंघ-रुघनाथसिंघोत[1] ११. किसोरसिंघ १२ प्रतापसिंघ १३. सिरदारसिंघ १४. सायवसिंघ १५. जेतसिंघ १६. रिड़मलसिंघ १७ जुहारसिंघ १८ वलदेवसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बाजुवास—	४०००)	४०००)	मेड़ता	
,, भेरूवास	८३३।-)।	८३३।-)।	परवतसर	
कुल रेख	४८३३।-)।	४८३३।-)।		

पीढियें— : ११. किसनसिंघ-भावसिंघोत[2] १२. फतेसिंघ १३. जवानसिंघ १४. ईसरीसिंघ १५. जोधसिंघ १६. रूपसिंघ

गांव जावलो—	७०००)	७०००)	मेड़ता	
,, मेहराणो	५०००)	५०००)	,,	
,, आजरोली	३०००)	३०००)	,,	
परगना मेडता री रेख	१५०००)	१५०००)		
गांव जालरो—	६०००)	६०००)	परवतसर	
,, मुडानो	१५००)	१५००)	,,	आधो
,, नादोली	१०००)	१०००)	,,	आधी
,, ढाढोतो	५०००)	५०००)	,,	
,, कुराडो	६०००)	६०००)	,,	
,, बोलीयो	१५००)	१५००)	,,	
,, लखीयावास	२०००)	२०००)	,,	
रेख परबतसर रा गांव री	२३०००)	२३०००)		
रेख मेडता रा गांवा री	१५०००)	१५०००)		
कुल रेख	३८०००)	३८०००)		

पीढिये—: ९. गोकलदास-अचलदासोत[3] १०. सावतसिंघ ११. सगरामसिंघ

---

१ ठि ललाणो वडो के (९) ठाकुर रुघनाथसिंह का पुत्र।
२ ठि रोहंडी के (१०) ठाकुर भीवसिंह का पुत्र।
३ ठि ललाणो वटो के (८) ठाकुर अचलदास का पुत्र।

१२. समरथसिंघ १३ लखधीरसिंघ १४. दुरजणसिंघ १५. नोनदसिंघ १६. बाघसिंघ १७ केसरीसिंघ १८. प्रतापसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव जभोलो—	५०००)	५०००)	परवतसर	

पीढियें—: १०. सगतसिंघ-गोकलदासोत[1] ११ सभासिंघ १२. सेरसिंघ १३. सुमेरसिंघ १४. जेतसिंघ १५. हरीसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भखरी—	३०००)	३०००)	मेड़ता	
,, मोलासर	३०००)	३०००)	,,	
,, नरमो	३०००)	३०००)	,,	
,, राजलोतो	७०००)	७०००)	,,	
,, भानीगांव	३५००)	३५००)	परवतसर	
कुल रेख	१९५००)	१९५००)		

पीढियें—: ७. दलपत-गोपालदासोत[2] ८. गोरधनदास ९. सीभूसिंघ १०. भेरूसिंघ ११. केसरीसिंघ १२. नवलसिंघ १३. नाहरसिंघ १४. मंगलसिंघ १५. हरीसिंघ

गांव सील भखरी	—	—	मेड़ता	पाती दो

पांती अेक आध में—

पीढियें—: ६. किसनदास-सुरताणोत[3] ७. विहारीदास ८ वीठलदास ९. अमरसिंघ १०. गजसिंघ ११. डुंगरसिंघ १२. प्रतापसिंघ १३. सेवादास १४. मगनीराम १५. लालदास १६. चद्रदास

पांती दूजी आध में—

पीढियें -. १२. फतेसिंघ-डुंगरसिंघोत १३ ललितसिंघ १४. भारथसिंघ १५. नदसिंघ १६. नाहरसिंघ

सील भखरी (परगना मेडता, तिणने किसनपुरो केहे, रेख भरे नही, भखरी रा ऊकील)

खांप केसोदासोत मेड़तीया

---

१ ठि जालरो के (९) ठाकुर गोकलदास का पुत्र।

२ ठि ललाणो वडो के (६) ठाकुर गोपालदास का पुत्र।

३. सुरतांण जैमलोत का पुत्र।

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५ केसोदास * जैमलोत, तिण रा वश रा केसोदासोत कहीजे ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बडू—	७०००)	७०००)	परवतसर	
,, चीलु	३०००)	३०००)	,,	
,, खांनपुर	१५००)	१५००)	,,	
,, हरनावो	६०००)	६०००)	,,	
,, भावसो	५००)	५००)	,,	
,, माणवो	५००)	५००)	,,	
,, भादवो	३५००)	३५००)	,,	
,, गीगोली	३५००)	३५००)	,,	
,, मोरेड	१५००)	१५००)	,,	
,, सीरसु	१५००)	१५००)	,,	
,, दावडीयो	१२५०)	१२५०)	,,	आधो
,, कणसरीयो	१०००)	१०००)	,,	
,, डुरडाणी	२०००)	२०००)	,,	

पीढियें—: ६. गिरधरदास § केसोदासोत ७. गदाधर ८. स्यामसिंघ ९. प्रीथीराज १०. रांमसिंघ ११ रतनसिंघ १२ वदनसिंघ १३. कनीराम १४. सुरताणसिंघ १५. अजीतसिंघ १६. सीवनाथसिंघ १७. सवाईसिंघ १८. सेरसिंघ १९. जीवणसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना
गाँव सबलपुर—	५०००)	५०००)	परवतसर
,, दुढीयो	२०००)	२०००)	,,
,, माणवो	५००)	५००)	,,
,, गीगोली	३५००)	३५००)	,,
,, दावडीयो	१२५०)	१२५०)	,,
,, वागोट	५०००)	५०००)	,,
,, कवलाद	१०००)	१०००)	,,
	१८२५०)	१८२५०)	

* केसोदास सवत् १६५८ मे सेतुवन्ध रामेश्वर में जहाँगीर की फौज से युद्ध कर मारा गया ।

§ गिरधरदास लोद की घाटी मे बादशाह की फौज से युद्ध कर स. १६०७ में काम आया ।

पीढिये—: १० किसनसिंघ-प्रीथीराजोत[1] ११. मानसिंघ १२. लालसिंघ १३. मोखमसिंघ १४. माधोसिंघ १५. तेजसिंघ-खोळे १६ मोहबतसिंघ १७. रणजीतसिंघ १८. सवलसिंघ १९ स्यामसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बरनेल—	५०००)	५०००)	परवतसर	

पीढिये—: ११. गुमानसिंघ-किसनसिंघोत[2] १२. ऊमेदसिंघ १३. नवलसिंघ १४. पाहाड़सिंघ १५. लिछमणसिंघ १६ चिमनसिंघ

गांव बणांगणो—	६०००)	६०००)	दौलतपुरा	

पोढिये—: ११. सेरसिंघ-किसनदासोत[3] १२. कोजुराम १३ माधोसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. वाघसिंघ

गांव चीतावो—	१०००)	१०००)	परबतसर	

पीढियें—: १४ बिडदसिंघ † माधोसिंघोत[4] १५. रतनसिंघ

गांव ऊचेरीयो—	२०००)	२०००)	परवतसर	

पीढियें—: ११ बखतावरसिंघ-किसनसिंघोत[5] १२ सालमसिंघ १३. जोदसिंघ १४. कनकसिंघ १५. रुड़सिंघ

गांव बोड़ावड—	६०००)	६०००)	परबतसर	
,, खोखरो	२५००)	२५००)	,,	
,, आजवो	३०००)	३०००)	,,	
,, कुजा डुगरी	१५००)	५००)	,,	
कुल रेख	१३०००)	१२०००)		

पीढियें—: १०. बाहादरसिंघ-प्रीथीसिंघोत[6] ११. जालमसिंघ १२. बखतावरसिंघ§ १३. मगलसिंघ १४. कीलाणसिंघ १५. सादुलसिंघ

---

† बिड़दसिंह सवत १८८५ मे जयपुर वालो की बाहर मे आया।

§ काम आयो दिखणी माधोराव सु झगडो हुवो जठे स १८४४ रा सावण सुद १३।

१. ठि वडू के (९) ठाकुर प्रिथीराज का पुत्र।

२. ठि सबलपुर के (१०) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र।

३. ,, ,, (१०) ,, ,,।

४. ठि. बणागणो के (१३) ठाकुर माधोसिंह का पुत्र।

५. ठि. सबलपुर के ठाकुर किसनसिंह का पुत्र।

६. ठि. वडू के (९) ठाकुर पृथ्वीसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव लाडोली—	४०००)	२०००)	परवतसर	

पीढियें—: ११. देवीसिंघ-बाहादरसिंघोत[1] १२. बखतसिंघ १३ बखसीराम
१४. भीवसिंघ १५. नोनदसिंघ १६ हुग्नाथसिंघ १७. किलाणसिंघ

गाँव कालवो—	२५००)	१८३३।–)	परवतसर आसामी ३ रे	

सवा पांच आने पांती एक तीजी में—

पीढियें—: ११. दानसिंघ-बाहादरसिंघोत[2] १२. डुगरसिंघ १३ लखधीरसिंघ
१४. रणजीतसिंघ १५. गोपालसिंघ १६. रिड़मलसिंघ

सवा पांच आने पांती दूजी तीजी मे—

पीढियें—: ११. माधोसिंघ-बाहादरसिंघोत १२. सिभूसिंघ १३ जोरावरसिंघ
१४. मोतीसिंघ १५. मालमसिंघ १६. चैनसिंघ १७. अजीतसिंघ

सवा पांच आने पांती तीजी में—

पीढियें— : ११. समरथसिंघ-बाहादरसिंघोत १२. सगतसिंघ १३. चुतरभुज
१४. सायबसिंघ १५. खुमाणसिंघ १६. हरदांनसिंघ १७. अनाड़सिंघ

गाँव मांमड़ोली—	२०००)	२०००)	परवतसर	
,, कालवारी ढाणी	३५०)	३५०)	,,	।) पाती

पीढियें—: १०. हीदुसिंघ-प्रीथीराजोत[3] ११. बाघसिंघ १२. सुरताणसिंघ
१३. अमांनसिंघ १४. हमीरसिंघ १५. प्रतापसिंघ १६. दोलतसिंघ

गाँव बुडसु—	६०००)	६०००)	परवतसर	
,, भीचावो	३०००)	३०००)	,,	
,, लाडोली	५००)	५००)	,,	
,, नगवाडो	५००)	५००)	,,	
,, राजथलियो	१३००)	१३००)	,,	
,, चडालीयो	५००)	५००)	,,	
,, कचोलीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, आकोदो	३०००)	३०००)	,,	
,, वेगसर	५००)	५००)	,,	

---

१. ठि. वेडावड के (१०) ठाकुर बहादुरसिंह का पुत्र।
२ ,, ,, (१०) ,, ,,।
३. ठि. वडू के (६) ठाकुर प्रीथीराज का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, थेवडी	१५००)	१५००)	,,	
कुल रेख	१२०५०)	१२०५०)		
गाँव खोदर पुरो—	३०००)	३०००)	परबतसर	
,, गुणावती	२०००)	२०००)	,,	
,, रामपुरो	१०००)	१०००)	,,	
,, सुपेड	१२५०)	१२५०)	,,	
,, हरनावो	५००)	५००)	,,	
,, चावडीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, चाडी	५००)	५००)	,,	
,, देवरी	१२५०)	१२५०)	,,	
,, गावडी	१५००)	१५००)	,,	
,, वडवाली	१२५०)	१२५०)	,,	
,, घानोली	३०००)	३०००)	,,	
,, मोडण	१०००)	१०००)	,,	
,, दरडाणी	१०००)	१०००)	,,	
,, देवली	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	३७५५०)	३७५५०)		

पीढियें—: ९. अखेसिंघ-स्यामसिंघोत[1] १० सुरतसिंघ ११. गजसिंघ १२. बुदसिंघ १३. अमानसिंघ १४. प्रतापसिंघ १५. सिरदारसिंघ १६. माधोसिंघ

गाँव कूकडदो—	३०००)	३०००)	परबतसर

पीढियें—: १२. दानसिंघ-गजसिंघोत[2] १३. केसरीसिंघ १४. हणवतसिंघ १५ ग्यानसिंघ

गाँव मनाणो—	१३५०)	१३५०)	परबतसर
,, जवादीयो	१५००)	१५००)	,,
,, हुडीयो	२५००)	२५००)	,,
,, मनाणी	१३५०)	१३५०)	,,

---

१ ठि. वडू के (८) ठाकुर श्यामसिंह का पुत्र।

२ ठि खोदपुरो के (११) ठाकुर गजसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, सीरसलो	२५००)	२५००)	,,	
,, विसरोली	४०००)	४०००)	,,	
,, वडरूण	५०००)	३५००)	,,	
कुल रेख	१८२००)	१६७००)		

पीढियें—: १०. अमरसिंघ-अखेसिंघोत[1] ११. धीरतसिंघ १२. अभेसिंघ १३. दलेलसिंघ १४. नाहरसिंघ १५. जुजारसिंघ १६. केसरीसिंघ १७ फतेसिंघ १८. सिवदानसिंघ १९. जोरावरसिंघ

गाँव डसांणो खुरद—	२०००)	२०००)	परवतसर

पीढियें—: १३. ऊमेदसिंघ-अभेसिंघोत[2] १४. रणजीतसिंघ १५. गुमानसिंघ १६. भीवसिंघ १७. भेरूसिंघ

गांव रोडु बिरडा—	३०००)	३०००)	नागोर
,, वांभुवास	३०००)	३०००)	,,
,, पातुवास	१०००)	१०००)	,,
,, पुनावास	१०००)	१०००)	,,
,, मांकडवास	१०००)	१०००)	,,
,, आसरवो	२०००)	२०००)	परवतसर
कुल रेख	११०००)	११०००)	

पीढियें—: ११. अणदसिंघ-अमरसिंघोत[3] १२. माहासिंघ १३. लिछमणसिंघ १४. अगरसिंघ १५. जगतसिंघ १६. सवाईसिंघ

गांव टांगलो—	५०००)	४०००	नागोर
,, खोखरीयो	३०००)	२५००)	परवतसर
	८०००)	८०००)	

पीढियें—: १०. नवलसिंघ-अखेसिंघोत[4] ११. जालमसिंघ १२. दोलतसिंघ १३ सादुलसिंघ १४. हुकमसिंघ १५. सिरदारसिंघ

---

१. ठि. खीदपुरो के (९) ठाकुर अखेसिंह का पुत्र ।
२. ठि मनाणो के (१२) ठाकुर अभेसिंह का पुत्र
३. ठि मनाणो के (१०) ठाकुर अमरसिंह का पुत्र ।
४. ठि. खीदपुरो के (९) ठाकुर अखेसिंह का पुत्र ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खोजावास —	२०००)	२०००)	परबतसर	

पीढियें—: १०. इद्रसिंघ-अखेसिंघोत[1] ११. चुतरभुज १२. बखसीरांम १३. खुमांणसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव विदीयाद —	७०००)	७०००)		
,, अडाणी	२०००)	२०००)		
कुल रेख	९०००)	९०००)		

पीढियें —: ८ भोजराज-गदाधरोत[2] ९. सुखसिंघ † १०. किसोरसिंघ ११. जोरावरसिंघ १२. सीभुसिंघ १३ किसनसिंघ १४ रामनाथसिंघ १५. हरीसिंघ १६. सादूलसिंघ १७. बेरीसाल

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव डोडवाडो —	१५००)	१५००)	परबतसर	

पीढियें —: ९. सुखरूपसिंघ-भोजराजोत[3] १० केसरीसिंघ ११. साहेबसिंघ १२. सिवदानसिंघ १३. रतनसिंघ १४. अनाडसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव जूसरीयो —	३०००)	३०००)	परबतसर	

पीढियें —: ९. विजेसिंघ-भोजराजोत[4] १० अजबसिंघ ११. सवाईसिंघ (मेडते काम आयो) १२. अचलसिंघ १३. जवांनसिंघ १४. मगलसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव तोसीणो —	६०००)	५५००)	परबतसर	
,, रोहा	२०००)	२०००)	,,	
,, साधीया	१५००)	१५००)	,,	

पीढियें —: ७. उदेभाण-गिरधरदासोत[5] ८. किलयाणदास ९. मोकमसिंघ * १०. भीवसिंघ ११. सूरजभांण § १२. देवसिंघ १३. अभेसिंघ १४. रुघनाथसिंघ १५. बखतावरसिंघ

† खडेला रा राजा रे मामा भुवा रो थो सु खडेला वाळां रे नवाव सु झगड़ो हुवो जठे काम आयो।

* काम आयो मेड़ते पातसाह री फौज सु झगड़ो हुवो जठे सवत् १६९७ रा पौस वद ८ ने।

§ कांम आयो दिखणीया री राड में सवत् १८२२ रा फागण सुद १५।

१. ठि खीदपुरो के (९) ठाकुर अखैसिंह का पुत्र।

२. ठि. वडू के (७) ठाकुर गदाधर का पुत्र।

३ ठि, विदीयाद के (८) ठाकुर भोजराज का पुत्र।

४. ठि विदीयाद के (८) ठाकर भोजराज का पुत्र।

५ ठि वडू के (६) ठाकुर गिरधरदास का पुत्र।

खांप विठलदासोत मेड़तीया

२. दूदो-जोधावत ३. वीरम-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. विठलदास रा वंश रा वीठलदासोत कहीजै

विठलदासोत मेड़तीयां रा ठिकांणां री विगत—

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नीबी खास—	१५००)	१५००)	दौलतपुरो	
,, अेवाद	१५००)	१५००)	नागोर	आधी

पीढियें—: ६. विहारीदास-वीठलदासोत ७. वनमालीदास ८. आईदान ९. जगतसिंघ १०. फतेसिंघ ११ सूरतसिंघ १२. लिछमणसिंघ १३. साहबसिंघ १४. रणजीतसिंघ

गाँव लुणसरो —	३०००)	३०००)	नागोर	आधो

पीढियें—: ११. विसनसिंघ-फतैसिंघोत[1] १२ सिवसिंघ १३. भेरूंसिंघ १४. सावतसिंघ

गाँव ईग्योग—	४०००)	४०००)	नागोर	

पीढियें—: १०. अखैसिंघ-जगतसिंघोत[2] ११. भीवसिंघ १२. सादुलसिंघ १३. लूणकरण १४. कुसलसिंघ १५. नदसिंघ

खांप किलांणदासोत मेड़तीया—

२. दूदो-जोधावत ३. वीरम-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. किलांणदास रा वसरा किलांणदासोत मेड़तीया कहीजै

गाँव कला रौ वास—	१०००)	१०००)	मेड़ता तिणने पचरांडो कहै छे	

पीढियें—: ६. स्यांमसिंघ-किलाणदासोत ७. गोकलदास ८. अणदसिंघ ९. हीदुसिंघ १०. भवांनीसिंघ ११. देवीसिंघ १२. जीवणसिंघ १३. नदसिंघ

खांप दुवारकादासोत मेड़तीया—

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४ जैमल-वीरमोत ५. दुवारकादास तिण रा वंस रा दुवारकादासोत मेड़तीया कहीजै

दुवारकादासोत मेड़तीयां रा ठिकांणां री विगत—

गाँव वछयारी—	३०००)	३०००)	नागोर	आसामी २ रे

---

१. ठि नीवीखास के (१०) ठाकुर फतैसिंह का पुत्र।
२ ठि. ,, ,, ,, (९) ,, जगतसिंह का पुत्र।

पांती आध में—

पीढियें—: ६. सुंदरदास-दुवारकादासोत ७. हिरदेराम ८. जगतसिंघ ९. जोधसिंघ १०. फतेसिंघ ११. लिछमणसिंघ १२. अरजनसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. सिवसिंघ-जोधसिंघोत[1] ११. देवीसिंघ १२. जवारसिंघ

खांप विसनदासोत मेड़तीया—

२ दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४. जैमल-वीरमोत ५. किलांणदास-जैमलोत –६. विसनदास-किलांणदासोत, विसनदास रा वस रा विसनदासोत मेड़तीया कहीजै।

विसनदासोत मेड़तीयां री ठिकांणां री विगत—

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खोड़ खास—	९०००)	९०००)	गोढवाड	
,, पादरडी	४००)	४००)	,,	
,, ठाकुरला	५००)	५००)	,,	आधी
,, किलांणसिंघ रो गुढो ,, सोनगरां रो गुढो	६००)	६००)	,,	
कुल रेख	१०५००)	१०५००)		

पीढियें—: ७. राजसिंघ-विसनदासोत ८. माधोदास ९. किलांणसिंघ १०. सुरजमल ११. सेरसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. बखतसिंघ १४. चेनसिंघ १५ जसवतसिंघ १६ जोरावरसिंघ १७. रणजीतसिंघ

गांव अमरपुरो	२०००)	२०००)	डीडवाणो
,, दागऊ	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: ८. नारखांन-राजसिंघोत[2] ९. किसनसिंघ † १० वलराम ११. सिवसिंघ १२. भोमसिंघ १३. पदमसिंघ १४. प्रभुराम १५. प्रतापसिंघ १६ ईंदरसिंघ

---

१ ठि. वछ्यारी के (पहली पाती) के (९) ठाकुर जोधसिंह का पुत्र।

† काम आयो खड़वाटी री घाटी माहाराज श्री जसवंतसिंघजी री वखत मे सवत् १७३५ रो पौस वद ९।

२. ठि. खोड खास के (७) ठाकुर राजसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव वोरूंदो—	५०००)	५०००)	मेड़ता	
,, कछवाई री वासणी	१२५०)	१२५०)	,,	आधी
कुल रेख	६२५०)	६२५०)		

पीढियें—: ७. गोकलदास † वीसनदासोत ८. गोपीनाथ § ९. प्रतापसिंघ १०. सुरतसिंघ ११. जेतसिंघ १२. सायवसिंघ १३. वदनसिंघ,* १४. गोपालसिंघ १५. जैंसिंघ १६. फतेसिंघ

गाँव तामडोली—	३२००)	३२००)	मेड़ता	आसामी २ रे

पांती अेक आध में—

पीढियें— ९. जसकरण-गोपीनाथोत[1] १०. रामचदर ११. लालसिंघ १२. हीदुसिंघ १३. अरजनसिंघ १४. भोपालसिंघ १५. केसरीसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—: ८. लाडखांन-गोकलदासोत[2] ९. सांवतसिंघ १०. सिरदारसिंघ ११. जालमसिंघ १२. फतेसिंघ १३. भवानीसिंघ १४. मेहताबसिंघ

गाँव वरणो—	२०००)	२०००)	मेड़ता

पीढियें—: १०. रांमचंदर-जसरणोत[3] ११. जोरावरसिंघ १२. कनीराम १३. गुलावसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. हुकमसिंघ १६. वखतावरसिंघ

गाँव चोंसली—	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: ११. लालसिंघ-रांमचदोत[4] १२. जोधसिंघ ¶ १३. लखधीरसिंघ

---

† गोकुलदास को यह गाव सवत् १६८० मे मिला, तथा यह सवत् १६८४ में भगवानदास वाघोत के शामिल गढी में काम आया।

§ यह संवत् १७१४ मे उज्जैन के युद्ध मे काम आया।

* वदनसिंह और काको सूरजमल संवत् १८४७ रा भादवा सुद २ भोम मेड़ते, सिंधिया माधोराव रे झगड़ो हुवो तरे काम आया।

¶ कांम आयो संवत् १८१७ में वीलाडे चापा वता सुं झगड़ो हुवो जठे।

१ ठि वोरूदा के (८) ठाकुर गोपीनाथ का पुत्र।

२. ठि. ,, (७) ,, गोकुलदास का पुत्र।

३ ठि तामडोली, (पाती एक) के (९) ठाकुर जसकरण का पुत्र।

४. ठि वरणो के (१०) ठाकुर रांमचदर का पुत्र।

१४. पाहाड़सिंघ १५. अमानसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव जगडवास—	२५००)	२५००)	मेड़ता	

पीढियें—: ८. भीवराज-गोकलदासोत[1] ९. अचलदास† १०. अनोपसिंघ
११. जेतसिंघ १२. सालमसिंघ १३. दुरजणसिंघ १४. बेरीसाल
१५. चुतरसिंघ

गाँव तिलांणेस—	४०००)	४०००)	मेड़ता	

पीढियें—: ११. जोरावरसिंघ-अनोपसिंघोत[2] १२. सीभुसिंघ १३. ग्यांनसिंघ
१४. सादुलसिंघ १५. अनाड़सिंघ

गाँव मयापुर—	२५००)	२५००)	मेड़ता	आधो

पीढिये—: ११. सिरदारसिंघ-अनोपसिंघोत[3] १२. अभेसिंघ १३. अगरसिंघ
१४ ऊगमसिंघ १५. भूरसिंघ

गांव मीदीयान—	३२००)	३२००)	मेड़ता	आसामी २ रे

पांती अेक आध में—

पीढियें—: ९. हरीसिंघ-भीवराजोत[4] १०. ईनदरसिंघ ११. नवलसिंघ १२. सायबसिंघ
१३ कोजूराम १४. भेरुसिंघ १५. सैतानसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढियें—: ९. बलराम-भीवराजोत[5] १०. सिवसिंघ ११. बाहादरसिंघ
१२ सवाईसिंघ १३. मोतीसिंघ १४. चुतरभुज १५. सावतसिंघ

गाँव चुवो—	४०००)	४०००)	नागोर	

पीढियें—: १०. सिरदारसिंघ-हरीसिंघोत[6] ११. तेजसिंघ १२. किसोरसिंघ
१३. गुलाबसिंघ १४. मेहताबसिंघ

---

† काम आयो गढ कुंडाणे।

१. ठि. बोरुंदा के (७) ठाकुर गोकुलदास का पुत्र।

२. ठि जगडवास के (१०) ठाकुर अनोपसिंह का पुत्र।

३. ठि जगडवास के (१०) ठाकुर अनोपसिंह का पुत्र।

४. ,, ,, (८) ,, भीवराज का पुत्र।

५. ,, ,, (८) ,, ,, ,,।

६. ठि मिदीयान के (९) ठाकुर हरीसिंह का पुत्र।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेप
गांव रानलियावास—	१२५०)	१२५०)	मेड़ता	

पीढियें—: १०. बखतसिंघ-हरीसिंघोत[1]　११. मोहबतसिंघ　१२. भावसिंघ　१३. भवानीसिंघ　१४. सूमेलसिंघ

खांप गोपीनाथोत मेड़तीया—

२. दूदो-जोधावत ३. वीरमदेव-दूदावत ४ प्रतापसिंघ † ५. गोपालदास ६. किसनदास ७. दुरजणसाल ८. गोपीनाथ रा वस रा गोपीनाथोत मेड़तीया कहीजै

गोपीनाथोत मेड़तीयां रा ठिकांणां री विगत—

गांव घाणेराव खास—	७५००)	७५००)	गोढवाड
,, ईंट दडो	१५००)	१५००)	,,
,, किसनपुरो	१५००)	१५००)	,,
,, नीयड	११००)	११००)	,,
,, गुढो मेछनो	११००)	११००)	,,
,, ढालोप	१५००)	१५००)	,,
,, मांगलीयां रो गुडो	२१००)	२१००)	,,
,, राजपुरो	४०००)	४०००)	,,
,, विरमपुरो	१४००)	१४००)	,,
,, मेघा रो गुडो	६००)	६००)	,,
,, भगवानपुरो	३०००)	३०००)	,,
,, कोटडी	१७००)	१७००)	,,
,, रामा रो गुडो	१७००)	१७००)	,,
,, छीडां	१५००)	१५००)	,,
गांव नादाणो वडो—	१०००)	१०००)	,,
,, जाटा रो गुडो	१०००)	१०००)	,,
,, पदम पुरो	१५००)	१५००)	,,
,, नालोलाई	१५००)	१५००)	,,
,, कोटवालियां	२०००)	२०००)	,,
,, करेलि	१०००)	१०००)	,,

† यह चित्तौड़ के युद्ध मे सवत् १६२६ मे काम आया।

1. ठि मिदीयान के (६) ठाकुर हरीसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, लाटाडो	१०००)	१०००)	गोढवाड	
, दूदापुरो	५००)	५००)	,,	
,, गुढो किलाणसिंघ रो	३००)	३००)	,,	
,, सावलतो	१७५०)	१७५०)	,,	
,, रूपसिंघ रो गुडो	७००)	७००)	,,	
,, नवो गुडो	१५००)	१५००)	,,	
,, नाडोल	४०००)	४०००)	,,	
,, गोहाडो	१४००)	१४००)	,,	
,, रखी	५००)	५००)	,,	
,, डायलाणो	१०००)	१०००)	,,	
,, पाटीयारो गुडो	७००)	७००)	,	
,, माहाराम को गुडो	१०००)	१०००)	,,	
,, माडोकड़	२४००)	२४००)	,,	
,, वडेल	५००)	५००)	,,	
,, दुदोड	७५०)	७५०)	,,	
,, पुनाडीयो	२०००)	२०००)	,,	
,, चानाणा रो गुडो	३००)	३००)	,,	
, केसरीसिंघ रो गुडो	४५०)	४५०)	,,	
,, अडसीपुरो	१०००)	१०००)	,,	
,, पादरडी	३००)	३००)	,,	

पीढियें—: ९. सूरतसिंघ-गोपीनाथोत १०. प्रतापसिंघ ११. पदमसिंघ १२. किसनसिंघ १३. वीरमदेव १४. दुरजणसिंघ १५. अजीतसिंघ १६. नाहारसिंघ १७. हिम्मतसिंघ १८ जोधसिंघ

गाँव चांणोद खास—	६०००)	६०००)	गोढवाड	
,, चागवो	१६००)	१६००)	,,	
,, ऊमारो गुडो	१६००)	१६००)	,,	
,, वालोलाई	२५००)	२५००)	,,	
,, भाचुदी	१४००)	१४००)	,,	
,, ऊदेलाव	१०००)	१०००)	,,	
,, ढोलारो गांव	९००)	९००)	,,	
,, वीठोरो	३२००)	३२००)	,,	
,, कीरवो	३२००)	३२००)	,,	

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, नवो गाँव	२५००)	२५००)	गोढवाड	
,, लापोद	१२००)	१२००)	,,	
,, साकदडो	७००)	७००)	,,	
,, वड गाँव	३०००)	३०००)	,,	
,, लीचावो	२२००)	२२००)	,,	
,, खीमेल	६०००)	६०००)	,,	
,, मुगथडो	५००)	५००)	,,	
,, किसनपुरो	रेख नही	—	,,	
,, अभेपुरो	रेख नही	—	,,	
,, घुणी	२०००)	२०००)	,,	
,, खारडो	१६००)	१६००)	,,	
,, वावा गाँव	१६००)	१६००)	,,	
,, डुंगलि	१०००)	१०००)	,,	
गांव कोसेलाव—	१०००)	१०००)	,,	
,, विसनपुरो	रेख नही	रेख नही	,,	
,, वाघणो	,,	,,	,,	
,, दौलतपुरो	,,	,,	,,	
,, भावनगर	,,	,,	,,	

पीढियें—: ९. अनोपसिंघ-गोपीनाथोत १०. सिवसिंघ ११. विसनसिंघ § १२. तेजसिंघ
१३. जसवंतसिंघ १४. लिछमणसिंघ १५ किसोरसिंघ

गांव बरकाणो—	३५००)	३५००)		
,, सादलवो	१७००)	१७००)		
,, टीपरी	२००)	२००)		
,, प्रीथीराज रो गुडो	३०००)	३०००)		
,, खीवां रो गुढो	२५०)	२५०)		
,, ओडवाडीयो	१०००)	१०००)		
,, खांगडी	१०००)	१०००)		
,, ओलाणी	१८५०)	१८५०)		
,, भीवा रो गुडो	रेख नही	रेख नहीं		

§ विसनसिंह मेड़ता में संवत् १८४७ भादवा सुद २ को मरहठों से लडकर काम आया।

पीढियें—: ९. अभैसिंघ-गोपीनाथोत १०. हरीसिंघ ११. सुरजमल १२. सीभुसिंघ १३. प्रीथीसिंघ १४. रणजीतसिंघ १५. ऊमेदसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव फालणो—	३७५०)		गोढवाड	
,, चावडेरी	१०००)		,,	
,, चेनपुरो	०)	०)	,,	रेख नही
,, बीलीयो	७००)		,,	
,, राणी गाँव खुरद	१०००)		,,	
,, दातीवाड़ो	१७५०)		,,	
,, वडली	७००)		,,	
,, अेलाणी	१८५०)		,,	
,, अखेराज रो गुढो	३००)		,,	
		५८००)		

पीढियें—: १४. वखतावरसिंघ-प्रीथीसिंघोत[1] १५. वभूतसिंघ

गाँव सीदरड़ी—	२०००)	२०००)	गोढवाड

पीढियें—: ९ हिमतसिंघ-गोपीनाथोत १०. सगरामसिंघ ११. जेतसिंघ १२. मोहकमसिंघ १३. जीवराज १४. कुसलसिंघ

खांप चांपावत

१. रिड़मल रौ चापो ।

२. चापो रिडमलोत तिण रा वंस रा चापावत कहीजे ।

खांप-सगतसिघोत चांपावत

२. चापो ३. सगतसिंघ तिण रा वस रा सगतसिंघोत चापावत कहीजे ।

सगतसिघोतां रां ठिकांणां री विगत

गाँव दासांणीयो—	४५०)	४५०)	गढ जोधपुर

पीढियें—: ४. देईदास-सगतसिंघोत ५. भवानीदास ६. किलाणदास ७. आसकरण ८. वेणीदास ९. विजेसिंघ १०. गजसिंघ ११. लालसिंघ १२. जोरावरसिंघ १३. दलसिंघ १४. चीमनसिंघ १५. ऊमेदसिंघ १६ केसरीसिंघ

---

१. ठि. वरकाणा के (१३) ठाकुर पृथ्वीसिंह का पुत्र ।

खांप रांमसिंघोत चांपावत

,२. चापो ३. भेरूदास चापावत ४. रांमसिंघ तिण रा वंश रा रांमसिंघोत कहीजै।

रांमसिंघोतां रा ठिकांणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हुमार भरे	परगना	विशेष
गाँव देवकी—	१०००)	१०००)	जालोर	आसामी २ रै

पांती आध में—

पीढियें—: ५. छतरसाल-रामसिंघोत ६. किलाणदास ७ नेतसी ८. गोयददास ९. गोकलदास १०. देवसिंघ ११. जसकरण १२. आईदान (खोळै) १३. धनराज १४. हीदुसिंघ १५. रामकिसन १६. सादुलसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. अनोपसिंघ-गोकलदासोत[1] ११. हरकिसन १२. जवानसिंघ १३. दुरजणसिंघ

गाँव चोराऊ—	१०००)	१०००)	जालोर	

पीढियें—: ९. मोहकमसिंघ-गोयददासोत[2] १०. अणदसिंघ ११. सुरताणसिंघ १२. दलेलसिंघ १३. गुमानसिंघ १४. करणसिंघ १५ वभूतसिंघ

गांव थलवाड—	१२५०)	७५०)	जालोर	आधो

पीढियें—: १०. केसरीसिंघ-मोकमसिंघोत[3] ११. कचरदास १२ जोरावरसिंघ १३. गुमानसिंघ १४. सगरामसिंघ

गाँव मोदरां—	१०००)	१०००)	जालोर	आधी

पीढियें—: १२. वाघसिंघ-कचरदासोत[4] १३. सिवनाथसिंघ

गाँव मांकणी—	५००)	५००)	जालोर	जव्त

पीढियें—: १०. खीवराज-मोकमसिंघोत[5] ११. जवानसिंघ १२ भगवतसिंघ

---

१. ठि. देवकी (पहली पाती) के (९) ठाकुर गोकुलदास का पुत्र।
२. ठि. ,, ,, (८) ,, गोयददास का पुत्र।
३. ठि. चोराऊ के (९) ठाकुर मोकमसिंह का पुत्र।
४. ठि थलवाड के (११) ठाकुर कचरदास का पुत्र।
५. ठि. थलवाड के (९` ठाकुर मोकमसिंह का पुत्र।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगनां	वशेष
गांव लोदराऊ—	१००८)	१०००)	जालोर	
, मोकमपुरो	१०००)	१०००)	गोढवाड	

पीढियें—: १०. जू जारसिघ-मोकमसिघोत[1] ११. हरीसिघ १२. हेमसिघ १३. मुकनसिघ १४. जगतसिघ

गांव लुहर—	२०००)	१५००)	जालोर	जब्त हुकम तावा मे

पीढियें—: ११. वखतसिंघ-जूजारसिघोत[2] १२. नाहरसिघ १३. अभेसिघ १४. प्रतापसिंघ १५. मगलसिघ

गांव सकरांणो—	१५००)	१०००)	जालोर

पीढियें—: १०. अणदसिंघ-मोकमसिघोत ११. लाडखान १२. फतेसिंघ १३. नाथुसिंघ १४. बनेसिंघ १५. तेजसिंघ

गांव तालियाणो—	१०००)	७००)	जालोर

पीढियें—: ११. सूरतसिंघ-अणदसिंघोत[3] १२. ऊमेदसिंघ १३. सेरसिंघ १४ ओनाडसिंघ १५. प्रतापसिंघ १६. लखसिंघ

गांव जेरसीण—	२०००)	६००)	जालोर

पीढियें— ११. रिणछोडदास-अणदसिंघोत[4] १२. मेगराज १३. पदमसिंघ १४. मोमसिंघ १५ विजेसिंघ

गांव खांनपुर—	१०००)	६००)	जालोर

पीढियें— ६. भगवानदास-छतरसालोत[5] ७ हरदास ८. जसकरण ९. जगनाथ १०. सावतसिंघ ११. लालसिंघ १२. गुमानसिंघ १३ हणवतसिंघ

खांप जगमालोत चांपावत

पीढियें—. २ चापो ३. भैरूदास ४ जेसो ५ जगमाल (जेमावत रा वस रा जगमालोत कहीजै)

जगमालोत- चांपावत रा ठिकांणां री विगत

---

१ थलवाड के (९) ठाकुर मोकमसिंह का पुत्र।
२ ठि. लोदराऊ के (१०) ठाकुर जूजारसिंह का पुत्र।
३ ठि. सकराणे के (१०) ठाकुर अणदसिंह का पुत्र।
४. ठि. सकराणे के (१०) ठाकुर अणंदसिंह का पुत्र।
५. ठि. देवकी के (५) ठाकुर छतरसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव डाहोली—	१०००)	१०००)	नागोर	आधी

पीढियें—: ६. सावलदास-जगमालोत ७. माधोसिंघ ८. हरीदास ९. कनीराम १०. लाडखान ११. सिवदानसिंघ १२. भावसिंघ १३ वनेसिंघ १४. जवानसिंघ १५. जैतसिंघ

गाँव टाटरवो—	१०००)	५००)	नागोर	

पीढियें—: ७. ऊदैसिंघ-सावलदासोत[1] ८. मोहणदास ९. फतेसिंघ १०. हीदुसिंघ ११. दुरगदास १२. गजसिंघ १३. ईदरसिंघ १४. सगतीदान

गाँव सुखवासणी—	३३३।-)।	३३३।-)।	मेडतो	तीजी पाती

पीढियें—: ८. धनराज-ऊदैसिंघोत[2] ९. अखेराज १०. केसरीसिंघ ११. हरनाथसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. अमानसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५ ऊरजणसिंघ

खांप गोयंददासोत चांपावत

पीढिये—: २. चांपो ३ भेरूदास ४. जेसो ५. गोयददास तिण रा वस रा गोयददासोत कहीजै ।

गोयंददासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव खुडालो—	४०००)	३०००)	गोढवाड	खेडा २
,, वासणी	५०००)	३०००)	सोजत	
कुल रेख	९०००)	६०००)		

पीढियें—: ६. खीवकरण-गोयददासोत ७. लूणकरण ८ महासिंघ ९. नारखान १०. हठीसिंघ ११ अभेसिंघ १२. जालमसिंघ १३. खुमाणसिंघ १४. सालमसिंघ १५. केसरीसिंघ

गाँव भेटवाडो—	१५००)	१५००)	गोढवाड	
,, सीरोल	३००)	२००)	,,	
कुल रेख	१८००)	१७००)		

पीढियें—: १५. कुसालसिंघ-सालमसिंघोत[3]

१ ठि. डाहोली के (६) ठाकुर सावलदास का पुत्र ।
२. ठि. टाटरवो के (७) ठाकुर उदैसिंह का पुत्र ।
३. ठि. खुडालो के (१४) ठाकुर सालमसिंह का पुत्र ।

खांप हरभांणोत चांपावत

पीढियें—: २. चापो ३ भेरूदास ४. जेसो ५. जैतमाल ६. हरभाण (हरभाण जैतमालोत रा वस रा हरभांणोत चापावत कहीजै ।)

हरभांणोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मालगढ—	२०००)	२०००)	जोधपुर	
,, ढीढस	३७५०)	३७५०)	,,	
	———	———		
कुल रेख	५७५०)	५७५०)		

पीढियें—: ७. मनोहरदास-हरभाणोत ८. गिरधारीदास ९. हरनाथ १०. अचलदास ११. वखतावरसिंघ १२ सुलतानसिघ १३. रुघनाथसिंघ १४. विसनसिंघ १५. रांमदानसिंघ १६. जीवराज

दुवारकादासोत मेड़तीयां रा ठिकांणां री विगत

गांव नवंध—	२०००)	२०००)	मेड़ता	खेडा ३

पीढियें—: ७ मोहणदास-हरभाणोत ८. केसरीसिंघ ९. महासिंघ १० रतनसिंघ ११. रांमसिंघ १२. जोधसिंघ १३. किसनसिंघ १४. चुतरभुज १५ अजीतसिंघ

गांव सोवणीयो—	१८७॥)	१८७॥)	सोजत	पाती चोथी

पीढियें—: ७ नरहरसिंघ-हरभाणोत ८. हरीदास ९ सरूपसिंघ १० राजसिंघ ११. लालसिंघ १२. मानसिंघ १३. जीवणसिंघ १४. नरांणसिंघ १५. कनीराम १६. भवांनीसिंघ

खांप केसोदासोत चांपावत

पीढियें—: २. चापो ३ भेरूदास ४. जेसो ५. माडण ६. केसोदास माडणोत रा वस रा केसोदासोत चांपावत कहीजै ।

केसोदासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव कावतरां—	२५००)	१०००)	जालोर

पीढियें—: ७. नारांणदास-केसोदासोत ८. आसकरण ९ प्रतापसिंघ १०. केसरीसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. सिरदारसिंघ १३ वखंतसिंघ १४. रतनसिंघ

गांव सांणढढ—	१०००)	१०००)	जालोर

पीढियें—. ९. मुकनदास-आसकरणोत[1] १०. ईसरीसिंघ ११. सवाईसिंघ १२. जवानसिंघ १३. वीरमदेव

खांप रायसिंघोत चांपावत

पीढियें—. २. चापो ३. भेरूदास ४. जेसो ५. माडण ६. रायसिंघ माडणोत तिण रा वस रा रायसिंघोत चापावत कहीजै ।

रायसिंघोत चांपावतां रा ठिकाणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव धांनणी—	१०००)	१०००)	जालोर	

पीढियें—: ७. डुगरसिंघ-रायसिंघोत ८ हरीसिंघ ९. सुरतसिंघ १०. सिवदानसिंघ ११. प्रतापसिंघ १२. अखेसिंघ १३. मालमसिंघ १४. नवलसिंघ १५. पेमसिंघ

खांप रायमलोत चांपावत

पीढियें—: २. चापो ३. भेरूदास ४. भीवराज ५. महेसदास ६. जसुतसिंघ ७. रायमल जसुतसिंघोत, रायमल तिण रा वस रा रायमलोत चांपावत कहीजै ।

रायमलोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव सिणला —	२५००)	२५००)	जोधपुर	

पीढियें—: ८ फतेसिंघ-रायमलोत ९. हाथीसिंघ १०. माहासिंघ ११. जोरावरसिंघ १२ खूमाणसिंघ १३. रतनसिंघ १४ वलवंतसिंघ

खांप वीठलदासोत चांपावत

पीढियें—: २. चापो-रिडमलोत ३. भैरूदास-चांपावत ४. जेसो-भैरूदासोत ५. माडण-जेसावत ६. गोपालदास-माडणोत ७. वीठलदास-गोपालदासोत, वीठलदास तिणरा वस रा वीठलदाससोत चापावत कहीजै।

वीठलदासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव पोहकरण —	१३६२५)	१३६२५)	जोधपुर	खेडा ७
,, वडली	१२५)	१२५)	,,	
,, खारारा	३०००)	३०००)	,,	खेडा ४
गाँव रोगधडो—	४४०)	४४०)	जोधपुर	

---

१. ठि. कायनरा के (८) ठाकुर आसकरण का पुत्र ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विगत
,, भीयां भोजारो	४५०)	४५०)	जोधपुर	
,, चाचाविग	५००)	५००)	,,	
,, कोलंबो	१८८)	५०)	,,	
,, वामणवाडो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, साकडो	६२)	६२)	,,	
,, सीनावरी	१६३)	१६३)	,,	
,, वोडी	१२५)	१२५)	,,	
,, राखडा	५०)	५०)	,,	
,, भाखरी	६३)	६३)	,,	
,, छायण	१२५०)	१२५०)	,,	
,, रोहवो	१८७)	१८७)	,,	
,, आवल	१८८)	१८८)	,,	
,, राठोडांवास	२००)	२००)	,,	
,, भाकी	६३)	६३)	,,	
,, वाधवो	६३)	६३)	,,	
,, गीडामणी	१२५)	१२५)	,,	
,, गोठ मेणा	१२५)	१२५)	,,	
,, दुदपीजो	२५०)	२५०)	,,	
,, ऊनावड	६२)	६२)	,,	
,, लावो	१३३)	१३३)	,,	
,, बुडीयावास	५०००)	५०००)	,,	खेडा ५
,, घाट सुलतांन रो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, मावो	५००)	५२५)	,,	
,, माधवो	१२५)	१२५)	,,	
,, जैसिंग रो वास	१३१०)	१३१०)	,,	
,, जालर रो वास	१८७)	१८७)	,,	
,, गांव खेडी	२८०)	२८०)	,,	
,, खारडी	२८०)	२८०)	,,	
,, मोमट	१२५०)	१२५०)	,,	
,, भीलवो	२५०)	२५०)	,,	
,, वीलीयो	२५०)	२५०)	,,	
,, चानणी	१२५)	१२५)	,,	
,, रातडीयो	१२५)	१२५)	,,	

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, जालेवाडो	१२५०)	१२५०)	जोधपुर	
,, चौकु	१२५)	१२५)	,,	खेड़ा २
,, गुलरोई	३१३)	३१३)	,,	
,, तीलावा	१२५)	१२५)	,,	
,, सिरदारसिंघ री ढाणी	६२)	६२)	,,	
,, मीखोडाई	१८०)	१८०)	,,	
,, गोमठ दुजी	१२५)	३१३)	,,	
,, सनावडो	२००)	२००)	,,	
,, गुडो	१२५)	१२५)	,,	
,, पचवदरीयो	९५०)	९५०)	,,	
,, खातोलाई	९५०)	९५०)	,,	
,, दांतल	६२)	६२)	,,	
,, ढढुवासो	३१३)	३१३)	,,	वास ५
,, गोडी	१७३)	१७३)	,,	
,, टटारी	३१३)	३१३)	,,	
,, देडीयो	७६)	७६)	,,	
,, वांमणाऊ	१०००)	१०००)	,	
,, कालर जुगारी	२५०)	२५०)	,,	
,, वडली	८००)	११२५)	,,	खेडा ३
,, सारसेण	२००)	२००)	,,	
,, सदा रो वास	२००)	२००)	,,	
,, गांव माडवो	१२५)	१२५)	,,	जोधपुर
,, होटडी	६३)	६३)	,,	
,, करणीयो	१८६)	१८६)	,,	
,, वागोडो	१८६)	१८६)	,,	
,, सारवो	३००)	३००)	,,	
,, जालरीयो	३००)	३००)	,,	
,, ऊटडी	६२)	६२)	,,	
,, वामणु	१०००)	१०००)	,,	
,, नावो }			,,	
,, तोलावरो }	१२५)	१२५)	,,	
,, माही }			,,	मेहला २
,, भादवी }	८७५०)	८७५०)		
,, माडवो (पटा रो)	१२५)	१२५)	,,	

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, भाडाला	१२५)	१२५)	जोधपुर	
,, घुडसर	१०००)	१०००)	,,	
,, जालारीयो	१३१०)	१३१०)	,,	
,, जसवत पुरो	६२५)	६२५)	,,	
,, कालाईयो	१०००)	१०००)	,,	
,, मडलो	१८५०)	१८५०)	,,	
,, कीसमणी	६३)	६३)	,,	
,, ओढण रो वास	१४३७)	१४३७)	,,	
,, ग्रेको	१२५०)	१२५०)	,,	
,, बलाणो	१८८)	१८८)	,,	
,, वरकाणो	३१२)	३१२)	,,	
,, जावरो }	६३)	६३)	,,	
,, झालोडो }				
,, रुदीयो }	१६००)	१६००)	,,	
,, लोहावो }			,,	
,, वारेणी वडी	५००)	५००)		
,, रातडीयो }			,,	
,, रतना रो वास }	१५०)	१५०)	,,	
,, पादडीयो	१२५)	१२५)	,,	
,, भणीयाणो }	१२५०)	१२५०)	,,	
,, सेतपाली }			,,	
,, रामदेवरो	८७५०)	८७५०)	,,	
,, मजल	५५४०)	७५००)	सिवाणो	
, ठाकुरवास	१२५०)	—	,,	
,, करमावास	५०००)	६५००)	,,	सेडा २
,, दूदारोवाडो	२५००)	३०००)	,,	
,, पाता रो वाडो	२०००)	२०००)	,,	
,, गरटीयो	४०००)	२५००)	,,	
,, रोईचो वडो	१५००)	१५००)	,,	
,, गगेई	१०००)	८००)	,,	
,, रामपुरो	८००)	१२००)	,,	
,, भलजां रो वाडो	३०००)	२१००)	,,	
,, कुमारो वाडो	१३००)	११००)	,,	
,, टेरा रो वाडो	१००)	१००)	,,	
,, गुनाडा	४१००)	४५००)	,,	

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, तीर जालियो	३७५)	५००)	जोधपुर	
,, चीरडीयो	४००)	४००)	,,	
,, ऊतेसी	१०००)	६००)	,,	
,, जेसावास	४००)	३००)	,,	

पीढियें—: ८. जोगीदास-वीठलदासोत ९. भगवानदास १०. माहासिंघ ११. देवीसिंघ १२. सबलसिंघ १३. सवाईसिंघ १४. सालमसिंघ १५ बभूतसिंघ (खोळै) १६. गुमानसिंघ १७. मगलसिंघ (खोळै)

गाँव दासपां—	५०००)	५०००)	जालोर
,, रुछीयाली	२०००)	२०००)	,,
,, गजनीपुरो	१०००)	१०००)	,,
,, रोहीपो	५००)	५००)	,,
,, निरता	१०००)	१०००)	,,
,, कुसालपुर	१०००)	१०००)	,,
,, आसोवडी	१०००)	१०००)	,,
,, कमालपुरीयो	१०००)	१०००)	,,
,, कोडी	१०००)	१०००)	,,
,, वागरो	६०००)	५०००)	,,
,, कोरो	२०००)	२०००)	,,
,, घडसी	६०००)	०)	साचोर
,, वड गाँव	५०००)	५०००)	मेडता

पीढियें—: १०. प्रतापसिंघ-भगवानदासोत[1] ११. अनोपसिंघ १२ दौलतसिंघ १३. सिवदानसिंघ ४. ऊदेराज १५ सादुलसिंघ १६. अनाडसिंघ १७. सिरदारसिंघ १८. भैरूंसिंघ

गाँव साचोदर—	१५००)	११००)	जालोर

पीढियें—: १७. लालसिंघ-अनाड़सिंघोत[2] १८. अचलसिंघ

गाँव आलांणो—	३०००)	३०००)	जालोर

पीढियें—: १४. सुरतसिंघ-सिवदानसिंघोत[3] १५. सायवसिंघ १६ लखसिंघ १७. घुडसिंघ

---

१. ठि. पोकरण के (९) ठाकुर भगवानदास का पुत्र ।
२. ठि. दासपा के (१६) डाकुर अनाडसिह का पुत्र ।
३ ,, ,, ,, (१३) ,, ,, ,, ,, ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव खींवाडो—	१००००)	७०००)	गोढवाड़	
,, वीरभाण रो गुडो	२००)	०)	,,	
	१०२००)	७०००)		
,, गाँव वागडीयो	१६५०)	१६५०)	जोधपुर	
,, बालेलाव	७५०)	७५०)	,,	
,, जवेडीया	११२५)	११२५)	,,	
,, दयालपुरो	१५००)	१५००)	,,	
,, भांगेसर	२०००)	२०००)	सोजत	
,, जवासर	२०००)	२०००)	,,	
	१६२२५)	१६०२५)		

पीढियें— ८ लखवीरसिंघ-वीठलदासोत ९. अखैराज १०. राजसिंघ ११. पेमसिंघ १२. जगतसिंघ १३. नवलसिंघ १४ ग्यानसिंघ १५ गजसिंघ १६. हमीरसिंघ १७. अजीतसिंघ १८. गुमानसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव दुदोड—	२०००)	२०००)	सोजत	
,, रूपसिंघ रो गुडो	२०००)	२०००)	,,	
,, रामावास	२०००)	२०००)	,,	
,, पातुवास	१०००)	१०००)	,,	

पीढियें—: १२ सगरामसिंघ-पेमसिंघोत[1] १३. सिवनाथसिंघ १४.दीपसिंघ १५. सेरसिंघ १६ अमरसिंघ १७. भेरूसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव वासणी मुहतांरी—	२०००)	२०००)	सोजत	

पीढियें — १२. रतनसिंघ-पेमसिंघोत[2] १३. रामसिंघ १४. रुघनाथसिंघ १५ जवानसिंघ १६. दुरजणसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मालाली —	७००)	०)	गोढवाड	पोकरण ऊकील

पीढियें— १३. ऊमेदसिंघ-रतनसिंघोत[3] १४. ईन्दरसिंघ

---

१. ठि. खीवाडा के (११) ठाकुर पेमसिंह का पुत्र।
२ ठि. ,, (११) ,, ,, ,,।
३. ठि. वासणी मुहतारी के (११) ठाकुर रतनसिंह का पुत्र।

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव सांमुजो—	३१२५)	३१२५)	जोधपुर	

पीढियें—: ६. ऊदेसिंघ-लखधीरसिंघोत[1] १०. पदमसिंघ ११. रिणछोड़दास १२. तेजमाल १३. सेरसिंघ १४. दौलतसिंघ १५. सुरताणसिंघ

गाँव गांधाणा रो गुडो—	१४००)	१०००)	गोढवाड़	

पीढियें—: १३. सुजांणसिंघ-तेजमालोत[2] १४. विजेसिंघ १५. जालमसिंघ १६. नाथुसिंघ १७. हुकमसिंघ १८. लिछमणसिंघ

गाँव मोदरां—	१०००)	१०००)	जालोर	आधी

पीढियें—: १२. बखतावरसिंघ-रिणछोडदासोत[3] १३. फतेसिंघ १४. राजसिंघ १५. पेमसिंघ

गाँव बाकरो—	३०००)	३०००)	जालोर
,, सोकडा	३०००)	३०००)	,,
,, आकेली	३०००)	३०००)	,,
,, रांमपुरीयो	१२५०)	१२५०)	,,
,, बुरल	१०००)	१०००)	,,
,, जीवाणो	२०००)	२०००)	,,
	१३२५०)	१३२५०)	
गाँव नथावडो—	४०००)	४०००)	मेडतो
	१७२५०)	१७२५०)	

पीढियें—: ८ अजवसिंघ-वीठलदासोत ६. सगतसिंघ १०. लालसिंघ ११. रामसिंघ १२. वाहादरसिंघ १३. अमरसिंघ १४. वभूतसिंघ १५. रूघनाथसिंघ

गाँव खोडवो—	२०००)	२०००)	नागोर
,, वोरटो	२०००)	१०००)	जालोर
	४०००)	३०००)	

१. ठि. खीवाडा के (८) ठाकुर लखधीरसिंह का पुत्र।
२ ठि सामुजा के (१२) ठाकुर तेजमाल का पुत्र।
३. ,, ,, ,, ११) ,, रिणछोडदास का पुत्र।

पीढियें—: ९. सगतसिंघ-अजबसिंघोत[1] १०. कुसलसिंघ ११ नाथुसिंघ १२. मोखमसिंघ
१३. फतेसिंघ १४. पाहाड़सिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव पुनासो—	५०००)	५०००)	जालोर	

पीढियें—· १३. जवानसिंघ-मोहकमसिंघोत[2]

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव-रणसी—	७७००)	७७००)	जोधपुर	
„ मूरकासणी	७५०)	७५०)	„	
, देसणोक	५०००)	४५००)	फलोधी	
„ लोड्या रो वास	५००)	५००)	„	
कुल रेख	१३२५०)	१२७५०)		

पीढियें—: ८. पृथीराज-वीठलदासोत ९ धनराज १०. अमरसिंघ ११. मोकमसिंघ
१२. भवानीसिंघ १३. सादुलसिंघ १४. तेजसिंघ १५. जवारसिंघ
१६. सिवनाथसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव हरीयां डाणो—	७५००)	०)	जोधपुर पोहकरण रो ऊकील	
„ भाखर वास	२०००)	०)	जेतारण	
	९५००)			

पीढियें—: ११. सूरतसिंघ-अमरसिंघोत[3] १२ बुदसिंघ १३. जेतसिंघ १४ भेरूसिंघ
१५. पीरदांन १६. रणजीतसिंघ १७. हणवतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नोसर—	२१००)	२१००)	जोधपुर	

पीढियें—: ११. सुरजमल-अमरसिंघोत[4] १२. रूघनाथसिंघ १३. हीमतसिंघ
१४. रणजीतसिंघ १५. आसकरण

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव सवाडीयो—	३१५०)	३१२५)	जोधपुर	

पीढियें—: ८. सिवदानसिंघ-वीठलदासोत ९. कूपो १० जोरावरसिंघ ११. पीरथीराज
१२. भवानीसिंघ १३. सादुलसिंघ १४ अभेसिंघ

---

१ ठि. नथावडो के (८) ठाकुर अजबसिंह का पुत्र।
२. ठि. खोडवो के (१२) ठाकुर मोहकमसिंह का पुत्र।
३. ठि रणसीगाव के (१०, ठाकुर अमरसिंह का पुत्र।
४. „ „ „ (१०) „ „ „।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बाघावास—	४०००)	४०००)	सोजत	

पीढियें—: ९. फतेसिंघ-सिवदानसिंघोत[1]　१०. वीजैसिंघ　११ कुसलसिंघ
१२. मोहणसिंघ १३. नाथूसिंघ १४. नवलसिंघ १५. जोरावरसिंघ

गाँव वडी—	१०००)	१०००)	सोजत	।-)। पाती

पीढियें—: ११. पेमसिंघ-विजैसिंघोत[2] १२. खुमाणसिंघ १३ धीरतसिंघ १४. रतनसिंघ

गाँव पीलवो—	१२००)	१२००)	जोधपुर	पाती आधी
„ भोजाकोर	२५०)	२५०)	„	„
„ लाखणकोर	२५०)	२५०)	„	„
कुल रेख	१७००)	१७००)		आध री रेख = ८५०)

पांती आध में—

पीढियें—: ८. देईदास-वीठलदासोत　९. ऊदेभाण　१०. साहेबसिंघ　११. सूरसिंघ
१२. चेनसिंघ १३. नवलसिंघ १४. आसकरण १५. मेघसिंघ

पांती दूजी आध में—

पीढिये—: १२ खीवकरण-सूरसिंघोत[3] १३. मदनसिंघ १४ जीवराज　१५. अभैसिंघ

गाँव पीलवो—　भोजाकोर, लाखणकोर, तीन गाँव री
कुल रेख　१७००) आध रा ८५०)　गढ जोधपुर

गाँव सांवरेज—	७५००)	२०००)	फलोधी	
	९२००)	२८५०)		
गाँव मेहरवास—	४०००)	४०००)	नागोर	

पीढियें—: १०. किसोरदास-ऊदेभाणोत[4] ११. सवाईसिंघ १२. वेरीसाल १३. मोतीसिंघ
१४. मेहताबसिंघ

गाँव सरेचां—	२०००)	२०००)	जोधपुर	आसामी २

---

१. ठि सवाडीयो के (८) ठाकुर सिवदानसिंह का पुत्र।
२ „ बाघावास के (१०) „ विजैसिंह का पुत्र।
३. „ पीलवो (पहली पाती) के (११) ठाकुर सूरसिंह का पुत्र।
४. „ „ „ „ (९) ऊदैभाण का पुत्र।

पांती आध में—

पीढियें— ८. आसथान-वीठलदासोत ९ सावलदास १० रांमसिंघ ११. जोरावरसिंघ १२ छतरसिंघ १३. कनीराम (खोळै) १४. भोपालसिंघ १५. रतनसिंघ

पांती आध में—

पीढियें— १० माधोसिंघ-सावलदासोत[1] ११. रामसिंघ १२ ऊमेदसिंघ १३. सूरजमल १४. रूघनाथसिंघ १५. बाहादरसिंघ (खोळै) १६. नवलसिंघ

खांप-बलोत चांपावत

पीढियें— २. चापो ३. भेरूदास, ४. जेसो, ५. माडण, ६ गोपालदास, ७ वलु-गोपालदासोत, वलु रा वस रा वलोत कहीजै ।

बलोत-चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव हरसोलाव—	६०००)	६०००)	नागोर	खेडा ४

पीढियें— ८ दूदो-वलोत ९ जसवतसिंघ १०. हरीसिंघ ११ सूरतसिंघ १२ गिरधरदास १३ जालमसिंघ १४ दौलतसिंघ १५. अजीतसिंघ १६. बखतावरसिंघ १७ देवीसिंघ १८. प्रतापसिंघ

गांव धांमली—	४४००)	४४००)	जोधपुर	खेडा ४

पीढियें— ८. दवारकादास-वलोत ९ सुदरसेण १०. अनोपसिंघ ११. पदमसिंघ १२. मोहकमसिंघ १३. जालमसिंघ १४ सीभूसिंघ १५. सादुलसिंघ १६. रणजीतसिंघ

गांव बापोड़—	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: १४. वाहादरसिंघ-जालमसिंघोत[2] १५ वभूतसिंघ

गांव चवांधांधीयां—	३२००)	३२००)	जोधपुर

पीढियें—: ११. सूरजमल-हरीसिंघोत[3] १२ ऊदेसिंघ १३. सिवसिंघ १४. वनेसिंघ १५. थांनसिंघ १६. जूजारसिंघ १७ अजीतसिंघ (खोळै)

गांव लोरोली-खुरद—	२०००)	२०००)	कोलिया

---

१. ठि सरेचा (पहली पाती) के (९) ठाकुर सावलदास का पुत्र ।

२. ठि. धामली के (१३) ठाकुर जालमसिंह का पुत्र ।

३. ठि हरसोलाव के (१०) ठाकुर हरीसिंह का पुत्र ।

पांती आध में—

पीढियें—: ९ सुजाणसिंघ-दवारकादासोत[1] १०. वाहादरसिंघ ११. बुदसिंघ
१२ रामसिंघ १३ बखतावरसिंघ १४. ग्यांनसिंघ

पांती आध में—

पीढिये— १३. गुलावसिंघ-रांमसिंघोत १४. मुकनसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, गांव खोखरी	१०००)	१०००)	नागोर	आधी
,, लाहोटी	१०००)	१०००)	,,	,,
,, सीणीयो	५००)	५००)	,,	आधो
कुल रेख	२५००)	२५००)		

पीढिये— ८. उदैभाण-बलोत ९. स्यामसिंघ १०. वीरभाण ११. नाथूसिंघ
१२. ऊमेदसिंघ १३. चीमनसिंघ १४. कुसालसिंघ

खांप- भोपतोत चांपावत

पीढियें—. २. चापो ३. भेरूदास ४. जेसो ५. माडण ६ गोपालदास ७. भोपत-गोपालदासोत, भोपत रा वस रा भोपतोत चापावत कहीजै ।

भोपतोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव खाटू वडी— ६०००) ६०००) नागोर खेडा ५

पीढियें —: ८. सायवखांन-भोपतोत ९. सिवदास १०. रामसिंघ ११. रूपसिंघ
१२. कनकसिंघ १३. वाहादरसिंघ १४ धीरतसिंघ १५. हुकमसिंघ
१६ दुरजणसिंघ १७ जोधसिंघ १८. विसनसिंघ

गांव चूटीसरो— २०००) २०००) नागोर

पीढिये—: १३. तेजसिंघ-कनकसिंघोत[2] १४. चांदसिंघ १५. अमानसिंघ
१६ कुसालसिंघ

गांव अेवाद— १५००) १५००) नागोर आधी

पीढियें—: १४. विजेसिंघ-तेजसिंघोत[3] १५. वखतावरसिंघ १६. मगलसिंघ

---

१. ठि. घामली के (८) ठाकुर द्वारकादास का पुत्र ।
२. ठि. खाटू वडी के (१२) ठाकुर कनकसिंह का पुत्र।
३ ठि. चूटीसरे के (१३) ठाकुर तेजसिंह का पुत्र ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव-डाभ गांव —	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: १३ अभेसिघ-कनकसिघोत[1] १४. हीदुसिघ १५ नाथूसिघ १६. सुरजमल १७. महेसदास

गांव पालोट—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: १३. वखसोरांम-कनकसिघोत[2] १४. सलेसिघ १५.भोमसिघ १६. सादुलसिघ

गांव जाखेड़ो—	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: १३ बुधसिघ-कनकसिघोत १४. दीपसिघ १५. मोतीसिघ १६. अजीतसिघ १७. मेघसिघ

गांव अडवड—	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: १२. गुमानसिघ-रूपसिघोत[3] १३. दलुकरेण १४. मोहणदास १५, देवीसिघ १६. रुघनाथसिघ

गांव आगूतो—	४०००)	४०००)	कोलियो	खालसे

पीढियें—: १२. सावतसिघ-रूपसिघोत[4] १३. अमरसिघ १४. भेरूसिघ १५. जोगीदास १६. रिडमलसिघ

गांव सुनारी—	२०००)	२०००)	नागोर	
,, गांव मडागणो	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	३०००)	३०००)		

पीढियें—: ६. सकरदास-सायवखानोत[5] १०. जगतसिघ ११. वदरीदास १२. सुरतसिघ १३. जालमसिघ १४. सेरसिघ १५. बदनसिघ १६. रुघनाथसिघ १७. वलवंतसिघ १८. भूरसिघ

गांव वाटेलो—	१०००)	१०००)	नागोर	

---

१. ठि. खाटू वडी के (१२) ठाकुर कनकसिह का पुत्र।
२. ,, ,, (१२) ,, ,, ,,।
३. ठि. खाटू वडी के (११) ठाकुर रूपसिह का पुत्र।
४ ठि. ,, ,, (११) ,, ,, ,, ,,।
५ ,, ,, ,, (८) ,, ,, सायवखान का पुत्र।

पीढिये —: १०. जगतसिंघ-सकरदासोत[1] ११. रुगनाथसिंघ १२. सिरदारसिंघ १३ अमरसिंघ १४. किसनसिंघ १५. पदमसिंघ १६. डूंगरसिंघ १७. लालसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव ओरीठ—	४०००)	४०००)	नागोर	

पीढियें —: ९. माधोसिंघ-सायबखानोत[2] १०. मुकनदास ११. भीमसिंघ १२. सगरामसिंघ १३. लालसिंघ १४. हणवंतसिंघ १५. गोपालसिंघ

गाँव बरणेल—	४०००)	४०००)	नागोर	

पीढिये—: ११. लखधीरसिंघ-मुकनदासोत[3] १२. अणदसिंघ १३. अखेसिंघ १४. अमानसिंघ १५. सिरदारसिंघ

गाँव चाऊ—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढिये —' ११. हीमनसिंघ-मुकनदासोत[4] १२. रांमसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. वाघसिंघ

गाँव रांमड़ावास खुरद—	१०००)	१०००)	जोधपुर	

पीढियें —: ८. करणसिंघ-भोपतोत ९. सगतसिंघ १०. वीरमदेव ११. झूजारसिंघ १२. सिभुसिंघ १३ स्यामसिंघ १४. ईदरसिंघ १५. वेरीसाल १६. सादुलसिंघ

गाँव दुजार—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें —: ९. जगमालसिंघ-करणसिंघोत[5] १०. वाघसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. धीरतसिंघ १३ लालसिंघ १४. जसकरण १५. जगतसिंघ

गाँव पीरोजपुरो—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें —: ९. भगवानदास-करणसिंघोत १०. गोयददास ११. गजसिंघ १२. सिंभुसिंघ १३. हणवतसिंघ १४. सगतीदान

गाँव कोन्याडो—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढिये —: ९. भाग्मल-करणसिंघोत १०. किसनसिंघ ११. अणदसिंघ १२. सिरदारसिंघ १३. जोरावरसिंघ १४. चेनसिंघ १५. वखतावरसिंघ १६. चिमनसिंघ १७. मुकनसिंघ

खांप खेतसिंघोत चांपावत

---

१ ठि सुनारी के (९) ठाकुर संकरदास का पुत्र ।

२. ठि खाटू बड़ी के (८) ठाकुर सायबखान का पुत्र ।

३ ठि ओरीठ के (१०) ठाकुर मुकनदास का पुत्र ।

४ ,, ,, ,, (१०) ,, ,, ,, ।

५ ठि. रामडावास के (८) ठाकुर करणसिंह का पुत्र ।

गाव रेख कदीम हमार भरे परगना विगेष

पीढियें—: २. चापो ३ भेरूदास ४. जेसो ५. माडण ६. गोपालदास ७. खेतसिंघ-गोपालदासोत खेतसिंघ रा वंस रा खेतसिंघोत कहीजें।

खेतसिंघोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव हबतसर— ३०००) ३०००) नागोर

पीढियें—: ८. बाहादरसिंघ-खेतसिंघोत ९. गोपीनाथ १०. कीरतसिंघ ११. मदनसिंघ १२. चादसिंघ १३. बखतसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. चिमनसिंघ

गाँव सरासणी— २०००) २०००) नागोर

पीढियें—: ८. नाहरखान-खेतसिंघोत ९. तेजसिंघ १०. हिंदूसिंघ ११. पदमसिंघ १२. चद्रभाण १३. जवानसिंघ १४. गुलाबसिंघ १५. केसरीसिंघ

गाँव खीदावास— १२५०) १२५०) मेडतो

पीढियें —: ११. भारथसिंघ-हिंदूसिंघोत[1] १२. दुलेहसिंघ १३. नरसिंगदास १४. बभूतसिंघ

खांप हरीदासोत चांपावत

पीढियें—: २. चापो ३. भेरूदास ४. जेसो ५. माडण ६. गोपालदास ७. हरीदास-गोपालदासोत, हरीदास रा वस रा हरीदासोत कहीजें।

हरीदासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव गठीयो— ५०००) २५००) मेड़तो

पीढिये—: ८. विजेराज-हरीदासोत ९. वीरमदेत १०. सवाईसिघ ११. ग्यांनसिंघ १२. रांमसिंघ (खोळे) १३. चादसिंघ १४. अमानसिंघ १५. पीरदान १६. छतरसिंघ

खांप आईदांनोत चांपावत

पीढियें—: २. चापो ३ भेरूदास ४. जेसो ५. माडण ६. गोपालदास ७. दलपत ८ आईदान-दलपतोत, आईदांन तिण रा वस रा आईदानोत चापावत कहीजें।

आईदांनोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव आऊवो खास— ३०००) ३०००) सोजत

---

१. ठि सरासणी के (१०) ठाकुर हिंदूसिंह का पुत्र।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, कारोलियो	५००)	५००)	सोजत	
,, नरसिंगपुरो	५००)	५००)	,,	
,, काऊ	५००)	५००)	,,	
,, केसरीसिंघ रो गुडो	५००)	५००)	,,	
,, विठोरो खुरद	१०००)	१०००)	,,	
,, राकोणो	५००)	५००)	,,	
,, रांमसिंघ रो गुडो	५००)	५००)	,,	
,, राजकियावास	१०००)	१०००)	,,	
,, देवली	४०००)	४०००)	,,	खेडा ३
,, कराडी	१५००)	१५००)	,,	
,, नवो खेड़ो	१०००)	१०००)	,,	
,, गाधाणो	१५००)	१५००)	,,	रेख नही
,, जेतपुरो	०)	०)	,,	
कुल रेख	१६०००)	१६०००)		

पीढियें—: ९. तेजसिंघ-आईदांनोत १०. हरनाथसिंघ ११. कुसलसिंघ १२. जैतसिंघ १३. सिवसिंघ १४. माधोसिंघ १५. वखतावरसिंघ १६. कुसालसिंघ १७. देवीसिंघ १८. सिंभूसिंघ

गांव बांडसां—	२५००)	२५००)	सोजत

पीढियें—: १३. कीलाणसिंघ-जैतसिंघोत[1] १४. नाथसिंघ १५. सादुलसिंघ १६. रणजीतसिंघ

गांव लांबीयां—	३०००)	३०००)	सोजत

पीढियें—: १२. बुधसिंघ-कुसलसिंघोत[2] १३. भीवसिंघ १४. भवानीसिंघ १५. पीरथीराज १६. गिरधारीसिंघ

गांव वीठोरो वडो—	४०००)	४०००)	सोजत
,, भगवानपुरो	३०००)	३०००)	,,
कुल रेख	७०००)	७०००)	

१. ठि. आउवा के (१२) ठाकुर जैतसिंह का पुत्र ।
२. ठि ,, ,, (११) ,, कुसलसिंह का पुत्र ।

पीढियें— १२. सेरसिंघ-कुमलसिंघोत[1] १३. भोमसिंघ १४. अभेसिंघ १५. कांनसिंघ १६. ऊमेदसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बांमसीरण—	३०००)	३०००)	सिवाणा	
,, नेहली	१०००)	१०००)	,,	

पीढियें—: १०. रूपसिंघ-तेजसिंघोत[2] ११. रांमसिंघ १२. जेतमाल १३. हटीसिंघ १४. सोनसिंघ १५. नवलसिंघ १६. वभूतसिंघ १७ रुगनाथसिंघ

गांव हरजी—	३२००)	३२००)	जालोर	

पीढियें—: १२. जवानसिंघ-रामसिंघोत[3] १३. लालसिंघ १४. अचलसिंघ १५ हेमसिंघ १६. दौलतसिंघ १७. रतनसिंघ (खोळे)

गांव जाणोवाणो—	२५००)	२५००)	सिवाणा	
,, पटाऊ	४००)	४००)	,,	
,, बोरनड़ी	५००)	५००)	जोधपुर	
कुल रेख	३४००)	३४००)		

पीढिये—' १०. रतनसिंघ-रूपसिंघोत[4] १२. अखेसिंघ १३. अमरसिंघ १४. नाथूसिंघ १५. प्रतापसिंघ

गांव दीवांणदी—	५५००)	५५००)	जोधपुर	

पीढियें—' १०. अनोपसिंघ-तेजसिंघोत[5] ११. सुलतानसिंघ १२. गजसिंघ १३. नाथूसिंघ १४. वीरमदेव १५. अजीतसिंघ

गांव बांतो—	३५००)	२७००)	सोजत	आधो

पीढियें—' १३. उरजणसिंघ-गजसिंघोत[6] १४. सरूपसिंघ १५ पेमसिंघ १६. गुमानसिंघ

गांव भीवालियो—	१५००)	१५००)	सोजत	आधो

---

१. ठि. आउवा के (१२) ठाकुर जैतसिंह का पुत्र।
२. ,, ,, ,, (६) ठाकुर तेजसिंह का पुत्र।
३. ठि वामसीण के (११) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।
४ ,, ,, ,, (१०) ,, रूपसिंह का पुत्र।
५. ठि. आउवा के (६) ,, तेजसिंह का पुत्र।
६ ठि. दीवाणदी के (१२) ठाकुर गजसिंह का पुत्र।

पीढियें—: ११. मोहणसिंघ-अनोपसिंघोत[1] १२. जालमसिंघ १३. नवलसिं
१४. चेनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशे
गांव रोयट—	५०००)	३०००)	जोधपुर	
,, तीगरो	१०००)	१०००)	,,	
,, नीवली-बिरामणांरी	६२५)	६५५)	,,	
,, कलाली	१२५०)	१२५०)	,,	
,, टुटली	६२५)	६२५)	,,	
,, लालकी	१२५०)	१२५०)	,,	
,, अरठीयो	१२५०)	१२५०)	,,	
,, दुदली	९००)	९००)	,,	
,, सुगलो	१०००)	१०००)	,,	
,, जेसावास	२५००)	२५००)	मेडतो	
,, भोरणीया	३१२५)	३१२५)	सोजत	
कुल रेख	१८५२५)	१६५२५)		

पीढियें—: ९. सगतसिंघ-आईदांनोत १०. भगवतसिंघ ११. किलाणसिंघ १२. ईंदरसिंघ
१३. अचलसिंघ १४. सुलतानसिंघ

गांव आहोर—	४०००)	२०००)	जालोर	
,, गुढो	३०००)	१५००)	,,	
,, पादली	१०००)	१०००)	,,	
,, वागोतरा	१२५०)	६२५)	,,	
,, देजडीयो	५००)	५००)	,,	
,, सीरली	१०००)	५००)	,,	आधी
कुल रेख	१०७५०)	६१२५)	परगना जालोर री	
गांव सथलांणो—	७०००)	७०००)	जोधपुर	
,, मांडावास	५०००)	५०००)	,,	
कुल रेख	१२०००)	१२०००)		

१. ठि. (१०) ठाकुर अनोपसिंह का पुत्र ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव ढारी—	३०००)	३०००)	नागोर	
,, जुजाणी	३०००)	१५००)	भीनमाल	
	६०००)	४५००)		
कुल रेख	२८७५०)	२२६२५) (गांव आहोर से जुआणी तक)		

पीढियें—: ९ जगननाथ-आईदांनोत १०. रिणछोड़दास ११. विहारीदास १२. राजसिंघ १३. अनाडसिंघ १४. सगतीदांन १५. जसवंतसिंघ १६. लालसिंघ १७. भवांनीसिंघ (खोळ)

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भेंसवाडो—	३०००)	३०००)	जालोर	
,, भागल-बिरामणांरी	६२५)	६२५)	,,	
,, आका रो पादर	५००)	५००)	,,	
,, चादराई	१०००)	१०००)	,,	
,, वीठोडो	१०००)	१०००)	,,	
,, ऊकरडा रो पादर	१०००)	१०००)	,,	
	७१२५)	७१२५)		
,, चाचोडीयो	६०००)	६०००)	गोढवाड़	
,, खवासपुरो	३७५०)	३५००)	मेडतो	
कुल रेख	१६८७५)	१६६२५)		

पीढियें— १२. जगतसिंघ-विहारीदासोत[1] १३. गुलावसिंघ १४. नवलसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव चवरचां—	२०००)	२०००)	जालोर	

पीढियें —: १२. केसरीसिंघ-विहारीदासोत १३. भेरूंसिंघ १४. जीवराज

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बरवां—	१५००)	१५००)	जोधपुर	

पीढियें—: १०. नरहरदास-जगनाथोत[2] ११. ईदरभाण १२. पदमसिंघ १३. पीरथीराज १४. कुसालसिंघ (खोळ) २५. सिरदारसिंघ

---

१ ठि ढारी के (११) ठाकुर विहारीदास का पुत्र।

२. ठि. ढारी के (९) ठाकुर जगनाथ का पुत्र।

गावं	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव काकांणी—	३१२५)	३१२५)	जोधपुर	

पीढियें—: १०. मोकमसिंघ-जगनाथोत[1] ११. वखतसिंघ १२. खुमाणसिंघ १३. सरूपसिंघ १४. सादुलसिंघ १५. गिरधरदास १६. पनेसिंघ

गाँव चोपर वाड़ो—	३०००)	३०००)	जालोर	

पीढियें—: १२. नाथूसिंघ-वखतसिंघोत[2] १३. वनेसिंघ १४. दौलतसिंघ

गाँव गोधण—	४०००)	४०००)	जालोर	
,, बुडतरो	३०००)	३०००)	,,	

पीढियें—: १०. गीरधरदास-जगनाथोत[3] ११. सिवदांनसिंघ १२. सूरजमल १३. ग्यानसिंघ १४. वभूतसिंघ

दो गाँव कुल रेख	७०००)	७०००)	भरे	
गाँव खारडो—	५०००)	५०००)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. सुजांणसिंघ-ग्राईदानोत १०. रुघनाथसिंघ ११. किसनसिंघ १२. स्यांमसिंघ १३. सिभूसिंघ १४. रामसिंघ १५. पेमसिंघ १६. पहाड़सिंघ १७. भारथसिंघ १८. भेरूंसिंघ

गाँव सोरांणो—	४१००)	४१००)	सिवाणा	

पीढियें—: १४. ईन्दरसिंघ-सिभूसिंघोत[4] १५. हीरसिंघ १६. मानसिंघ

गाँव खेजडली-वडी—	३०००)	३०००)	जोधपुर	

पीढियें—: ११. सूरतसिंघ-रुगनाथसिंघोत[5] १२. सगरामसिंघ १३. जालमसिंघ १४. सालमसिंघ १५. सादुलसिंघ १६. तेजसिंघ १७. रतनसिंघ

गाँव राजोद—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ११. वीसनदास-रुगनाथसिंघोत[6] १२. मनोरदास १३. विजेसिंघ १४. सेरसिंघ १५. नवलसिंघ

खांप किलांणदासोत- चांपावत

---

१. ठि. ढारी के (९) ठाकुर जगनाथ का पुत्र।
२. ठि. काकाणी के (११) ठाकुर बखतसिंह का पुत्र।
३. ठि. ढारी के (९) ठाकुर जगनाथ का पुत्र।
४. ठि. खारटो के (१३) ठाकुर शंभूसिंह का पुत्र।
५. ठि. ,, ,, (१०) ठाकुर रघुनाथसिंह का पुत्र।
६ ,, ,, ,, (१०) ,, ,, ,,।

पीढियें—: २ चापो-रिड़मलोत ३. भेरूदास-चापावत ४. जेसो-भेरूदासोत ५. माडण-जेसावत ६ गोपालदास-माडणोत ७. दलपत-गोपालदासोत ८. किलांणदास-दलपतोत किलाणदास रा वस रा किलाणदासोत चापावत कहीजै)

किलांणदासोत चांपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भालेलाव—	१०००)	१०००)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. गोरधन-किलाणदासोत १०. अनोपसिंघ ११. ईदरभांण १२. किसनसिंघ १३ रूपसिंघ १४. सालमसिंघ

खांप करणोत-रूपावत, पुनावत, भीमोत

पीढियें— :१. राव रिडमल २. करण रिडमल रो तिण रा करणोत कहीजै।

करणोतां रा ठिकांणां री विगत

गांव काणांणो—	१२००)	१२००)	सिवाणो	खेडा ३

पीढियें—: ३. लूणकरण-करणोत ४ बीदो ५. नीवो ६ आसकरण ७. दुरगादास ८. अभैकरण ९. सिधकरण १०. फतेकरण ११. करणीदान १२. स्यामकरण १३. केसरीकरण १४. नथकरण १५. ऊमेदकरण १६. रतनकरण १७. धनकरण

गांव मढली—	६२५)	६२५)	जोधपुर	

पीढियें—: १३. ऊमेदकरण-स्यामकरणोत[1] १४. सुमेरकरण

गांव करनियाली—	४०००)	४०००)	जोधपुर	

पीढिये—: ११. लालकरण-फतेकरणोत[2] १२. सिवकरण १३. हमीरकरण, १४ अजीतसिंघ १५ मूलराज

गांव भंवर—	३५००)	३५००)	जोधपुर	आधी

पीढियें—: ८ तेजकरण-दुरगादासोत[3] ९ विसनसिंघ १०. सेरसिंघ ११. किलाणसिंघ १२. सालमसिंघ ३. माधोसिंघ

गांव बाघावास—	२८५०)	२८५०)	जोधपुर	खेडा ३
,, बालाऊ	८२५)	८२५)	,,	
,, सबरखीयो	३२५)	३२५)	,,	

---

१. ठि. काणाणा के (१२) ठाकुर स्यामकरण का पुत्र।
२. ,, ,, ,, (११) ,, फतैकरण का पुत्र।
३. ,, ,, ,, (७) ,, दुर्गादास का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, रोडवो	५२५)	५२५)	जोधपुर	खेडा ४
	४५२५)	४५२५)		
,, गाँव पतासर वगना	७५०)	७५०)	जोधपुर	
,, आकेलडी	२५०)	२५०)	,,	
,, वडनावो	८५०)	८५०)	,,	
,, जाणादेसर	२५००)	२५००)	,,	
,, डोहलो खुरद	२५०)	२५०)	,,	
,, मेगला वास	२५०)	०)	,,	
कुल रेख	६३७५)	६१२५)		

पीढियें—: ८. मेहकरण-दुरगदासोत[1] ९. जेतकरण १० धनस्यांमकरण ११. पेमकरण १२. जैकरण १३. खुमाणकरण १४. सेसकरण

गाँव पाडर गाँव—	५००)	२५०)	जालोर

पीढियें—. १२. तेजसिंघ-पेमकरणोत[2] १३. डुंगरसिंघ १४. सिरदारसिंघ

गाँव राजन वाडी—	५००)	५००)	जालोर

पीढियें—· १२. देवकरण-विमलकरणोत १३. धनसिंघ १४. सेरसिंघ

गाँव समदड़ी—	३०००)	३०००)	सिवाणा
,, रतीयोद	३०००)	३०००)	जोधपुर
,, गागुरडो	६४००)	६४००)	सोजत
,, वागास-खेडो	१०००)	१०००)	,,
,, दईपुडो	३०००)	३०००)	जोधपुर
	१६४००)	१६४००)	

पीढिये—: ८. चेनकरण-दुरगदासोत ९. गुमांनकरण १०. ईदरकरण ११. सालमकरण १२. आईदान १३. देवकरण

गाँव सूरपुरो—	२०००)	२०००)	सिवांणो
,, पालडी	४०००)	३०००)	नागोर
,, तखतपुरो	५००)	५००)	,,
कुल रेख	६५००)	५५००)	

---

१. ठि. काकाणा के (७) ठाकुर दुर्गादास का पुत्र ।

२ ठि वाघावास के (११) ठाकुर पेमकरण का पुत्र ।

पीढियें—: ९ बखतसिंघ-चेनकरणोत[1] १०. ऊदेसिंघ ११. जगतसिंघ १२. करणसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव तिरगटी—	४००)	४००)	सिवाणा	

पीढियें—: १० सिरदारसिंघ-बखतसिंघोत[2] ११. भोमसिंघ १२ किलाणसिंघ १३. रुघनाथसिंघ

गांव जाजोलाई—	१५००)	१५००)	फलोधी	

(सु भाखरी-कहीजे)

पीढियें—: ७ जसकरण-ग्रासकरणोत[3] ८. देवकरण ९. सूरजमल १०. सिरदारसिंघ ११. रतनसिंघ १२ .डूगरसिंघ

गांव चांदसमो—	२०००)	०)	जोधपुर-	रेख माफ

पीढियें—: ९. नथकरण-देवकरणोत[4] १०. लालकरण ११. सिवकरण १२. गोयनदास

गांव मुडाडो—	५०००)	५०००)	गोढवाड	

पीढियें—: ५. कांधल-वीदारो[5] ६. मनोहरदास ७. देईदास ८. जगतसिंघ ९. सूरसिंघ १० सुजाणसिंघ ११. खुमाणसिंघ १२. ईदरसिंघ १३. रुघनाथसिंघ १४ पिरथीराज १५. किलाणसिंघ

गांव कीटणोद—	५०००)	५०००)	सिवाणा	
„ वाली	२५००)	२५००)	जालोर	
कुल रेख	७५००)	७५००)		

पीढियें—: ३. जाझण-करणा रो ४. खेतसी ५. मानसिंघ ६. सादूलसिंघ ७. अमरसिंघ ८. राजसिंघ ९. सुदरसैण १०. नाहरखान ११. जालमसिंघ १२. मूलराज १३ कनीराम १४. बभूतसिंघ १५. परतापसिंघ

गांव रातडीयो—	१३५०)	१३५०)	जोधपुर	

पीढियें— ९. केसरीसिंघ-राजसिंघोत[6] १०. बखतसिंघ ११. फतेसिंघ १२. भारथसिंघ १३. ऊदेराज १४. सादूलसिंघ १५. भोपालसिंघ १६. लिछमणसिंघ

१. ठि. समदडी के (८) ठाकुर चैनकरण का पुत्र।
२. ठि सूरपुरा के (९) ठाकुर बखतसिंह का पुत्र।
३ ठि. काणाणा के (६) ठाकुर आसकरण का पुत्र।
४. ठि जाजोलाई के (८) ठाकुर देवकरण का पुत्र।
५ ठि काणाणा के (४) ठाकुर वीदा का पुत्र।
६. ठि. कीटणोद के (८) ठाकुर राजसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मोडी—	१५००)	१०००)	जालोर	
,, ईसरोल	१०००)	५००)	साचोर	आधी
कुल रेख	२५००)	१५००)		

पीढियें—: ३. माणकराव-करणा रो ४. सारंग-मांणक रो ५. जालप-सारंग रो ६. भोपत-जालप रो ७. पीरथीराज ८. जोगीदास ९. दयालदास १०. वखतसिंघ ११. लखधीरसिंघ १२. दलकरण १३. कनीराम १४. जेठकरण

खांप रूपावत

पीढिये—: १. राव रिड़मल २ रूपो-रिड़मल रो, रूपा रा वस रा रूपावत कहीजै

रूपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव कलवांणी— १०००) १०००) कोलीयो पाती आध

पांती आध में—

पीढियें—: ३. सादो रूपा रो ४. भोजराज ५. भाण ६. पूरणमल ७. डूगरसिंघ ८. जेतसिंघ ९. नाथूसिंघ १०. माहासिंघ ११. तेजसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. वाघसिंघ १४. रुघनाथसिंघ १५. सगलसिंघ

पांती जवत—

पीढिये—: १२. सिरदारसिंघ-तेजसिंघोत १३. अगरसिंघ

पांती जवत—

पीढियें—: १२. सालमसिंघ-तेजसिंघोत १३. छतरसिंघ

गांव ढाकोरीयो— २०००) १०००) नागोर

पीढियें—: ६. जेमल-भाणोत ७. खेतसी ८. भगवानदास ९. अमरसिंघ १०. गिरधारीसिंघ ११. जोरावरसिंघ १२. विसनसिंघ १३ बुधसिंघ १४ मुकनसिंघ

गांव ऊदट— २०००) १०००) फलोधी

पांती आध में—

पीढियें—: ६. केसोदास-भांणोत ७. गोपालदास ८. जगनाथ ९. दुरगदास १० अणदराम ११. वखतसिंघ १२. नगराज १३. भोमसिंघ १४. प्रतापसिंघ १५. देवीसिंघ

प्रांती आघ में—

पीढियें—: ५. रांणो-भोजराजोत ६. दयालदास ७. भीवसिंघ ८. करमसिंघ ९. फतेसिंघ १०. वखतसिंघ ११. सवाईसिंघ १२. धनराज १३. रावतसिंघ १४.सावतसिंघ [1]

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मुंजासर—	२०००)	२०००)	फलोधी	

पांती आघ में—

पीढियें—: ३. तोगो-रूपावत ४. वेरसल ५. हिंगोलदास ६. जगमाल ७. वेणीदास ८. गोयंनदास ९. जगतसिंघ १०. जोधसिंघ ११. करणसिंघ १२. सूरजमल १३. भोपालसिंघ

पांती आघ में—

पीढियें—: १३. मदनसिंघ-सूरजमलोत १४. लूणकरण

गांव चाखु—	२०००)	२०००)	फलोधी	

पीढियें—: ३. सादो रुपावत ४. भोजराज ५ राणो ६. दुरगदास ७. रिणछोडदास ८. राजकरण ९. जसकरण १०. आईदान ११. मोकमसिंघ १२. भेरूदास १३. जूजारसिंघ १४. मूलराज

गांव भेड़—	१०००)	१०००)	फलोधी	

पीढियें—: ४. भोजराज-सादारो ५ राणो ६. दुरगदास ७. किल्याणदास ८ रामचद्र ९. पदमसिंघ १०. अनोपसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. खेतसिंघ १३. ईसरीसिंघ १४. राजसिंघ

गांव जाजीवाल (राजघरी)	१५०)	१५०)	जोधपुर	

पीढियें—: १. वीजेसिंघ २ हीदुसिंघ ३. रतनसिंघ ४. सुमेलसिंघ

खांप- पुनावत

पीढियें— १. राव चुडो २. पुनपाल-चुडावत तिण रा वंस रा पुनावत कहीजै ।

गांव खुदीयास	३०००)	५००)	परबतसर	

पीढियें—: ३. डुंगरसिंघ-पुनावत ४. ओनाडसिंघ ५. अजीतसिंघ ६. रूपसिंघ

---

[1] सवत् १८६५ मे बीकानेर वाले युद्ध मे काम आया ।

७. दुरजणसिंघ ८. ऊदेसिंघ ६. मानसिंघ १०. ढेवीसिंघ ११. विजेसिंघ १२. रुघनाथसिंघ १३ रामसिंघ १४. सादुलसिंघ १५. सुजाणसिंघ

खांप- भीयोतां री

पीढियें—: १. राव चूडो २. भीयो-चुडावत, भीयो चुडावत तिण रा वस रा भीयोत कहीजै।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खारा बेरा—	१३००)	१३००)	जोधपुर	

पांती आध में—

पीढियें—: ३. रुघनाथसिंघ ४. माहासिंघ ५. जसकरण ६ कुसालसिंघ ७. कानसिंघ ८. हुकमसिंघ ६. रावतसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. विहारीदास ११. किलांणदास १२. जीवणदास १३. रिणछोडदास १४. छतरसिंघ १५ सिरदारसिंघ १६. पीरदान

खांप देवराजोत

पीढियें—: १. राव बीरम २. देवराज-बीरमदेवोत, देवराज रा वस रा देवराजोत कहीजै।

गांव सेतरावो—	८०५०)	०	जोधपुर	रेख भरे नहीं
„ जेठाणीयो	६००)	०	„	
„ कालाऊ	२००)	०	„	निजराणो भरे
„ केळो	२००)	०	„	
„ देवड़ो	२००)	०	„	
„ खीपासर	१००)	०	„	
„ दुरजण साल रो वास	१००)	०	„	
„ सुगालीयो	१००)	०	„	
„ वुडकीयो	रेख नहीं	०	„	
„ वारणो	„	०	„	
„ लोडतो	१०००)	०	„	खेडा ४
„ वाकरो	६००)	०	„	
„ नाथडाऊ	३२५०)	०	„	
„ देवराणीयो	४००)	०	„	

गांव	रेख कदीम	हुमार भरे	परगना	विशेष
,, लोरलो	३००)	०	जोधपुर	
,, केलड़ी	२००)	०	,,	
,, सोलखीया तला	२००)	०	,,	
,, देवीसर	२००)	०	,,	
,, कानोडीयो	१००)	०	,,	
,, मोडीयो	रेख नही	—		

विगत गावा री, रेख भरे नही निजराणो भरे खेडा २३ री रेख १४८२५)

पीढियें—: ३. राजी-देवराजोत ४. लूणकरण ५. रणीण ६. राघव ७. भीवड ८. बीहड ९. वनो १०. भाखरसी ११. वरसल १२. जगमाल १३. भारमल १४. विहारीदास १५ ऊरजणसिंघ १६. दोलतसिंघ १७. सूरजमल १८ मोकमसिंघ १९. वखतावरसिंघ

गांव सुवालियो— १०००) ५००) जोधपुर

पीढियें—: १७. जालमसिंघ-दोलतसिंघोत १८ छतरसिंघ ने माहाराज श्री............ पटो इनायत कियो १९ मेघसिंघ २०. मुकनसिंघ

खांप-चाडदे (चाडदेवोत)

पीढिये— १. राव-वीरम २. देवराज ३ चाडदे-देवराजोत (देवराज रो) चाडदे रा वस रा चाडदेवोत कहीजै ।

विगत गांवां री रेख भरे नही निजरांणो भरे

गांव	रेख कदीम	हुमार भरे	परगना	विशेष
गांव देछु—	०	०	जोधपुर	
,, मडलो	०	०	,,	
,, कोलु	०	०	,,	आदी
,, ठाडीयो	०	०	,,	
,, सगरा	०	०	,,	
,, ईदारी ढाणी	०	०	,,	
,, रोतिड	०	०	,,	

पीढियें—: ४. चापो चाडदे रो ५. बणबीर ६. रांमदास ७. मांडण ८. हाजी ९ खेतसी १०. तेजमाल ११. बलु १२. हरजी १३. सिरदारसिंघ १४. दानसिंघ १५. बाहादरसिंघ १६. नवलसिंघ

गांव गोलाकोर— ४५०) ४५०) जोधपुर

पांतो आध में— (रेख-२२५)

पीढियें—: ४. कुपो—चाडदे रो ५. कानडदे ६. वाघो ७. पीपो ८. सादो
९. सुरताणसिंघ १०. खुमाणसिंघ ११. जोगीदास १२. विजेसिंघ
१३. रामसिंघ १४. ईंदरसिंघ † १५. भारथसिंघ १६. पीरदान

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
पांती श्राघ में—रेख	२२५)			

पीढियें—: ७ पंचांयण-वाघा रो ८. सायर ९. महेस १०. नेतसी ११. रासो १२. सुंदर
१३. देदो १४. नरो १५. रायमल १६. भेरूंसिंघ * १७. भोमसिंघ

खांप-गोगादे

१. राव-वीरम २. गोगादे-वीरमोत, गोगादे-वीरमोत रा वंस रा गोगादे कहीजें ।

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव केतु—	३८२९)	०	जोधपुर	खेडा ४
खेडा ४-वडोवास १ जेतावतां रो वास १ भला रो वास १ नीबा रो वास १				
गाँव सेखाला—	२०००)	०	जोधपुर	खेडा ४
,, भुंगरो	२५०)	०		1-सेखालो वास
,, पनासरियो	२५०)	०	,,	१-करणा रो वास
,, तेनो	५००)	०	,,	१-देवडा रो वास
,, वामडीयोवास	५००)	०	,,	१-साखला रो वास
,, गुडो	५००)	०	,,	
,, चोराकुवो	५००)	०	,,	
,, रांमसीसर	५००)	०	,,	खेड़ा ३
,, नीमडी	२५०)	०	,,	१-तोलीसर
,, रनीयो	१५०)	०	,,	१-कोलावास
,, निवाणो	रेख नहीं		,,	१-राजदारो वास
,, महेस रो वास	,,		,,	
,, जेसा रो वास	,,		,,	
,, सावडास	,,		,,	

† संवत् १८६३ रा घेरा में हाजर थो तिण बंदगी सूं पटो पायो ।

* संवत् १८६३ के घेरे में हाजिर रहा जिससे गांव पाया ।

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, नाथा रो वास	,,	रेख नही	जोधपुर	

पीढिये—: ३. करमसी-गोगादेवोत ४. खेतसी ५. बीसो ६. दासो ७. भीमसिंघ ८. सूजो ९ रतनसिंघ १० रासो ११. भगवानदास १२. राजसिंघ १३ नाहारखान १४. नाथुसिंघ १५. सबलसिंघ १६. रांमसिंसघ

गाँव खिरजां—	२३००)	०	जोधपुर

रावास-४ १-ओजास १-भोजा रो वास १-जेता रो वास १-सामलाँ (निजराणो भरे)

पीढियें- : १३ लाडखांन-राजसिंघोत १४. जसकरण १५. जालमसिंघ १६. नेवसी १७ हिमतसिंघ १८ लालसिंघ

खांप महेचा

१. रावल-सलखो २. रावल-मलीनाथ

महेचां रा ठिकांणां री विगत

गाँव थोब—	२०००)	२०००)	जोधपुर
,, नरसिंग रो वास	३२५)	३२५)	,,
,, तिरसी गडी	२५०)	२५०)	,,
,, जेतावता रो वास	२५०)	२५०)	,,
,, माडलवास	१७५)	१७५)	,,
,, काना रो गुडो	१६३)	१६३)	,,
कुल रेख	३१६३)	३१६३)	

पीढियें—: ३. जगमाल-मलीनाथ री ४. मडलीक ५. भोजराज ६. बीदो ७. नीसल ८. वरसिंग ९. हापो १०. मेघराज ११. कलियाणमल १२. बीरमदे १३ केसवदास † १४ मनोरदास § १५. विजेसिंघ (थोब रो पटो पायो) १६. करणसिंघ १७ सिरदारसिंघ १८. जेसिंघ १९. मुकनसिंघ २०. ऊदेसिंघ २१. किलाणसिंघ २२ कुसालसिंघ

गाँव देहुरियो—	५००)	५००)	जोधपुर

पीढियें—: १७. सरूपसिंघ-करणसिंघोत १८. चुतरसिंघ १९. जालमसिंघ २०. अणदसिंघ २१. वीडदसिंघ २२. बभूतसिंघ

गाँव पादरडी—(खुरद)	२००)	२००)	सिवांणो

पीढियें—: ११. दूदो मेगराजोत १२. जगमाल १३. भारमल १४. जैतमाल १५. किलाणसिंघ १६. प्रतापसिंघ १७. स्यामसिंघ १८. गोपालसिंघ १९. गजसिंघ

गाँव नोहरो—	३०००)	३०००)	जालोर

† उज्जैन के युद्ध मे महाराजा जसवतसिंह की सेना मे काम आया।

§ केसवदास के शामिल उज्जैन मे काम आँथा।

पीढियें —: १७. वखतसिंघ-प्रतापसिंघोत १८. सवलसिंघ १९. रामसिंघ २०. मूलसिंघ २१. छतरसिंघ

खांप जुजांणीयांरी

जुजांणीयां रा ठिकांणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव थापण—	४००)	४००)	सिवांणा	

पाँती आध में—

पीढियें —. देवीसिंघ, सवलसिंघ, हरनाथसिंघ, सुजांणसिंघ, अमरसिंघ, अनाडसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: स्यामसिंघ, हरराम, ओपो, ऊदेराज, मालदांन, चुतरसिंघ

खांप मंडला (मंडलावत)

१. राव रिड़मल २ मडलो-रिड़मलोत, तिण रा वस रा (मंडला) मडलावत कहीजै।

मडलावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव भवराणी—	३७५०)	३७५०)	जालोर
,, गुडो (डुंगरपुर)	५००)	०	,,
, पालडी	२९००)	१०००)	मेड़ता
कुल रेख	७१५०)	४७५०)	

पीढियें—: ३. साईदास मडला रो ४. भाडो ५. हेमराज ६. ठाकुरसी ७. सुंदरदास ८. राजसिंघ ९. भावसिंघ १०. चद्रभांण ११. डूंगरसिंघ १२. सिवदानसिंघ १३. किलाणसिंघ १४. सरूपसिंघ १५. नवलसिंघ १६. लालसिंघ

गाँव चोढां—	३०००)	३०००)	जोधपुर
,, धाणसां	३०००)	३०००)	जालोर
	६०००)	६०००)	

पीढियें—: १३. सेरसिंघ-सिवदानसिंघोत[1] १४. गुमांनसिंघ १५. भोपालसिंघ

१. ठि. भवराणी के (१२) ठाकुर सिवदानसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सिरांणो—	१२५०)	१२५०)	जालोर	

पीढियें—: १२. मानसिंघ-डूंगरसिंघोत[1] १३ जेतसिंघ १४. हिमतसिंघ

गांव पाणवो—	१०००)	१०००)	जालोर	
,, वसवांणो	१०००)	१०००)	नागोर	
कुल रेख	२०००)	२०००)		

पीढियें—: ११. केसरीसिंघ—चद्रभांणोत[2] १२. जोधसिंघ १३. भोमसिंघ १४. नाराणसिंघ

गांव वीसरोठ—	१५००)	१५००)	जालोर	

पीढियें—: ७. दलपत-ठाकुरसी रो[3] ८ अमरसिंघ ९ लाडखान १०. जुंजारसिंघ ११. विसनसिंघ १२. मालमसिंघ १३ जवानसिंघ १४. कुसालसिंघ

गाव वसवांणो—	१०००)	१०००)	नागोर	आदी

पीढियें -: १२. तोगसिंघ-विसनदासोत[4] १३. मोकमसिंघ १४. देवीसिंघ

गांव चांबडीयाक—	२०००)	२०००)	सोजत	

पीढियें—: ७ नरहरदास—ठाकुरसी रो[5] ८. देईदास ९ उदेसिंघ १०. रामसिंघ ११. पदमसिंघ १२. रुघनाथसिंघ १३. तेजसिंघ १४. रतनसिंघ १५. सादुलसिंघ

गांव खुडो-वडी -	१५००)	१५००)	मेड़ता	आधी

पीढियें—: ५. वीदो—भाडा रो[6] ६. रायमल ७. नाथो ८. चुतरभुज ९. भगवानदास १०. जगराम ११. लालसिंघ १२. अजीतसिंघ

गांव नेणीयास—	२५०)	२५०)	जालोर	
,, सावलीयावास	१२५)	१२५)		

---

१. ठि ,, (११) डूगरसिंह का पुत्र ।
२. ठि भवराणी के (१०) ठाकुर चंद्रभाण का पुत्र ।
३ ठि ,, (६) ,, ठाकुरसी का पुत्र ।
४. ठि. वीसरोठ के (११) ,, विसनदास का पुत्र ।
५. ठि भवराणी के (६) ,, ठाकुरसी का पुत्र ।
६. ठि ,, (४) ,, भाडा का पुत्र ।

पीढियें—: ७. रूपसिंघ-रायमलोत[1] ८. नथराम ९. लिखमीदास १०. वागदास ११ गिरधरदास १२. डूंगरसिंघ १३. मांनसिंघ १४. सूरतसिंघ १५. मगलसिंघ

खांप-पातावत

१. राव-रिडमल २. पाती रिड़मलोत, तिण रा वंस रा पातावत कहीजै ।

पातावतां रा ठिकांणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव आऊ—	५०००)	५०००)	फलोधी	
,, भीयासर	४५००)	४५००)	,,	
,, वालासर	५००)	५००)	,,	
,, नौंखडो	५००)	५००)	,,	
कुल रेख	१०५००)	१०५००)		

पीढियें—: ३. हमीरसिंघ ४. रतनसिंघ ५. किलाणदास ६. रामसिंघ ७. ईसरदास ८ राजसिंघ ९ रिणछोड़दास १०. सावलदास ११. खीवकरण १२. पिरथीराज १३ सरूपसिंघ १४. हरीसिंघ

गांव पलीणो—	२५००)	२५००)	,,

पीढियें—: ११ सुदरदास-सांवलदासोत[2] १२. छतरसिंघ १३. मूलसिंघ १४. सिवनाथसिंघ

गांव बरजांगसर—	२०००)	२०००)	फलोधी
,, जेरीयो	१०००)	५००)	,,
कुल रेख	३०००)	२५००)	

पीढियें—: १० अचलदास-रिणछोड़दासोत[3] ११. पेमसिंघ १२. रायभांण १३. फतेसिंघ १४. रावतसिंघ १५. पीरदान

गांव घटीयाली—	४०००)	४०००)	फलोधी

१. ठि. खुडी वडी के (६) ठाकुर रायमल का पुत्र ।
२. ठि. आऊ के (१०) ठाकुर सावलदास का पुत्र ।
३. ठि. ,, ,, (९) ,, रिणछोड़दास का पुत्र ।

पीढियें—: ९. सूरतसिंघ-राजसिंघोत[1] १०. सिवदानसिंघ ११. सगरामसिंघ
१२. बाकीदास १३. रामसिंघ १४. हरनाथसिंघ १५. गुमानसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रोहीणो—	३०००)	३०००)	जोधपुर	पाती ॥=)॥।

पांती दोय मे—

पीढियें—: ११ गोरखदान-सिवदानसिंघोत[2] १२. जोधसिंघ १३. भोपालसिंघ
१४. बभूतसिंघ १५ ऊदेसिंघ

पांती तीजी में— गांव पड़ीयाल मे मिले है।

पीढियें—: ९ अजबसिंघ–मुकनसिंघोत १०. पदमसिंघ ११. सेरसिंघ १२. अभैसिंघ
१३ दलपतसिंघ

गांव गोदरड़ी —	१०००)	१०००)	फलोधी	
,, गागरडी	०	०	,,	सूनो

पीढियें –: १४. जसवतसिंघ-भोपालसिंघोत[3] १५. रिणछोडदास

गांव ग्रामलो—	२०००)	२०००)	फलोधी

पीढियें –: १०. हिमतसिंघोत-सूरतसिंघोत[4] ११. जसकरण १२. रूपसिंघ १३ रावतसिंघ

गांव ऊनावडो—	५००)	५००)	फलोधी

पीढिये—: ११ जसकरण-हिमतसिंघोत[5] १२ अभैसिंघ १३. गोयंनदास
१४. समरथसिंघ

गांव मीठड़ीयो—	६२५)	६२५)	फलोधी

पीढियें—: ८ भवानीदास-ईसरदासोत[6] ९ वेणीदास १०. हिरदेराम ११ दानसिंघ
१२. सिभूसिंघ १३ लालसिंघ १४ बनेसिंघ १५. कुसलसिंघ

गांव केरलो—	२५०)	२५०)	फलोधी

पीढियें—: ७ मनोहरदास-रामसिंघोत[7] ८. आसकरण ९. दलपत १०. जीवणसिंघ
११. विजेराम १२. करणसिंघ १३ मदनसिंघ

---

१. ठि आऊ के (७) ठाकुर राजसिंह का पुत्र।
२ ठि घटियाली के (१०) ठाकुर शिवदानसिंह का पुत्र।
३ ठि. रोहीणो (पातीं दो) के (१३) ठाकुर भोपालसिंह का पुत्र।
४. ठि. घटियाली के (९) ठाकुर सूरतसिंह का पुत्र।
५. ठि आमलो के (१०) ठाकुर हिम्मतसिंह का पुत्र।
६ ठि. आउ के (७) ठाकुर ईसरदास का पुत्र।
७. ठि. आउ के (६) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव लांडीयो—	१०००)	१०००)	नागोर	आसामी २

पांती आध में—

पीढियें—: ६. नगराज-किलांणदासोत[1] ७. चादसिंघ ८. राजसिंघ ९. पीरथीराज १०. कनीरांम ११. फतेसिंघ १२. सिभूसिंघ १३. उरजनसिंघ १४. जेतसिंघ

पांती आध में—

पीढिये—: १३. सरूपसिंघ-सिभूसिंघोत[2] १४ सादुलसिंघ १५. जीवणसिंघ

गांव पीपासर—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—. ९. दुलेसिंघ-राजसिंघोत[3] १०. अखेसिंघ ११. भेरूसिंघ १२. जगरूपसिंघ १३. मगलसिंघ

गांव सेवड़ी—	१०००)	१०००)	नागोर	आसामी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—: ९. पिरथीराज—राजसिंघोत[4] १०. कनीराम ११. लिखमीदास १२. मोहनसिंघ १३. छतरसिंघ १४. मालमसिंघ १५ सावतसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: ४. परवतसिंघ-हमीरसिंघोत[5] ५. सीगण-परवत रो ६. हेमराज ७. उरजनसिंघ ८. जगनाथ ९. किसनदास १०. देईदास ११. वीको १२. अनोपसिंघ १३. जेतसिंघ १४. सगरामसिंघ १५ मेघराज १६. सिवदांनसिंघ १७. रामसिंघ

गांव ऊनावडो—	५००)	५००)	फलोधी	

पीढियें—: ८. जगनाथ—चादसिंघोत[6] ९. वीको १०. गिरधरदास ११. कीरतसिंघ १२. हिंदूसिंघ १३. गोयंददास १४. समरथसिंघ

गांव भगु—	२०००)	२०००)	नागोर	

---

१. ठि आऊ के (५) ठाकुर किलाणदास का पुत्र।
२ ठि लाडियो के (१२) ठाकुर शभूसिंह का पुत्र।
३. ठि. ,, (८) ,, राजसिंह का पुत्र।
४. ठि , (८) ,, ,, ,,
५ ठि आऊ के (३ , हमीरसिंह का पुत्र।
६ ठि लाडियो के (७) ठाकुर चादसिंह का पुत्र।

पीढियें—: ८. किसनदास-चादसिघोत[1] ९. मेघराज १०. पेमसिंघ ११. सुरताणसिंघ १२ सिभूसिंघ १३. भीवसिंघ १४. मोतीसिंघ १५ मगलसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव करणु—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर	
,, लुभावसीयो	१०००।	१०००)	,,	
,, वाभुवास	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	३२५०)	३२५०)		

पीढियें—: १०. रूपसिंघ-मेघराजोत[2] ११ मोहकमसिंघ १२. ऊमेदसिंघ १३. उदेसिंघ १४ पीरदांन

गांव खारीयो वडो—	१५००)	१५००)	मेडतो	आधो

पीढियें—: १०. कुसलसिंघ-मेघराजोत[3] ११ बखतसिंघ १२. भीवसिंघ १३. पीरदांन

गांव चोटीलो—	२५००)	२५००)	जोधपुर	

पीढिये—: ५. मालमसिंघ-रतनसिंघोत ६. राणो ७. माडण ८. भगवानदास ९. पिरथीराज १०. सूरजमल ११. तेजमल १२. सुरताणसिंघ १३. जसवतसिंघ १४ भवानीदास १५. अचलसिंघ १६. अमरसिंघ

गांव अजासर—	६२५)	६२५)	जोधपुर	

पीढियें : ७. देईदास-राणोत[4] ८ रामदास ९. दयालदास १०. केसरीसिंघ ११. फतेसिंघ १२. हरीसिंघ १३ गुमानसिंघ १४. रतनसिंघ १५. विसनसिंघ

गांव केलणसर—	२५००)	२५००)	फलोधी	आसामी २ रे

पांती आध मे—

पीढिये—: ५. जेमल-रतनसिंघोत[5] ६ गोपालदास ७. रामचदर ८. मयामल ९. विजेसिंघ १०. जोरावरसिंघ ११. खीवकरण १२. चतरसिंघ १३. रावतसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १२ मदनसिंघ-खीवकरणोत[6] १३ किलांणसिंघ

---

१. ठि लाडियो के (७) ठाकुर चादसिंघ का पुत्र।
२ ठि भगु के (९) ठाकुर मेघराज का पुत्र।
३. ,, , (९) ,, ,, ,,
४ ठि चोटीला के (६) ठाकुर राणा का पुत्र।
५ ठि आऊ के ४) ठाकुर रतनसिंह का पुत्र।
६ ठि. केलणसर (पहली पाती) के (११) ठाकुर खीवकरण का पुत्र।

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मोटेई—	१५००)	१५००)	फलोधी	
„ चिडी	४५०)	४५०)	„	
	———	———		
कुल रेख	१९५०)	१९५०)		

पीढिये—: ११. मूलसिंघ-जोरावरसिंघोत[1] १२. कुसालसिंघ १३. खुमाणसिंघ १४. लखसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव पड़ीयाल—	४४००)	४४००)	फलोधी	
„ देगावडी	६००)	६००)	„	
	———	———		
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पांती आध में—

पीढिये—: ८. मुकनदास-रामचदोत[2] ९. जोगीदास १० हटीसिंघ ११. सुखसिंघ १२. भोमसिंघ १३. चेनसिंघ १४. रणजीतसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: ७. मनोहरदास-गोपालदासोत[3] ८. जोगीदास ९ रायसिंघ १०. मेघराज ÷ ११. वीरभांण १२. रिधसिंघ १३ रावतसिंघ १४ अजीतसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव घोलासर—	४०००)	४०००)	फलोधी	

पीढियें—: १३. लालसिंघ-भोमसिंघोत[4] १४ धनसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव रणसीसर—	१०००)	१०००)	फलोधी	

पीढियें—: ९. तिलोकसिंघ-मुकनदासोत[5] १०. जोरावरसिंघ ११ भोपालसिंघ १२. बखतावरसिंघ १३. दोलतसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव मेहाकोर —	६२५)	६२५)	फलोधी	

÷ यह संवत् १८४७ मे मेडता के युद्ध मे काम आया।
१. ठि. देलणसर (पहली पांती) के (१०) ठाकुर जोरावरसिंह का पुत्र।
२ ठि. देलणसर (पहली पांती) के (७) ठाकुर रामचंद्र का पुत्र।
३. ठि. „ „ (९) „ गोपालदास का पुत्र।
४. ठि. पड़ीयाल „ (१२) „ भोमसिंह का पुत्र।
५. ठि. „ „ (८) „ मुकनदास का पुत्र।

पीढियें—: ६. भोपत-जैमलोत ७ नरहरदास ८. आसकरण ९ ऊदेसिंघ
१०. जीवणदास ११. रामसिंघ १२. करणसिंघ १३. खुमांणसिंघ
१४. सादुलसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव लूणो—	६२५)	६२५)	फलोधी	

पांती आध में—

पीढियें—: ८. गोयनदास-नरहरदासोत[1] ९. चादसिंघ १०. करमसिंघ ११. धीरतसिंघ
१२. हिंदुसिंघ १३ मेघराज १४. रावतसिंघ १५. जोगराज

पांती आध में—

पीढियें—: ११. मूलसिंघ-करमसिंघोत[2] १२. भवानीसिंघ १३. विसनसिंघ
१४. विड़दसिंघ

गाँव लुंबावसीयो—	६२५)	६२५)	फलोधी	

पीढियें—: ११ केसरीसिंघ हरकिसनोत १२. वाघसिंघ १३. मेघराज १४. भोजराज
१५ भोपालसिंघ १६. वभूतसिंघ

गाँव बुंगड़ी—	७००)	७००)	फलोधी	आसामी ३ रे
,, हरवुसर	८००)	८००)	,,	
कुल रेख	१५००)	१५००)		

पांती तीजी में— ।–)॥ (पहली)

पीढियें—: ७. दयालदास-भोपतोत ८. केसरीसिंघ ९. तेजमाल १०. जेतसिंघ
११. वाकीदास १२. अनाड़सिंघ १३. सुखसिंघ

पांती तीजी में— ।–)। (दूजी)

पीढियें—: १२. नाराणदास-जेतसिंघोत १३. दुरजणसिंघ १४. नाथुसिंघ १५. राजसिंघ

पांती तीजी में— ।–)। (तीजी)

पीढियें—: ८. भागसिंघ-दयालदासोत[3] ९. करणसिंघ १०. जूजारसिंघ ११. सरूपसिंघ
१२. ऊमेदसिंघ १३ मोहवतसिंघ १४ सिवनाथसिंघ

---

१. ठि. मेहाकोर के (७) ठाकुर नरहरदास का पुत्र।
२. ठि लूणो के (१०) ठाकुर करमसिह का पुत्र।
३. ठि वुगडी के (७) ठाकुर दयालदाम का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव जोधियासी—	२०००)	२०००)	नागोर	

(गाव जोधियासी सेवड़ी ग्राधी मे मिले है।)

पीढियाँ ४ परबतसिंघ-हमीरसिंघोत मे मिले हैं।

पीढियें—: १० बनेसिंघ-किसनदासोत[1] ११. बाकीदास १२. सगरामसिंघ
१३. ग्रनाडसिंघ १४ सादुलसिंघ

गांव माडवली—	५००)	५००)	नागोर	

पीढियें—: ११ दुरजणसिंघ-बनेसिंघोत[2] १२. सेरसिंघ १३. चादसिंघ १४. त्रिसनसिंघ

गांव मूडासर—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ४. गगादास-हमीरसिंघोत[3] ५. नेतसी ६. हिंगोलदास ७. दुरजणसाल
८. सेखराज ९. रामदास १० गणेसदास ११. बदरीदास १२. कीरतसिंघ
१३. सभासिंघ १४. सूरजमल १५. खीवराज १६. लिछमणसिंघ

गांव चीमणवो—	१५००)	१५००)	फलोधी	

पीढियें—: ८. खेतसिंघ-दुरजनसालोत[4] ९. सगतसिंघ १०. भगवतसिंघ ११. जोधसिंघ
१२. ईदरसिंघ १३. सगरामसिंघ १४. वाघसिंघ १५ मोहकमसिंघ
१६. करणसिंघ १७. सूरसिंघ

गांव रिडमलसर—	१६२५)	१६२५)	जोधपुर	ग्रासामी २ रे
,, पचाणसर	३७५)	३७५)	,,	
कुल रेख	२०००)	२०००)		

पांती ग्राध में—

पीढियें —: ३. लूभो-पातावत ४. पिरथीराज ५ सेसमल ६. कनीराम ७ करमसिंघ
८ सादुलसिंघ ९. ग्रासकरण १०. तेजमाल ११. सुंदरसिंघ १२. सवाईसिंघ
१३ सुमेलसिंघ १४. गुलाबसिंघ

पांती दूजी ग्राध री—

---

१ ठि मेवटी (पाती दो) के (९) ठाकुर किसनदास का पुत्र।

२ ठि. जोधियासी के (१०) ठाकुर बनेसिंह का पुत्र।

३ ग्राउ के (३) ठाकुर हमीरसिंह का पुत्र।

४. ठि. मूडासर के (७) ठाकुर दुरजनसाल का पुत्र।

पीढियें—: १४. जोधसिंघ-सुमेलसिंघोत[१] १५. गिरधरसिंघ

खांप कूंपावत

पीढियें—: १. राव-रिडमल २. अखेराज ३ मेहेराज ४. कूपो, तिण रा कूंपावत कही जै।

खांप मांडणोत कूंपावत

पीढियें—: ४. कूंपो ५ मांडण-कुंपावत, तिण रा माडणोत-कूंपावत कहीजै ।

मांडणोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव आसोप—	१८७५०)	१८७५०)	जोधपुर	
,, कुकडदो	२०००)	२०००)	,,	
,, रामपुरो	२७५०)	२७५०)	,,	
,, रडोद	४५००)	४५००)	,,	आधी
,, ककडाय	३०००)	३०००)	नागोर	
कुल रेख	३१०००)	३१०००)		

पीढियें—. ६. खीवकरण-माडणोत ७. किसनदास ८. मुकनदास ९. जेतसिंघ १०. रांमसिंघ ११. कनीरांम १२. दलपत १३. महेसदास १४. रतनसिंघ १५. केसरीसिंघ १६. बखतावरसिंघ १७. सिवनाथसिंघ (खोळै) १८. चैनसिंघ (खोळै)

गांव गजसिंघपुरो—	७५००)	७५००)	जोधपुर	

पीढियें—: ११. छतरसिंघ-रामसिंघोत[२] १२. जगरामसिंघ १३. भारथसिंघ १४. बाघसिंघ १५. माधोसिंघ १६. अचलसिंघ

गांव रड़ोद—	४५००)	४५००)	जोधपुर	आधी आसामी ३ रे
पांती ≡।।। रेख	२०००)			

पीढिये—: १३ सालमसिंघ-जगरामसिंघोत[३] १४. गुलाबसिंघ

पांती =)।।। छठी रेख	१५००)			

---

१. ठि. रिडमलसर (पहली पाती) के (१३) ठाकुर सुमेलसिंह का पुत्र ।
२. ठि. आसोप के (१०) ठाकुर रामसिंह का पुत्र ।
३ ठि. गजसिंघपुरो के (१३) ठाकुर जगरामसिंह का पुत्र ।

पीढियें— १३. सायबसिंघ-जगरामसिंघोत[1] १४. खुमाणसिंघ १५. सिवनाथसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
पांती –)॥ री रेख—	१०००)			

पीढियें—: १३. पेमसिंघ-जगरामसिंघोत[2] १४. अजीतसिंघ १५. भोमसिंघ (खोळै)

गांव गारासणी—	२५००)	२५००)	जोधपुर	
„ जबरखीयो	१०००)	१०००)	„	
कुल रेख	३५००)	३५००)		

पीढियें—: ११. सिरदारसिंघ-रामसिंघोत[3] १२. जोधसिंघ १३. अणदसिंघ १४. ईसरीसिंघ १५. अभेकरण १६. जसवतसिंघ १७. सिवनाथसिंघ

गांव नेतडीयां—	४०००)	४०००)	मेड़ता	

पीढिये—: १२. पिरथीराज-सिरदारसिंघोत[4] १३ अनोपसिंघ १४. नराणदास १५. जीवणदास १६. गुमानसिंघ

गांव वासणी—	३०००)	०	नागोर	आसोप रा कामेती

पीढियें—: १२. जोदसिंघ-सिरदारसिंघोत[5] १३. अणदसिंघ १४. हरीसिंघ १५. करणसिंघ १६. मालमसिंघ,

गांव सारंगवासणी—	१०००)	१०००)	मेड़ता	

पीढियें:— ११. बिसनसिंघ-रामसिंघोत[6] १२. नाहरसिंघ १३. खुमाणसिंघ १४' सोभसिंघ

गांव गोयंदपुरो—	७५०)	७५०)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. मनोहरदास-मुकनदासोत १०. सुभकरण ११. दलकरण १२. जवानसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४ मूलसिंघ

गांव खारीयारी वासणी—	१२५०)	१२५०)	मेड़ता	

पीढियें—: ८. दुवारकादास-किसनदासोत[7] ९. मोकमसिंघ १०. चद्रभाण ११. आईदान

---

१. ठि. गजसिंहपुरो के (१३) ठाकुर जगरामसिंह का पुत्र।
२. „ „ (१३) „ „ „।
३ ठि आसोप के (१०) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।
४. ठि गारासणी के (११) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र।
५. ठि गारासणी के (११) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र।
६. ठि. आसोप के (१०) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।
७. ठि. आसोप के (७) ठाकुर किसनदास का पुत्र।

१२. सवाईसिंघ १३. नवलसिंघ १४. सेरसिंघ १५. पेमसिंघ १६. लिछमणसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नाडसर—	५०००)	५०००)	जोधपुर	आसांमी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—: ७. राजसिंघ-खीवकरणोत[1] ८. नाहरखान ९. सूरजमल १० कीरतसिंघ ११. वाहादरसिंघ १२. वगसीरांम १३. ऊदेसिंघ १४. करणसिंघ १५. जवानसिंघ १६. ईदरसिंघ १७. रुघनाथसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १३. सूरतसिंघ-वगसीरामोत[2] १४. मोतीसिंघ १५. पाहाडसिंघ

गांव राजोद—	४०००)	४०००	मेड़ता

पीढियें—: १४. अनोपसिंघ-सुरताणसिंघोत[3] १५. हरीसिंघ

गांव पीराऊ—	१०००)	५००)	नागोर

पीढियें—: जैंसिंघ-राजसिंघोत[4] ९ विजेसिंघ १०. सायवसिंघ ११. ऊदेसिंघ १२. मोकमसिंघ १३ नाथुसिंघ १४. मदनसिंघ १५ गुमांनसिंघ १६. नाराणदास

गांव सरगोयी वडो—	८००)	८००)	जोधपुर
,, सरगीयो तीजो	८००)	८००)	,,
कुल रेख	१६००)	१६००)	

पीढियें— ७. कानसिंघ-खीवकरणोत[5] ८. भावसिंघ ९. फतैसिंघ १०. अणदसिंघ ११. वाहादरसिंघ १२. उमेदसिंघ १३. सूरतसिंघ १४. समरथसिंघ १५. भोमसिंघ

गांव भांनावास—	२०००)	२०००)	मेड़ता

---

१. ठि आसोप के (६) ठाकुर खीवकरण का पुत्र।
२. ठि नाडसर (पहली पाती) के (१२) ठाकुर वगसीराम का पुत्र।
३. ठि ,, ,, (१३) ,, सूरतसिंह का पुत्र।
४. ठि ,, ,, (७) ,, राजसिंह का पुत्र।
५ ठि आसोप के (६) ठाकुर खीवकरण का पुत्र।

पीढियें— १०. चतरसिंघ-फतैसिंघोत[1] ११. जसकरण १२. मोहनसिंघ १३. फोजसिंघ १४ लिछमणसिंघ १५. जूजारसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव चांदेलाव –	३२८०)	३२८०)	जोधपुर	
,, रूपाथल	५०००)	५०००)	नागोर	
कुल रेख	८२८०)	८२८०)		

पीढियें –: ६. पूरणमल-मांडणोत ७. वेणीदास ८. स्यामसिंघ ९. हिमतसिंघ १०. छतरसिंघ ११. मोहनसिंघ १२. धीरतसिंघ १३ देवसिंघ १४. किलांणसिंघ १५. ईदरसिंघ १६ जवारसिंघ

गांव खेराट—	१५००)	१५००)	नागोर	

पीढिये—: ९. सूरजमल-स्यामसिंघोत[2] १० जीवणसिंघ ११ सिरदारसिंघ १२. जेसिंघ १३ सगरामसिंघ १४. प्रतापसिंघ १५. सगतीदान

गांव चांमां—	४०००)	४०००)	कोलिया	

पीढियें—: १०. हरनाथ-सूरजमलोत ११. केसरीसिंघ १२ हीदुसिंघ १३. अमरसिंघ १४. दुलेसिंघ १५. अरजनसिंघ

गांव सांडावास—	१०००)	१०००)	मेड़ता	आसामी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—' ११ जगरामसिंघ-हरनाथसिंघोत[3] १२ पाहाडसिंघ १३. दलेलसिंघ १४. भेरूसिंघ १५. सबलसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १३. अजीतसिंघ-पाहाडसिंघ १४ भगवतसिंघ

गांव सागू बडी—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—' १०. दीपसिंघ-सूरजमलोत[4] ११. कनीराम १२. भिभुसिंघ १३. रामसिंघ १४. बभूतसिंघ १५ चिमनसिंघ

गांव ऊण–	२०००)	२०००)	नागोर	

---

१. ठि- सरगियो वडो के (६) ठाकुर फतैसिह का पुत्र।

२ ठि. चादेलाव के (८) ठाकुर स्यामसिह का पुत्र।

३ ठि चामा के (१०) ठाकुर हरनाथसिह का पुत्र।

४ ठि नाडसर के (६) ठाकुर सूरजमल का पुत्र।

पीढियें—: ११. भोजराज-हरनाथसिंघोत[1] १२ नाथूसिंघ १३. रतनसिंघ १४. दुरजण-सिंघ १५ सगतीदान

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नदवांण—	५००)	०	नागोर	

पीढियें—: ११. तेजसिंघ-दीपसिंघोत[2] १२. भेरूसिंघ १३. बनेसिंघ १४. चिमनसिंघ १५. अगरसिंघ

गांवबोडीद-बडी—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ९ सावलदास-स्यांमसिंघोत[3] १० जीवणसिंघ ११. सिरदारसिंघ १२. रुघनाथसिंघ १३ भारथसिंघ १४. दुरजणसिंघ १५. पीरदान १६. मूलसिंघ

गांव सेदरीयो—	५००)	५००)	नागोर	

पीढिये—: ९ चतरसाल-स्यामसिंघोत[4] १०. सुजाणसिंघ ११. सूरजमल १२. सायब-सिंघ १३ बखतावरसिंघ १४. स्यामसिंघ

गांव मीठड़ी—	१२५०)	१०००)	जालोर	२५०) रेख माफ
,, रावणीयांणी	१५६२॥)	१५६२॥)	जोधपुर	पाती ।)
कुल रेख	२८१२॥)	२५६२॥)		

पीढियें—: ८. सबळसिंघ-वेणीदासोत[5] ९ ईसरदास १० आसकरण ११. अनोपसिंघ १२. केसरीसिंघ १३ भोमालसिंघ १४ ग्यानसिंघ

गांव जेतीवास—	७००)	७००)	जोधपुर	

पीढियें—: ६. दलपत-माडणोत ७. सबलसिंघ ८. रामसिंघ ९. रुगनाथसिंघ १०. चदर-भाण ११. मुकनसिंघ १२. रतनसिंघ

गांव रांमासणी—	६२५०)	६२५०)	जोधपुर	

पीढियें—. ९. मदनसिंघ-रांमसिंघोत[6] १०. भावसिंघ ११. सुजाणसिंघ १२. जेतसिंघ १३. भवानीसिंघ १४ अभेसिंघ १५. चादसिंघ

---

१. ठि चामा के (१०) ठाकुर हरनाथसिंह का पुत्र ।
२ ठि सागूवडी के (१०) ठाकुर दीपसिंह का पुत्र ।
३. ठि चादेलाव के (८) ठाकुर स्यामसिंह का पुत्र ।
४. ठि. ,, (८) ,, ,। ,, ।
५. ठि. ,, (७) वेणीदास का पुत्र ।
६ ठि. जैतीवास के (८) ठाकुर रामसिंह का पुत्र ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव पारासरो—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. विसनसिंघ-रांमसिंघोत[1] १०. जालमसिंघ ११ अजबसिंघ १२. भारथसिंघ १३. सिवनाथसिंघ १४. जोरावरसिंघ

गांव सुहांणो—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. केसरीसिंघ-सबलसिंघोत[2] ९. अमरसिंघ १०. सगरामसिंघ ११. सरूपसिंघ १२. राजसिंघ १३ स्यांमसिंघ १४. धनसिंघ १५ वागसिंघ

गांव खारियो वडो—	१५००)	१५००)	मेडता	आधो

पीढियें—: ९ लूणकरण-केसरीसिंघोत[3] १०. सिवकरण ११. चेनकरण १२. नाथुसिंघ १३. अरजनसिंघ

खांप महेसदासोत कूंपावत

पीढिये—: ४. कूपो ५ महेसदास-कूपावत रा वस रा महेसदासोत कूंपावत कहीजै।

महेसदासोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव कटालीया—	७५००)	७५००)	सोजत	खेडा ७
,, बोरनडी	१३००)	१३००)	,,	
,, बोपारी	४०००)	४०००)	,,	
,, सीचीयाक	८००)	८००)	,,	
,, नीबली	७००)	७००)	,,	
,, मसाजण मगरा मे है रेख नही				

पीढिये—: ६. सादुलसिंघ-महेसदासोत ७ जसवतसिंघ ८. किसनसिंघ ९. सबलसिंघ १०. भावसिंघ ११. वखतसिंघ १२. सगरामसिंघ १३ कुंमलसिंघ १४. सिभूसिंघ १५. गोरधनदास

गांव डोरनडी—	३०००)	३०००)	सोजत	आसामी ३ रे
पांती आध में— ।।) रेख १५००)				

पीढियें—: ९. सबलसिंघ-किसनसिंघोत[4] ११. जगतसिंघ १२. बनेसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. समरथसिंघ

---

१ ठि. जैतीवास के (८) ठाकुर रामसिंह का पुत्र।
२ ठि. ,, (७) ,, सबलसिंह का पुत्र।
३. ठि खुंगाणी के (८) ठाकुर केसरीसिंह का पुत्र।
४ ठि कंटालिया के (८) ठाकुर किसनसिंह का पुत्र।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
पांती चौथी में—	।) रेख ७५०)			

पीढियें—. १३ लालसिंघ-बनेसिंघोत[1] १४ अमरसिंघ

पांती चौथी में— ।) रेख ७५०)

पीढियें—: १२. सिवसिंघ-जगतसिंघोत[2] १३. भेरूंसिंघ १४. रामसिंघ (खोळै) १५ रूपसिंघ

गांव भोजावास—	७००)	७००)	सोजत	

पीढिये—: ७. किलांणदास-सादूलसिंघोत[3] ८. राघोदास ९. गोकलदास १०. हिमतसिंघ ११. सूरतसिंघ १२. घनराज १३. ऊदेसिंघ १४. चनणसिंघ १५. विजेसिंघ

गांव सीरीयारी बड़ी—	१८५०)	१८५०)	सोजत	
,, सीरीयारी खुरद	१८५०)	१८५०)	,,	
,, फुलाद	४००)	४००)	,,	
,, कोसवारो	२००)	२००)	,,	खेडो सून
,, डीगोर	३००)	३००)	,,	
कुल रेख	४६००)	४६००)		

पीढिये—: ६. आसकरण-महेसदासोत ७. अमरसिंघ ८ केसरीसिंघ ९. रूपसिंघ १०. हठीसिंघ ११. सूरजमल १२. सगरांमसिंघ १३. जोधसिंघ १४. दोलतसिंघ १५ मालमसिंघ १६. रतनसिंघ (खोळै) १७. सिवनाथसिंघ

गांव रांवणीयांणो—	३१२५)	३१२५)	जोधपुर	आधो तिण मे पाती दोय

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ११. रायसिंघ-हठीसिंघोत[4] १२. नरसिंगदास १३. भोमसिंघ १४. धीरतसिंघ

पांती आध में— ॥)

---

१. ठि डोरनडी के (आधी) के (१२) ठाकुर बनेसिंह का पुत्र ।
२ ठि. ,, ,, (११) ,, जगतसिंह का पुत्र ।
३. ठि. कटालिया के (६) ठाकुर सादुलसिंह का पुत्र ।
४ ठि. सिरियारी के (१०) ठाकुर हठीसिंह का पुत्र ।

पीढियें—: ७. अमोरसिंघ-आसकरणोत[1] ८ नारसिंघ ६. सिरदारसिंघ १०. माहासिंघ ११. गाडसिंघ १२ सूरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मेहलाप—	१५००)	१५००)	सोजत	

पीढियें—: ६. चतरसिंघ-केसरीसिंघोत[2] १०. सुंदरदास ११. तेजसिंघ १२. ग्यांनसिंघ १३. कायमसिंघ १४. अमरसिंघ १५. लिछमणसिंघ

गांव सूरसिंघ रो गुडो—	१०००)	१०००)	सोजत	

पीढियें—: ८. दयालदास-अमरसिंघोत[3] ६. सिभूसिंघ १०. लालसिंघ ११. जगरांमसिंघ १२. जसवंतसिंघ १३. गुलाबसिंघ १४. माधोसिंघ १५. अमरसिंघ

खांप ऊदेसिंघोत-कूंपावत

पीढियें—: ४. कूंपो ५. ऊदेसिंघ-कूंपावत तिण रा वस रा ऊदेसिंघोत कूंपावत कहीजै।

ऊदेसिंघोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव चेलावास—	४५००)	४५००)	सोजत	
„ गोपावास	१०००)	०		
कुल रेख	५५००)	४५००)		

पीढियें—: ६. नराणदास-ऊदेसिंघोत ७. लिछमणदास ८ मेघराज ६. किलांणदास १०. भीवसिंघ ११. रतनसिंघ १२. जूजारसिंघ १३. मुकनसिंघ १४. गुमानसिंघ १५. सगतसिंघ १६. मोहवतसिंघ

गांव मलसा बावड़ी—	४३००)	४३००)	सोजत	खेड़ा २
„ वाणीयामाली	७००)	७००)	„	
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पीढियें—: ८. रतनसिंघ-लिछमणदासोत[4] ६. जुजारसिंघ १० ईंदरसिंघ ११ सरूपसिंघ १२. हरीसिंघ

---

१. ठि. मिरीयारी के (६) ठाकुर आसकरण का पुत्र।

२. ठि. सिरियारी बडी के (८) ठाकुर केसरीसिंह का पुत्र।

३. ठि „ „ (७) „ अमरसिंह का पुत्र।

४. ठि. चेलावास के (७) ठाकुर लिछमणसिंह का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हूमार भरे	परगना	विशेष
गांव हापत—	१२५०)	१२५०)	सोजत	

पीढियें—. ८. कुंभकरण ६. लिछमणदासोत[1] ६. भारमल १०. चदरभांण ११. अभेरांम १२. किलाणसिंघ १३. रुघनाथसिंघ १४. आईदांन १५. अनाड़सिंघ

गांव सोहावास—	४०००)	४०००)	गोढवाड़	

पीढियें—: ६. सावलदास-ऊदेसिंघोत ७. डुंगरसिंघ ८. मेहकरण ६. सिरदारसिंघ १०. वीरमदेव ११. सिंभूसिंघ १२. कुमेरसिंघ १३. फतेसिंघ १४. हरनाथ-सिंघ १५. रणजीतसिंघ

गांव बुसी—	१००००	१००००)	गोढवाड़	
,, परतापगढ	१०००)	१०००)	,,	
,, गिरधरदास रो गुडो	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	१२०००)	१२०००)		

पीढियें—: ६. वेरीसाल-ऊदेसिंघोत ७. भोपतसिंघ ८. पचाणदास ६. मुकनसिंघ १०. जसवंतसिंघ ११. सिवदानसिंघ १२. प्रतापसिंघ १३. छतरसिंघ १४. बखतावरसिंघ १५. दुरजणसिंघ (खोळे) १६. बभूतसिंघ

खांप ईसरदासोत-कूंपावत

पीढियें—:४ कूंपो ५. ईसरदास कूपावत तिण रा वस रा ईसरदासोत कूंपावत कहीजै।

ईसरदासोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव चंडावल—	६२५०)	६२५०)	सोजत	
,, छीतरीयो	२५००)	२५००)	,,	
,, राणावास	५०००)	५०००)	,,	
,, चवाडिया	२०००)	२०००)	,,	
,, पाचनडो वडो	८७५)	८७५)	,,	
,, पाचनडो खुरद	८७५)	८७५)	,,	
,, खारचीया	१२५०)	१२५०)	,,	
,, वछराज रो गुडो	१२५०)	१२५०)	,,	
कुल रेख	२००००)	२००००)		

१. ठि. चेलावास के (७) ठाकुर लिछमणसिंह का पुत्र।

पीढियें—: ६. चांदसिंघ-ईसरदासोत ७. गोरधनदास ८. विजेसिंघ ९. फतैसिंघ १०. पिरथीराज ११. सेरसिंघ १२. हरीसिंघ १३. विसनसिंघ १४. सावतसिंघ १५. लिछमणसिंघ १६. प्रतापसिंघ १७. सगतीदान

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव राजोलो खुरद—	६२५)	६२५)	सोजत	आधो

पीढियें—: १०. ऊदेसिंघ-फतैसिंघोत[1] ११. सवाईसिंघ १२. सिभूसिंघ १३. जैतसिंघ १४. वनसिंघ. १५. सादुलसिंघ

गाँव माटो—	८७५०)	९७५०)	सोजत	

पीढियें—: १०. सिरदारसिंघ-फतैसिंघोत[2] ११. कुसलसिंघोत १२. सिवसिंघ १३. चेनसिंघ १४. कुसलसिंघ १५. करणसिंघ (खोळे) १६. मालमसिंघ १७. छतरसिंघ

गाँव सुकेलाव—	३०००)	३०००)	सोजत	

पीढियें—: ८. जगनाथ-गोरधनदासोत[3] ९. भगवानदास १०. हरभाण ११. विहारीदास १२. दुरगदास १३. वभूतसिंघ १४. हठीसिंघ १५ सवाईसिंघ

खांप-तिलोकदासोत-कूंपावत

पीढियें—: ४. कूंपो ५. तिलोकदासोत-कूंपावत तिण रा वंस रा तिलोकदासोत कूंपावत कहीजै ।

तिलोकदासोत कूंपावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव घणलो—	३०००)	३०००)	सोजत
,, दुरगा रो गुडो	१०००)	१०००)	,,
,, भोजा रो गुडो	१०००)	१०००)	,,
,, गुमांनपुरो	५००)	०	,,
कुल रेख	५५००)	५०००)	

पीढियें—: ६ भीवसिंघ-तिलोकदासोत ७. दयालसिंघ ८. माधोसिंघ ९. फतेसिंघ १० खीवकरण ११. कुंभकरण १२. केसरीसिंघ १३. ऊदेसिंघ १४ विडदसिंघ १५ वाघसिंघ १६. बाहादरसिंघ

---

१. ठि. चटावल के (९) ठाकुर फतैसिंह का पुत्र ।

२ ठि. चडावल के (९) ठाकुर फतैसिंह का पुत्र ।

३. ठि. ,, (७) ,, गोरधनदास रा पुत्र ।

खांप-नरावत

१. राव सूजो २. नरो-सूजावत तिण रा वस रा नरावत कहीजै।

नरावतां रा ठिकांणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव भडाणो—	६०००)	६०००)	नागोर	

पीढियें—: ३ गोयनदास-नरावत ४. राजसिंघ ५. मानसिंघ ६. प्रागदास ७ सबलसिंघ ८. चदरसेण ९ पदमसिंघ १०. सूरतसिंघ ११. धीरतसिंघ† १२ सिरदारसिंघ १३. फतेसिंघ १४. विसनसिंघ १५. लिछमणसिंघ

गाँव बेलिसा री वासणी	१५००)	१५००)	नागोर	आधी

पीढियें—: ११. संगरामसिंघ-सूरतसिंघोत[1] (सवत् १८०२ मे वासणी पाई) १२. देवसिंघ १३ सरूपसिंघ १४. आसकरण

गाँव बुहु—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: ८ कुसलसिंघ-सबलसिंघोत[2] ९. सिरदारसिंघ १०. रतनसिंघ ११. सेरसिंघ १२. बभूतसिंघ १३. सिवनाथसिंघ

गाँव कसूबी पादडां—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ६. जसवतसिंघ-मानसिंघोत[3] ७ जगतसिंघ ८ बलुसिंघ ९. लालसिंघ १०. सवाईसिंघ ११. अखेसिंघ १२ चादसिंघ १३. अजीतसिंघ १४ सिवनाथसिंघ

गाँव बाघरासर—	३०००)	३०००)	नागोर	आसामी २ रे

पांती दोय में— ॥=) ॥। रेख २०००)

पीढियें—: ४ पिरथीराज-गोयंनदासोत[4] ५ किसनदास ६. स्यामसिंघ ७. रुघनाथसिंघ ८. वीरमदेव ९. मोहकमसिंघ १०. जगरामसिंघ ११. विजेसिंघ १२. खडगसिंघ १३. किसनसिंघ

विगत पांतो तीजी में रेख—१०००)

---

† भडाणो पायो सवत् १७८९ मा सुद ७ महाराज श्री अभेसिंघजी रे समै।

१ ठि भडाणो के (१०) ठाकुर सूरतसिंह का पुत्र।

२ ठि भडाणो के (७) ठाकुर सबलसिंह का पुत्र।

३ ठि. ,, (५) ,, मानसिंह का पुत्र।

४ ठि. ,, (३) ,, गोयददास का पुत्र।

पीढियें—: ९. विगतसिंघ-वीरमदेव रो[1] १०. बाघसिंघ ११ नाथुसिंघ १२. दलेलसिंघ

खांप-नारणोत

१. राव रिड़मल २. नारण-रिड़मलोत

नारणोतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव	रेख कदीम	हुमार भरे	परगना	विशेष
गाँव बोसुरी—	१०००)	१०००)	नागोर	आधी

पीढियें—: १. रुघनाथसिंघ-नारण रो २. जोरावरसिंघ ३. बाकीदास ४. हिंदूसिंघ ५. करणसिंघ ६. सगतीदान

खांप-कांधलोत

१. राव रिड़मल २. काघल-रिड़मल रो तिण रा वस रा काधलोत है।

कांधलोतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव लांबो जटां—	६२५०)	६२५०)	मेडता

पीढियें—: १. अमानसिंघ २. करणसिंघ ३. रुघनाथसिंघ

खांप-बीदावत

१. राव-जोधो २. बीदो-जोधावत तिण रा वस रा बीदावत कहीजै।

बीदावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव सांगु खुरद—	१०००)	१०००)	नागोर

पीढियें—: १. मुथरादास २. मुकनदास ३. खगारसिंघ ४. नाथुसिंघ ५. अजीतसिंघ ६. लालसिंघ

गाँव कुसियो—	१०००)	१०००)	नागोर

पीढियें—: १. रुघनाथसिंघ २. गुमानसिंघ ३. भोपालसिंघ ४. चादसिंघ

खांप-ऊदावत-बेडवासीया

१. रावल-तीडो २. कांनडदे-रावल तीडा रो ३. रावल-कांनडदे रो ४. त्रिभांणसी-रावल रो ५. ऊदो-तिण रा वम रा ऊदावत कहीजै। (सु बीकानेर रै गाम्व सहुवे था सु ऊदा सुं तीजो वीरम हुवो मु राव जोधा रा राज मे गाव में बेडवासीये आय वसीया, जठा पछै बेडवासीया ऊदावत कहीजै।)

ऊदावत-बेडवासीयां रा ठिकांणां री विगत

---

१. ठि. बाघरामर के (८) ठाकुर वीरम का पुत्र।

गांव बेड वासीयो— गढ जोधपुर रेख २६००) मे बाद पांती आना –)||| री रेख २००) री गाव बेगडीया वाला रे सु ऊठे लिखीजसी बाकी आंना |||=)| री रेख २४००) री आसांमी ६ रै तिण री विगत—

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बेड वासीयो—	१४००)	२४००)	जोधपुर	आसांमी ६ रे

।–)|| पांती रेख— ६५०) री

पीढियें—: ६. विजेराम-ऊदावत ७. वीरम गाव सहुवा सु राव-जोधाजी रा राज मे गाव बेड वासीये आयो) ८. पिरथीराज ९. ससारचद १०. मालमसिंघ ११. रायसिंघ १२. पुरणसिंघ १३. मानसिंघ १४ सीयो १५. बिहारीदास १६. बखतसिंघ १७. हिंदूसिंघ १८. करणसिंघ १९. सादुलसिंघ

—)|||| पांती रेख— ३००)

पीढियें—: १५. हीरदेराम-सीयावत[1] १६. अजबसिंघ १७. आसकरण १८. छतरसिंघ १९. जुंझारसिंघ

–)||| पांती रेख— ३००)

पीढियें—: १०. भाण-ससारचंद रो[2] ११ माधोसिंघ १२ देईदास १३. ऊगरसिंघ १४. हरीसिंघ १५. मयाजल १६. बिसनसिंघ १७. प्रतापसिंघ

–)||| पांती रेख— २५०)

पीढियें— १५. जगतसिंघ-हरीसिंघोत[3] १६. मांधोसिंघ १७. वनेसिंघ १८. खुमाणसिंघ १९. जसवतसिंघ

–)||| पांती रेख— ३००)

पीढियें—: ११. बाघसिंघ-भाणोत[4] १२ नेतसी १३. चांदसिंघ १४. सिवदानसिंघ १५. सेरसिंघ १६. नवलसिंघ

–)||| पांती रेख— ३००)

पीढिये –: मेहो-संसारचद रो[5] ११. सावलदास १२. अमरसिंघ १३. रूपसिंघ

---

१. ठि. वेडवासियो के (१४) ठाकुर सीया का पुत्र ।
२ ठि. „ (९) „ ससारचद का पुत्र ।
३ ठि वेडवासियो (दो पाती) के (१४) ठाकुर हरीसिंह का पुत्र ।
४. ठि. „ „ (१०) „ भाण का पुत्र ।
५ ठि. „ „ (९) „ ससारचद का पुत्र ।

१४. विहारीदास १५ देईदान १६. जोरावरसिंघ १७. सालमसिंघ
१८. चुतरभुज

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव वेगड़ीयां—	५५०)	५५०)	जोधपुर	हेस –)।।।
,, वेडवासीयो	२००)	२००)	,,	
	———	———		
कुल रेख	७५०)	७५०)		

पीढियें—: १२. रामसिंघ-माधोसिंघोत[1] १३. गोदो १४. रतनसिंघ १५. सवाईसिंघ १६. देवीसिंघ १७. ग्रनाड़सिंघ १८ ग्रासकरण

गांव धुनाड़ियो—	५००)	५००)	जोधपुर

पीढियें—: ११. रिड़मलसिंघ-मालमसिंघोत[2] १२ ग्रासकरण १३. हरदास १४. भोपतसिंघ १५. जेसिंघ १६. भेरूसिंघ १७. थानसिंघ

खांप-जैतावतां री

१. राव रिडमल-अखेराज पचायण २. जेतो-पचायणोत तिण रा वस रा जेतावत कहीजै ।

पिरथीराजोत जैतावत

४ जेतो ५. पिरथीराज-जेतावत तिण रा वस रा पिरथीराजोत-जेतावत कहीजै ।

पिरथीराजोतां रा ठिकांणां री विगत

गांव बगड़ी—	१२०००)	१२०००)	सोजत
,, घनायो	१५००)	१५००)	,,
,, दुरगा रो वास	४००)	४००)	,,
,, हासयावास	३००)	३००)	,,
,, खोडीयो	३००)	३००)	,,
, पिरथीपुरो	३००)	३००)	,,
,, खिरणी खेड़ो	२००)	२००)	,,
	———	———	
कुल रेख	१५०००)	१५०००)	

---

१ ठि वेडवासियो के (१०) ठाकुर माधोसिंह का पुत्र ।
२. ठि. ,, ,, (१०) ,, मालमसिंह का पुत्र ।

पीढियें— ६. वाघसिंघ-पिरथीराजोत ७. कुंभकरण ८. देवकरण ९. प्रतापसिंघ १०. दुरजणसिंघ ११. पाहाड़सिंघ १२. जोरावरसिंघ १३. हिंदूसिंघ १४. केसरीसिंघ १५ सिवनाथसिंघ १६. नाहारसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नुन—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढिये—: ८ कासीराम-कुंभकरणोत[1] ९. मुकनदास १०. जालमसिंघ ११. ऊदेसिंघ १२. करणसिंघ १३. सुमेलसिंघ

गाँव सेरणो—	२०००)	२०००)	जालोर	

पीढियें—: ८. सूरजमल-कुंभकरणोत[2] ९. किलयांणसिंघ १०. तखतसिंघ ११. जैत-सिंघ १२. गजसिंघ

गाँव खोखरो—	९०००)	५०००)	सोजत	खेड़ा ५

पीढियें—: ७. भगवांनदास-वाघसिंघोत[3] ८. सुजाणसिंघ ९. बीको १०. रूपसिंघ ११. रुघनाथसिंघ १२. रतनसिंघ १३. जोधसिंघ १४. भवानीसिंघ १५. सालमसिंघ १६. ग्यानसिंघ १७. गजसिंघ १८. भेरूसिंघ

गाँव वालो—	१०००)	१०००)	सोजत	पैदास २०००)

पीढियें—: ८. ऊदेभांण-भगवानदासोत ९ प्रतापसिंघ १०. हठीसिंघ ११. सेरसिंघ १२. सरूपसिंघ १३. बनेसिंघ १४ बभूतसिंघ

खांप-आसकरणोत जैतावत

४. जेतो ५ देईदास ६. आसकरण-देईदासोत रा वस रा आसकरणोत जैतावत कहीजै।

आसकरणोत जैतावतां रा ठिकांणां री विगत

गाँव थांवलो—	४०००)	४०००)	जालोर	

पीढियें—: ७. केसोदास-आसकरणोत ८. मोहणदास ९. हेवतसिंघ १०. कुंभकरण ११ हिरदेराम १२. सूरतसिंघ १३. मोहकमसिंघ १४. लालसिंघ १५. ईंदर-सिंघ १६. वेरीसाल

गाँव आलासण—	१०००)	१०००)	जालोर	आधो

१. ठि. वगडी के (७) ठाकुर कुंभकरण का पुत्र।
२. ठि , (७) ,, ,, ,,।
३. ठि. ,, (६) , वाघसिंह का पुत्र।

पीढियें—: ११. रतनसिंघ-हिरदेरांमोत[1] १२. सबलसिंघ १३. नाहरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव-रायरो बड़ो—	६००)	६००)	जालोर	
,, रायरो खुरद	४००)	४००)	,,	
कुल रेख	१०००)	१०००)		

पीढियें—: ११. ऊमेदसिंघ-हिरदेरांमोत[2] १२. सगरामसिंघ १३. सुरतसिंघ १४. सिवसिंघ १५. जुहारसिंघ १६. दोलतसिंघ

गांव समदांणी—	४००)	४००)	भीनमाल	

पीढियें—: १०. सूरजमल-कुंभकरणोत[3] ११. दलसिंघ १२. नगराज १३. हिंदूसिंघ १४. कुसालसिंघ

गांव लांबोड़ी—	५००)	५००)	सोजत	
,, सावलदास रो गुढो	५००)	५००)	,,	
,, सोभा रो गुढो	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	२०००)	२०००)		

पीढियें—: ७. किलांणदास-आसकरणोत ८. किसनदास ९. करमसेण १०. जगरूपसिंघ ११. नाहरखान १२. सिवदान १३. गजसिंघ १४. ग्यानसिंघ १५. भोमसिंघ

गांव मुरढावो—	६२५)	६२५)	सोजत	

पीढियें—: ७. दलपत-आसकरणोत ८. जैतसिंघ ९. ईदरसिंघ १०. सगरामसिंघ ११. अमरसिंघ १२. नाहरसिंघ १३. देवीसिंघ

खांप-भोपतोत-जैतावत

पीढियें—: ४. जेतो ५. देईदास ६. भोपत-देईदासोत तिण रा बस रा भोपतोत-जैतावत कहीजै।

---

१. ठि. थावलो के (११) ठाकुर हिरदैराम का पुत्र।
२. ठि. ,, (११) ,, ,, ,,।
३. ठि. ,, के (१०) ठाकुर कुंभकरण का पुत्र।

भोपतोत जैतावतां रा ठिकांणां री विगत

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खांडो देवल—	१२५०)	१२५०)	भीनमाल	

पीढियें—: ७ माधोसिंघ-भोपतोत ८. स्यामसिंघ ९. गोरधनसिंघ १०. फतेसिंघ ११. सुरतांणसिंघ १२. विसनसिंघ १३. विजेसिंघ १४. चेनसिंघ १५. नवलसिंघ

गांव रांमसिंघ रो गुडो—	२०००)	२०००)	सोजत	हेस ३

पीढियें—. ७. रामसिंघ-भोपतोत ८. भाखरसिंघ ९. करणसिंघ १०. हिंदूसिंघ ११. जालमसिंघ १२. समरथसिंघ १३. सूरजमल १४. दुरगदास

खांप-कलावतां री

पीढियें—: १. राव-रिडमल २. अखेराज ३. पंचांण ४. कलो, तिण रा वस रा कलावत कहीजै ।

कलावतां रा ठिकांणां री विगत

गांव हूण—	१०००)	१०००)	सोजत

पीढियें—: १. मनोरदास २. नाहरखान ३ सिरदारसिंघ ४. ग्यानसिंघ ५. जालमसिंघ ६. कायमसिंघ ७. अजीतसिंघ

गांव जाढण—	१५००)	१५००)	सोजत

पीढियें—. ५. जसकरण-कलावत ६. पूरणमल ७. हरीसिंघ ८. सुजाणसिंघ ९. सायबखान १०. सिरदारसिंघ ११. पेमसिंघ १२. हरनाथसिंघ १३. छतरसिंघ १४. भोमसिंघ १५. सिवनाथसिंघ १६. रुघनाथसिंघ

खांप-गोयंददासोत जोधा

पीढियें—: १. मोटा राजा श्री ऊदेसिंघजी २. भगवांनदास ३. गोयंददास तिण रा वस रा गोयददासोत कहीजै ।

गोयंददासोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

गांव खेरवो—	१००००)	१००००)	जोधपुर
,, आयेची	११२५)	११२५)	,,
,, बुधवाड़ो	१८७५)	१८७५)	,,
,, वापुनी	१२५०)	१२५०)	,,

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, सुगालीयो	७५०)	७५०)	जोधपुर	
,, आकड़ावास	५००)	५००)	,,	
,, नीवलो	२५०)	२५०)	सोजत	
,, थनेरीयो	३०००)	३०००)	मेड़ता	
,, धनड़ी	१५००)	१५००)	,,	
,, वडायलि	७५००)	७५००)	,,	
कुल रेख	२७७५०)	२७७५०)		

गांव बलाड़ो—	१२५०)	१२५०)	जेतारण	आर
,, हीगवाणियो	१२५०)	१२५०)	,,	,,
कुल रेख	२५००)	२५००)		

पीढियें—: ५. सिवदांनसिंघ-रिणछोड़दासोत ६. जोधसिंघ ७. सायवसिंघ ८. दलेलसिंघ ९. जालमसिंघ १०. नाहारसिंघ ११. सादुलसिंघ १२. सालमसिंघ १३. विड़दसिंघ

गांव खारड़ी— ३१२५) ३१२५) सोजत

पीढियें—: ७. मोहकमसिंघ-जोधसिंघोत[1] ८. भवानीसिंघ ९. मालमसिंघ १०. नवलसिंघ ११. दुरजणसिंघ

गांव वूटीयास— २५००) २५००) जेतारण

पीढियें—: ६. फतेसिंघ-सिवदानसिंघोत[2] ७ दोलतसिंघ ८. स्यामसिंघ ९. वनेसिंघ १०. दांनसिंघ ११. मालमसिंघ १२. माधोसिंघ

गांव वावरो—	रेख ५०००)	सु माफ है	जैतारण
,, कुसलपुरो			,,
,, सेजपुरो			,,
,, रातडीयो			,,
,, देवगढ			,,

१. ठि. वलाडो के (६) ठाकुर जोधसिंह का पुत्र ।
२. ठि. ,, (५) ,, शिवदानसिंह का पुत्र ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, पाच फेर वसे है				
कुल रेख	५०००)	माफ है		

पीढियें—: ४ हिरदेनारायण-गोयददासोत ५ अखेराज ६. रुघनाथसिंघ ७. प्रतापसिंघ ८. दोलतसिंघ ९. रांमसिंघ १०. करणसिंघ ११. हिमतसिंघ १२. माधोसिंघ

गांव रोईचो—	९०००)	९०००)	मेडता
,, डऊकीयो	३०००)	३०००)	,,
कुल रेख	१२०००)	१२०००)	

पीढियें—: ६. हरनाथसिंघ-अखैसिंघोत[1] ७ सगतसिंघ ८. ऊमेदसिंघ ९. दुलेहसिंघ १०. वखतावरसिंघ ११. केसरीसिंघ

गांव अेलचपुरो—	१०००)	१०००)	डीडवाणो

पीढियें—: ६. देवसिंघ-अखैसिंघोत[2] ७. सिवसिंघ ८. अमानसिंघ ९. तखतसिंघ १०. मूलसिंघ

गांव आंतरोली-वडी—	४०००)	४०००)	मेड़ता

पीढिये—: ४. जगरूपसिंघ-गोयंददासोत ५. रायसिंघ ६. जैंसिंघ ७ सुरताणसिंघ ८. बाहादरसिंघ ९. सेरसिंघ १०. पिरथीसिंघ ११. नदुसिंघ १२. सिवनाथसिंघ

खांप-गोपालदासोत जोधा

पीढियें—: १. मोटा राजा ऊदेसिंघजी २ भगवानदास ३. गोपालदास † जोधा, तिण रा वस रा गोपालदासोत जोधा कहीजै ।

गोपालदासोत जोधा रा ठिकांणां री विगत

गांव तोलासर —	१५००)	१५००)	दोलतपुरा

† गोपालदास काम आयो सवत् १६६४ मे महाराज श्री गजसिंघजी से झगड़ो कवरपदे गाँव वीलीया मे हुवो ।

१. ठि. वावरा के (५` ठाकुर अखैराज का पुत्र ।

२. ठि ,, (५) ,, ,, ,, ।

पीढियें—: ४. किसोरदास-गोपालदासोत ५. नाहरसिंघ ६. माहासिंघ ७. सवाईसिंघ ८. जालमसिंघ ९. रामसिंघ १०. रुघनाथसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव मालावासणी—	५००)	५००)	डीडवाणो	

पीढियें—: ८. सालमसिंघ-सवाईसिंघोत[1] ९. सुरतांणसिंघ § १०. विसालसिंघ

गांव खातोलाई—	१०००)	१०००)	मेड़ता	

पीढियें—: ६. केसरीसिंघ-नाहरसिंघोत[2] ७. रूपसिंघ ८. दुरजणसिंघ ९. सालमसिंघ १०. भीवसिंघ ११. प्रभूदांन

खांप-जगनाथोत जोधा

पीढियें—: १. महाराजा श्री ऊदेसिंघजी २ नरहरदास ३. जगनाथ तिण रा वंस रा जगनाथोत जोधा कहीजै ।

जगनाथोत जोधा रा ठिकांणां री विगत

गांव मोडरो—	२५००)	२५००)	मेड़ता	

पीढियें—: ४. जसकरण-जगनाथोत ५ विजेसिंघ ६. सूरसिंघ ७. अमरसिंघ ८. वनेसिंघ ९. देवीसिंघ १०. वखतावरसिंघ ११. मुकनसिंघ

खांप-रतनोत-जोधा

पीढियें—: १ महाराज श्री मोटा राजा उदैसिंघजी २. जेतसिंघ ३ हरीसिंघ * ४ रतन सिंघ, तिण रा वस रा रतनोत जोधा कहीजै ।

रतनोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

गांव दुगोलि खास—	२०००)	२०००)	मेड़ता	
,, गुलर	३०००)	३०००)	,,	
,, गुमेर	२०००)	२०००)	,,	
,, तुवरो	३०००)	३०००)	,,	

§ काम आयो डीडवाणा सवत् १८६५ मे ।

* यह गांव जेठाणे मे खरवा के प्रतापसिंघ से लड़कर स. १६५७ में काम आया ।

१ ठि तोलासर के (७) ठाकुर सवाईसिंह का पुत्र ।

२ ठि ,, (५) ,, नाहरसिंह का पुत्र ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, माजरो मीठो	१०००)	१०००)	मेड़ता	
,, अडसी गाव	३०००)	३०००)	,,	
कुल रेख	१४०००)	१४०००)		

पीढियें—: ५. किसनसिंघ-रतनसिंघोत ६. सावतसिंघ ७. सिरदारसिंग ८. राघोदास ९ ग्यानसिंघ १०. सिवनाथसिंघ ११. बखतावरसिंघ १२. वीजेसिंघ

गांव कवेडीयो— ३०००) ३०००) नागोर

पीढियें—: ८. विसनसिंघ-सिरदारसिंघोत[1] ९. बदनसिंघ १०. हणवतसिंघ ११. जसवतसिंघ

गांव दुदोलि— ५०००) ५०००) नागोर

पीढियें—: ६. ईसरीसिंघ-किसनसिंघोत[2] ७. जूजारसिंघ ८. बेरीसाल ९. हुकमसिंघ १०. अमरसिंघ ११. जालमसिंघ

गांव भाडेली – ५०००) ५०००) नागोर

पीढियें—: ७. घीरतसिंघ-केसरीसिंघोत ८ चतरसिंघ ९. केसरीसिंघ १०. महेसदास ११. रणजीतसिंघ १२. सिवदानसिंघ

गांव नीबेड़ो— २०००) २०००) नागोर

पीढियें—: ६ जगतसिंघ-किसनसिंघोत ७. जसकरण ८. मानसिंघ ९. ऊमेदसिंघ १०. अमरसिंघ ११. हरनाथसिंघ.

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव लोटोती—	५०००)	५०००)	जेतारण	
,, वाकलीयो	२०००)	२०००)	नागोर	
,, ढाकावास	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	९०००)	९०००)		

पीढियें—: ५. रांमसिंघ-रतनसिंघोत ६. जोधसिंघ ७ सिवसिंघ ८. जालमसिंघ ९. सेर-सिंघ १०. ऊदेसिंघ ११. ईदरसिंघ १२. प्रतापसिंघ

गांव रावडीयाक— ४०००) ४०००) जेतारण आधी

१. ठि दुगोली के (७) ठाकुर सिरदारसिंह का पुत्र।
२. ठि ,, (५) ,, किसनसिंह का पुत्र।

पीढियें—: ७. अभैसिंघ-जोधसिंघोत[1] ८. राजसिंघ ९. मानसिंघ १० अखतावरसिंघ ११. अजीतसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बांजाकुडी—	२०००)	२०००)	जेतारण	आधी

पीढिये—: ७. सिवसिंघ-जोधसिंघोत[2] ८. बखसीराम-सिवसिंघोत ९. चुतरभुज १०. कुसालसिंघ ११. रणजीतसिंघ १२. मुकनसिंघ

गांव नोखो—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: ५. अणदसिंघ-रतनसिंघोत ६. सूरजमल ७. भीवसिंघ ८. नाहारसिंघ ९. हुकमसिंघ १०. मोतीसिंघ ११. दोलतसिंघ

गांव पठांणां रो वास—	५००)	५००)	डीडवाणो	आसामी २ रे
,, वाभुवासी	१०००)	१०००)	नागोर	,,
कुल रेख	१५००)	१५००)		

। पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ६. पदमसिंघ-अणदसिंघोत[3] ७. मोहकमसिंघ ८. लालसिंघ ९. सिवसिंघ १०. परभूदान ११. रणजीतसिंघ

। पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ७. राजसिंघ-पदमसिंघोत[4] ८. छतरसिंघ ९. अगरसिंघ १०. देवीसिंघ

गांव आमलवासी—	५००)	५००)	नागोर	

पीढिये—: ६. सूरतसिंघ-अणदसिंघोत[5] ७. हिमतसिंघ ८. समेलसिंघ ९. जोरावरसिंघ

गांव रोजो—	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: ५. करणसिंघ—रतनसिंघोत ६. वखतसिंघ ७. जगरामसिंघ ८. अनाड़सिंघ ९. रुघनाथसिंघ १०. रणजीतसिंघ ११. हमीरसिंघ

---

१. ठि. लोटोती के (६) ठाकुर जोधसिंह का पुत्र ।
२ ठि. ,, (६) ,, ,, ,, ।
३. ठि नोखो के (५) ठाकुर अणंदसिंह का पुत्र ।
४ ठि पठाणा री वास के (६) ठाकुर पदमसिंह का पुत्र ।
५ ठि नोखो के (५) ठाकुर अणदसिंह का पत्र ।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव गुढो रोयलो—	२०००)	२०००)	नागोर	आसामी २ रे

पांतो आध मे— ।।)

पीढियें—: ६. मालमसिंघ-करणसिंघोत[1] ७. अजबसिंघ ८. जैतसिंघ ९. गुलाबसिंघ १०. राजसिंघ ११. चिमनसिंघ

पांती आध में— ।।)

पीढियें—: ९. जीवणसिंघ-जैतसिंघोत[2] १०. भूरसिंघ ११. हमीरसिंघ

गांव चावली	१०००)	१०००)	नागोर

पीढियें—: ६. कुसलसिंघ-करणसिंघोत[3] ७. फतेसिंघ ८. मालमसिंघ ९. जीवणसिंघ १०. अमानसिंघ ११. वेरीसाल १२. सरूपसिंघ

गांव खारी—	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: ६. वखतसिंघ-करणसिंघोत[4] ७. सुजाणसिंघ ८. कनीराम ९. भेरूसिंघ १०. स्यामसिंघ ११. ऊदेसिंघ १२. डूगरसिंघ

गांव खांभीवाद—	५०००)	५०००)	नागोर

पीढियें—: ५ सवाईसिंघ-रतनसिंघोत ६. ऊदेसिंघ ७. अखेसिंघ ८. बनेसिंघ ९. रूपसिंघ १०. हणवतसिंघ ११. विड़दसिंघ

गांव खेवर—	३०००)	३०००)	नागोर

पीढियें—: ८. रिडमल-अखैसिंघोत[5] ९. चिमनसिंघ १०. दोलतसिंघ ११. हरनाथसिंघ

गांव डाभड़ी—	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: ५. बाघसिंघ-रतनसिंघोत ६. दुरजणसिंघ ७. जसकरण ८. सिभूसिंघ ९. जालमसिंघ १०. पाहाड़सिंघ ११. रणजीतसिंघ

खांप-किलांणदासोत-जोधा

---

१ ठि रोजो के (५) ठाकुर करणसिंह का पुत्र ।
२ ठि ,, (दूजी पाती) के (८) ठाकुर जैतसिंह का पुत्र ।
३ ठि. ,, (५) ठाकुर करणसिंह का पुत्र ।
४. ठि. ,, (५) ,, ,, ,, ।
५, ठि. खाभीवाद के (७) ठाकुर अखैसिंह का पुत्र ।

पीढियें—: १ माहाराज श्री ऊदेसिंघजी २. जैतसिंघ ३. हरीसिंघ ४. किलांण-दास, तिण रा वस रा किलाणदासोत जोधा कहीजै ।

किलांणदासोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव जालणीयासर—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें:— ५. रूपसिंघ-किलांणदासोत ६. भीवसिंघ ७. मांनसिंघ ८. वदरीदास ९. पेमसिंघ १०. विड़दसिंघ

गांव आकोडो—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ५. हरनाथसिंघ-किलांणदासोत ६. जगरांमसिंघ ७. पाहाड़सिंघ ८. चांदसिंघ ९. वलदेवसिंघ

गांव जांणेवो—	२०००)	२०००)	नागोर	आसांमी ३ रे

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ५. कुसालसिंघ-किलाणदासोत ६. अनोपसिंघ ७. सूरजमल ८. खेतसिंघ ९. जसकरण १०. भेरूसिंघ ११. अमांनसिंघ

पांती पाव में— ।)

पीढियें— १०. भोपालसिंघ-जसकरणोत[1] ११. जुहारसिंघ

पांती पाव में— ।)

पीढियें—: १०. सिवसिंघ-जसकरणोत[2] ११. चैनसिंघ

खांप-अमरसिंघोत जोधा

पीढियें—: १. माहाराज श्री गजसिंघजी २. अमरसिंघ-गजसिंघोत (नागोर राज कियो) अमरसिंघ रा वंस रा अमरसिंघोत जोधा कहीजै ।

अमरसिंघोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

गांव सेवो—	४०००)	०	दोलतपुरा	खेड़ा २ आसांमी ३

१. ठि. जाणेवो (पहली पाती) के (९) ठाकुर जसकरण का पुत्र ।
२. ठि. „ „ (९) „ „ „ ।

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ३. ईसरीसिंघ-अमरसिंघोत ४ अनोपसिंघ ५. अणदसिंघ ६. करणसिंघ ७. बखतावरसिंघ ८. नाथूसिंघ

पांती पाव में— ।)

पीढिये – ७. बनेसिंघ-करणसिंघोत ८. सिवसिंघ ९. फकीरसिंघ

पांती पाव में— ।)

पीढियें—: ८. सेरसिंघ-बनैसिंघोत

गाँव सेवो— परगनां दोलतपुरा रो, रेख भरे नही, राजवी तिण सूं ।

खाँप-किसोरसिंघोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

पीढियें—: १. महाराज श्री अजीतसिंघजी २. किसोरसिंघजी † तिण री खवास रा किसोरसिंघोत कहीजै ।

गाव	रेख कदीम	हुमार भरे	परगना	विशेष
गाँव जलवाणो—	५०००)	५०००)	मेड़ता	

पीढियें—: ३. जैतसिंघ-किसोरसिंघोत ४. भैरूंसिंघ § ५. बखतावरसिंघ ६. बलवतसिंघ

खांप-जोधां रा ठिकांणां री विगत

राव जोधो सवत् १४७२ रा बैसाख सुद ४ रो जनम संवत् १५१५ जोधाजी जोधपुर सैर वसायौ ने गढ करायो । सवत् १५४५ रा माहा सुद ११ रा अंतकाळ हुवो तिण रा बंस रा जोधा कहीजै ।

खाँप-खंगारोत जोधां रा ठिकांणां रो विगत

१. राव जोधो २. जोगो ३. खंगार, तिण रा बंस रा खगारोत कहीजै ।

गाँव खारीयो—	१२५०)	६२५)	जोधपुर
,, पुनास	९००)	९००)	
कुल रेख	२१५०)	१५२५)	

---

† किसोरसिंहजी काम आया गाव नरासर मे खेजड़ला वाळा रे झगड़ो हुवो जठे रास वाळा केसरीसिंहजी रा हाथ सूं सवत् १८०९ रा काती वद १४ नै ।

§ कांम आयो अजमेर दिखणिया सू झगड़ो हुवो जठै ।

पीढियें—: ४. गागो-खगारोत ५. मांनसिंघ ६. आसकरण ७. दवारकादास ८. राघोदास ९ जसकरण १०. फरसराम ११. जीवणसिंघ* १२. फतेसिंघ १३. रतनसिंघ १४. गोपीनाथ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव जालसू-बड़ी—	४०००)	४०००)	मेडना	

पांती आध में—

पीढियें—: ९. विहारीदास-गोयंददासोत १०. पदमसिंघ ११. जैतसिंघ १२. सूरजमल १३. पेमसिंघ १४. जवांनसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १०. गुमानसिंघ-विहारीदासोत[1] ११. अभैसिंघ १२. पहाड़सिंघ १३. कुसलसिंघ १४. सिवसिंघ १५. भीवसिंघ

गांव डाहोली (खारी)	२०००)	२०००)	नागोर

पीढियें—: ८. चद्रभाण-दवारकादासोत[2] ९. हरनाथसिंघ १०. अनोपसिंघ ११. केसरीसिंघ १२. नाहरसिंघ १३. हुकमसिंघ १४. सावतसिंघ[3] १५ जेतसिंघ

गाँव छापली—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर

पीढियें—: ६. पूरणमल-मांनसिंघोत[4] ७. कीरतसिंघ ८. कुंभकरण ९. नाथूसिंघ १०. मालमसिंघ ११. भवानीसिंघ १२. धीरतसिंघ १३. रूपसिंघ १४. तखतसिंघ

खांप-बाघावत जोधां रा ठिकाणां री विगत

१. राव वाघो सवत् १५१४ रो जनम ने सवत् १५७१ अंतकाळ हुवो कवरपदे, तिण रा वंस रा वाघावत जोधा कहीजे।

गाँव पहाड़पुरो—	२०००)	२०००)	जालोर
,, नीवावस	१५००)	१०००)	,,
,, भागल	१०००)	१०००)	,,

* यह सवत् १८५३ मे खीवसर मे काम आया।

१. गाव जालसू वड़ी की (पहली पाती) के (९) ठाकुर विहारीदास का पुत्र।

२. गाव खारियो के (७) ठाकुर द्वारकादास का पुत्र।

३. युद्ध मे कांम आयो संवत् १८४७ में।

४ गाव खारियो के (५) ठाकुर मानसिंह का पुत्र।

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, खानपुर	५००)	५००)	जालोर	
,, नीबली सु डारी	२५००)	२५००)	सोजत	
कुल रेख	७५००)	७०००)		
गाँव आंटण—	७७५)	७७५)	जोधपुर	
,, मोकलावास	४००)	४००)	सोजत	
कुल रेख	११७५)	११७५)		

पीढिये —: ७ जैसिंघ-माधोसिंघोत ८. ऊदेभाण ९. दोलतसिंघ § १०. सेरसिंघ ११. सिवसिंघ १२. स्यामसिंघ १३. अमांनसिंघ १४. जूंजारसिंघ

गाँव सिकारपुरो—	२०००)	२०००)	जोधपुर
,, कुकडनाडो	१५००)	१५००)	
कुल रेख	३५००)	३५००)	

पीढियें—: ९. सुभकरण-ऊदेभांणोत १०. भगवतसिंघ ११. जीवराज १२. पिरथीसिंघ १३ छतरसिंघ १४. बभूतसिंघ

खाँप-गाँगावत जोधाँ रा ठिकाँणाँ री विगत

१. राव सूजा २. वागा ३. गागा, राव गागो सवत् १५४० रो जनम नै सवत् १५८८ अतकाळ हुवो, तिण रा वस रा गागावत-जोधा कहीजै ।

गांव कालिजाड—	१२५०)	१२००)	जोधपुर

पीढियें—: २. किसनसिंघ-गागावत ३. राधोदास ४. अचलदास ५. किरतसिंघ ६ सूजाणसिंघ ७. विहारीदास ८. बखतसिंघ ९. हरीसिंघ * १०. सांवलदास ११. विजैसिंघ

गांव हंजावास—	१८७।।)	१८७।।)	जोधपुर

---

§ काम आयो पाटण री राड मे संवत् १८४६ ।

* तुगा से झगडे मे घाव लागा सु सांभर आया फोत हुवो, संवत् १८३१ में ।

पीढियें—: ९. अजबसिंघ-बखतसिंघोत[1] १०. रामसिंघ ११ अमरसिंघ १२. अखैसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव साली—	६२५)	६२५)	जोधपुर	

पीढियें—: २. मानसिंघ-गागावत ३. नरहरदास ४. राघोदास ५. मोहणदास ६. कुसलसिंघ ७ केसोदास ८. जगरूपसिंघ ९. सूरतसिंघ १० नगराज ११. सेरसिंघ १२. जसवतसिंघ १३. रतनसिंघ

खांप-रांमोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

राव, सूजा, वागा, गागा

१. राव मालदेव सवत् १५६८ री जनम नै सवत् १६१९ में अकाळ हुवो २. रांमसिंघ मालदेवोत तिण रा वस रा रांमोत कहीजै।

गांव पावो—	५०००)	५०००)	गोढवाड	
,, हीगोलो	२०००)	५००)	,,	
,, ईदरापुरीयो,	२०००)	५००)	,,	
, गोवडी	०	०	,,	रेख नहीं
,, चेनपुरो	०	०	,,	रेख नही
कुल रेख	९०००)	६०००)		

पीढियें—: ३. करणसिंघ-रामोत ४ भीवसिंघ ५ कानसिंघ ६. रिणछोडदास ७. रूपसिंघ ८. छतरसिंघ ९. जसवतसिंघ १०. बुधसिंघ ११. वीरमदेव १२. जालमसिंघ १३. रुघनाथसिंघ १४. सिवनाथसिंघ १५. जूहारसिंघ

खांप-चंद्रसेणोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

सूजा-वागा-गागा १ राव मालदेव २. राव चद्रसेण सवत् १५९८ रो जनम ने सवत् १६१९ मे राव मालदेवजी री गादी बैठा जोधपुर मे, ने चद्रसेण पातसाही चाकर नही हुवो। तिण रा वस रा चद्रसेणोत जोधा कहीजै।

गांव पालड़ी—	३०००)	२५००)	नागोर
,, बुटाणो	३०००)	२५००)	,,
कुल रेख	६०००)	५०००)	

---

१ गांव फालिजट के (८' ठाकुर बखतसिंह का पुत्र।

पीढियें—: ३. ऊगरसेण-चद्रसेणोत ४. करमसेण ५. स्यामसिंघ ६. अखेराज ७. नरसिंगदस ८. रूपसिंघ § ९. सुरताणसिंघ १०. फतैसिंघ ११. रतनसिंघ १२. सूरजभाण १३. विजैसिंघ

गाँव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव नीबड़ी-कोठारीयां—	५०००)	५०००)	मेड़ता	जब्त है

पीढिये—: ८. दोलतसिंघ-नरसिंघदासोत[1] ९. सेरसिंघ १०. गुलाबसिंघ ११. मुकनसिंघ १२. मरजादसिंघ १३. नभूतसिंघ

गाँव छापड़ां—	६०००)	६०००)	नागोर

पीढियें—: ५. मोहणदास-करमसेणोत[2] ६. रामचदर ७. सुजाणसिंघ ८. भोपतसिंघ ९. जसकरण १०. रामसिंघ ११. भैरूंसिंघ १२. बाहादरसिंघ १३. हणवतसिंघ

गाँव डीकावो—	३०००)	३०००)	दौलतपुरा

पीढिये—: ८. जगमाल-सुजाणसिंघोत[3] ९. रिडमल १०. लखधीर ११. रामदास १२. सिवदास १३. रुघनाथसिंघ

गाँव पावटो—	२०००)	२०००)	दौलतपुरी

पीढियें—: ७. सबळसिंघ-रामचदरोत[4] ८. सिभूसिंघ ९. कुसलसिंघ १०. किसनसिंघ ११. मगलसिंघ १२ गाढसिंघ

खाँप-रतनसिंघोत जोधा रा ठिकाँणाँ री विगत

सूजा-वाघा-गागा-रतनसिंघ

गाँव भादराजण—	२५००)	२५००)	जोधपुर
,, राहणो	३७५०)	३७५०)	,,
,, वायद	१८७५)	१८७५)	,,
,, पाती	६२५)	६२५)	,,

---

§ कांम आयो सवत् १९९७ वखतसिंह अर सवाई जयसिंह रै झगडो हुवो गगवाणे जठै।

1. गाव पालडी के (७) ठाकुर नरसिंहदास का पुत्र।
2. ,, ,, (४) ,, करमसेण का पुत्र।
3. गाव छापडा के (७) ठाकुर सुजाणसिंह का पुत्र।
4. गाव ,, (६) ,, रामचन्द्र का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, सिंघाणो	६२५)	६२५)	जोधपुर	
,, वाकली	५००)	५००)	,,	
,, घुमरियो	२००)	२००)	,,	
,, सेलडी	२५०)	२५०)	,,	
,, जेठाणी	२५०)	खेड़ो सूनो	,,	
,, भाडला	२५०)	२५०)	,,	
,, राखणो	५००)	५००)	,,	
,, सुगालीयो	३७५)	३७५)	,,	
गांव भाडेलाव—	४०००)	४०००)	,,	
,, खाडी	२५००)	२५००)	,,	
,, महेलडी	१००)	१००)	,,	
,, ऊदरा	५००)	५००)	,,	
,, जैतपुरो	२५००)	२५००)	,,	
,, गोयंदलाव	१५००)	१५००)	,,	
,, मुड़ीयावास	१०००)	१०००)	,,	
,, नीवलो	५००)	५००)	,,	
,, गिरवरियो	२५०)	२५०)	,,	
,, चुडो	५०)	५०)	,,	
,, गुवड़ो	५०)	५०)	,,	
,, चेडां	१०००)	१०००)	,,	
,, घाणो	१७००)	१७००)	,,	
,, सीघला	१७००)	१७००)	,,	
,, मोटी	५०)	सूनो	,,	
,, मायलोवास	३५०)	३५०)	,,	
,, हेमलीयास	४००)	४००)	,,	
,, पादरला	५००)	५००)	,,	
,, सीसलोर	४००)	४००)	,,	
,, कावो	२०००)	२०००)	जालोर	
कुल रेख	३२७५०)	३१९५०)		

पीढियें—: ३. सादुलसिंघ-रतनसिंघोत ४. मुकनदास ५. ऊदेभांण ६ बिहारीदास ७. वाघसिंघ ८. ऊदेराज ९. ऊमेदसिंघ १०. जालमसिंघ ११. वखतावरसिंघ १२. ईंदरभांण १३. सगरामसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रांमो—	२०००)	२०००)	जोधपुर	
,, रेवड़ां वडी	२५०)	२५०)	,,	
कुल रेख	२२५०)	२२५०)		

पीढियें—: १०. जगतसिंघ-ऊमेदसिंघोत[1] ११. अजीतसिंघ १२. जोरावरसिंघ १३. सिवनाथसिंघ

गांव सीरांणो—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. केसरीसिंघ-ऊदेराजोत[2] १०. भवांनीसिंघ ११. अचलसिंघ १२. चिमनसिंघ

गांव जलेली वडी—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर	

पीढियें—: ८ अभैराज-वाघसिंघोत[3] ९. किलांणसिंघ १०. देवसिंघ ११. बभूतसिंघ १२. लालसिंघ

गांव भंवरी—	२५००)	२५००)	जोधपुर	
,, पचपदरीयो	१५००)	१५००)	,,	
,, जादरी	२०००)	१०००)	गोढवाड	
,, प्रतापसिंघ रो गुडो	२००)	२००)	जोधपुर	
कुल रेख	६२००)	५२००)		

पीढियें—: ६. मोवणदास-ऊदेभांणोत[4] ७. प्रतापसिंघ ८. भींवसिंघ ९. कुसालसिंघ १०. सेरसिंघ ११. देवीसिंघ १२. माधोसिंघ १३. बेरीसाल

गांव बीजली—	५००)	५००)	जोधपुर	
,, गोदावसीयो	३००)	३००)	,,	
,, कुडली	३२५)	३२५)	,,	
कुल रेख	११२५)	११२५)		

---

१. ठि. भाद्रेलाव के (९) ठाकुर उमेदसिंह का पुत्र।
२. ,, ,, (८) ,, उदैराज का पुत्र।
३. ,, ,, (७) ,, वाघसिंह का पुत्र।
४. ,, ,, (५) ,, उदैभांण का पुत्र।

पीढियें—: ६. देईदास-ऊदेभाणोत[1] ७. सिवदानसिंघ ८ नराणदास ९. वीरमदेव १०. जोरावरसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गाँव डीरी—	२५०)	२५०)	जोधपुर	
,, वीजा	२५००)	२५००)	,,	
कुल रेख	२७५०)	२७५०)		

पीढियें—: ५. जोगीदास मुकनदासोत[2] ६. लालसिंघ ७. ऊदेसिंघ ८ जैतसिंघ ९. रुघनाथसिंघ १०. सादूळसिंघ ११. पिरथीसिंघ १२. सिवनाथसिंघ

गांव धवलेरीयो—	१२५०)	१२५०)	जोधपुर

पीढियें—: ७. जीवराज-लालसिंघोत[3] ८. स्यामसिंघ ९. चैनसिंघ १०. भोमसिंघ ११. अमरसिंघ

गांव देवासण—	१०००)	१०००)	जोधपुर
,, जोलणो	५००)	५००)	,,
कुल रेख	१५००)	१५००)	

पीढियें—: ५ चंद्रभांण-मुकनदासोत[4] ६. आसकरण ७, वीरभांण ८. जगभांण ९. रतनसिंघ १०. भवानीसिंघ

गांव सदावास—	१२५)	०	जोधपुर

पीढियें—: ९. कनीराम-जगभाणोत[5] १०. जैतसिंघ ११. वनेसिंघ

गांव बालो—	३५००)	३५००)	जोधपुर
,, नीलकठ	२०००)	२०००)	,,
,, कुलथाणो	१२५०)	१२५०)	,,
कुल रेख	६७५०)	६७५०)	

---

१. ठि भाडेलाव के (५) ठाकुर उदैभाण का पुत्र।
२ ठि. ,, (४) ,, मुकनदास का पुत्र।
३. गाव डीरी के (६) ,, लालसिंह का पुत्र।
४. ,, भाडेलाव के (४) ठाकुर मुकनदास का पुत्र।
५. गाव जोलणो के (८) ठाकुर जगभाण का पुत्र।

पीढियें —: ४ लिछमणसिंघ-सादूळसिंघोत[1] ५ हिमतसिंघ ६ सगतसिंघ ७ अभैसिंघ ८. मानसिंघ ६. अखेसिंघ १०. नाहारसिंघ ११. बभूतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भोडंर—	६००)	६००)	जोधपुर	
,, ऊमकली	५००)	५००)	,,	
कुल रेख	१४००)	१४००)		

पीढियें—: ७ लालसिंघ-सगतसिंघोत[2] ८. रुघनाथसिंघ ६. रतनसिंघ १०. तेजसिंघ ११. हिमतसिंघ

गांव तोडवी—	५००)	५००)	जोधपुर

पीढियें—: ५ हरीसिंघ-लिछमणसिंघोत[3] ६ अणदसिंघ ७. जसवंतसिंघ ८. किलांण-सिंघ ६ कुसालसिंघ १०. बभूतसिंघ

गांव मोरढंढ—	५००)	५००)	जोधपुर

पीढियें—: ८. गुमांनसिंघ-जसवंतसिंघोत[4] ६. तेजसिंघ १०. अजीतसिंघ

गांव बांणण—	८००)	८००)	जोधपुर

पीढियें—: ४. रांमसिंघ-सादूळसिंघोत[5] ५. भगवानदास ६. हिमतसिंघ ७. सगतसिंघ ८. अभैसिंघ ६ सुजांणसिंघ १०. जैतसिंघ ११. सगतीदान

गांव कोरांणो—	५००)	५००)	जोधपुर

पीढियें—: ६. सेरसिंघ-भगवानदासोत[6] ७. अखेसिंघ § ८. नवलसिंघ ६. तेजसिंघ

खांप-महेसदासोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

१. राव मालदेव २. महेसदास-तिण रा बंस रा महेसदासोत जोधा कहीजै।

§ काम आयो घोरीमने सराया सू झगड़ो हुवो उण मे संवत् १८७७ मे।

१. गाव भाडेलाव के (३) ठाकुर सादूलसिंह का पुत्र।

२ गाव वालो के (६) ,, सगतसिंह का पुत्र।

३. ,, ,, (४) ,, लिछमणसिंह का पुत्र।

४. गाप तोडवी के (७) ठाकुर जसवतसिंह का पुत्र।

५. ,, भाडेलाव के (३) ,, सादूलसिंह का पुत्र।

६. ,, वाणण के (४) ,, भगवानदास का पुत्र।

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव पाटोदी—	१०००)	१०००)	सीवाणो	
„ आरव रो खेड़ो	१०००)	५००)	„	
„ घड़सी रो खेड़ो	१०००)	५००)	सेरगढ	
कुल रेख	३०००)	२०००)		

पीढियें—: ३. रांमदास-महेसदासोत ४. गोयददास ५. सवळसिंग ६. दुरजणसिंघ ७. सूरजमल ८. जालमसिंघ ९. जवांनसिंघ १०. भारथसिंघ ११. रामसिंघ १२. कुसालसिंघ

गांव केसवांणो—	५०००)	५०००)	जालोर	
„ जोरवाड़ो	२०००)	२०००)	„	
कुल रेख	७०००)	७०००)		

पीढियें—: ७. जोरावरसिंघ-दुरजणसिंघोत[1] ८. बाहादरसिंघ ९. बाघसिंघ १०. बभूतसिंघ ११. वेरीसाल

गांव सिरथलो—	१०००)	१०००)	भीनमाल	

पीढियें—: ८. केसरीसिंघ-जोरावरसिंघोत[2] ९. दौलतसिंघ १०. सगतीदांन

गांव फलसूंड—	१०००)	१०००)	जोधपुर	आसांमी ४ रे

पांती चौथी में—(१)

पीढियें—: ७. ऊदेसिंघ-दुरजणसिंघोत[3] ८. भीवसिंघ ९. प्रतापसिंघ १०. नाहरसिंघ ११. मोड़सिंघ १२. बभूतसिंघ

पांती चौथी में—(२)

पीढियें—: ६. दौलतसिंघ-सवळसिंघोत[4] ७. सुजाणसिंघ ८. सेरसिंघ ९. तेजमाल १०. मेघराज ११. ऊमेदसिंघ

---

१. गांव पाटोदी के (६) ठाकुर दुर्जनसिंह का पुत्र।
२. गांव केसवाणो के (७) „ जोरावरसिंह का पुत्र।
३. गांव पाटोदी के (६) „ दुर्जनसिंह का पुत्र।
४. गाव पाटोदी के (५) ठाकुर सवलसिंह का पुत्र।

पांती चौथी में— ३)

पीढियें—: ७. सिवदांनसिंघ-दौलतसिंघोत[1] ८. चेनसिंघ ९. रिणछोड़दास १०. जूजारसिंघ ११. केसोदास १२. रणजीतसिंघ

पांती चौथी में—(४)

पीढियें—: ७ हिंदूसिंघ-दौलतसिंघोत[2] ८. ऊमेदसिंघ ९. खेतसिंघ १०. भोजराज

टिप्पणी—गाव फळसूड गढ जोधपुर रौ, इण गांव री सीव में खेडा ५६ मडै, तिण में खेडो १ बसै, ईणा रै बाकी ५५ सूना। तिणा रौ नाव नही।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नांगांणो—	५००)	५००)	जोधपुर	

पीढियें—: ९. पिरथीराज-भीवसिंघोत[3] १०. बभूतसिंघ ११. जसवतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नेहवाई—	२०००)	२०००)	सिवाणो	

पीढियें—: ८ धीरतसिंघ-ऊदेसिंघोत[4] ९. छतरसिंघ १०. भोमसिंघ ११. सगतसिंघ १२. गोपाळसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव नेवरी—	१७००)	१७००)	जोधपुर	
,, बाकीवाड़ो	२५०)	२५०)	,,	
कुल रेख	१९५०)	१९५०)		

पीढियें—: ९. मानसिंघ-धीरतसिंघोत[5] १०. किलाणसिंघ ।—। पाती सिवसिंघ-मानसिंघोत ना औलाद ११. देवीसिंघ ॥=॥। किलाणसिंघ री पाती सो हमे सारौ गाव देवीसिंघ रै नावे।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव साई—	२०००)	२०००)	जोधपुर	आसामी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—: ७. अनोपसिंघ-दुरजणसिंघोत[6] ८. सवाईसिंघ ९. विजैसिंघ १०. देवीसिंघ ११. बखतसिंघ १२. ऊदेसिंघ

---

१ गांव फलसूंड की (दूसरी पांती) के (६) ठाकुर दौलतसिंह का पुत्र।
२. गाव फलसूंड की (दूसरी दाती) के (६) ठाकुर दौलतसिंह का पुत्र।
३. ,, ,, (पहली पाती) (८) ,, भीवसिंह का पुत्र।
४. ,, ,, ,, ,, (७) उदैसिंह का पुत्र।
५. गाव नेहवाई के (८) ठाकुर धीरतसिंह का का पुत्र।
६. ,, पाटोदी के (६) ,, दुरजणसिंह का पुत्र।

पांती आध में—

पीढियें—: ८. अनाड़सिंघ-सवाईसिंघोत[1] ९. सगतसिंघ १०. गोपालसिंघ ११. धनसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सीरत—	१०००)	१०००)	जालोर	

पीढियें—: ३. दूदो-महेसदासोत ४. वेणीदास ५ गिरधरदास ६. विजैसिंघ ७. जीवणदास ८. माहासिंघ ९. वनेसिंघ १०. दौलतसिंघ

खांप-भोजराजोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

१. राव मालदेव २. भोजराज-मालदेवोत रा वस रा भोजराजोत जोधा कहीजै ।

गांव भागासणी—	२०००)	२०००)	जोधपुर	

पीढियें—: ३. करमसेण-भोजराजोत ४. स्यामसिंघ ५. रामसिंघ ६. जोधसिंघ ७. सूरजमल ८. दौलतसिंघ ९. जोरावरसिंघ १०. गोपालदास ११. मूलसिंघ १२. सगतीदान

खांप-अभैराजोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

पीढियें—: १. राव मालदेव २. रायमल ३. कनीरांम ४. अभैराज रा वस रा अभैराजोत जोधा कहीजै ।

गांव नीबी खास—	२२००)	२२००)	नागोर	खेड़ा २
,, कीतलसर	५००)	५००)	,,	सूनो
,, पीरावास	२५०)	२५०)	,,	
,, वीरावास	२५०)	२५०)	,,	
,, वेहड़ो	२०००)	२०००)	,,	
,, वीजपुड	५००)	५००)	,,	
,, खार }	१०००)	१०००)	,,	
,, नोखो }	—	—	,,	
,, चांदराई	५००)	५००)	,,	
,, भूरडीयो	२०००)	२०००)	,,	
,, वागरासर	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	१०२००)	१०२००)		

1. गांव साई (पहली पाती) के (८) ठाकुर सवाईसिंह का पुत्र ।

पीढियें -. ५. कीरतसिंघ-अभैराजतोत ६. जैतसिंघ ७. हठीसिंघ ८. लालसिंघ ९ धीरतसिह १०. अमरसिंघ ११. ईदरसिंघ १२. लिछमणसिंघ १३. हणवतसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खारडीयो—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—· ७. दुरजणसिंघ-जैतसिंघोत[1] ८. सोभासिंघ ९ बाघसिंघ १०. हणवतसिंघ ११. रणजीतसिंघ १२. जूंजारसिंघ १३. बभूतसिंघ

गांव बासणी—	१०००)	१०००)	नागोर	आसामी २ रे
,, खांनपुर माजरो	१०००)	१०००)	,,	
कुल रेख	२०००)	२०००)		

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ८. सगरांमसिंघ-दुरजणसिंघोत[2] ९ चतरभुज १०. भैरूसिंघ ११. मोहणसिंघ

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ९ विगतसिंघ-सगरामसिंघ[3] १०. करनसिंघ ११. अरजणसिंघ

गांव हुडाव स—	३०००)	३०००)	नागोर	
,, भलनावो	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पीढियें—: ८. सुरताणसिंघ-हठीसिंघोत[4] ९. सखरूपसिंघ १०. सूरजमल ११. अनोपसिंघ १२. पिरथीसिंघ १३. किसनसिंघ

गांव दताऊ—	२०००)	२०००)	नागोर	आसांमी २ रे

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ५. हीरदेरांम-अभैराजोत ६. फतैसिंघ ७. भोमसिंघ ८. सिरदारसिंघ ९. मोहबतसिंघ १०. अगरसिंघ

---

१ ठि नीवी खास के (६) ठाकुर जैतसिंह का पुत्र।

२ ठि खारडीयो के (७) ठाकुर दुरजनसिंह का पुत्र।

३. ठि वासणी पहली पाती) के (८) ठाकुर सगरामसिंह का पुत्र।

४. ठि. नीवीं खास के (७) ठाकुर हठीसिंह का पुत्र।

पांती आध में— ।।)

पीढियें—: ७. लखधीरसिंघ-फतैसिंघोत[1] ८. जगरामसिंघ ९. ऊमेदसिंघ १०. लालसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव चक—	१५००)	१५००)	डीडवाणो	

पीढियें—: ७. मोहणसिंघ-फतैसिंघोत[2] ८. गजसिंघ ९. सादुळसिंघ १०. सावतसिंघ ११. जवांनसिंघ

गांव देवड़ाटी—	२०००)	२०००)	कोळियो	आसामी २ रै

पांती आध में— पहली

पीढियें—: ६ जसकरण-हिरदेरांमोत[3] ७. किसोरसिंघ ८. रांमसिंघ ९. हठीसिंघ १०. पाहाड़सिंघ ११. मोहवतसिंघ १२. सुजाणसिंघ १३. डूंगरसिंघ

पांती आध में— दूजी

पीढियें—: ८. पदमसिंघ-किसोरसिंघोत[4] ९. जालमसिंघ १०. जोरावरसिंघ ११. भारथसिंघ

गांव डाबरीयांणी—	२५००)	२५००)	मेडतो	वडी
,, डेभावास	३०००)	३०००)	,,	
कुल रेख	५५००)	५५००)		

पीढियें—: ५. अमरसिंघ—अभैराजोत ६ फतैसिंघ ७. किसोरसिंघ ८. सवाईसिंघ ९. रूपसिंघ १०. लखधीरसिंघ ११. दौलतसिंघ १२. मोतीसिंघ

केसरीसिंघोत जोधां रा ठिकांणां री विगत

१. राव मालदेव २. रायमल ३. किलांणदास ४. नरसिंगदास ५. केसरीसिंघ रा वंस रा केसरीसिंघोत जोधा कहीजै ।

गांव लाडणू—	५०००)	५०००)	नागोर	खेड़ा २
,, कसुंबी	१०००)	१०००)		
,, अलीपुरो	१०००)	१०००)		
,, रोडु	३०००)	३०००)		

---

१. ठि. दताऊ (पहली पाती) के (६) ठाकुर फतहसिंह का पुत्र ।
२. ठि. दताऊ (पहली पाती) के (६) ठाकुर फतहसिंह का पुत्र ।
३. ठि. ,, ,, ,, (५) ठाकुर हिरदैराम का पुत्र ।
४ ठि देवडाटी (पहली पाती) के (७) ठाकुर किसोरसिंह का पुत्र ।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, सीलणवाद	७०००)	७७००)		
,, करवासी	३०००)	३०००)		
कुल रेख	२००००)	२००००)		

पीढियें—: ६. चंदरभांण-केसरीसिंघोत ७ जूंजारसिंघ ८. लखधीरसिंघ ९. भारथसिंघ १०. सिवदांनसिंघ ११. पदमसिंघ १२. मंगलसिंघ १३. बाहादरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सींगरावट-खुरद	१०००)	१०००)	कोलियो	
,, तुवरो वडो	७५०)	४००)		
,, तुवरो छोटो	७५०)	३५०)		
कुल रेख	३५००)	१७५०)		

पीढियें—: १२. लिछमणसिंघ-पदमसिंघोत १३. मेघसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खीवताणो—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: १२. चांदसिंघ-पदमसिंघोत १३. बखतावरसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव लेहडी—	५००)	५००)		
,, दोलतपुरो	५००)	५००)		
,, सुवादियो	३०००)	३०००)		
,, माथासुख	६०००)	६०००)		
,, बांघड़	३०००)	३०००)		
कुल रेख	१३०००)	१३०००)		

पीढियें—: १०. गोपाळदास-भारथसिंघोत ११. प्रतापसिंघ १२. माघोसिंघ १३. पेमसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव गोराऊ—	६०००)	४०००)		
,, भावलो	४०००)	३५००)		
,, अैमदपुरीयो	१०००)	१०००)		
कुल रेख	११०००)	८५००)		

पीढियें—: १०. मालमसिंघ-भारथसिंघोत ११. रणजीतसिंघ १२. भैरूंसिंघ

गांव	रेख कदीम	हंमार भरे	परगना	विशेष
गांव बालसमंद—	३०००)	३०००)	नागोर	
पांती दोय में—रेख	२०००)			पांती ॥=)॥।

पीढियें—: ६. हरीसिंघ-लखधीरसिंघोत १०. समरथसिंघ ११. लिछमणसिंघ १२. दांनसिंघ

पांती तीजी की रेख— १०००)

पीढियें—: ६. रांमसिंघ-लखधीरसिंघोत १०. सूरसिंघ ११. स्यांमसिंघ १२. अनाड़सिंघ

गांव गोदरावास—	२०००)	२०००)	कोलिया	

पीढियें—: ६. हीमतसिंघ-लखधीरसिंघोत १०. फकीरसिंघ ११. सिवनाथसिंघ

गांव मांमड़ोदो—	२०००)	२०००)	नागोर	
,, तीतरी	२०००)	२०००)	,,	
कुल रेख	४०००)	४०००)		

पीढियें—: ६. ईसरीसिंघ-लखधीरसिंघोत १०. भोपतसिंघ ११. जालमसिंघ १२. गाढसिंघ

गांव डोबरां री वास—	५००)	२५०)	नागोर	आधो

पीढियें—: ६. सादूळसिंघ-लखधीरसिंघोत १०. मनरूपसिंघ ११. सिभूसिंघ १२. वदनसिंघ

गांव तुवरो बडो—	७५०)	७५०)	नागोर	
,, तुवरो छोटो	७५०)	७५०)	,,	
कुल रेख	१५००)	१५००)		

पीढियें—: १०. गुलाबसिंघ-सादूळसिंघोत ११. किसनसिंघ १२. रांमनाथसिंघ

गांव धांनणो—	३०००)	३०००)	नागोर	

पांती छठी में—रेख ५००) री

पीढियें—: ६. गुमानसिंघ-जूंजारसिंघोत १०. सिवसिंघ ११. स्यामसिंघ १२. दौलतसिंघ

पांती छठी में—रेख ५००) री

पीढियें—: ८. हिंदूसिंघ-जूंजारसिघोत ९. बुधसिंघ १०. मोहबतसिंघ ११. भगवतसिंघ १२. सावतसिंघ १३. गुलाबसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
पांती दोय में—रेख	२०००)			

पीढियें —: ८. ऊमेदसिंघ-जूंजारसिघोत ९. जसकरण १०. विसनसिंघ ११. हणवतसिंघ

गांव छपारो—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. सुखसिंघ-हिंदूसिंघोत १०. कुसालसिंघ ११. गोकलसिंघ १२. भैरूसिंघ १३. भूरसिंघ

गांव धुडीयो—	५०००)	५०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. लालसिंघ-जूंजारसिघोत ९. बनेसिंघ १०. ऊदेभांण ११. मंगलसिंघ १२. सबळसिंघ

गांव बाठड़ी—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें:— १०. सूरजभांण-बनेसिंघोत ११. अखैसिंघ १२. पिरथीसिंघ

गांव खगार—	२०००)	२०००)	नागोर	आसांमी २ रे
पांती आध में— ।।)				

पीढियें—: ११. डूगरसिंघ-सूरजभाणोत १२. कायमसिंघ १३. रामसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: ८. ईंदरसिंघ-जूजारसिंघोत ९. जालमसिंघ १०. खुमाणसिंघ ११. भोपतसिंघ १२. भारथसिंघ

गांव तिपनी—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. राजसिंघजूंजारसिंघोत ९. मुकनसिंघ १०. हरनाथसिंघ ११. सिवनाथसिंघ

गांव मडाम—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें —: ८. धीरजसिंघ-जूंजारसिघोत ९. कनकसिंघ १०. रामसिंघ ११. पूरणसिंघ १२. किसनसिंघ

गाँव बीठडवो—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. सुरतांणसिंघ-धीरजसिंघोत १०. हठीसिंघ ११. नाथूसिंघ

गांव नदवाण—	५००)	५००)	नागोर	आधो

पीढियें—: ८ जैतसिंघ-जूजारसिंघोत ९. दानसिंघ १०. सांवतसिंघ ११. विजैराज

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव रणसीसर—	१०००)	१०००)	नागोर	आधो

पीढिये—: ८. मनरूपसिंघ-जूंझारसिंघोत ९. सलेहसिंघ १०. जसवतसिंघ ११. सिरदारसिंघ १२. रामनाथसिंघ १३. हरदानसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव छाजोली—	३०००)	३०००)	नागोर	

पीढियें—: ७. डूंगरसिंघ-चंद्रभाणोत ८. अणदसिंघ ९. मोहकमसिंघ १०. कीरतसिंघ ११. रामसिंघ १२. मानसिंघ १३. फूलसिंघ १४. सोभासिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव बांभणवो—	२०००)	२०००)	नागोर	आसामी २ रे

पांतो आध में— ॥)

पीढियें—: ११. भोमसिंघ-कीरतसिंघोत १२. उगमसिंघ १३. रुघनाथसिंघ १४. प्रभूदान १५. नोनदसिंघ

पांती आध री विगत—

पीढियें—: ११. सूरसिंघ-किरतसिंघोत १२. गुलाबसिंघ १३. सिवसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भेणवाद—	२०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. विसनसिंघ-अणंदसिंघोत १०. रूपसिंघ ११. अजीतसिंघ १२. राजसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव आसोटो—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ९. अभैसिंघ-अणंदसिंघोत १०. जुगभांण ११. अजीतसिंघ १२. अनाड़सिंघ १३. पेमसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव पाटण—	१०००)	१०००)	कोलियो	

पीढियें—: ८. अमरसिंघ-ऊगरसिंघोत ९. भोजराज १०. सालमसिंघ ११. देवीसिंघ १२. माधोसिंघ १३. रामनाथसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव पड़ीहारो—	१०००)	१०००)	नागोर	

पीढियें—: ८. किसोरसिंघ-ऊगरसिंघोत ९. रुघनाथसिंघ १०. सिवसिंघ ११. ग्यानसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव भवादीयो—	२०००)	२०००)	कोलियो	

पीढियें—: ८. सिरदारसिंघ-ऊगरसिंघोत ९. मोहणसिंघ १०. वखतसिंघ ११. भोपतसिंघ १२. बागसिंघ १३. विजैसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव कसूबो जाखड़ां—	१५००)	१५००)	नागोर	

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
,, कसूबी मेहलां	१५००)	१५००)	,,	
कुल रेख	३०००)	३०००)		

पीढियें —. ६. अरजनसिंघ-केसरीसिंघोत ७ सूरजमल ८. वनेसिंघ ९. नरीणदास १०. अखेसिंघ ११. मगलसिंघ १२ रुघनाथसिंघ

गांव टालणाऊ— ३०००) ३०००) नागोर

पीढियें—: ९ ऊमेदसिंघ-वनेसिंघोत १०. सेवसिंघ ११. बाघसिंघ १२. राजसिंघ १३. मूलसिंघ १४. मेहताबसिंघ

गांव कांगसीयो— १०००) १०००) नागोर

पीढियें—: ९. दानसिंघ-वनेसिंघोत १०. दुलेहसिंघ ११ रतनसिंघ

गांव लाछडी— २०००) २०००) कोलियो

पीढियें—: ८. सबळसिंघ-सूरजमलोत ९ जैसिंघ § १० कनीराम ११. हुणवतसिंघ १२. सिवनाथसिंघ

गांव कुभावसीयो— १०००) ५००) नागोर

पीढियें—: ८. भोजराज-सूरजमोलत ९. नथराज १० देवीसिंघ १२. जसकरण १२. अमानसिंघ

गांव भडारी— २०००) २०००) नागोर आसामी २

पांती आध री विगत—

पीढियें—: ११. चिमनसिंघ-देवीसिंघोत १२. रूपसिंघ

पांती आध में— ॥)

पीढियें—: ७ भगवतसिंघ-गोपीनाथोत (गोपीनाथ-केसरीसिंघोत) ९. सायवसिंघ १०. भैरूसिंघ ११. कनीरांम १२. चिमनसिंघ

गांव रायवणो— ३०००) ३०००) नागोर आसामी २

पाती आध मे—

पीढियें—: १०. जगरामसिंघ-नयराजोत ११ ईदरसिंघ १२. जुहारसिंघ

---

§ जैसिंघ अमरकोट मे तालपुरों से युद्ध हुआ वहां काम आया।

पांती आध में—

पीढियें —: ७. सुजाणसिंघ-अरजणसिंघोत ८. सुखरूपसिंघ ९. सिवसिंघ १०. मोहकमसिंघ ११. जिदूसिंघ १२. रतनसिंघ १३. सुजाणसिंघ

गाव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव सेवो—	५ ००)	५०००)	कोलियो	
,, रसीदपुरो	३०००)	३०००)	दोलतपुरो	
कुल रेख	८०००)	८०००)		

पीढियें—: ९. कनकसिंघ-सुखरूपसिंघोत १०. अभैसिंघ ११. मालमसिंघ १२ जालमसिंघ १३. जगतसिंघ १४. चुतरसिंघ

गांव सींगरावट—	३०००)	३०००)	कोलियो	
,, सावराद	२०००)	२०००)	नागोर	
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पीढियें —: १० विसनसिंघ-कनकसिंघोत ११. मोतीसिंघ १२ मोहणसिंघ १३ नाथूसिंघ

गांव गिरधारीपुरो—	१०००)	१०००)	कोलियो	

पीढियें—: १२. गायडसिंघ-मोतीसिंघोत

गांव भींडीयासरी—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: १०. जवानसिंघ-कनकसिंघोत ११. चादसिंघ १२. भावसिंघ १३. चौकलसिंघ

गांव लोटसर—	२०००)	२०००)	नागोर	

पीढियें—: ७. रतनसिंघ-अरजणसिंघोत ८ नवलसिंघ ९. दलेलसिंघ १० अमानसिंघ ११. पाहाडसिंघ १२. घनसिंघ

गांव खारडीयो—	२५००)	२५००)	नागोर	आसामी २
,, मगलपुरो	२५००)	२५००)	,,	,,
कुल रेख	५०००)	५०००)		

पांती आध में—

पीढियें—: ८. रूपसिंघ-रतनसिंघोत ९. जालमसिंघ १०. लालसिंघ * ११. मगलसिंघ १२. अजीतसिंघ १३. सिवनाथसिंघ

पांती आध में— (अे धनाणी री पाती मे मिळै है।)

पीढियें—: ९. बखतसिंघ-हिंदूसिंघोत १०. मोतीसिंघ ११. जवारसिंघ १२. बलवतसिंघ

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव खुणखुणो—	३०००)	३०००)	कोलियो	

पीढियें—: ६. गोपीनाथ-केसरीसिंघोत ७ हरनाथसिंघ ८. खीवकरण ९ जगतसिंघ १०. बेरीसाल ११. सिरदारसिंघ १२. भीवसिंघ १३. विसनसिंघ

गांव हीरावती— १०००) १०००) नागोर

पीढियें—: १०. अजीतसिंघ-जगतसिंघोत ११. सूरजमल १२. रूपसिंघ १३ सवाईसिंघ

गांव बुढोद— २०००) २०००) कोलियो

पीढियें—: ९. बखतसिंघ-खीवकरणोत १०. दुलेहसिंह ११. लिछमणसिंघ १२. मोतीसिंघ १३ नाहारसिंघ १४. सूरसिंघ

गांव जांणी— २०००) २०००) नागोर

पीढिये—: ८. करणसिंघ-हरनाथसिघोत ९. हिमतसिंघ १०. जोरावरसिंघ ११. अनाडसिंघ १२. बाघसिंघ १३. विजेसिंघ १४ मेहताबसिंघ

गांव बीचावो— ३०००) ३०००) नागोर

पीढियें—: ९. ऊमेदसिंघ-करणसिंघोत १०. गुमानसिंघ ११ नवलसिंघ १२. चिमनसिंघ

गांव थांणू— ३०००) ३०००) नागोर

पांती आध में—

पीढिये—: ८. प्रीथीसिंघ-हरनाथसिंघोत ९. सरूपसिंघ १०. अमानसिंघ ११. नवलसिंघ १२. मुकनसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: १० गुमानसिंघ-सरूपसिंघोत ११. रणजीतसिंघ १२. डुंगरसिंघ १३. रांमसिंघ

गांव हुसेनपुरो— २०००) २०००) नागोर

पीढियें—: ९. माहासिंघ-पिरथीसिंघोत १०. खड़गसिंघ ११. रिडमलसिंघ १२. अमरसिंघ १३. गूदड़सिंघ

---

* लालसिंह रायपुर पर फौज आई तब सं. १८३४ मे काम आया।

गांव	रेख कदीम	हमार भरे	परगना	विशेष
गांव अंगरोटीयो—	१०००)	१०००)	कोलियो	
,, सीकराली	२०००)	२०००)	नागोर	
कुल रेख	३०००)	३०००)		

पीढियें—: ७. चतरभुज-अरजनसिंघोत ८. भोजराज ९. वखतसिंघ १०. अमानसिंघ ११. हणवंतसिंघ १२. लिछमणसिंघ

गांव चोतावो—	१०००)	१०००)	नागोर	आसामी २ रे

पांती आध में—

पीढियें—: ९. भवानीसिंघ-भोजराजोत १० वदनसिंघ ११. रुघनाथसिंघ

पांती आध में—

पीढियें—: ९. सिभूसिंघ-भोजराजोत १०. जीवणसिंघ ११. जैतसिंघ १२. केसरीसिंघ

गांव खादू-खुरद—	७०००)	६०००)	नागोर	आसांमी ३ रे

पांती तीजी में— (१)

पीढियें—. ६ किसनसिंघ-केसरीसिंघोत ७. दौलतसिंघ ८. ग्यानसिंघ ९. चांदसिंघ १० रामसिंघ ११. समरथसिंघ १२. ईदरसिंघ

पांती तीजी में— (२)

पीढियें—: १०. प्रभूदान-चांदसिंघोत ११. नोनदसिंघ १२. सूरसिंघ १३. रूपसिंघ

पांती तीजी में— (३)

पीढियें—: ९. जालमसिंघ-ग्यांनसिंघोत १० जोगीदास ११. मंगलसिंघ १२. विड़दसिंघ

गांव रायसिंघपुरो	२०००)	२०००)	कोलियो	रेख घटी ७५०)

पीढियें—: ८. विजैसिंघ-दौलतसिंघोत ९. चैनसिंघ १०. सूरजमल ११. रणजीतसिंघ १२ भवांनीसिंघ १६. मेहतावसिंघ

खांप-विहारीदासोत जोधाँ रा ठिकाँणाँ री विगत

पीढियें—: १. राव मालदेव २. रायमल ३. किलाणदास ४. ईसरदास ५. विहारीदास, तिण रा वंस रा विहारीदासोत जोधा कहीजै।

गांव रोहीसी —	४०००)	४०००)	मेड़ता

पीढियें—: ६. विठलदास-विहारीदासोत ७. किसोरसिंघ ८. हठीसिंघ ९. गजसिंघ १०. प्रतापसिंघ ११. दलेलसिंघ १२. कुसालसिंघ १३. जीवणसिंघ १४. अमरसिंघ १५ वलवंतसिंघ

गांव मुडियासरी—	१०००)	१०००)	नागोर

पीढियें—: ८. माहासिंघ-किसोरसिंघोत ९. गुमांनसिंघ १०. वाहादरसिंघ ११. गुलाव-सिंघ १२. वखतावरसिंघ

—०—

विगत में आये हुए

चारण, भाट व ब्राह्मणों

के

सांसण आदि की सारिणी

प्राप्तकर्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
अखई सोढ़ावत चारण	माडवो, वास	पोकरण	राव हमीर जगमालोत माला का पोता
अचळा चदरीया बारठ	आकोधणी	जोधपुर	रावळ जगमाल
अचळा धरणपालोत बारठ	भापरी	पोकरण	राव गोइन्द नरावत
अमरा दूदावत बारठ	वडी रा बास	जोधपुर	राव श्री रिडमलजी
अमरा दूदावत रोहीड़ा	मथाणीयो	जोधपुर	राव श्री जोधाजी
आलु बाबट रोहड़ीया	भाडु री वास	जोधपुर	राव चौडा
आवा तेजावत बीठु	अचला रा खेत	मेड़ता	अचळा रायमलोत
ऊरजन माचावढ़ा महीया	रोहडा रो वास	सीवाणा	रांणा देईदास
कनीया वीका	बुटेळाव	सोजत	राव श्री जोधाजी
करमसीयोत लाखा कनीया चारण	सोवाणीयो	फलोधी	राजा रायसिंघ किलांणमलोत
करमा पुनावत रोछड़ा	वणलीयो	जोधपुर	राव श्री जोधाजी
मुगळ लषणीयां करमसीहोत जीवण	म्हेड्ढ जीवण रो वास	पोकरण	पोकरण रा. माला करण हदो रतनसीयोत, कान्हावत, गोदो मेघराजोत लूका, राव कवरो, माणकराव, जीवण भोजावत सगतो घरावत, भूणीयांणी पोकरणां
काछेला सुर दुवड़ो	कुवडो	जोधपुर	मीघल चापा मैणावत
कान्हा उत्तमसीयोत लालस	चंचळाव	जोधपुर	राव जोधाजी
कान्हा उत्तमसीयोत लालस	सुवेरी	जोधपुर	राव जोधाजी
किसना दुरसावत आढा	हीगोलो खुरद	जोधपुर	राजा श्री गजसिंघजी
केसा जीवावत रोहड़ीयं बारठ	ऊदळीया वास	जोधपुर	राजा उदैसिंघजी
केसोदास सांदुवोत गाडण	सोभडा वास	सोभत	गजसिंघजी
खगार मेहडु	गुडली	जोधपुर	रावळ हापा
खीवा वेणीदासोत जगहट	वांणा	मेड़ता	राव कानीदास

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत
	३५१ (भा० २)	
ी गोपाळ	३६६ (भा० १)	
ठ हेमराज खीवा, माली समुरथा का ताण जालप का	३५० (भा० २)	राव गागे के समय मे दिया ।
रंग जैतमालोत रामचंद गोपाळोत	२५८ (भा० १)	
डदास मेहराजोत	२३६ (भा० १)	
नो राईमल	३१८ (भा० १)	
पो पचाइणोत	१६५ (भा० २)	
रण रूपा साकर का, ऊदी रामा का, सावत ा का	२७३ (भा० २)	बाद मे राव मालदेजी ने चारण अचळा लालावत को और दिया । कहा जाता है कि एक वार राजा उदयसिंहजी ने हस्तक्षेप किया था ।
नियो रूपसी ठाकुरसी चतरावत	४८८ (भा० १)	
री, चतरभुज, देवी मेहाजळ री धनी, लाला	२८ (भा० २)	
वराज भारमलोत करमा का पोता मीदास मेघराजोत मुगल का पोता	२४२ (भा० १)	
ीदास जीवण री	३५१ (भा० २)	आपस मे बैर था, बैर समाप्त करने के उपलक्ष मे खेत दिया गया ।/१६९२
ोजराज	२८६ (भा० १)	
ीली सिवदास	३११ (भा० १)	
	३११ (भा० १)	चाचलवा को साथ दिया ।
हेसदास	२६२ (भा० १)	
कलाणदास-रूपसोत	२५८ (भा० १)	लाख रू. का पुरस्कार/१६८३जेठ सुदि१३
ाडण उदैकरण, भोजराज, भीव, केसोदास	४८६ (भा० १)	
	३६७ (भा० १)	
ाईदान-जगा का पुत्र	१८५ (भा० २)	

प्राप्तकर्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
खीवा अणदोत चारण	म्हेडू खीदा री वास	पोकरण	भाटी रावळ मनोहरदास कल्याणदासोत
खीवराज जैमलोत दधवाड़िया	राजगीया वास वडो	स ˘ भत	महाराजा गजसिंहजी
खेतसी परवतलाल्	भाटेळाई वड़ी	जोधपुर	महाराजा गजसिंहजी
गेई रतनावत खड़ीयौ	गेहावास	जैतारण	राव रतनसी खीवावत
गेहलांणद देवादत	सादुवा री वास	जोधपुर	राव वैरसल प्रीथीराज जैतावत
गोकळचंद द्वारकानाथोत	घोळीयो	मेड़ता	महाराजा जसवतसिंहजी
गोपाल रांमदासोत वरसड़ा	वरवड़ा री वासणी	जोधपुर	राजा श्री उदैसिंहजी
गोयद संढायच	आखा री वास	जोधपुर	कड़वड़ री रा. पचाईण अखैराजोत
चकोर अमरावत थेहड़	चगावडो तीजो	जोधपुर	राव गागा
चडीदास	मोडी वड़ी	जोधपुर	उदैसिंहजी
चाकर रूपसी कवरावत	रतनू रूपसी री वास	पोकरण	भाटी रावळ, भीव हरराजोत
चादण लुणावत खिड़ीया	साथीडो	जोधपुर	राव श्री जोधाजी
चाडा माडणोत घधवाड़िया	जारोडो वेणा	मेडता	राव अचळा रायमलोत
चुवंडदास कलावत, देवीदास रामदासोत	अ गदवास	सोभत	राजा उदैसिंघ
चोसघ बीजावत संढाईच	वास सढ़ाईचा री	सीवाणा	रा. कूंपा जोगावत
चोला मेहावत	मीठोली	जोधपुर	मोटा राजा
जगहथ पोटल काला राव के लड़के	खांनपुरो	मेड़ता	दूदा जोधावत
जीमो हरावत वसड़ो	ढांढणीयो खुरद	जोधपुर	राव चूंडा
जीवा नेतावत मीसण	तीघरीयौ	जोधपुर	राजा श्री सूरजसिंहजी
जोधा सारंगोत मेहडु	जोधावास	जैतारण	डूगरसी उदावत
झुठा वीकावत	झुठा री वासणी	जोधपुर	श्रीमालदेजी
टीकम गीथावत	वेराही वास ३	जोधपुर	राव चूंडाजी
ठाकुरसी वारठ	सेवी	जोधपुर	रावळ जगमाल
भट्ट तिलंग का लड़का नाराइण	नाथल कुंडी	सोभत	राजा उदैसिंघजी
तीकम सढ़ायचा	वही काभड़ी री	जोधपुर	राजा सूरजसिंहजी
तेजसी बीसलोत रोहड़िया वारठ	मुळीयावास	सोभत	श्री गागाजी

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
म्हैडू हरदास खीदावत	३५२ (भा० २)	१६८८ सावण वद १३
दधवाड़ियो आसकरण, प्रीथीराज खीवराजोत	४८६ (भा० १)	१६९४ काती सुद ९
—	३०४ (भा० १)	
खेडी आसो पीथावत वीको देईदान को	५४९ (भा० १)	
बुढो दलो सेहसा का लड़का	२५५ (भा० १)	
—	१९८ (भा० २)	१७७१
मनोहर पीथावत	२४० (भा० १)	
सुदर गुणेस	२४३ (भा० १)	
नगराज, खेतसी	२४१ (भा० १)	
भानीदास चडीदास री, नेहरराम भगवान सीरग रा	२६७ (भा० १)	
रतनू, किसनो, पीथो, रूपा सीहोत, जगो, खेतसी	३५२ (भा० २)	मेघराज नराइण कांमदार था, इसको हुक्म मिलने पर गांव दिया।
भैंरवदास	२६२ (भा० १)	
सुंदरदास मोहणदास माधोदासोत	१६५ (भा० २)	
—	४८३ (भा० १)	
चारण वेणो माडण, नगो गोपळ, रूपो राजा	२७६ (भा० २)	
जगहट सोढो	३५० (भा० १)	
अमरो पुंजावत, दुरगो नादावत	१७६ (भा० १)	
धरमो लाला री	३०३ (भा० १)	
पूरण जीवावत	२४१ (भा० १)	
मेहडु वाघो सुरताण हरीदास लुणावत	५५० (भा० १)	
नाथो दासावत	२४२ (भा० १)	
चवंडै मेघराजोत मोटोला ईसरोत	३१२ (भा० १)	
गगादास	३६७ (भा० १)	
भाट गोपाळ वाळमुकंदोत	४८३ (भा० १)	
खीवराज, खगार	३३५ (भा० १)	
बारठ चावडदास किलाणदासोत	४८८ (भा० १)	१६६४

प्राप्तकर्त्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
तेजा करमसीयोत आसीया	तेजा री वासणी	जैतारण	दलपत उदैसीयोत
थीरा दूदावत रोहड़ीया	खारी थीरावास	जोधपुर	राव श्री जोधाजी
थीरा बरसंघोत चारण	खारी खुरद	जोधपुर	राव सूजाजी
दमान रूपसीयोत दसौंधी	मोगावास	मेड़ता	राव सूरजसिंघजी
दला चोभावत आसीया	लखाण छुम	जोधपुर	रा. पता नगावत
दांना मोकळ रा रतनु	लेलावासणी	जोधपुर	राजा सूरजसिंघजी
दाना हरराजोत रतनु	गेमावास	मेडता	राजा सूरजसिंघजी
दामौ हरखावत रोहड़ीया	सासण गाव	जोधपुर	रा. पता घडसीयोत
दुदा वीदावत बीठु	वीजा री वास	जोधपुर	रा. महेस घड़सीयोत
दुदुवत सादु	छीड़ियो	जोधपुर	राजा सूरसिंघजी
दुरसा मेहावत आढा	लूगीयो	मेडता	सुरताण जैमलोत
दुरसा मेहावत आढा	दागलो	जैतारण	राजा सगतसिंघजी ऊदेसिंघोत
दुरसा मेहावत, कीसन दुरसावत	पचेटीयो	सोझत	महाराजा गजसिहजी
दूदा अमरावत आसीया	खीनवडो	जोधपुर	उहड़ जैमल नेतसोत
देवलिंग आढ़ी वेरा करमसीयोत की पत्नि	बीजळीयावस	सोझत	सूरजसिंघ
देवीदांन गुणावत	वास वारेट रोहड़ीया	सीवांणा	राव चदरसेन मालदेवोत
देवीदास भेरवोत वारठ	रेपडावास तीजो	सोझत	प्रथीराज कुंपावत
धरमो चादणोत खड़ीया	कावळीयाँ	मेडता	वरसिंघ जोधावत
धारावत चारण	रतनू भारमल री वास	पोकरण	भाटी रावळ कीलांणदास हरराजोत
नरसिंघ मंढाडच	मोगढो खुरद	जोधपुर	नाहड़राव पड़ीहार
नाथा रतनमियोत रोहडिया	मोरटहुको	सोझत	महाराजा जसवंतसिंघ
नाल्हा वछावत चारण	केलावो आधो	पोकरण	राव गोयंद नरावत
नीवा करमावत चारण, पीथो टोहावत काका भतीज	छडोई कलाण री वास	सीवाणा	राणा देवीदास वीजावत

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
आसीया हाथी मोटौ तेजावत	५५१ (भा० १)	१६२२
चवडदास कलावत अर दईदास रामदासोत	२४०(भा० १)	
भादो कलौ लाषा	३५० (भा० १)	
रिणछोड विहारीदास, चुतरभुज विहारी-दासोत हर रांम मदमन की	१६८ (भा० २)	
जोगौ सेसमलोत	२६३ (भा० १)	
लिखमीदास मेघराजोत	२६३ (भा० १)	
सांवळदास दानावत लिखमीदास जसावत	१६४ (भा० २)	
जसौ रूपौ	२७२ (भा० १)	
गोयंल चोला	२५५ (भा० १)	
माघोदास	३४६ (भा० १)	
डूंगरसी सादुळोत देईदान जगमालोत	२१२ (भा० २)	
आढा रतनसी डूंगरसीयोत, रांमा सारदुळोत	५५० (भा० १)	गिरदी गाग पट्टे में था तब यह गाव दिया गया।
—	२८३ (भा०१)	संवत् १६७७ की काती सुद ७ की बा मे आढो महेसदास किसनावत है।
सादूळ रूपा	३०३ (भा० १)	
आसीयौ नरसिंघदास नरहरदास जगावत	४८७ (भा० १)	पहले गाव लोळवस दुधवड को दिया १४ वर्ष बाद बदल कर बीजळीयावस दिया/१६६४ महा वद ११
बारठ समुरतौ, रामचद गोयद,	२७६ (भा० २)	
—	४५८ (भा० १)	
किसनदास केसौदास सांवळ झाझणोत भैरूदास	१२८ (भा० २)	
रतनूं रांणो भारमलोत	३५३ (भा० २)	
किसनदास देदावत	२४१ (भा० १)	
—	४८४ (भा० १)	१७१५ फागुन सुद ७
चारण ऊदौ हमीर का भानौ भारमल	३५५ (भा० २)	
चारण दाना किसनावत नराइण खेता, ईसरं मेहजळ, भारमल माना का	२७७ (भा० २)	

प्राप्तकर्ता	गाव का नाम	परगना	दाता
नीबा खेतावत चारण	गेहा वासणी	जैंतारण	रा. खीवो ऊदावत
पत्ता देवादत बारठ	बाजोळी चारणा री	मेड़ता	दूदा जोधावत
पत्ता वरसावत चारण	वोढणीयो (ओढणीयो)	पोकरण	भाटी रावत कीलाणदास हरदासोत
परतापसिंघ नांदणोत बारठ	भीलावास	मेड़ता	राजा श्री सूरजसिंघजी
पाला ऊदावत रतनु	परबतसर रा खेत	मेड़ता	रा. दूदाजोधावत
पीथा भाणावत गाडण	छुवली (शुवली)	जोधपुर	रा. जैतमाल खावत
पुनराव ने वेवढो आसीया	खाढावास	जोधपुर	रा. श्री जोधाजी
बाबट आलावत रौ लाधा	भुडुरी वास	जोधपुर	रा. चूंडा
बोकसी सांकर भैरावत नरबोत (चारण)	सरवडी सीघला री	जोधपुर	रणधीर कोभावत
बोहीगुण मालावत खडिया	बोहोगुण री वासणी	जैतारण	रा. भानीदास खीवावत
भरमां रूपावत रतनु	रभलावास	मेड़ता	रा. जेसा सीहावत
भीवा बरसलोत	रतु	जोधपुर	रावळ महेसदास
भैरव नीवावत रोहड़ीया बारठ	रेपड़ावास खुरद	सोभत	राव श्री गांगाजी
भैरव हरखावर खीडीया	चारणा री वासणी	जोधपुर	राजा उदैसिंघजी
भोजा जैसावत मीसण	लुणावस तीजो	जोधपुर	राव सातल जोधावत
मनो रूपसोत भाट	वुजडो	जोधपुर	मोटा राजाजी
महेस दूदावत रोहड़ीया बारठ	खारीबास	जोधपुर	वडोवास राव सते चुंडावत
महेसदास मेघराज किसनावत आढ़ा	गोघावास	सोभत	जसवतसिंघजी
माधवदास चूंडावत दघवाड़ीया	नापावस	सोभत	राजा श्री सूरजसिंघजी
माला ऊदावत सांदु	खुढालो	जोधपुर	मोटा राजा
माला उदावत सादू	गुदीसर खुरद	मेड़ता	राजा श्री सूरजसिंघजी
माला कचरावत घीरण	करांणी	जोधपुर	उहड माडण गोपाळदासोत
माला तेजावत वीठू	जोधडावास खुरद	मेड़ता	रा. जैमल वीरमदेवोत
माना रामावत आसीया	वसी	जोधपुर	राजा श्री सूरजसिहजी

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
कविया रांमदास मांडण, चांवडादास देईदास	५४९ (भा० १)	
महेस चुतरावत खेतसी वेणावत	१८४ (भा० २)	
	३५० (भा० २)	पोकरण के आ. मेघराज मु. नराइण और कलु कांमदार को हुक्म मिला जब गाव दिया।
परतापमलोत, किलांणदास कानड़ राजसीहोत	१५२ (भा० २)	
तेजसी, नाथो सांकर के पुत्र	१६५ (भा० २)	
वीरम कमो	३०४ (भा० १)	
	२४० (भा० १)	
दुदो डूगरोत	३०४ (भा० १)	
कलो रामदासोत	२९३ (भा० १)	
खिडीयो खेतसी पहूराजोत	५५१ (भा० १)	
सावळदास कांनावत रामसिंघ-सादूळोत	१४१ (भा० २)	
खेतसी भीवावत	३६६ (भा० १)	१६९५
गजसी नरावत, माधो मेवाहरोत	४८५ (भा० १)	
चदो खगारोत	२४१ (भा० १)	
साजण भीव	२४३ (भा० १)	
भाट रिणछोड़ बिहारीदासोत	२५५ (भा० १)	१६५१
नाथो रजनसिघोत	२३६ (भा० १)	
महेसदास किसनावत	४८४ (भा० १)	१७०२
दधवाडीयो सूरदास मोवणदास माधोदासोत बिसनदास सांमदासोत	४८७ (भा० १)	१६५४
आसो सावतसी माला रा बेटा कुंभो ईसरदासोत	३४९ (भा० १)	१६४०
सावतसी आसकरणोत कुंभो ईसरदासोत	१९७ (भा० २)	
	३०१ (भा० १)	
पीथो नरसघ का; खेमो ईसर का	१६४ (भा० २)	
	२८७ (भा० १)	

प्राप्तकर्त्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
मांना रांमावत	छाहली	जोधपुर	जैंतसी उर्दैसिघोत
माडण खीवसुरा खिड़ीया	भावली चारणो री	मेड़ता	वीरमदेव दूदावत·
मुहड़ ठाकुर सोनावत चारण	कार	जोधपुर	रावळ मेघराज
मेघराज गेहावत रतनु	चापावसणी	जोधपुर	रा. भीवा वाघावत
मेलौ गोगरठराउ आसीया	नेसडो	जोधपुर	सीचल वीसळदे वीरावत
मेहका सोलावत सिढाइच	सिढ़ाइच मेहका रा वास	पोकरण	रा. प्रथीराज गोईदोत नरावत
मेहा दुसळोत	खेड़ी	जोधपुर	राव मालदेजी
मेहा रोहड़ीया बारठ	सावरो	जोधपुर	रावळ मालजी
मोका मांडणोत	डागसूरीयो	मेड़ता	रा. वलभदर सुरतांणोत
मोटल मांढणोत ड़िखीया	रळीयावतो खुरद	मेड़ता	जैमल वीरमदेवोत
मोटस सांरणोत मीसण	तांवडीयौ खुरद	जोधपुर	राजा ऊदैसिघजी
रतना चाचावत सढ़ाय च	कानावास	जोधपुर	रा. काना वीजा सिवराजोत
रतना डाहावत मीसण	रतनावास	मेड़ता	रा. रतनसी दूदावत
रला गोयदोत जगहट	रलावसे	जोधपुर	श्रीमालदेवजी
राजसी अखावत	दुपावास	जोधपुर	राजा गजसिघजी
राजसी परतापलोत वारहठ	जालीवाडो खुरद	जोधपुर	राजा श्रीगजसिघजी
राजसी प्रीथीमलोत वारठ	पीथावास	मेडता	राजा श्रीगजसिघजी
रामौ घरमसीयोत सांदू	रांमा री वासणी	सोझत	राजा उर्दैसिघजी
रेप चाहैडोत रोहड़ीया	रेपडावास वडो	सोझत	राव श्रीजोधाजी
लखा नादणोत वारठ	ऊंचीहेड़ो	मेड़ता	राजा सूरजसिघजी
लखा नादणोत रोहड़ीया	रहैनडी	सोझत	राजा सूरजसिघजी

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
जसो मानावत	२४३ (भा० १)	
भगवान जसावत नराईण अखावत	१६८ (भा० २)	
जगमाळ अखावत	३६७ (भा० १)	
करम सुन्दर	२४२ (भा० १)	
	२८६ (भा० १)	
चारण करमसी महेसुर चदो अमरा	३५३ (भा० २)	राव गोईंद की वार मे भलारियौ पट्टे था, तव खेत दिया गया।
मेघराज डूगरसी	२४२ (भा० १)	
	३६६ (भा० १)	
पिरथीराज सुंदरदासोत और जगनाथ मनोहरदासोत	१४० (भा० २)	
लिखमीदास भैंरवदासोत नहर, सूजावत नहर भोजराजोत	१६७ (भा० २)	
महेस मोटलोत	२३६ (भा० १)	
नाथौ रूपावत	२५४ (भा० १)	
	१८५ (भा० २)	वाद मे सुरतांण जैमलोत ने मीसण से छुड़ा कर चुतरा जैमलोत को प्रदान किया। चुतरे ने आधा गाव अपनी वहिन जिसने कि मीसण दान के साथ शादी की थी उसको दे दिया और आधा खुद ने रखा।
नादे करनोत	२४२ (भा० १)	
भैंरू भीवराज राजप्रोत	२६८ (भा० १)	१६८६
किल्याणदास कानु राजसिघोत	२५५ (भा० १)	
किलाणदास काना राजसी का पुत्र	१४१ (भा० २)	
साहू गोयददास राघावत रतनसी देदु कुंभो मनोहरदास नाथौ अखावत	४८७ (भा० १)	राव मालदेवजी की वार में दिया।
वारठ चूडौ अखावत	४८५ (भा० १)	
गिरघरदास लखावत के वेटे आसकरण प्रीथीराज	१४० (भा० २)	
वारठ आसकरण प्रीथीराज गिरधरदासोत	४८५ (भा० १)	स० १६७२ मिगसर सुदि ७

प्राप्तकर्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
लाला पुनसरोत बारठ	वडीत्रास	सीवाणा	रा. पचाईण वरसिंघोत महेवचा
लाखा नांदणोत रोहड़ीया	सीघला नडी	जैतारण	राजा श्रीसूरजसिंघजी
लाखा दासावत चारण	लाखा वासणी	जैतारण	रा. रतनसी खीवावत
लुंभा चादणोत खिडया	खारडी	मेड़ता	वगसिंघ जोधावत
लुंभा सादा मेघावत	नांदणहाई री वास	पोकरण	राव सूजो, सागो जैमल
लोलो नोखावत चारण	उजळां	पोकरण	राव गोईंद नरावत
वसता भाखरोत बारठ	मालवी	जोधपुर	रावळ भारमल
सकर तेजसोहोत	वीधुवास	मेड़ता	सूरजसिंघजी
सकर मैरावत रतनुं	हरलाई	जोधपुर	राजा सूरजसिंघजी
साजण मेरावत बारठ	खिनावड़ी चारणा री वास	जैतारण	सुरताण जैतसीयोत
सांकर नेतसीयोत	लोहण हेड़ो	सोझत	राव रिडमल
सांकर हीगोळावत रतनुं	नैते री वासणी	मेड़ता	रा. सुरताण जैमलोत
सांदु नाथ ग्रखावत	पळासलो रामा रो	सोझत	महाराजा जसवंतसिहजी कु. पृथ्वीसिंह
सारंग सोनावत चारण	कोडुखां	सीवाणा	रा. वरसल पिरथीराजोत
सिवदास सोमावत वणसूर	मोतीसरी	जोधपुर	राजा श्रीउदैसिंघजी
सीयो चदरावत	मोढरीयो	मेडता	रा. सीहा वरसिंघोत
सुजावत सुरतांण	जुढियो	जोधपुर	ईदा रांणा टोहु
सूरा ग्रचळावत खिड़या	मोहलावास	मेड़ता	मालदेजी
हमीर पुनावत	वाळा	जोधपुर	उहड़ नैतसी काजावत
हेमो चौमावत बारठ	रीछोली	सीवाणो	राव मालदेजी

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
चारण वीरा नरबद गोपाळ मनावत	२७५ (भा० २)	बाद में माळदेवजी ने बारठ जसा गोईंदोत को दिया।
बारठ नरहरदास लाखावत	५४८ (भा० १)	
कछेला गोदा गेला का, खेमौ सेखा का, माधौ तेजा का	५५१ (भा० १)	
भगवान ईसर	१२६ (भा० २)	
	३५४ (भा० २)	
चारण रामदासोत जगमाल सूजावत देईदान हापावत	३५४ (भा० २)	जोधाजी गयाजी गये जब यह गाव दान दिया।
	३६६ (भा० १)	
देईदास रामदासोत	१६४ (भा० २)	
महेसा नाथोत	३३५ (भा० १)	
बारठ गोरणदास मेघराज का गरबदास दूदा का	५४८ (भा० १)	
चावडदास किलाणदासोत	४८४ (भा० १)	
रामसिंघ सादुळोत सूरौ कलावत	१६५ (भा० २)	
	४८७ (भा० १)	गगा के ऊपर दिया गया।/१७१५ पौस सुद २
सोहड राजो भानो सहसो महेस अखावत	२७४ (भा० २)	गगा के पुत्र पत्ता ने राव मालदेजी से विनती करके दिलवाया था।
	२८७ (भा० १)	
भगवान जसावत कमो सुंदर रो नाराण अखावत	१७६ (भा० २)	वाद मे जैमल वीरमदेवोत ने खड़ीया मांडणोत को दिया।
समुरसो राजो	३११ (भा० १)	
किसनदास केसोदासोत	१२६ (भा० २)	
राघोदास	३०४ (भा० १)	
चारण आखो गोईद चतरो जेता रो रामदास पीथा।	२७५ (भा० २)	रा. गगावत ने गांव देने की सिफारिश की।

प्राप्तकर्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
अखैराज दलपतोत प्रोहत	भंसेर	जोधपुर	राव मालदेजी
अनंत रीखावत श्रीमाली	घरमावासणी (अनंत री वासणी	सोझत	राव श्री गागाजी
आसलो हरदेधरोत श्रीमाली	लुढावास	सोझत	राव श्रीजोधाजी
आसा देदावत	वावडी वास	फलोधी	राव जोधाजी
आवो खीवावत बामण	महिलावाई खुरद	जोधपुर	राव मालदेजी
अवास ब्यास	जेसलवस	जोधपुर	राव श्री मालदेजी
ऊदा दामावत	छीम	जोधपुर	राव जोधाजी
कधल मोजावत	देहुरीयो	जैतारण	रतनसी खीवावत
कान्हा बाल्हावत	सातोसणी	सीवांणा	रांणा देवीदास बीजावत
काना जगावत त्रिवाड़ी	राधा री वासणी	सोझत	महाराजा श्रीजसवंतसिंहजी
कांना उदारायोत	पांचोडोळी वास	मेड़ता	बरसिंघ जोधावत
कांना रंगावत देरासरी	कांनावास	सोझत	राव श्रीमालदेजी
काना रंगावत देरासरी	कांनावास	सोझत	राव श्रीमालदेजी
किसन प्रोहत	कवलली	जोधपुर	रावळ पता
कूंपा रंगावत देरासरी	मालपुरीयो	सोझत	राव श्रीमालदेजी
केलण	दावड़ीयाणी खुरद	मेड़ता	जैमल वीरमदेवोत
केसा कूंपावत	घटीयाळो	जोधपुर	राव गांगो
खगार चापावत राय गुर	आकेलडी	जोधपुर	सोनगरा अखेराज
खीदा कान्हावत	नीवहलो गगादास	मेड़ता	राईमल दुदावत
खीवड देईदास साधु पलीवाल	कालीया वासणी	सीवाणां	राव मालदेजी

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
	३३४ (भा० १)	
बास जीवण सांवळ, हरदास राघोदास	४८१ (भा० १)	बोहड़ानडी और धरमावासणी दिया गया फिर राजा ने बोहड़ानड़ी को जब्त कर लिया।
गोपीनाथ रामचंदोत, मनोहर अणदोत रामजी हरनाथोत हरजी किसनोत	४७९ (भा० १)	
बास २ भाई बेटा	२९ (भा० २)	
	२८६ (भा० १)	
हेंसा ३ सासण	२५७ (भा० १)	सं० १५८०
राजो उदावत	३३४ (भा० १)	
हरीदास नरा रामो अचळदासोत	५४३ (भा० १)	
जीवो तीकम का, ईसर कांना का खगार रामदास रोहीदास वीदा का	२६८ (भा० २)	
त्रिवाड़ी कांना जगा	४७९ (भा० १)	यह गाव राजकुमार के जन्म की बधाई पर दिया गया।/सं० १७०९
	१३९ (भा० २)	भाईयो मे बंटवारा हो गया और अलग अलग बस गये।
जसवत अखैराज नीलकंठ किसनदासोत	२३९ (भा० १)	
ब्राह्मण जीवण जसावत और मनोहर रामावत	४८१ (भा० १)	
	३६५ (भा० १)	
ब्राह्मण पीतावर पीराजोत हरवंस दमा	४८२ (भा० २)	
गिरधर तुलछीदासोत रामचंद डावरोत	१६३ (भा० २)	
जगनाथ ठाकुर गोपी	११० (भा० १)	
महैराज टोकरी	२६७ (भा० १)	
राईचद सुरताणोत करन तारावत	१६३ (भा० २)	
प्रो. कलो गगादास माडण वसतो अणंदा का	२६९ (भा० २)	बाद में रावळ मेघराज हापावत ने बरसिंघोत को दिया फिर बाद मे राव चदरसेन मालदेवोत ने गाव छीन लिया प्रो० खीवड़ ने पेश होकर नमस्कार किया।

प्राप्तकर्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
खीवा देवाकर रा आचारज सीवड़	वड़ा खुरद	जोधपुर	रा. श्रीमालदेजी
खेता खीढ़ावत आचारज सीवड़	खारा वेरा	जोधपुर	राव श्री गाँगाजी
खेतौ वोलावत	सुकरलाई	जोधपुर	सीधल वीर
गदाधर जीवावत	लूणकरण री वासणी	मेड़ता	राठोड सहसा तेजसीहोत
गीथावत	चगावड़ो आदु	जोधपुर	सासण पडीहारा
गोतम ग्येनसर	हरमु री वासणी	मेडता	जैमल वीरमदेवोत
गोदा कोहावत वीसं हेमावत	डोहली खुरद	जोधपुर	राणा देवीदास वीजावत
गोपाल लखावत पाटीख गोलवाळ	सथाणो सरगवास	मेड़ता	
गोपाल वेळा री आचारज	अरट नडी	जोधपुर	राव चद्रसेन
चतरभुज कानावत	केलण कोट	सीवाणा	राणा देवीदास वीजावत
चोहोथो सीवउत	मेरो वावड़ी	जैतारण	जैतसी उदावत
जगनाथ सदाफळोत	जगनाथपुरी	मेड़ता	जगमाल वीरमदेवोत
जगदे रांमदेव	सावळीयावास खुरद	मेड़ता	वीरमदेव दूदावत
जगहठ बाखळ चादणोत	सीहा री वासणी	मेडता	वरसिंघ जोधावत
जागेसर किसनदासोत व्यास	गैलावास खुरद	जोधपुर	राजा सूरजसिंघजी
जैना रामावत व्यास	जैना वासणी	जैतारण	डुंगरसी उदावत
टीला काजावत	खीचवघ	लोघी	राव हमीर नरावत
टोहा खेतावत	लोरडी खुरद	जोधपुर	राव मालदेजी
डूगर नाथावत विसनो	तालकीयौ	सोभत	राव गागाजी
डूंगर पदमावत	व्रमपुरी	जैतारण	जैतसी उदावत
ताराईत माडा सीहावत	भाटेळाई खुरद	जोधपुर	राव चूंडाजी
तेजा राढवत पाचलोढा अचारज	चवडवा	जोधपुर	राव श्रीचूंडाजी
तेजा खीवा	भैंसेरवास तीजी	जोधपुर	राव चूंडा
थाढा गुदवच	नहेरवो वडौ	जोधपुर	राव श्रीमालदेजी
दामा हरपालोत	माडाहाई	जोधपुर	राव जोधाजी
दामा हरपालोत	तिंवरी	जोधपुर	राव जोधाजी

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
कचरो देईद सोत	२५६ (भा० १)	
	२३८ (भा० १)	
	२८६ (भा० १)	
स्यामो जगावत बीको नरावत	२१२ (भा० २)	
मेणराज चंड	३११ (भा० १)	
	१३६ (भा० १)	राजा सूरजसिंघजी ने व्यास सादुळ को सवत् १६७६ में फिर दिया।
	३०१ (भा०) १	
रेखो पीतांबर का, वलु गोरधन का, भूधर गोईंद का	३११ (भा० २)	
	२६२ (भा० १)	
ऊदेसी केसा का, पीथो नरा का	२७३ (भा० २)	
अचळदास ठाकुरसी राईसलोत कचरो नेतसीयोत	(५४३ भा० १)	
मोहण तुलसो किसनदासोत	२१२ (भा० २)	
रामेश्वर कचरावत फरसराम कचरावत सारंग	१६४ (भा० २)	
रामजी हरराम रुघनाथ		
लखो उदैसी	१५२ (भा० २)	
रिणछोड़ नीलकंठ	२६२ (भा० १)	
व्यास रामचंद सांवळोत हरजी जनावत	५४७ (भा० १)	
राम गढावत	३० (भा० २)	
दुपो जसपाळ	३०३ (भा० १)	
गगादास तीकम	२८२ (भा० १)	
वीरो खेतसी घनो पीतावत पीराग ईसर का	५४४ (भा० १)	द्वारकाजी मे दिया गया।
	३०१ (भा० १)	
ऊरजो माना	२३७ (भा० १)	
चंवडीया नेता मानावत	३५५ (भा० १)	
जैतमाल	२८५ (भा० १)	
	२३६ (भा० १)	गयाजी मे दिया, तिंवरी ग्राम भी।
अखैराज दळपतोत	२३६ (भा० १)	

प्राप्तकर्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
दामा हरपालोत	नारसुवा री वास	जोधपुर	राव जोधाजी
देव वीराो	डोडीयाळ	जोधपुर	महाराजा श्रीजसवर्तसिहजी
देवा केलण राजगर	वाकी वाहो खुरद	जोधपुर	राणा देवीदास
देदा नापा बीजावा	ऊमरळाई खुरद	सीवाणा	किसना रायमलोत देवीदासोत
धरपत साकरोत श्रीमाली	वीढ़ा वासणी	जोधपुर	राव श्रीमालदेवजी
नरसिंघ चोथोत	पाचवो	सोभत	वीरमदे वाघावत
नाढ़ा दामावत	ग्रासरावो	जोधपुर	भारमल जोधावत
नांना रोहड़ीयोत	सीलोर रा वास	सीवाणा	रावत हापा जैतमाल
नाराईण तेजावत ग्राचारज सोथड़ा	मोडी खुरद	जोधपुर	राजा श्रीउर्दसिंघजी
पदमा पोकरणा	ऊपाचीया री वासणी	जोधपुर	राव श्रीजोधाजी
परबत सदावत	सीहुथळी	सीवाणा	राणा देवीदास वीजावत
पीजळ बीवल	बड़ली	जोधपुर	राव चूडाजी
पीतांबर वागदे रा	सूरजमल री वास	जोधपुर	राव श्रीमालदेजी
पीथड़	सोढ़ा बाभण री वास	जोधपुर	रा. ईहड
पीथोड़ सोढावत	तिसीगड़ी वली री वास थोभ री	सीवाणा	धुहड़ ग्रासथानोत
पीथावत राजगुरू	मोरवी खुरद	जैतारण	जैतसी ऊदावत
पूना ग्रखावत रायगुर	पुनाईता	जोधपुर	रिडमलजी
बछा गुगली द्वारकाजी सेवगां नु	कांनावस	जोधपुर	श्री मोटा राजाजी
बरसल सांवतोत	लोळावास	सीवाणा	रांणा देवीदास वीजावत
बीजा गदाधर व्यास	कारोलीयो	जैतारण	जसवंत डूंगरसियोत
भवरां रामावत	सेपाउवों की वासनी	जोधपुर	राव जोधा
भवानीदास तेजसीहोत	चावडीयो ग्राधो	मेड़ता	बीरमदे का पुत्र जगमाल
भाखर नरहरोत	भाखर वासणी	जैतारण	उदा सूजावत
भारमल किसनावत	बिवई कुवो	जोधपुर	राव मालदेजी

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेश/संवत्
गोदो नेतलोत	३४० (भा० १)	
	३४१ (भा० १)	
तेजसी पोमा	३०३ (भा० १)	
लखो नरा कूंपो केसव जसौ करमसी	२७१ (भा० २)	
नीलकंठ गिरधर	२३७ (भा० १)	सं० १५६५
लाचौ उदावत मोणदास जैतसीयोत धनराज तिलोकसी	४८० (भा० १)	बाद मे राजा चोलण की तरह पुरोहित सीहे पीथावत रायसल राजावत ने आधा गांव स्वीकार करना मंजूर कर लिया।
माडण हरदासोत	३०२ (भा० १)	
हेमदास लिखमीदास, देवीदास हेमराज	२६६ (भा० २)	
खेतौ सूरा, रतनो रावतोत		
गोयददास सामदासोत	२३७ (भा० १)	स० १६४०
हरजी कलावत	२३६ (भा० १)	
भानो माडण का, सूजा धना का	२७३ (भा० २)	राव मालदेजी ने प्रो. सादूळ हमीर को और दिया था।
भगवानदास दयाल मानसिघोत	२३६ (भा० १)	
सारगधर द्वारकेसर	२३८ (भा० १)	
	३०१ (भा० १)	पडीहारो की वार में दिया।
किसना द्वारकादास केसा	२६८ (भा० २)	
लिखमीदास वीठळोत डूगर दयाल	५४४ (भा० १)	
ठाकुरसी वीठल	२६७ (भा० १)	
सावळदास	२६० (भा० १)	
खगार रांमदासोत	२७० (भा० २)	
व्यास नरो वाछा का, हरराम गवाल का	५४७ (भा० १)	सूर्यग्रहण में दान दिया।
किसनो	३१० (भा० १)	
जोगीदास गुणेमोत राजसी सादूळ	१३८ (भा० २)	
चत्रभुज भगवांन का, विजेरांम पिराग का	५२८ (भा० १)	
दानो सादुळोत	३३४ (भा० १)	

प्राप्तकर्ता	गांव का नाम	परगना	दाता
भोजा कूंपावत सीवड़	तालूकीयो	जैतारण	ऊदा सूजावत
महेराज सीहावत	हीगोलो खुरद	जोधपुर	राव चूंडा
मांहव रायगुर	रावळवास	जोधपुर	सोनगरा मांनसिंघ
मुरार खेतावत भाटी	नरसिंघ री वासणी	सोभत	राव श्री जोधाजी
मूळा कूंपावत	खेड़ापो	जोधपुर	राव मालदेजी
मूळा कूंपावत सीवड़	घुहड़ीया वासणी	सोभत	राव श्रीगागाजी
मूळा कूंपावत सीवड़	वीकरलाई	जैतारण	राव श्रीमालदेजी
मूळा कूंपावत	ढढोरीयो	जोधपुर	राव मालदेजी
मूळो कूंपावत सीवड़	चाहड़वास	सोभत	राव श्रीमालदेजी
मोकळ कचरोत	महेकर री वास	सीवाणां	डूंगरसी करमसीहोत जोगाइत देवीदासोत
रणमल अणदोत पुरायचा	नागाणी री वास	जोधपुर	भारमल जोधावत
राजा चोहथोत	रूपावास	सोभत	राव श्रीमालदेजी
राजा चेहरा सीवड़	राजावासणी	जोधपुर	राठोड़ भीव वाघाव सुजावत
रांमा तीलावत गुजरगौड़	वाभणवास	मेड़ता	दूदे जोधावत
रांम दासावत वीरा अमरावत	महेबारी	सीवांणा	केसोदास भाखरसीयोत
रांम डुगावत जागरवाळी	खेडी चपा	मेडता	वीरमदे दूदावत
रांमा मुरार	खेडेचो	जोधपुर	राव श्रीगागाजी
राइमल खेतावत	धुंवलेरियो	जोधपुर	राव मालदे
राईसल राजावत	केलरियां री वासणी	जोधपुर	राव मालदेजी

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
हरीदास	५४३ (भा० १)	भोजा जब जोधपुर आया तब दिया गया।
दमोदर	३०१ (भा० १)	
जीवौ किसनावत	२६८ (भा० १)	
जोसी कचरो दामोदर और वीसनदास मथुरादासोत	४८१ (भा० १)	बाद मे राजा श्रीऊदैसिंघजी ने सवत् १६४२ आसोज सुद ४ मे पट्टे कर दिया।
माघोदास मोहणदासोत	३४६ (भा० १)	
गोरघन जगनाथ सादूळ का लड़का	४७६ (भा० १)	धूहड़ीया वासणी चाहड़वास भी दिया गया।
रामसिंघ गोपाळदासोत नरसिंघदास रामदासोत	५४६ (भा० १)	
दवारकादास गोयंददासोत	३४६ (भा० १)	
राघोदास धनौ किसनावत और रूपा सावळदासोत	४८० (भा० १)	धुहड़ीया वासणी ग्राम साथ में दिया।
	२७२ (भा० २)	बाद मे राव मालदेव ने तेजसी मोकळोत को दिया।
नाथौ टीकम	३०२ (भा० १)	
चांदावत नै थळी उदावत नै मोणदास जैतसीयोत	४७८ (भा० १)	बाद मे रावरांम मालदेओत ने सवत् १६६१ काती सुद ६ राजावत को फिर दिया। १५८८ जेठ सुद ७ (को प्रथम दान)
कचरी नेतसी रो	२३८ (भा० १)	
संकर गोपाळ	१५२ (भा० २)	
सूरो, माघो, रामावत, सादूळ आसवत हेमो माहव रो,	२६८ (भा० २)	रा. कीलांण रायपाळोत घुडडोत का महेवा से अपना निवासस्थान छोड़ कर एक भाखरी के पास घर बना कर बस गये।
जगनाथ चांपावत जीवो सुरताणोत	१७५ (भा० २)	
कचरी दामोदर	२५४ (भा० १)	
	२८५ (भा० १)	
कलो जेसावत हरीदासोत	३१० (भा० १)	

प्राप्तकर्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
रायसल राजावत राजा जगनाथ	वडीयाळो	सोझत	मालदेवजी
लीला मनांणी	वीलासर	जोधपुर	रावळ मेघराज
बीजड़ बीमलां	कानुढीयो	जोधपुर	वीरम कलावत
सदा उछतोत श्रीमाली	पळासलो वासरो	सोझत	राव गागाजी
सहेसा सीनल कुतव	कंवारड़ो	जोधपुर	पतो गांवावत
साकर हरहरा रायगुर	मादडी	जोधपुर	राव कानडदे सोनगरा
सागा दूदावत	ग्रासरावी	सीवाणा	रांणा देवीदास बीजावत
सीधप जोसी	भाटोधी री वास	सीवांणा	रांणा देवीदास
सीवदे राय रैं	ढ़ावरवास २	जोधपुर	राव कानड दे
सिवराज देईदास देवराजोत	ढ़ेलाणो	फलोधी	राजा श्री उदैसिंघजी
सोमाईत गोहला रो गुर	काळू बडी	जोधपुर	रावळ जगमाल मालावत
सोमो मदन जात सोथड़ो लाधो	सुराणी खुरद	जोधपुर	राव गागाजी
सोढा वांभण	नगा री वास	जोधपुर	रावळपता
सोढा वाँभण धीधा	मेघावस	जोधपुर	हीखा जैतमलोत
सोढा वाभण	नागाणा री वास	जोधपुर	कीलांण रायपालोत
सोहड जैता मनणा	पटाऊ री वास मनणा री	सीवाणा	रांणा देईदास बीजावत
सौकर चाहोड़ोत	सरवड़ी	सीवाणा	सोम जैतमालोत सलखावत
हदू वूटहडोत भीदा थाहरोत काका भतीज	खीदाकुवो कीटणोद री वास	सीवांणा	राणा देवीदास बीजावत
हरमा माला लखमणोत	धरमदवारी	जोधपुर	राव श्रीरिडमलजी

अन्य

प्राप्तकर्ता	गाँव का नाम	परगना	दाता
ग्रासायच भोपा	साठी को बडो	जोधपुर	राव जोधाजी
खुजमहमद पीरजादा निजाम व नीजरवली	खातोळाई	मेड़ता	महाराजा जसवंतसिंघजी
खेचरखांन जोगी नीरमल वन के चेलो को	हरीवास	सोझत	महाराजा जसवतसिंघजी
थान रावळ जोगी	झीलेळाव	जैतारण	मेर रावत देवा मेहरोत
देवसी राठोड़ भोपा	ग्रासरवा री वास	जोधपुर	भारमल जोधावत
पींडतां तुंवर		पोकरण	तुंवर रामदे अर्जैसिहोत
भाखर सीहेडा का कीला चाचावत पावूजी के भोपे को	कोळू	फलोधी	राव गांगा
सांवला हरभू पीर	वोहोगटी बास २	फलोधी	राव जोधा

वर्तमान भोक्ता	पृष्ठ व भाग	विशेष/संवत्
लघै उदावत और मोवणदास जेतसीयोत	४७८ (भा० १)	
साजन	३६५ (भा० १)	
माघी रांमदासोत	३१९ (भा० १)	
बास श्रीरांम, कलौ माघोदासोत	४८१ (भा० १)	
		राव श्रीमालदेजी ने संवत् १५९४ महा वद ७ मे ताबा पत्र करा दिया।/स० १५८५
	२८५ (भा० १)	
जेतो जसावत	२६६ (भा० १)	
मेहो रूपा मनोहर जैमल नाढ़ो चादा का भादौ कांना	२६७ (भा० २)	
डूगरसी नेतावत, तिलोकसी हरखो गागावत	२७२ (भा० २)	१६७५ में पाटोदी पर जैसलमेर की फौज आई थी।
सिवराज के पुत्र भानो नारण और बरसल	२६७ (भा० १)	
	३१ (भा० २)	
करमाणद लिखमीदास	३६५ (भा० १)	
कानौ अखै तोगो	३१० (भा० १)	
हमीर	३६६ (भा० १)	
दुपौ जीवावत	३०२ (भा० १)	
	३०५ (भा० १)	
डाहो खीवा सूजो माघा कलु अणदा का	२७१ (भा० २)	
प्रो मोहणदास सूजावत जगनाथ लिखमीदासोत राघो नारणोत	२७१ (भा० २)	
सुरताण देवीदास जेतमल नाराईण भलौ चादा का	२७० (भा० २)	
मालो दिदावत	२६८ (भा० १)	
	अन्य	
भोपा घाघल करमसी	३३५ (भा० १)	श्री माताजी के पुजारी।
	१६६ (भा० २)	सं० १७०९
जोगी हरखवन खेचरवन	४८९ (भा० १)	पहले यह गांव सुजांणसिह भगवानदासोत के द्वारा खेचरखान को दिया गया बाद मे सुजाणसिह की मृत्यु के पश्चात् महाराजा ने ताम्रपत्र पर दान के रूप मे गांव लिख दिया।/स० १७०३ रतनसी खीवावत की वार में दिया गया।
	५५२ (भा० १)	
	३०४ (भा० १)	
	३४८ (भा० २)	
जगो दूदावत जैतमालोत	२९ (भा० २)	
	३० (भा० २)	

शुद्धि-पत्र

भाग १

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	अशुद्धि-शोधन
८	८	आय के स्थान पर आप पढ़ें।
३१	अंतिम	काहु नी के स्थान पर काहुनी (ग्राम) पढ़ें, तदनुसार अर्थभेद भी ग्रहण करें।
३२	२	" " " "
५६	१०	पैरा नं० ८८ के स्थान पर ८९ पढ़ें।
५६	१५	भोजावाद के स्थान पर मोजावाद पढ़ें।
९७	प्रथम	६६८ के स्थान पर १६६८ पढ़ें।
११९	२०	१९९४ के स्थान पर १६९४ पढ़ें।
१३२	१२	वेजयां के स्थान पर वेजपां पढ़ें।
१३६	१२	भार के स्थान पर मार पढ़ें, तदनुसार फुट नोट मे अर्थ 'पेट में कटारी मार कर मरा', ग्रहण करें।
१६५	५	पाळी के स्थान पर पाली पढ़ें।
१८६	३	पैरा नं० १४६ के स्थान पर २४६ पढ़ें।
१८९	१४	पैरा नं० १४७ के स्थान पर २४७ पढ़ें।

भाग २

५१	८	मंडोवर के स्थान पर मांडव पढ़ें।
९२	१५	१८१४ के स्थान पर १७१४ पढ़ें।
५०१	१५	मांहिम है सर भोज दे के स्थान पर "माहि महेसर भोजदे" पढ़ें।

भाग ३

९६		अन्य आसामियों के शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये नाम उन योद्धाओ के हैं जो धवलपुर के युद्ध मे काम आये (मूंदियाड़ की ख्यात पृ० १४८)